संयुक्त राज्य अमेरिका के सूचना विभाग से जो प्रश्न पूछे जाते हैं उनमें से अधिकांश अमेरिकी इतिहास से सम्बन्धित होते हैं। इस पुस्तक में संक्षिप्त और सुलभ रूप में कुछ प्रश्नों के उत्तर देने तथा राष्ट्र की अभिवृद्धि से सम्बन्धित विचार और विकास की प्रमुख धाराओं को अनुरेखित करने का प्रयास किया गया है। किसी भी दृष्टि से यह संयुक्त राज्य का निश्चयात्मक इतिहास नहीं है। कुछ ही पृष्ठों में यहां निरूपित प्रत्येक काल का इतिहास सुविस्तृत अन्वेषण और पाण्डित्य का विषय रहा है। आशा है, विषय-प्रवेश के लिए यह पुस्तक लाभप्रद सिद्ध होगी और इस प्रकार पाठकों तथा संयुक्त राज्य की जनता के मध्य पारस्परिक समझ और ज्ञान की अभिवृद्धि करेगी।

विषय-सूची

डॉक्टर वुड ग्रे, प्रोफेसर, अमेरिकी इतिहास, जॉर्ज वाशिंगटन विश्वविद्यालय, वाशिंगटन डी०सी०, तथा डॉक्टर रिचर्ड हॉफ़स्टेटर, प्रोफ़ेसर, इतिहास, कोलम्बिया विश्वविद्यालय, न्यूयॉर्क के परामर्श से तैयार किये गये मूल पाठ को इस पुस्तक में अद्यतन कर दिया गया है।

हिन्दी रूपान्तरकार : डॉक्टर चन्द्रभूषण त्रिपाठी, रीडर, इतिहास-विभाग, प्रयाग विश्वविद्यालय, प्रयाग।

औपनिवेशिक युग

"मानव के निवास के लिए स्थान का निर्माण करने में स्वर्ग और धरती का ऐसा सामंजस्य कभी नहीं हुआ।"

—जॉन स्मिथ

वर्जिनिया उपनिवेश का संस्थापक, सन् १६०७ ई०

सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में यूरोप से उत्तरी अमेरिका के लिए उत्प्रवास का एक भीषण ज्वार प्रारम्भ हुआ। यह प्रक्रिया कुछ सौ अंग्रेज़ उपनिवेशवादियों की एक क्षीण धारा से आरम्भ होकर तीन सौ वर्षों से कुछ अधिक समय में लाखों नवागन्तुकों की वाढ़ में परिणत हो गयी। विभिन्न शक्तिशाली प्रयोजनों से प्रेरित होकर इन्होंने एक सभ्यताविहीन महाद्वीप में नयी सभ्यता का निर्माण किया।

मेक्सिको, पश्चिमी द्वीप-समूह और दक्षिणी अमेरिका में स्पेन के सम्पन्न उपनिवेशों की स्थापना के वहुत समय पश्चात् प्रथम अंग्रेज़ आप्रवासियों ने अतलान्तिक पार कर उस स्थान पर पैर रखा जो आज संयुक्त राज्य कहलाता है। नये विश्व में, अन्य यात्रियों की भांति, ये भी छोटे और ठसाठस भरे हुए जहाज़ों में आये। अपनी छः से वारह सप्ताह की समुद्र-यात्रा में उन्हें स्वल्प रसद पर ही रहना पड़ा। उनमें से अनेक रोगों के शिकार होकर काल-कवलित हो गये। उनके जहाज़ वहुवा तूफ़ानों से जर्जर हुए और कुछ समुद्र में खो भी गये।

इन थके हुए समुद्र-यात्रियों को अमेरिकी तट के दर्शन से वड़ी राहत मिली। एक इतिहासकार ने कहा: "२४ मील की दूरी से ही वायु में ऐसी मीठी सुगन्ध आ रही थी जैसे किसी नव पुष्पित उद्यान से आ रही हो।" उपनिवेशियों को नयी धरती की पहली झलक में घने जंगलों का दृश्य दिखलायी दिया। यह सत्य है कि इन जंगलों में रेड इंडियन (आदिवासी) रहते थे जिनमें से अधिकांश उनके शत्रु थे, और इनके आक्रमणों का भय उनके दैनिक जीवन की कठिनाइयों को और भी वढ़ा रहा था। परन्तु पूर्वी समुद्र-तट पर उत्तर से दक्षिण लगभग २१०० किलोमीटर तक फैला हुआ यह अपार, अक्षत अरण्य एक रत्न-भण्डार सिद्ध हो सकता था, जिससे भरपूर भोजन, ईंधन, मकान, साज-सामान तथा जहाज़ वनाने के लिए कच्चा माल और निर्यात के लिए अनेक लाभप्रद पदार्थ मिल सकते थे।

अमेरिका में प्रथम स्थायी अंग्रेज़ वस्ती वर्जिनिया के पुराने राज्य में जेम्सटाउन में सन् १६०७ ई० में एक व्यापारिक संस्थान के रूप में स्थापित हुई। इस क्षेत्र की आर्थिक सम्पन्नता शीघ्र विकसित हुई, क्योंकि यहां के तम्बाकू की फसल की इंग्लैण्ड में अच्छी खपत थी। सन् १६२० ई० तक जब वर्जिनिया में आने, विवाह करने और अपना घर वसाने के लिए इंग्लैण्ड में स्त्रियों की भर्ती होने लगी थी, जेम्स नदी के तटवर्ती प्रदेशों में वड़े-वड़े वागान का विकास हो चुका था, और वसनेवालों की संख्या एक हज़ार तक पहुंच चुकी थी।

धरती वस गयी

यद्यपि नया महाद्वीप प्राकृतिक साधनों की दृष्टि से विशेष रूप से सम्पन्न था, फिर भी जो वस्तु उपनिवेशी अभी तक नहीं पैदा कर सकते थे उनके आयात के लिए यूरोप से व्यापार अनिवार्य था। समुद्र-तट से आप्रवासियों को विशेष लाभ हुआ। लम्बे समुद्री तट में अनेक उपखाड़ियां और वन्दरगाह थे। केवल उत्तरी कैरोलाइना तथा दक्षिणी न्यूजर्सी नामक दो प्रदेशों में ही, समुद्र से जाने वाले जहाज़ों के लिए वन्दरगाह नहीं थे।

केनेवेक, हडसन, डेलावेयर, सस्केहाना, पोटोमैक तथा अन्य कई शालीन नदियां तटवर्ती मैदानों को यूरोप के वन्दरगाहों से जोड़ती थीं। परन्तु केवल एक ही नदी—सेंट लारेंस, जो कैनेडा में फ़्रांसीसियों के प्रभुत्व में थी—महाद्वीप के अन्तरतल तक जलमार्ग सुलभ करती थी। घने जंगल तथा अपेलेशियन पर्वतों के दुर्जेय अवरोध तटवर्ती मैदानों के परे उपनिवेश वसाने में हतोत्साहित करते थे। केवल फन्दा-शिकारी और व्यापारी ही उस वीहड़ में कूद सकते थे। लगभग एक सौ वर्ष तक उपनिवेशियों ने अपनी वस्तियां तटवर्ती क्षेत्रों में पास-पास ही वनायीं।

ये उपनिवेश आत्म-निर्भर समुदाय थे, जिनका समुद्र में अपना निकास था। प्रत्येक उपनिवेश का समर्थ व्यक्तित्व से चिन्हित एक पृथक् अस्तित्व हो गया था। परन्तु इस व्यक्तित्व के होते हुए भी व्यापार, नौ संचालन, उत्पादन और मुद्रा की समस्याओं ने औपनिवेशिक सीमाओं का अतिक्रमण कर समान नियमों की आवश्यकता को स्पष्ट किया, जिसने इंग्लैण्ड से स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के पश्चात् संघ को जन्म दिया।

१७वीं शताब्दी में उपनिवेशियों के आगमन में सतर्क योजना और व्यवस्था के साथ-साथ यथेष्ट व्यय और ख़तरा भी निहित था। उपनिवेशियों को लगभग ५,००० किलोमीटर दूर समुद्र के पार लाना होता था। उन्हें वर्तन, कपड़े, वीज, औज़ार, मकान वनाने के सामान, ढोर, अस्त्र-शस्त्र तथा गोला-वारूद की आवश्यकता थी। अन्य देशों तथा अन्य युगों की औपनिवेशिक नीति के विरुद्ध इंग्लैण्ड का उत्प्रवास सरकार द्वारा प्रवर्तित न हो कर उन व्यक्तियों के निजी दलों द्वारा प्रवर्तित था जिनका प्रमुख उद्देश्य लाभार्जन था।

वर्जिनिया और मैसाचूसेट्स नामक दो उपनिवेश अधिकृत कम्पनियों द्वारा स्थापित किये गये थे, जिनका कोष, जो पूंजी लगाने वालों द्वारा एकत्रित किया गया था,

उपनिवेशियों की आवश्यकताओं की पूर्ति और उनके परिवहन के लिए प्रयोग किया जाता था।

जहां तक न्यू हैवेन उपनिवेश (जो वाद में कनेक्टिकट उपनिवेश का एक अंग बन गया) का प्रश्न है, उसके सम्पन्न उत्प्रवासियों ने अपने परिवार और नौकरों के परिवहन और सामानों की स्वयं व्यवस्था की। अन्य उपनिवेश–न्यू हैम्पशायर, मेन, मेरीलैण्ड, दोनों कैरोलाइना, न्यूजर्सी और पेनसिलवैनिया–मूलतः उन मालिकों के थे जो इंग्लैण्ड के अमीर अथवा कुलीन वर्ग के थे और जो ज़मींदार होने के नाते राजा से प्राप्त भूमि पर अपने नौकरों तथा काश्तकारों को वसाने के लिए अपनी निधि लगाते थे।

उदाहरणस्वरूप, चार्ल्स प्रथम ने सेसिल कैलवर्ट (लार्ड वाल्टीमोर) और उसके उत्तराधिकारियों को लगभग २८,००,००० हेक्टेयर भूमि दी, जो आगे चल कर मेरीलैण्ड राज्य बनी। चार्ल्स द्वितीय ने जो अनुदान दिये वे कैरोलाइना और पेनसिलवैनिया राज्य बने। विधि की दृष्टि में अधिकृत कम्पनियां तथा सभी मालिक राजा के आसामी थे, परन्तु अपनी भूमि के लिए केवल नाममात्र का भुगतान करते थे। उदाहरणस्वरूप, लार्ड बाल्टीमोर राजा को प्रतिवर्ष दो रेड इंडियन वाणाग्र देता था, और विलियम पेन दो ऊदबिलाव के चमड़े।

जो तेरह उपनिवेश अन्ततः संयुक्त राज्य वने, वे थे–न्यू हैम्पशायर, मैसाचूसेट्स, रोड आइलैण्ड, कनेक्टिकट, न्यूयॉर्क, न्यूजर्सी, पेनसिलवैनिया, डेलावेयर, मेरीलैण्ड, वर्जिनिया, उत्तरी कैरोलाइना, दक्षिणी कैरोलाइना और जॉर्जिया।

प्रत्येक उपनिवेश में उसकी उत्पत्ति की भिन्नता स्पष्ट प्रतिविम्वित थी। कई तो केवल अन्य बस्तियों की शाखाएं ही थे, रोड आइलैण्ड और कनेक्टिकट की स्थापना करने वाले लोग मैसाचूसेट्स के थे, जो सारे न्यू इंग्लैण्ड के उपनिवेशों का जनक था। जॉर्जिया की स्थापना जेम्स एडवर्ड ओगलथॉर्प तथा उसके कुछ सहयोगियों ने परोपकार और व्यावहारिकता की दृष्टि से की थी। उनकी योजना यह थी कि इंग्लैण्ड के जेलों से कर्ज़दारों को छुड़ा कर अमेरिका भेज कर एक ऐसे उपनिवेश की स्थापना की जाये जो दक्षिण में वसे स्पेन वालों से बचाव कर सके। न्यू नेदरलैण्ड का उपनिवेश, जो सन् १६२१ ई० में डचों द्वारा बसाया गया था, १६६४ ई० में अंग्रेज़ी शासन में आ गया और उसका नाम न्यूयॉर्क रखा गया।

अधिकांश यूरोपीय उत्प्रवासियों ने अपना घर इसलिए छोड़ा था कि उन्हें यहां अधिक आर्थिक अवसर मिलेंगे। इस प्रेरणा को बहुधा धार्मिक स्वतन्त्रता की लालसा अथवा राजनीतिक उत्पीड़न से वच कर भागने के दृढ़ संकल्प ने और भी वल दिया। सन् १६२० ई० और सन् १६३५ ई० के वीच इंग्लैण्ड आर्थिक कठिनाइयों से ग्रस्त था। वहुतों को काम नहीं मिल पाता था। कुशल कारीगर भी किसी भांति ही अपना जीविकोपार्जन कर पाते थे। खराव फ़सल ने कठिनाई और भी वढ़ा दी थी। इनके अतिरिक्त, इंग्लैण्ड के प्रसरणशील ऊन उद्योग के लिए ऊन की मांग अधिकाधिक वढ़ने लगी, ताकि उसके करघे चलते रहें, और भेड़ पालनेवालों ने खेती की भूमि पर भी अतिक्रमण करना आरम्भ कर दिया था।

धार्मिक और राजनीतिक स्वतन्त्रता की खोज

१६वीं और १७वीं शताब्दियों की धार्मिक उथल-पुंथल के समय प्यूरिटन कहलाने वाले पुरुष और स्त्रियों के एक दल ने इंग्लैण्ड की परम्परागत चर्च को भीतर से सुधारना चाहा। वास्तव में इनकी यह मांग थी कि राष्ट्रीय चर्च को पूर्णरूपेण प्रोटेस्टेंट वना दिया जाये और धर्म के स्वरूप और पूजा की पद्धति को और सरल वनाया जाये। उनके सुधारवादी विचार, राज्य के चर्च की एकता नष्ट कर, जनता में फूट डालने और राजकीय प्रभुत्व को नष्ट करने की आशंका उत्पन्न कर रहे थे। 'पार्थक्यवादी' (सेपरेटिस्ट) नामक उग्रवादियों का एक छोटा-सा दल—जिसमें अधिकांश साधारण ग्रामीण थे, जिन्हें यह विश्वास नहीं था कि परम्परागत चर्च में उनकी इच्छा के अनुकूल सुधार हो सकेगा—जेम्स प्रथम के शासन काल में हालैण्ड के लीडन नामक स्थान के लिए रवाना हुआ, जहां उसे अपनी इच्छानुसार अपना धर्म पालने की स्वतन्त्रता मिली। कुछ समय पश्चात् इस लीडन-सम्प्रदाय के कुछ लोगों ने, जो "पिलग्रिम्स" (धार्मिक यात्री) कहलाने लगे थे, नये विश्व में जा कर वसने का निर्णय किया और वहां सन् १६२० ई० में उन्होंने प्लीमथ नामक उपनिवेश की स्थापना की।

चार्ल्स प्रथम के सन् १६२५ ई० में राज्यारोहण के कुछ ही समय पश्चात् इंग्लैण्ड के प्यूरिटन नेताओं को ऐसा अनुभव होने लगा कि उन पर अत्याचार वढ़ रहा है। ऐसे कई पादरी, जो उपदेश देने के अधिकार से वंचित कर दिये गये थे, अपने अनुयायियों के साथ अमेरिका में इन धार्मिक यात्रियों से जा मिले। पहले के उत्प्रवासियों से भिन्न इस दूसरे दल में, जिसने मैसाचूसेट्स उपनिवेश की सन् १६३० ई० में स्थापना की, वहुत-से सम्पन्न और सम्भ्रान्त लोग थे। अगले दशक के अन्त तक (सन् १६४० ई० तक) आधे दर्जन अंग्रेज़ी उपनिवेशों पर प्यूरिटनों की छाप पड़ चुकी थी।

धार्मिक प्रेरणा से आने वाले उपनिवेशियों में अकेले प्यूरिटन लोग ही नहीं थे। इंग्लैण्ड में अपनी दशा से असन्तुष्ट विलियम पेन और उनके साथी क्वेकरों ने पेनसिलवैनिया की स्थापना की। इंग्लैण्ड के कैथलिकों के प्रति इसी प्रकार की भावना से प्रेरित हो सेसिल कैलवर्ट ने मेरीलैण्ड को वसाया और जर्मनी तथा आयरलैण्ड से कई उपनिवेशी, जो भिन्न मतावलम्वी थे, अधिक धार्मिक स्वतन्त्रता और आर्थिक सुयोग ढूंढते हुए पेनसिलवैनिया और उत्तरी कैरोलाइना में आये थे।

कई लोगों को राजनीतिक कारणों ने भी अमेरिका जाने के लिए प्रेरित किया। सन् १६३० ई० के दशक में इंग्लैण्ड के चार्ल्स प्रथम के स्वेच्छाचारी शासन ने लोगों को नये विश्व में जा कर वसने की प्रेरणा दी। और सन् १६४० ई० के दशक में ओलिवर क्रॉमवेल के नेतृत्व में चार्ल्स के विरोधियों ने जो विद्रोह किया और उन्हें जो सफलता मिली उसके कारण अनेक 'कैवेलियर्स'—'राजा के सहायकों'— को अपनी भाग्य-परीक्षा के लिए वर्जिनिया जाना पड़ा। जर्मनी में अनेक छोटे-छोटे राजाओं की, विशेष कर धर्म के सम्वन्ध में, कठोर नीति के कारण तथा निरन्तर युद्धों के परिणामस्वरूप विनाश के कारण सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियों में अमेरिका-प्रवास का आन्दोलन वढ़ने लगा।

कुछ ऐसे भी उदाहरण हैं कि बहुत-से ऐसे स्त्री और पुरुष, जिन्हें अमेरिका में नया जीवन बिताने में कोई विशेष रुचि नहीं थी, उपनिवेश बसाने वाले लोगों के चतुर अनुनय से प्रेरित हो कर चले आये। विलियम पेन ने पेनसिलवैनिया में आने वाले नवागन्तुकों के लिए सुलभ सुयोगों का विज्ञापन किया। जहाज़ों के कप्तान, जो निर्धन प्रवासियों को इकरारनामे के अधीन नौकरी में लाने के लिए बड़े-बड़े पारिश्रमिक पाते थे, सब्ज़ बाग दिखाने से ले कर सचमुच ज़बरदस्ती भगाने तक के सभी उपायों का प्रयोग कर अपने जहाज़ों में इतने यात्री भर लेते थे जितने उनमें समा सकें। जेल के अधिकारियों और जजों को प्रोत्साहित किया जाता था कि अपराधियों को जेल का दण्ड भोगने की बजाय अमेरिका जा कर बसने का अवसर दें।

कतिपय ही अपना मार्ग-व्यय दे सकते थे

अपेक्षाकृत कुछ ही ऐसे उपनिवेशी थे जो अपने परिवार का मार्ग-व्यय तथा नये देश में जीवन प्रारम्भ करने का भार उठा सकें। जो ऐसा नहीं कर सकते थे उनके जाने का तथा निर्वाह का व्यय वर्जिनिया कम्पनी तथा मैसाचूसेट्स कम्पनी जैसी उपनिवेश स्थापित करने वाली एजेंसियां उठाती थीं। इसके बदले में उपनिवेशी इन एजेंसियों के लिए ठेकाबन्द मज़दूर की तरह काम करना स्वीकार करते थे। इस व्यवस्था में जो लोग नये विश्व में आये उनमें से अधिकांश को शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि जिस दशा में वे अपने घर में थे उससे अच्छी दशा में यहाँ नहीं हैं, क्योंकि यहां या तो उन्हें नौकर बन कर रहना था या आसामी बन कर।

शीघ्र ही यह व्यवस्था उपनिवेश बसाने की सफलता में बाधक सिद्ध हुई, और अमेरिका में बसने वालों को आकर्षित करने के लिए एक नया मार्ग निकाला गया। कम्पनियां, मालिक, तथा प्रत्येक परिवार भावी उपनिवेशियों के साथ कुछ शर्तों पर ठेका करने लगे, जिनके अनुसार उपनिवेशी मार्ग और निर्वाह के व्यय के बदले में एक निश्चित समय तक—साधारणतया चार से सात वर्ष तक—मजदूरी करने के लिए बाध्य हो जाते थे। उस अवधि के पश्चात् स्वतन्त्र हो कर ऐसे उपनिवेशी स्वतन्त्रता-शुल्क पाते थे, जिसमें कभी-कभी एक छोटा-सा भू-क्षेत्र भी शामिल होता था।

ऐसा अनुमान है कि न्यूइंग्लैण्ड के दक्षिण के उपनिवेशों में रहने वाले प्रवासियों में से आधे अमेरिका में इसी व्यवस्था में 'इण्डेन्चर्ड सरवेण्ट्स' (प्रतिज्ञाबद्ध नौकर) के रूप में आये। यद्यपि इनमें से अधिकांश ने अपनी प्रतिज्ञा का पालन ईमानदारी से किया, परन्तु कुछ अपने मालिकों को छोड़ कर भाग गये। फिर भी, उनमें से भी बहुतों को, या तो उसी उपनिवेश में जहां वे मूलतः आ कर बसे थे अथवा पड़ोसी उपनिवेश में, बसने के लिए भूमि मिल जाती थी।

अमेरिका में इस प्रकार अर्द्ध-दासता की अवस्था में जो परिवार अपना जीवन आरम्भ करता था उसे समाज में किसी प्रकार हीन नहीं समझा जाता था। प्रत्येक उपनिवेश में कुछ ऐसे नेता थे जो पहले प्रतिज्ञाबद्ध नौकर या कर्मचारी रह चुके थे।

१७वीं शताब्दी में अमेरिका में जो उपनिवेशी आये उनमें से अधिकांश अंग्रेज़ थे। परन्तु मध्यवर्ती क्षेत्र में कुछ डच, स्वीड और जर्मन भी थे। दक्षिण कैरोलाइना में तथा अन्य स्थानों में कुछ फ्रान्सीसी ह्यूजोनॉट्स थे, और कहीं-कहीं स्पेनी, इतालवी और पुर्तगाली भी बसे हुए थे। फिर भी सम्पूर्ण उपनिवेशियों में ग़ैर-अंग्रेज़ों की संख्या केवल १० प्रतिशत थी।

अनेक संस्कृतियों का सम्मिश्रण

सन् १६८० ई० के पश्चात् आप्रवासियों में से अधिकांश जर्मनी, आयरलैण्ड, स्कॉटलैण्ड, स्विट्ज़रलैण्ड और फ़ान्स से आये, और इंग्लैण्ड आप्रवास का प्रमुख स्रोत नहीं रहा। ये नये प्रवासी विभिन्न कारणों से आये। जर्मनी से हज़ारों लोग युद्ध से बचने के लिए भाग आये थे। बहुत-से लोगों ने आयरलैण्ड को उस ग़रीबी से बचने के लिए छोड़ा जो सरकार और अनुपस्थित ज़मींदारों के अत्याचारों से फैल रही थी। स्कॉटलैण्ड और स्विट्ज़रलैण्ड से भी लोग निर्धनता की काली छाया से भाग कर आये। सन् १६९० ई० तक अमेरिका की जनसंख्या लगभग ढाई लाख हो गयी थी। तब से प्रति पचीसवें वर्ष यह दुगुनी होती गयी और सन् १७७५ ई० में यह २५ लाख के ऊपर पहुंच गयी थी।

बहुधा ग़ैर-अंग्रेज़ उपनिवेशियों ने पूर्ववर्ती आप्रवासियों की संस्कृति को अपना लिया। परन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं है कि सभी उपनिवेशी अंग्रेज़ बन गये। यह सत्य है कि उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा, कानून और रीति-रिवाज अपना लिये, परन्तु उसी संशोधित रूप में जो अमेरिकी परिस्थितियों का फल था। परिणामस्वरूप अंग्रेज़ों की और यूरोपीय महाद्वीप की संस्कृतियां घुल-मिल कर, नये विश्व की परिस्थिति से अनुकूलित एक अनोखी संस्कृति के रूप में उदित हुई।

यद्यपि कोई व्यक्ति और उसका परिवार मैसाचूसेट्स छोड़ कर वर्जिनिया में, या दक्षिणी कैरोलाइना से निकल कर पेनसिलवैनिया में बिना बहुत मौलिक पुनर्समायोजन के बस सकता था, फिर भी विभिन्न उपनिवेशों की विशेषताएं स्पष्ट थीं। उपनिवेशों के विभिन्न क्षेत्रीय वर्गों में ये विशेषताएं और भी अधिक स्पष्ट थीं।

भौगोलिक दृष्टि से ये उपनिवेश स्पष्ट क्षेत्रों में विभाजित थे। दक्षिण में गर्म जलवायु और उपजाऊ भूमि होने के कारण एक कृषि-प्रधान समाज विकसित हुआ। साधारणतया कम गहरी और पथरीली धरती होने, समतल भूमि की कमी, जाड़े लम्बे और गर्मी की ऋतु छोटी होने के कारण उत्तर-पूर्व में बर्फ़ और शिलाखण्डों से आच्छादित न्यूइंग्लैण्ड निम्न कोटि का कृषि प्रदेश था। न्यूइंग्लैण्ड वालों ने दूसरे धन्धे ढूंढ़ निकाले और जलशक्ति का प्रयोग कर आटे की चक्की और आरा-मशीनें स्थापित कीं। लकड़ी की बहुतायत से जहाज़ बनाने के व्यवसाय को प्रोत्साहन मिला। उत्तम बन्दरगाहों ने व्यापार को बढ़ावा दिया और समुद्र अपार सम्पत्ति का स्रोत बन गया। मैसाचूसेट्स में अकेले कॉड मछली का उद्योग शीघ्र ही समृद्धि का आधार बन गया।

बन्दरगाहों के आस-पास के गांवों और नगरों में बस कर न्यूइंग्लैण्ड के निवासियों

ने शीघ्र ही शहरी जीवन अपना लिया और उनमें से बहुत-से कोई व्यापार या व्यवसाय करने लगे। जो नगर-निवासी आस-पास के खेतों में काम करते थे, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति सार्वजनिक चरागाहों और जंगलों से होती थी। बस्तियां पास-पास होने के कारण गांव का स्कूल, गांव का चर्च और ग्राम या नगर-भवन (टाउन हाल) सम्भव हो सके, जहां नागरिक मिल कर सार्वजनिक महत्व के विषयों की चर्चा कर सकते थे। मिल-जुल कर कठिनाइयां झेलते, एक-सी पथरीली भूमि में खेती करते तथा साधारण व्यापार और दस्तकारी करते हुए न्यूइंग्लैण्ड के निवासियों ने शीघ्र ही ऐसी विशेषताएं प्राप्त कर लीं जिन्होंने उन्हें एक स्वावलम्वी और स्वतन्त्र समुदाय के रूप में विशिष्टता प्रदान की।

वस्तुतः, ये गुण समुद्र-यात्रा से क्लान्त उन १०२ धार्मिक यात्रियों में स्पष्टतः वर्तमान थे, जो दक्षिणी-पूर्वी मैसाचूसेट्स से अतलान्तिक समुद्र में निकले हुए केप कॉड नामक प्रायद्वीप पर पहले-पहल उतरे थे। उन्होंने अमेरिका की यात्रा 'लण्डन (वर्जिनिया) कम्पनी' के तत्वावधान में की थी और वर्जिनिया में वसाये जाने वाले थे, परन्तु उनका जहाज़ 'मेफ्लावर' उससे बहुत दूर उत्तर में जा कर किनारे लगा। कई सप्ताह की खोज के पश्चात् उपनिवेशियों ने यह निश्चय किया कि वे वर्जिनिया की यात्रा नहीं करेंगे और जहां थे वहीं रहेंगे। प्लीमथ वन्दरगाह के आस-पास के क्षेत्र को उन्होंने अपने उपनिवेश के लिए चुना। यद्यपि पहला जाड़ा वड़ा कठोर था, परन्तु बस्ती टिकी रही।

न्यूइंग्लैण्ड में अतिनियमनिष्ठ धर्म की प्रभुता

अभी प्लीमथ अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष ही कर रहा था कि आस-पास और वस्तियां स्थापित हो गयीं। सन् १६३० ई० के पश्चात् मैसाचूसेट्स वे क्षेत्र (वॉस्टन) में जो वस्ती स्थापित हुई उसने सम्पूर्ण न्यूइंग्लैण्ड के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। पचीस व्यक्तियों ने राजा से अधिकार-पत्र प्राप्त कर गवर्नर जान विन्थ्रॉप के नेतृत्व में इस उपनिवेश की स्थापना की। मैसाचूसेट्स वे के प्रवासी सफलता प्राप्त करने के लिए दृढ़ संकल्प थे और शीघ्र ही वे जीविकोपार्जन के कठिन कार्य में लग गये।

प्रथम दस वर्षों के भीतर ही ६५ धर्मोपदेशक आ गये और मैसाचूसेट्स में नेताओं की दृढ़ धार्मिक आस्था के कारण धर्मतन्त्र का विकास होने लगा। सिद्धान्ततः धर्म और राज्य पृथक् थे, परन्तु वस्तुतः वे एक थे, और सभी संस्थाएं धर्म के अधीन थीं। शीघ्र ही एक ऐसी शासन-व्यवस्था विकसित हुई जो धर्मतन्त्रात्मक और सत्तावादी थी। परन्तु नगर-सभाओं में सामाजिक समस्याओं पर विचार-विमर्श करने का अवसर मिलता था और उपनिवेशियों को स्वशासन का कुछ अनुभव भी होने लगा। यद्यपि नगरों का विकास चर्च-संगठन के आस-पास होता रहा, परन्तु सीमान्त जीवन की आवश्यकताओं के कारण नागरिक उत्तरदायित्व में सभी हाथ वंटाते थे। फिर भी कई वर्षों तक पादरी-पुरोहित वर्ग और रूढ़िवादी अयाजक समाज में समनुरूपता बनाये रखने का प्रयत्न करते रहे। उन्हें अपने सभी नागरिकों के विचारों को नियन्त्रित करने में सफलता नहीं मिली।

रोजर विलियम्स नामक एक विद्रोही पुरोहित ने रेड इंडियनों की भूमि पर अधिकार करने तथा राज्य और चर्च को सम्बद्ध रखने की बुद्धिमत्ता पर सन्देह प्रकट किया। "मजिस्ट्रेट के अधिकार के विरुद्ध अपने नये और ख़तरनाक विचार" फैलाने के कारण उसे न्यायालय ने उपनिवेश से निर्वासित कर दिया। उसने पड़ोसी उपनिवेश रोड आइलैण्ड के मैत्रीपूर्ण रेड इंडियनों के यहां आश्रय लिया और शीघ्र ही वहां उपनिवेश स्थापित किया जो इन विचारों पर आधारित था कि लोग अपनी इच्छानुसार पूजा कर सकते हैं, तथा चर्च और राज्य सदा के लिए एक दूसरे से पृथक् रहेंगे।

परन्तु मैसाचूसेट्स छोड़ कर जाने वाले केवल विधर्मी ही नहीं थे। कट्टर प्यूरिटन भी अच्छी भूमि और सुअवसर की खोज में उपनिवेश से निकल पड़े। उदाहरणस्वरूप कनेक्टिकट नदी की घाटी के उर्वर होने के समाचार ने उन किसानों को आकर्षित किया जो अनुपजाऊ धरती के कारण कठिनाई अनुभव कर रहे थे। बहुत-से लोग समतल, गहरी और उपजाऊ भूमि प्राप्त करने के लिए रेड इंडियनों के आक्रमण के भय का सामना करने को तैयार थे। महत्वपूर्ण बात यह है कि ऐसे लोगों ने अपनी सरकार का संगठन करते समय चर्च की सदस्यता को मतदान के लिए अनावश्यक बना कर मताधिकार को विस्तृत कर दिया। मैसाचूसेट्स के अन्य प्रवासी निकल कर उत्तरी क्षेत्र में आने लगे और शीघ्र ही स्वतन्त्रता और भूमि ढूंढने वाले स्त्री-पुरुषों ने न्यू हैम्पशायर और मेन का उपनिवेश बसाया।

मैसाचूसेट्स बे उपनिवेश जहां एक ओर परोक्षतः अपना प्रभाव बढ़ा रहा था, वहां भीतर भी तेज़ी से बढ़ रहा था और अपना व्यापार फैला रहा था। शताब्दी के मध्य से यह समृद्ध होने लगा और बॉस्टन अमेरिका के सबसे बड़े बन्दरगाहों में से एक बन गया। जहाज़ों का पेटा बनाने के लिए बलूत की लकड़ी, मस्तूल के लिए ऊंचे देवदार, और जहाज़ों के जोड़ों और संधियों में भरने के लिए अलकतरा उत्तरी-पूर्वी जंगलों से आने लगा। अपने जहाज़ बना कर और उन्हें संसार के सभी बन्दरगाहों में ले जा कर मैसाचूसेट्स बे के कप्तानों ने एक ऐसे व्यापार की नींव डाली जिसका महत्व निरन्तर बढ़ता ही गया। औपनिवेशिक युग के अन्त तक ब्रिटिश झण्डे के नीचे चलने वाले सभी जहाज़ों का एक-तिहाई भाग अमेरिका में बना था। अतिरिक्त खाद्य सामग्री, जहाजी सामान और लकड़ी की वस्तुओं ने निर्यात को बढ़ा दिया। न्यूइंग्लैण्ड के नाविकों को शीघ्र ही यह भी ज्ञात हो गया कि रम और दास लाभदायक सामग्री हैं।

दूसरे बड़े भू-भाग में, यानी मध्यवर्ती उपनिवेशों में, न्यूइंग्लैण्ड की अपेक्षा समाज अधिक विविधतापूर्ण, सार्वदेशिक और सहनशील था। पेनसिलवैनिया और उससे लगे हुए डेलावेयर की आरम्भिक सफलता का श्रेय विलियम पेन को है, जो एक क्वेकर था और जिसका उद्देश्य विभिन्न धर्म और राष्ट्रीयता के उपनिवेशियों को आकर्षित करना था। पेन दृढ़संकल्प था कि उसका उपनिवेश रेड इंडियनों के साथ न्याय और ईमानदारी का व्यवहार कर एक आदर्श प्रस्तुत करेगा; इस उद्देश्य से उसने एक समझौता किया और उस पर ईमानदारी से पालन करने के कारण बियाबान में भी शान्ति बनी रही।

यह उपनिवेश शान्तिपूर्वक चलता रहा और तेजी से बढ़ा। पेन के पहुंचने के एक

वर्ष के भीतर ३००० नये नागरिक पेनसिलवैनिया आये। उपनिवेश का केन्द्र फ़िलाडेल्फ़िया था। यह नगर शीघ्र ही पेड़ों की छाया से ढकी अपनी चौड़ी सड़कों, ईंटों और पत्थरों से बने ठोस मकानों और जहाज़ी घाटों के लिए प्रसिद्ध हो गया। औपनिवेशिक युग के अन्त तक विभिन्न भाषाओं, धर्मो और व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करने वाले ३०,००० व्यक्ति वहां रहने लगे थे। क्वेकरों ने अपनी सफल व्यापारिक वुद्धि से इस नगर को अमेरिकी उपनिवेशों का एक उन्नतिशील केन्द्र बना दिया।

यद्यपि क्वेकरों की फ़िलाडेल्फ़िया में प्रधानता थी, परन्तु पेनसिलवैनिया के अन्य स्थानों में दूसरे लोगों की भी अच्छी संख्या थी। जर्मन लोग इस उपनिवेश के सबसे कुशल किसान थे। उनका कुटीर-उद्योग का ज्ञान भी, यथा—कपड़ा बुनना, जूता बनाना, फ़र्नीचर बनाना तथा शिल्प—विशेष महत्वपूर्ण था। नये विश्व में स्कॉच-आयरिश आप्रवासियों के आगमन का प्रमुख प्रवेश-द्वार भी पेनसिलवैनिया ही था। ये लोग उत्साही सीमान्तवासी थे, जहां चाहते थे वहीं भूमि पर अधिकार कर लेते थे और बन्दूकों से अपने अधिकार की रक्षा करते थे। प्रतिनिधि सरकार, धर्म और शिक्षा में विश्वास रखने वाले इन लोगों ने दूर-दूर तक भीतरी प्रदेशों में पैठ कर नई सभ्यता का नेतृत्व किया।

पेनसिलवैनिया के लोग तो मिले-जुले थे ही, पर अमेरिका की बहु-भाषी प्रकृति का सबसे सुन्दर उदाहरण न्यूयॉर्क था। सन् १६४६ ई० तक हडसन नदी के आस-पास की आबादी में डच, फ़्लेमिंग, वेलून, फ़्रांसीसी, डेन, नॉर्वेजियन, स्वीड, अंग्रेज़, आयरिश, जर्मन, पोल, बोहेमियन, पुर्तगाली और इतालवी सभी थे। ये लाखों आगे आने वालों के पूर्वगामी थे।

डच प्रभाव बना रहा

४० वर्ष तक न्यूनेदरलैण्ड पर डच लोगों का अधिकार रहा। यही स्थान आगे चल कर न्यूयॉर्क कहलाया। ये लोग भ्रमणशील नहीं थे। उपनिवेशन से उन्हें ऐसा कोई धार्मिक अथवा राजनीतिक लाभ नहीं मिला जो उन्हें हॉलैण्ड में लभ्य न रहा हो। इसके अतिरिक्त उपनिवेश के शासन के लिए योग्य अधिकारियों को रखना डच वेस्ट इंडिया कम्पनी के लिए कठिन हो गया। सन् १६६४ ई० में जब इंग्लैण्ड की अभिरुचि उपनिवेशन-कार्य में पुन: जाग्रत हुई तब उन्होंने डच उपनिवेश पर बलपूर्वक अधिकार कर लिया। परन्तु इसके बहुत दिनों बाद तक भी डच लोग वहां के आर्थिक और सामाजिक जीवन को प्रभावित करते रहे। उनकी विशेष ढालू तिकोनी छतें वहां के दृश्य का एक स्थायी अंग बन गयीं और उनके व्यापारियों ने नगर में व्यस्त व्यापारिक वातावरण उत्पन्न कर दिया।

डच लोगों ने न्यूयॉर्क के जीवन को प्यूरिटन बॉस्टन के जीवन से एक सर्वथा भिन्न स्वरूप दिया। न्यूयॉर्क में छुट्टियों के दिन भोज और मनोरंजन खूब होते थे। और नव वर्ष के दिन पड़ोसियों के यहां जाना तथा क्रिसमस के समय सन्त निकोलस का आगमन मनाना, आदि बहुत-सी डच-परम्पराएं बहुत दिनों तक चलती रहीं।

डच लोगों से शासन अपने अधिकार में लेने के पश्चात् रिचर्ड निकल्स नामक एक अंग्रेज़ शासनाधिकारी ने न्यूयॉर्क के कानूनी ढांचे को बदलना आरम्भ किया। उसने यह इतना धीरे-धीरे और इतनी बुद्धिमानी से किया कि वह डच तथा अंग्रेज़ दोनों की श्रद्धा का पात्र बना। नगर-शासन में न्यूइंग्लैण्ड के नगरों की भांति स्वायत्त-शासन की विशेषताएं थीं और कुछ ही समय पश्चात् बचे-खुचे डच कानून तथा रीति-रिवाजों और अंग्रेज़ी प्रथाओं में व्यावहारिक समन्वय हो गया।

सन् १६९६ ई० तक न्यूयॉर्क प्रान्त के निवासियों की जनसंख्या लगभग ३०,००० थी। हडसन, मोहॉक तथा अन्य नदियों की समृद्ध घाटियों में बड़ी-बड़ी जागीरें पनप रही थीं। काश्तकार और छोटे-छोटे स्वतन्त्र किसान इस प्रदेश की खेती को विकसित करने में योगदान दे रहे थे। लहरदार घास के मैदानों से ढोरों, भेड़ों, घोड़ों और सुअरों को चारा मिलता था; तम्बाकू और पटसन बोये जाने लगे; और फल, विशेषकर सेब, प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होने लगे। समूर के व्यापार ने भी उपनिवेश के विकास में सहायता की। न्यूयॉर्क नगर से २३२ किलोमीटर उत्तर में स्थित अलबेनी नगर से न्यूयॉर्क के व्यस्त बन्दरगाह तक समूर पहुंचाने के लिए हडसन नदी का जलमार्ग सुविधाजनक था।

दक्षिण में कृषि का प्रभुत्व

न्यूइंग्लैण्ड तथा मध्यवर्ती उपनिवेशों के विपरीत वर्जिनिया, मेरीलैण्ड, कैरोलाइना और जॉर्जिया की दक्षिणी बस्तियां प्रधानतया ग्रामीण थीं। वर्जिनिया का जेम्सटाउन पहला अंग्रेज़ी उपनिवेश था, जो नयी दुनिया में जीवित रह सका। सन् १६०६ ई० में दिसम्बर के अन्तिम दिनों में लण्डन कोलोनाइज़िंग कम्पनी द्वारा प्रवर्तित लगभग सौ व्यक्तियों का एक दल नये साहसिक जीवन की खोज में निकला। उन्होंने सोना प्राप्त करने का स्वप्न देखा था, जंगल में बसना उनका उद्देश्य नहीं था। उनमें कप्तान जॉन स्मिथ प्रमुख रूप से उभरा और आपसी झगड़ों, भुखमरी तथा रेड इंडियनों के आक्रमणों के बावजूद भी उसके दृढ़ संकल्प ने आरम्भिक वर्षों में इस छोटे-से उपनिवेश को जीवित रखा।

शीघ्र लाभ-प्राप्ति के लिए आतुर प्रवर्तक कम्पनी ने उपनिवेशियों को अपने जीवन-निर्वाह के लिए अन्न उपजाने की स्वीकृति देने के बजाय लन्दन के बाज़ार में बेचने के लिए इमारती लकड़ी तथा अन्य वस्तुओं के उत्पादन पर ध्यान केन्द्रित करने का आदेश दिया। कुछ संकटपूर्ण वर्षों के पश्चात् कम्पनी ने अपनी आवश्यकताओं को घटा दिया और उपनिवेशियों में भूमि बांट दी।

सन् १६१२ ई० में एक ऐसी घटना हुई जिसने वर्जिनिया की आर्थिक दशा में क्रान्ति उत्पन्न कर दी। यह वर्जिनिया तम्बाकू सिझाने की एक नयी विधि का आविष्कार था जिससे वह यूरोप के लोगों को रुचिकर लगने लगे। इस तम्बाकू का पहला लदान सन् १६१४ ई० में लन्दन पहुंचा और दस वर्ष के अन्दर ही यह वर्जिनिया की आय का प्रमुख साधन बन गया।

कुछ फ़सलें उगाने के बाद तम्बाकू की खेती से खेत कमज़ोर हो जाते थे। इसलिए नयी भूमि ढूंढ़कर किसान शीघ्र विभिन्न जलमार्गों के किनारे फैल गये। इस क्षेत्र में नगर नहीं थे और राजधानी जेम्सटाउन में भी थोड़े ही मकान थे।

वर्जिनिया में अधिकतर उपनिवेशी अपनी आर्थिक दशा सुधारने के लिए आये थे, परन्तु मेरीलैण्ड के पड़ोसी उपनिवेश में बसने वालों का उद्देश्य आर्थिक और धार्मिक दोनों था। कैथलिकों के लिए आश्रय ढूंढने के साथ-साथ कैलवर्ट-परिवार ऐसी भू-सम्पत्ति भी विकसित करना चाहता था जो लाभकारी सिद्ध हो। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए तथा ब्रिटिश सरकार से झगड़ा बचाने के लिए कैलवर्टों ने कैथलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों प्रकार के आप्रवासियों को प्रोत्साहित किया।

कैलवर्टों ने इस बात का प्रयत्न किया कि मेरीलैण्ड का शासन और उसकी सामाजिक व्यवस्था प्राचीन परम्परा के अनुसार अभिजात-तन्त्रीय हो। वे राजा के सभी विशेषाधिकारों को अपने हाथ में लेकर वहां का शासन करना चाहते थे, परन्तु पश्चिमी सीमा पर बसे हुए इस समाज में स्वतन्त्रता की भावना प्रबल थी। अन्य उपनिवेशों की भांति मेरीलैण्ड में भी अधिकारी वर्ग उपनिवेशियों की इस हठपूर्ण मांग की उपेक्षा नहीं कर सका कि उन्हें अंग्रेज़ी सामान्य विधि (कॉमन लॉ) द्वारा स्थापित वैयक्तिक स्वतन्त्रता का तथा प्रतिनिधि सभाओं के माध्यम से शासन में प्रजाजनों के भाग लेने के प्राकृतिक अधिकार के उपभोग का आश्वासन हो।

मेरीलैण्ड की अर्थ-व्यवस्था बहुत कुछ वर्जिनिया की अर्थ-व्यवस्था की भांति विकसित हुई। कृषि-प्रधान होने तथा बड़े-बड़े तटवर्ती बागान-मालिकों के प्रभुत्व के साथ-साथ इन दोनों उपनिवेशों में भीतर की ओर भूमि थी, जिसमें भूमिधर किसान निरन्तर बसते जा रहे थे। दोनों उपनिवेश वर्ष में एक पैदावार की प्रथा की असुविधा का सामना कर रहे थे। १८वीं शताब्दी के मध्य में पहुंचने से पूर्व ही दोनों नीग्रो दासता से भली भांति प्रभावित हो चुके थे।

उन दोनों उपनिवेशों में सम्पन्न बागान-मालिकों ने अपने सामाजिक उत्तरदायित्व का गम्भीरतापूर्वक निर्वाह किया और पुर-शासक (जस्टिस आव द पीस), नागरिक सेना के कर्नल, तथा विधान-सभा के सदस्य के पद पर कार्य करते रहे। परन्तु भूमिधर किसान भी सार्वजनिक सभाओं में बैठते थे और राजनीतिक पदों पर पहुंच जाते थे। उनकी स्पष्टवादी स्वतन्त्र वृत्ति बागान-मालिकों के अभिजात-वर्ग को सतत चेतावनी थी कि वे स्वतन्त्र नागरिकों के अधिकारों का अधिक अतिक्रमण न करें।

१७वीं शताब्दी के अन्त और १८वीं शताब्दी के आरम्भ तक मेरीलैण्ड और वर्जिनिया की सामाजिक व्यवस्था में वे विशेषताएं आ चुकी थीं जो गृहयुद्ध तक बनी रहीं। दासों के परिश्रम के आधार पर बागान-मालिकों के पास अधिकांश राजनीतिक अधिकार तथा अच्छी भूमि आ चुकी थी। उन्होंने आलीशान कोठियां खड़ी कीं, रईसी का जीवन बिताने लगे और समुद्र-पार के सांस्कृतिक जीवन से भी सम्पर्क में रहे। सामाजिक और आर्थिक सोपान के द्वितीय वर्ग में वे किसान थे जिनकी समृद्धि की आशा भीतर की उर्वर भूमि पर टिकी थी। सबसे कम समृद्ध छोटे किसान थे, जिन्हें अपने अस्तित्व

की रक्षा के लिए दास रखने वाले बागान-मालिकों के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही थी। बड़े व्यापारी वर्ग का विकास न तो वर्जिनिया में हुआ और न मेरीलैण्ड में ही, क्योंकि बागान-मालिक स्वयं लन्दन से सीधा व्यापार करते थे।

दक्षिण में व्यापारिक केन्द्र के रूप में विकसित होने का सुअवसर दोनों कैरोलाइना को मिला, जिनका प्रमुख बन्दरगाह चार्ल्स्टन था। वहां उपनिवेशियों ने शीघ्र ही व्यापार और कृषि में समन्वय स्थापित करना सीख लिया और बाजार समृद्धि का प्रमुख स्रोत बन गया। घने जंगलों से भी आय होने लगी : इमारती लकड़ी, तारकोल, तथा लम्बे पत्ते वाले देवदार की राल पोत-निर्माण के लिए विश्व की कुछ सर्वोत्कृष्ट वस्तुएं सिद्ध हुई। वर्जिनिया की भांति एक पैदावार से बंधे न रह कर दोनों कैरोलाइना चावल और नील भी पैदा करते और उनका निर्यात करते थे। सन् १७५० ई० तक उत्तरी और दक्षिणी कैरोलाइना के दोनों उपनिवेशों में एक लाख से अधिक लोग बस चुके थे।

दक्षिण में भी, अन्य उपनिवेशों की भांति, भीतर के प्रवेश के विकास का एक विशेष महत्व था। आरम्भ में समुद्र-तट के उपनिवेशों में जितनी स्वतन्त्रता थी उससे अधिक स्वतन्त्रता के इच्छुक अन्तर्प्रदेश में घुसने लगे। जो लोग समुद्र-तट पर उर्वर भूमि न प्राप्त कर सके, अथवा अपनी भूमि को अनुर्वर बना चुके थे, उन्हें पश्चिम की पहाड़ियों का उदार आश्रय मिला। शीघ्र ही अन्तर्प्रदेश सम्पन्न खेतों से भर उठा। केवल छोटे किसान ही नहीं थे जिन्हें पीछे की भूमि आकर्षक लगी हो। संयुक्त राज्य के तृतीय राष्ट्रपति टॉमस जेफ़र्सन के पिता और एक साहसी भू-मापक, पीटर जेफ़र्सन ने शराब के एक प्याले में १६० हेक्टेयर भूमि ख़रीदी और वह इस पहाड़ी प्रदेश में बस गया।

रेड इण्डियन प्रदेश के किनारे पर रहने वाले सीमान्तवासी अपने लकड़ी के मकानों को ही अपना दुर्ग बना कर और अपनी तीक्ष्ण दृष्टि तथा अपनी बन्दूकों पर ही भरोसा रख कर आवश्यकतावश कठोर और स्वावलम्बी बन गये। उन्होंने जंगलों में कुछ भू-भाग साफ किया, झाड़ियां जला डालीं और ठूंठों के बीच गेहूं और मक्के की खेती की। पुरुष मृगछाला पहनते थे, स्त्रियां घर में कते-बुने कपड़ों के वस्त्र पहनती थीं। मृगमांस, जंगली पीरू और मछली उनका भोजन था। उनके अपने अमोद-प्रमोद थे—बड़े-बड़े जानवरों को सींक पर भूनना, नवविवाहित दम्पति के लिए गृह-प्रवेशोत्सव, निशानेबाज़ी की प्रतियोगिता और गद्देदार कम्बल बनाने की प्रतियोगिता।

शिक्षा और संस्कृति का विकास

इस समय तक अतलान्तिक समुद्र-तट पर बसे हुए प्रदेश और भीतरी प्रदेशों के मतभेद स्पष्ट होने लगे थे। भीतरी क्षेत्र के लोगों ने राजनीतिक वाद-विवाद में अपनी आवाज़ बुलन्द की और रीति-रिवाज तथा परम्पराजनित निष्क्रियता को भंग किया। पुरानी बस्तियों के अधिकारियों को प्रगति तथा परिवर्तन में बाधक बनने से रोकने में यह तथ्य एक प्रभावपूर्ण शक्ति बन गया था कि संस्थापित उपनिवेशों का कोई भी व्यक्ति सीमान्त-प्रदेश में सुगमतापूर्वक नया घर बसा सकता था। अतएव, सत्तारूढ़ व्यक्ति

सीमान्त में जन-निर्गमन के भय से, राजनीतिक नीतियों में, भूमि बांटने के नियमों में और धार्मिक रीति-रिवाजों में बार-बार परिवर्तन करने को विवश हुए। विस्तारशील देश के कर्मठ समाज में आत्मसन्तोष के लिए कोई स्थान नहीं था। पहाड़ों की तराइयों की ओर लोगों का संचलन अमेरिका के भविष्य के लिए विशेष महत्व रखता था।

औपनिवेशिक युग में अमेरिकी शिक्षा और संस्कृति की जो आधारशिलाएं रखी गयीं उनका भी भविष्य के लिए महत्व कम नहीं था। सन् १६३६ ई० में मैसाचूसेट्स में 'हारवर्ड कॉलेज' की स्थापना हुई। शताब्दी के अन्त में वर्जिनिया में 'विलियम और मैरी कॉलेज' की स्थापना हुई। कुछ ही वर्ष पश्चात् 'कॉलेजियट स्कूल ऑव कनेक्टिकट' की स्थापना के लिए विधान बना। यही स्कूल आगे चल कर 'येल कॉलेज' कहलाया। परन्तु इससे भी अधिक महत्वपूर्ण सरकारी संरक्षण में संचालित स्कूल-पद्धति का विकास था। सन् १६४७ ई० में मैसाचूसेट्स वे उपनिवेश ने प्रारम्भिक शिक्षा अनिवार्य कर दी। इस नियम का रोड आइलैण्ड के अतिरिक्त न्यूइंग्लैण्ड के अन्य सभी उपनिवेशों ने शीघ्र ही अनुसरण किया।

दक्षिण में खेत और बागान इतने दूर-दूर थे कि वहां वैसे सामुदायिक स्कूल स्थापित करना संभव नहीं था जैसे सघन बस्तियों में खोले गये थे। कुछ बागान-मालिक अपने निकटतम पड़ोसियों के साथ मिल कर अपने बच्चों को पढ़ाने के लिए अध्यापक रख लेते थे, शेष अपने बच्चों को शिक्षा के लिए इंग्लैण्ड भेज देते थे।

मध्यवर्ती उपनिवेशों में परिस्थिति भिन्न थी। न्यूयॉर्क भौतिक उन्नति में इतना व्यस्त था कि शिक्षा-सम्बन्धी विषयों की ओर ध्यान ही न दे सका, फलस्वरूप इस विषय में वह पिछड़ा रहा। स्कूल अच्छे नहीं थे और राजकीय शासन ने जनता की सुविधा के लिए यदा-कदा ही प्रयास किया। प्रिंस्टन में कॉलेज ऑव न्यूजर्सी, न्यूयॉर्क नगर में किंग्स कॉलेज (अब कोलम्बिया विश्वविद्यालय), और न्यूजर्सी के न्यूब्रंज़विक नगर में क्वीन्स कॉलेज (अब रटजर्स) १८वीं शताब्दी के मध्य तक नहीं स्थापित हुए थे।

शिक्षा के क्षेत्र में सबसे उत्साही उपनिवेशों में पेनसिलवैनिया था। वहां पहला स्कूल सन् १६८३ ई० में खुला, जिसमें पढ़ना-लिखना और हिसाब रखना सिखाया जाता था। तत्पश्चात् प्रत्येक क्वेकर समुदाय ने अपने बच्चों की आरम्भिक शिक्षा का कोई-न-कोई प्रबन्ध किया। प्राचीन भाषाओं, इतिहास और साहित्य की उच्च शिक्षा फ्रेण्ड्स पब्लिक स्कूल में दी जाती थी। यह स्कूल अब भी फ़िलाडेल्फ़िया में विलियम पेन चार्टर स्कूल के नाम से विद्यमान है। यह स्कूल निर्धनों के लिए निःशुल्क था, पर जिनके माता-पिता समर्थ थे उनसे शिक्षा-शुल्क लिया जाता था।

फ़िलाडेल्फिया में अनेक ग़ैर-सरकारी स्कूल ऐसे थे, जिनमें भाषाओं, गणित और प्राकृतिक विज्ञान की शिक्षा दी जाती थी। प्रौढ़ों के लिए रात्रि-पाठशालाएं थीं। स्त्रियों की शिक्षा भी सर्वथा उपेक्षित नहीं थी। फ़िलाडेल्फ़िया के सम्पन्न व्यक्तियों की कन्याएं निजी अध्यापकों से फ़्रांसीसी, नृत्य, चित्रकला, संगीत, व्याकरण और कभी-कभी हिसाब-किताब रखने की कला का भी अध्ययन करती थीं।

पेनसिलवैनिया के बौद्धिक और सांस्कृतिक विकास पर मुख्यतः दो प्रभावशाली

व्यक्तियों की छाप थी—जेम्स लोगन और बेंजामिन फ़्रैंकलिन। लोगन उपनिवेश का सेक्रेटरी था और उसी के समृद्ध पुस्तकालय में युवक फ़्रैंकलिन को नवीनतम वैज्ञानिक ग्रन्थ मिले। सन् १७४५ ई० में लोगन ने अपने संग्रह के लिए एक भवन का निर्माण किया और भवन तथा पुस्तकें नगर को अर्पित कर दीं। फ़्रैंकलिन ने फ़िलाडेल्फ़िया के वौद्धिक विकास में और योग दिया। उसने 'जुण्टो' नामक एक क्लव संगठित किया जिसने 'अमेरिकन फ़िलॉसॉफ़िकल सोसाइटी' को जन्म दिया। उसी के प्रयत्नों से एक सार्वजनिक अकादमी की स्थापना हुई जो आगे चल कर पेनसिलवैनिया विश्वविद्यालय के रूप में विकसित हुई। चन्दे से एक पुस्तकालय की स्थापना के विचार का भी वही मूल प्रस्तावक था। इसे वह समस्त उत्तरी अमेरिका के चन्दे वाले पुस्तकालयों की जननी कहता था।

दक्षिण में इतिहास, ग्रीक और लैटिन के उत्कृष्ट ग्रन्थ, विज्ञान और कानून की पुस्तकें एक वागान से दूसरे वागान को आती-जाती रहती थीं। दक्षिण कैरोलाइना में स्थित चार्ल्सटन में, जो पहले ही से संगीत, चित्रकला, और नाटक का केन्द्र वन चुका था, सन् १७०० ई० के पूर्व ही एक प्रान्तीय पुस्तकालय की स्थापना हुई। न्यूइंग्लैण्ड के प्रारम्भिक आप्रवासी अपने साथ अपने छोटे-छोटे पुस्तकालय भी लाये थे और वाद में भी लन्दन से पुस्तकें मंगाते रहते थे। सन् १६८० ई० के दशक में वॉस्टन के पुस्तक-विक्रेता प्राचीन उच्च साहित्य, इतिहास, राजनीति, दर्शन विज्ञान, धर्मशास्त्र और ललित साहित्य से सम्वन्धित पुस्तकों का अत्यन्त लाभकारी व्यापार कर रहे थे।

ज्ञान की पिपासा सुव्यवस्थित समुदायों की सीमा तक ही नहीं रुकी। सीमान्त प्रदेश में वसे स्कॉच-आयरिश यद्यपि कोठरीनुमा अपरिष्कृत आवासों में रहते थे, परन्तु वे विद्या के दृढ़ पुजारी थे और उन्होंने अपनी वस्तियों में विद्वान पुरोहितों को आकर्षित करने का विशेष प्रयत्न किया।

उपनिवेशों में साहित्य-सृजन प्रायः न्यूइंग्लैण्ड तक ही सीमित था। यहां धार्मिक विषयों पर ही ध्यान केन्द्रित था। यहां के मुद्रणालयों में सवसे अधिक धर्मोपदेश छपते थे। रेवरेण्ड कॉटन मैथर नामक एक 'आग उगलने वाले' (हेल ऐण्ड व्रिमस्टोन) पुरोहित ने लगभग ४०० ग्रन्थ लिखे थे। उसकी श्रेष्ठ कृति 'मैग्नेलिया क्रिस्टी अमेरिकाना' इतना विशाल ग्रन्थ था कि उसे लन्दन में छपाना पड़ा। इन पृष्ठों में न्यूइंग्लैण्ड के शानदार इतिहास का प्रदर्शन उस क्षेत्र के सवसे वहुसर्जक लेखक ने किया था। परन्तु रेवरेण्ड माइकेल विगल्सवर्थ का लम्वा काव्य, 'दि डे ऑव डूम', जिसमें अन्तिम न्याय का भयानक ढंग से वर्णन किया गया था, सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ था।

प्रेस अपनी स्वतन्त्रता पर दृढ़

मैसाचूसेट्स के केम्ब्रिज नगर को अपने मुद्रणालय पर गर्व था और यहीं सन् १७०४ ई० में वॉस्टन का प्रथम सफल समाचार-पत्र आरम्भ हुआ। न्यूइंग्लैण्ड में ही नहीं, अन्य क्षेत्रों में भी शीघ्र ही कई अन्य समाचार-पत्र मैदान में आये। न्यूयॉर्क में प्रेस की स्वतन्त्रता का पहला महत्वपूर्ण परीक्षण पीटर जेंगर के एक मुकदमे में हुआ। सन् १७३३

ई० में आरम्भ किया गया उसका 'न्यूयॉर्क वीकली जरनल' सरकार के विरोधियों का मुखपत्र था। उसके दो वर्ष के प्रकाशन के पश्चात् उपनिवेश का गवर्नर ज़ेंगर के व्यंग्य-वाण सहन न कर सका और उस पर मानहानि का अभियोग चलाकर उसे जेल में बन्द करा दिया। जेंगर का मुकदमा नौ महीने तक चला और इस काल में उसे जेल में ही रहना पड़ा। जेल से ही वह अपने पत्र का सम्पादन करता रहा, जिसके फलस्वरूप सभी उपनिवेशों में इस सम्बन्ध में असाधारण दिलचस्पी बनी रही। प्रसिद्ध वकील ऐण्ड्रू हैमिल्टन ने उसके पक्ष में बहस करते हुए कहा कि ज़ेंगर द्वारा प्रकाशित आरोप सत्य हैं, इसलिए मानहानि का प्रश्न नहीं उठता। जूरी ने ज़ेंगर को निरपराधी ठहराया और वह छूट गया। इस ऐतिहासिक निर्णय ने अमेरिका में प्रेस की स्वतन्त्रता के सिद्धान्त को स्थापित करने में सहायता की।

औपनिवेशिक विकास की सभी अवस्थाओं में एक आश्चर्यजनक विशेषता यह थी कि उन पर अंग्रेज़ी सरकार के प्रभाव और नियन्त्रण का अभाव था। अपने निर्माण-काल में उपनिवेश परिस्थितियों के अनुसार अपना विकास करने में स्वतन्त्र थे। अंग्रेज़ी सरकार ने जॉर्जिया के अतिरिक्त और किसी उपनिवेश को स्थापित करने में कोई प्रत्यक्ष भाग नहीं लिया और उनके राजनीतिक निर्देशन में क्रमशः ही इसने हस्तक्षेप किया। इस तथ्य का कि राजा ने विश्व की बस्तियों के ऊपर अपनी आसन्न सम्प्रभुता स्टाक कम्पनियों तथा स्वत्वधारियों को हस्तान्तरित कर दी थी, यह अर्थ नहीं था कि अमेरिका के उपनिवेशी अनिवार्यतः बाह्य नियन्त्रण से मुक्त रहेंगे। वर्जिनिया कम्पनी और मैसाचूसेट्स बे के अधिकार-पत्रों में सन्निहित अनुबन्धों के अनुसार सम्पूर्ण शासनाधिकार सम्बन्धित कम्पनियों को दिया गया था, और यह आशा की जाती थी कि ये कम्पनियां इंग्लैण्ड में ही संस्थापित रहेंगी। इस प्रकार अमेरिका के निवासियों को शासन में उतना ही अधिकार मिलेगा जितना उस परिस्थिति में मिलता जब राजा सारी शक्ति अपने हाथ में रखता।

विदेशी शासन का पतन

जैसा भी हो, किसी-न-किसी प्रकार बाहर के एकान्तिक शासन का अन्त हो गया। लन्दन (वर्जिनिया) कम्पनी ने वर्जिनिया के उपनिवेशियों को वहां के शासन में प्रतिनिधित्व देने का निर्णय कर के इस दिशा में पहला कदम उठाया। सन् १६१८ ई० में अपने नियुक्त गवर्नर को उसने यह आदेश दिया कि बागान के स्वतन्त्र निवासी अपने प्रतिनिधि चुनेंगे जो गवर्नर तथा कम्पनी द्वारा नियुक्त कौंसिल के साथ मिल कर उपनिवेश के कल्याण के लिए अध्यादेश पारित करेंगे।

यह घटना पूरे औपनिवेशिक युग की सबसे महत्वपूर्ण घटना सिद्ध हुई। इसके पश्चात् साधारणतया यह स्वीकार कर लिया गया कि उपनिवेशियों को अपने शासन में भाग लेने का अधिकार है। अधिकांशतः राजा भविष्य में अनुदान देते समय अधिकार-पत्र (चार्टर) में इस बात का उल्लेख कर देता था कि उपनिवेश के स्वतन्त्र व्यक्तियों

से सम्बद्ध सभी कानूनों के निर्माण में उनका हाथ रहेगा। इस प्रकार मेरीलैण्ड के सेसिल कैलवर्ट को, पेनसिलवैनिया के विलियम पेन को, कैरोलाइना तथा न्यूजर्सी के स्वत्वाधिकारियों को जो अधिकार-पत्र दिये गये उनमें इसका स्पष्ट उल्लेख था कि सब कानून 'स्वतन्त्र-व्यक्तियों की सहमति' से बनाये जायेंगे।

केवल दो अधिकार-पत्रों में स्वशासन की व्यवस्था का उल्लेख नहीं था। इनमें एक अधिकार-पत्र न्यूयॉर्क का था, जो चार्ल्स द्वितीय के भाई यॉर्क के ड्यूक को दिया गया था, जो आगे चल कर राजा जेम्स द्वितीय कहलाया; और दूसरा जॉर्जिया का था जो न्यासियों के एक दल को दिया गया था। परन्तु इन दोनों ही मामलों में प्रशासन के ये उपबन्ध अल्पकालिक सिद्ध हुए, क्योंकि उपनिवेशियों ने विधायी प्रतिनिधित्व की मांग इतने आग्रहपूर्वक की कि अधिकारियों को शीघ्र झुकना पड़ा।

आरम्भ में शासन की विधि-निर्माण शाखा में उपनिवेशियों का अधिकार सीमित महत्व का था। परन्तु अन्ततः इसने निर्वाचित विधान-सभाओं द्वारा उपनिवेशियों को प्रायः पूर्ण प्रभुसत्ता दिलाने के प्रथम सोपान का काम किया। इन विधान-सभाओं ने वित्तीय विषयों पर पहले अपना अधिकार स्थापित किया और तत्पश्चात् उसका उपयोग किया। एक के बाद दूसरे उपनिवेश में यह सिद्धान्त मान लिया गया कि निर्वाचित प्रतिनिधियों की अनुमति के बिना न कर लगाये जा सकते हैं और न संग्रहीत राजस्व खर्च ही किया जा सकता है। जब तक गवर्नर और उपनिवेश के अन्य अधिकारी लोकप्रिय विधान-सभा की इच्छानुसार कार्य करना नहीं स्वीकार करते थे, वह आवश्यक कार्यों के लिए व्यय की अनुमति नहीं देती थी। ऐसे भी उदाहरण हैं कि हठधर्मी गवर्नरों का वेतन या तो बिल्कुल अस्वीकार कर दिया गया या केवल मात्र एक पेनी स्वीकृत किया गया। इस धमकी के कारण गवर्नर तथा अन्य नियुक्त अधिकारी उपनिवेशियों की इच्छा के सामने झुकने लगे।

ब्रिटिश अनिच्छा से झुके

न्यूइंग्लैण्ड में कई वर्षों तक अन्य उपनिवेशों की अपेक्षा अधिक पूर्ण स्वशासन रहा। यदि धार्मिक यात्री वर्जिनिया में जाकर बसते तो वे लन्दन (वर्जिनिया) कम्पनी के अधिकार में रहते। परन्तु प्लीमथ के अपने उपनिवेश में वे समस्त प्रशासनिक अधिकार-क्षेत्र से बाहर थे। उन्होंने अपना राजनीतिक संगठन बनाने का निश्चय किया। 'मेफ़्लावर' जहाज़ पर ही उन्होंने एक शासन-प्रपत्र बनाया जो 'मेफ़्लावर-संविदा' कहलाया और उसमें उन्होंने स्वीकार किया कि 'हम अपनी सुव्यवस्था और सुरक्षा के लिए एक नागरिक संगठन में संगठित होते हैं; और इस शासन-प्रपत्र द्वारा ऐसे न्यायोचित तथा समान कानूनों, अध्यादेशों, अधिनियमों, संविधानों और पदों का निर्माण करते हैं जो उपनिवेश में सार्वजनिक हित के लिए सर्वाधिक संगत तथा सुविधाजनक होंगे।' यद्यपि स्वशासन की पद्धति स्थापित करने का धार्मिक यात्रियों के लिए कोई वैध आधार नहीं था, परन्तु उनके इस कार्य का किसी ने विरोध नहीं किया और संविदा के अनुसार प्लीमथ के

निवासी बिना किसी बाह्य हस्तक्षेप के अपने प्रशासन का संचालन अपने-आप ही करते रहे।

मैसाचूसेट्स बे कम्पनी, जिसे शासन का अधिकार दे दिया गया था, जब अपने अधिकार-पत्र के साथ अमेरिका आयी तब ऐसी ही परिस्थिति उत्पन्न हुई, और इस प्रकार उपनिवेश में रहने वाले लोगों के हाथ में सारे अधिकार आ गये। एक दर्जन के लगभग कम्पनी के आरम्भिक सदस्यों ने, जो अमेरिका आये थे, पहले मनमाना शासन करने की चेष्टा की। परन्तु शीघ्र ही अन्य उपनिवेशियों ने सार्वजनिक विषयों में भाग लेने के अधिकार की मांग की और यह स्पष्ट कर दिया कि अस्वीकृति उन्हें सामूहिक निर्गमन के लिए विवश कर देगी।

इस धमकी के सामने कम्पनी के सदस्य झुक गये और शासन का नियन्त्रण निर्वाचित प्रतिनिधियों के हाथ में चला गया। न्यूइंग्लैण्ड के न्यूहैवन, रोड आइलैण्ड और कनेक्टिकट नामक उत्तरवर्ती उपनिवेश यह दावा करके स्वशासन प्राप्त करने में सफल हो गये कि उन पर किसी का शासकीय अधिकार नहीं है, और इसके पश्चात् उन्होंने प्लीमथ के धार्मिक यात्रियों द्वारा स्थापित राजनीतिक व्यवस्था के अनुसार अपनी व्यवस्था निर्मित की।

उपनिवेशों को स्वशासन का अधिकार निर्विरोध नहीं प्राप्त हुआ। ब्रिटिश अधिकारियों ने मैसाचूसेट्स अधिकार-पत्र के विरुद्ध अदालत में कार्रवाई की और सन् १६८४ ई० में वह रद्द कर दिया गया। तत्पश्चात् न्यूइंग्लैण्ड के सभी उपनिवेश शाही नियन्त्रण में ले लिये गये और उनके लिए एक गवर्नर नियुक्त कर उसे सारे अधिकार दे दिये गये। उपनिवेशियों ने इसका दृढ़तापूर्वक विरोध किया, और इंग्लैण्ड की सन् १६८८ ई० की क्रान्ति के पश्चात्, जिसमें जेम्स द्वितीय पदच्युत कर दिया गया था उन्होंने राजा द्वारा नियुक्त गवर्नर को भगा दिया।

रोड आइलैण्ड और कनेक्टिकट (जिसमें उस समय न्यूहैवन भी सम्मिलित था) वस्तुत: अपनी लगभग स्वतन्त्र स्थिति को स्थायी रूप से पुन: स्थापित करने में सफल हो गये। शीघ्र ही मैसाचूसेट्स फिर शाही अधिकार में ले लिया गया, परन्तु इस बार जनता को शासन में कुछ अधिकार दिया गया। अन्य उपनिवेशों की भांति यह अधिकार बढ़ता गया जब तक जनता का पूर्ण शासन नहीं हो गया। अन्य स्थानों की भांति यहां भी वित्तीय व्यवस्था पर नियन्त्रण के अधिकार का सार्थक प्रयोग किया गया। फिर भी गवर्नरों को इस आशय के आदेश निरन्तर आते रहते थे कि उन्हें उन्हीं नीतियों का पालन करना चाहिए जो इंग्लैण्ड के हितों के व्यापक रूप से अनुकूल हों। इंग्लिश प्रिवी कौंसिल उपनिवेशों द्वारा बनाये कानूनों पर पुनर्विचार करने के अधिकार का प्रयोग करती रही, परन्तु उपनिवेशी इस प्रकार के प्रतिबन्धों से बचने में निपुण हो चुके थे।

सन् १६५१ ई० से ब्रिटेन की सरकार उपनिवेशियों के आर्थिक जीवन को नियन्त्रित करने के लिए समय-समय पर ऐसे कानून बनाती थी जिनमें कुछ तो अमेरिका के लिए लाभदायक थे, परन्तु अधिकांश इंग्लैण्ड के हित में थे। उपनिवेशी साधारणतया उन

कानूनों की उपेक्षा करते थे जिन्हें वे अधिक हानिकर समझते थे। यद्यपि ब्रिटिश कभी-कभी अपने कानूनों का और अच्छी तरह पालन कराने की चेष्टा करते थे, परन्तु उनके प्रयास वहुधा चिरस्थायी नहीं होते थे और 'श्रेयस्कर उपेक्षा' की नीति पर वापस आ जाते थे।

जिस वड़े परिमाण में उपनिवेश राजनीतिक स्वतन्त्रता का उपभोग कर रहे थे उसका सहज परिणाम यह हुआ कि वे ब्रिटेन से दूर होते गये और 'इंग्लिश' की अपेक्षा क्रमशः 'अमेरिकी' अधिक वन गये। इस प्रवृत्ति को अन्य राष्ट्रीय दलों और संस्कृतियों के सम्मिश्रण से, जो साथ-साथ हो रहा था, और अधिक वल मिला।

यह प्रक्रिया किस प्रकार चलती थी और किस प्रकार इसने एक नये राष्ट्र की नींव डाली, इसका विस्तृत वर्णन सन् १७८२ ई० में फ्रान्सीसी खेतिहर जे० हेक्टर सेंट जॉन क्रेवकोअर ने किया है : "तो फिर अमेरिकी नाम का यह नया मनुष्य क्या है ?" यह प्रश्न अपने "एक अमेरिकी किसान के पत्र" (लेटर्स फ्राम ऐन अमेरिकन फार्मर) में उठाया। "वह या तो यूरोपीय है या किसी यूरोपीय का वंशज है, इसलिए उसके रक्त में ऐसा विचित्र सम्मिश्रण है जो आपको अन्य किसी देश में नहीं मिल सकता। मैं आपको एक ऐसा परिवार वतला सकता हूँ जिसका पितामह एक अंग्रेज़ था, उसकी पत्नी डच थी, उसके पुत्र ने एक फ्रान्सीसी स्त्री से विवाह किया था, और उसके वर्तमान चार पुत्रों की चारों पत्नियां भिन्न-भिन्न राष्ट्रों की हैं। अमेरिकी वह है जिसने अपनी सारी पूर्व धारणाओं, रीति-रिवाजों को त्याग कर जिस नये जीवन को अपनाया है, जिस प्रकार नयी सरकार की आज्ञा का पालन करता है, और जिस नये पद पर वह आसीन है, उनसे ही नवीन धारणाओं और रीति-रिवाजों को प्राप्त करता है।"

स्वतन्त्रता-संग्राम

"हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं कि सभी मनुष्य समान रचे गये हैं, वे अपने स्रष्टा द्वारा कुछ अनपहरणीय अधिकारों से विभूषित किये गये हैं, जिनमें जीवन, स्वाधीनता और सुख की प्राप्ति सम्मिलित है।"

स्वतन्त्रता की घोषणा–४ जुलाई, १७७६ ई०

संयुक्त राज्य अमेरिका के द्वितीय राष्ट्रपति जॉन ऐडम्स ने घोषित किया था कि अमेरिकी क्रान्ति का आरम्भ वस्तुत: सन् १६२० ई० में ही हो गया था। उन्होंने कहा था, 'युद्ध आरम्भ होने के पहले ही क्रान्ति हो चुकी थी। क्रान्ति जनता के मस्तिष्क और हृदय में थी।' उन्होंने यह भी कहा था कि जिन सिद्धांतों और भावनाओं से प्रेरित होकर अमेरिकियों ने विद्रोह किया था "उनका सिलसिला दो सौ वर्ष पूर्व से जोड़ा जाना चाहिए और देश के इतिहास में उस समय से उनको ढूंढना चाहिए जब अमेरिका में पहले बागान स्थापित हुए थे।"

परन्तु व्यावहारिक रूप में इंग्लैण्ड और अमेरिका के रास्ते सन् १७६३ ई० से अलग होने आरम्भ हुए थे, जबकि जेम्सटाउन (वर्जिनिया) में पहला स्थायी उपनिवेश स्थापित हुए लगभग डेढ़ सौ वर्ष से भी अधिक समय बीत चुका था। उपनिवेशों की आर्थिक शक्ति और सांस्कृतिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण विकास हो चुका था और प्राय: सभी उपनिवेश वर्षों से स्वशासित थे। उनकी सम्मिलित जनसंख्या अब १५ लाख से भी अधिक हो गयी थी, जो सन् १७०० ई० की जनसंख्या की छ: गुनी थी।

परन्तु जनसंख्या में वृद्धि से कहीं अधिक महत्वपूर्ण और अर्थपूर्ण उपनिवेशों का भौतिक विकास सिद्ध हुआ। १८वीं शताब्दी में यूरोपीय आप्रवासियों की बाढ़ से कार्यक्षेत्र का निरन्तर प्रसार होता गया और चूंकि समुद्र-तट की अच्छी भूमि पहले ही से घिर चुकी थी, इसलिए नये उपनिवेशियों को नदियों के मुहानों से परे, भीतर की ओर जाना पड़ा। व्यापारियों ने भीतर के प्रदेशों की खोज की, वहां से साधन-सम्पन्न घाटियों की कहानियां लाये, और किसानों को परिवार-सहित इन निर्जन प्रदेशों की ओर जाने के लिए प्रेरित किया। यद्यपि उनकी कठिनाइयां असाधारण थीं, फिर भी अधीर उपनिवेशी आते रहे और सन् १७३० के दशक में सीमान्तवासियों को शेनन्डोआ घाटी में प्रवेश आरम्भ हो गया था।

सन् १७६३ ई० तक ग्रेट ब्रिटेन ने अपने उपनिवेशों के लिए कोई निश्चित नीति नहीं निर्धारित की थी। उसका मुख्य सिद्धान्त निश्चित रूप से व्यापारिक था, जिसके अनुसार उपनिवेशों को चाहिए कि वे मातृ-देश को कच्चा माल देते रहें और तैयार माल में उससे स्पर्धा न करें। परन्तु इस नीति को कार्यान्वित करने में ढिलाई हुई और उपनिवेशों ने अपने आपको कभी भी ब्रिटेन का तावेदार नहीं समझा। बल्कि वे अपने आपको इंग्लैण्ड की ही भांति, राष्ट्रमण्डल अथवा राज्य समझते थे और लन्दन के अधिकारियों के साथ उनका सम्बन्ध बहुत शिथिल था।

समय-समय पर इंग्लैण्ड में भावनाओं को उकसाया जाता था और पार्लियामेण्ट (संसद) अथवा राजा द्वारा उपनिवेशों के आर्थिक क्रिया-कलापों तथा प्रशासनों को इंग्लैण्ड की इच्छा और उसके हितों के अधीन रखने का प्रयत्न किया जाता था। उपनिवेशों में से अधिकांश इन प्रयत्नों के विरुद्ध थे। दोनों के बीच विशाल महासागर की दूरी ने उपनिवेशियों के मन में प्रतिशोध का जो संभावित भय हो सकता था उसे भी मिटा दिया।

इस दूरी के अतिरिक्त, आरम्भिक अमेरिका में जीवन का स्वरूप भी महत्वपूर्ण था। ऐसे देशों से निकल कर जहां स्थान सीमित था तथा घनी आवादी वाले नगर अनेक थे, उपनिवेशी एक ऐसे स्थान में आये थे जहां भूमि असीम जान पड़ती थी। ऐसे महाद्वीप में इन प्राकृतिक परिस्थितियों ने व्यक्ति का महत्व बढ़ा दिया।

सीमान्त : आत्मनिर्भरता का पोषक

उपनिवेशियों ने, जो अंग्रेज़ों की राजनीतिक स्वतन्त्रता के दीर्घ संघर्ष की परम्परा के उत्तराधिकारी थे, वर्जिनिया के प्रथम अधिकार-पत्र में स्वतन्त्रता की धारणाओं का समावेश किया। इसके अनुसार अंग्रेज़ उपनिवेशियों को सभी स्वतन्त्रताओं, मताधिकारों और उन्मुक्तियों का उसी प्रकार उपयोग करने का अधिकार था–'मानो वे इस हमारे इंग्लैण्ड के राज्य में ही जन्मे हों और रहते हों।' इस प्रकार उन्हें महाधिकार-पत्र (मैग्ना कार्टा) और सामान्य विधि (कॉमन ला) के सभी अधिकार प्राप्त थे।

आरम्भ में उपनिवेशी अपने परम्परागत अधिकारों की रक्षा करने में सफल रहे, क्योंकि राजा ने स्वेच्छया स्वीकार कर लिया था कि वे पार्लियामेण्ट के नियन्त्रण में नहीं थे। इसके अतिरिक्त, क्योंकि आगामी कई वर्षो तक इंग्लैण्ड के राजा इंग्लैण्ड में हो रहे उस महान संघर्ष में व्यस्त थे जिसकी परिणति प्यूरिटन क्रान्ति में हुई, इसलिए वे अपने संकल्प को प्रवर्त्तित नहीं कर सके। इसके पूर्व कि पार्लियामेण्ट अमेरिकी उपनिवेशों को साम्राज्यवादी नीति के अनुरूप ढालने की ओर ध्यान देती ये स्वयं शक्तिशाली और सम्पन्न हो चुके थे।

नये महाद्वीप पर पैर रखने के प्रथम वर्ष से ही उपनिवेशी अंग्रेज़ी कानून और संविधान के अनुसार कार्य करने लगे थे–उनकी विधान-सभा थी, प्रातिनिधिक शासन-पद्धति थी, और सामान्य विधि (कॉमन ला) द्वारा आश्वासित व्यक्तिगत अधिकारों को मान्यता थी। परन्तु विधि-निर्माण के प्रति उनका दृष्टिकोण अधिकाधिक अमेरिकी

होता गया और अंग्रेजी प्रथाओं और परम्पराओं पर कम-से-कम ध्यान दिया जाने लगा। फिर भी वास्तविक अंग्रेजी नियन्त्रण से उपनिवेशों को बिना संघर्ष के स्वतन्त्रता नहीं मिली। निर्वाचित विधान-सभाओं और राजा द्वारा नियुक्त गवर्नरों के बीच हुए संघर्षो से उपनिवेशों का इतिहास भरा पड़ा है।

फिर भी, उपनिवेशी बहुधा शाही गवर्नरों को शक्तिहीन बनाने में सफल हो जाते थे, क्योंकि सामान्यत: गवर्नरों को "विधान-सभा के अतिरिक्त अन्य कहीं से भी निर्वाह-व्यय नहीं मिल सकता था।" कभी-कभी गवर्नरों को यह आदेश दिया जाता था कि वे प्रभावशाली उपनिवेशियों को लाभदायक पद और भूमि-अनुदान दे कर उन्हें राजकीय योजनाओं का समर्थक बना लें। परन्तु बहुधा औपनिवेशिक अधिकारी ये सुविधाएं प्राप्त हो जाने के बावजूद सार्वजनिक आन्दोलन का समर्थन पूर्ववत् जम कर करने लगते थे।

गवर्नर तथा विधान-सभा के आपसी संघर्षों की पुनरावृत्ति अमेरिकी और अंग्रेज़ी स्वार्थों में अन्तर के प्रति उपनिवेशियों को अधिकाधिक सचेत करती रही। धीरे-धीरे विधान-सभाओं ने गवर्नरों और उनकी परिषदों (कौंसिलों) के कार्यो को अपने हाथ में ले लिया। ये परिषदें उन उपनिवेशियों में से चुन कर बनायी जाती थीं जो राजा के अधिकारों का चुपचाप समर्थन करने वाले थे। इस प्रकार औपनिवेशिक शासन का केन्द्र लन्दन से हट कर प्रान्तीय राजधानियों में आ गया। १८वीं शताब्दी के आठवें दशक के आरम्भ में अन्तिम रूप से उत्तरी अमेरिका से फ्रान्सीसियों के निकाले जाने के पश्चात् उपनिवेशों और मातृदेश के आपसी सम्बन्धों में भारी परिवर्तन लाने का एक प्रयत्न किया गया।

अंग्रेज-फ्रान्सीसी संघर्ष

जिस समय अंग्रेज अतलान्तिक के तटवर्ती क्षेत्र में खेत, बागान और नगर स्थापित करने में व्यस्त थे, उस समय फ़ान्सीसी पूर्वी कैनेडा में सेण्ट लारेंस नदी की घाटी में एक भिन्न प्रकार का उपनिवेश बसा रहे थे। उपनिवेशी कम, और अन्वेषक, धर्म-प्रचारक तथा समूर के व्यापारी अधिक भेज कर फ़ान्स ने मिसिसिपी नदी पर अधिकार कर लिया था और उत्तर-पूर्व में क्वेबेक से ले कर दक्षिण में न्यू आर्लियन्स तक दुर्गों और व्यापारिक चौकियों की एक पंक्ति बना कर एक विशाल अर्द्धचन्द्राकार साम्राज्य स्थापित कर लिया था। इस प्रकार उन्होंने अंग्रेज़ों को अपेलेशियन पहाड़ के पूर्व की तंग पट्टी तक ही सीमित कर दिया था।

अंग्रेज़ों ने इसे 'फ़ान्सीसियों का अनधिकार-प्रवेश' समझ कर उसका बहुत समय तक विरोध किया। सन् १६१३ ई० में ही फ़ान्सीसी और अंग्रेज़ी उपनिवेशों में स्थानीय संघर्ष आरम्भ हो गया था। अन्तत: उनमें संगठित युद्ध भी हुए, जो इंग्लैण्ड और फ़ान्स के व्यापक पारस्परिक संघर्ष के अमेरिकी प्रतिरूप थे। इस प्रकार सन् १६८९ ई० और १६९७ ई० के बीच यूरोप में लड़े गये 'पैलेटिनेट युद्ध' का अमेरिकी प्रतिरूप 'किंग विलियम का युद्ध' था। सन् १७०२ और १७१३ ई० के बीच यूरोप में लड़े गये 'स्पेन के

उत्तराधिकार-युद्ध' के सदृश अमेरिका का 'क्वीन एन का युद्ध' था। और सन् १७४४ और १७४८ ई० के बीच लड़े गये यूरोप के 'आस्ट्रिया के उत्तराधिकार-युद्ध' की भांति अमेरिका का 'किंग जार्ज का युद्ध' था। यद्यपि इन युद्धों से इंग्लैण्ड को कुछ लाभ हुआ, परन्तु साधारणतया ये संघर्ष अनिर्णयात्मक रहे और अमेरिकी महाद्वीप में फ़ान्स सशक्त बना रहा।

सन् १७५० के दशक में यह संघर्ष अपनी अन्तिम स्थिति में पहुंच गया। फ़ान्सीसियों ने सन् १७४८ ई० में एक्स-ला-शैपेल की सन्धि के पश्चात् मिसिसिपी घाटी पर अपना अधिकार और सुदृढ़ कर लिया। इसी समय ऐलेगनीज़ (पर्वतमाला) के पार अंग्रेज़ उपनिवेशियों के प्रत्यागमन का वेग बढ़ गया, जिसके फलस्वरूप एक ही क्षेत्र पर वास्तविक अधिकार जमाने की दौड़ को बढ़ावा मिला। सन् १७५४ ई० में एक सशस्त्र युद्ध हुआ जिसमें एक ओर २२ वर्षीय जॉर्ज वाशिंगटन के नेतृत्व में वर्जिनिया की नागरिक सेना थी और दूसरी ओर फ़ान्सीसी सैनिकों का दल। यह युद्ध 'फ्रेंच और इण्डियन युद्ध' के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें अंग्रेज और उनके रेड इण्डियन मित्र फ़ान्सीसियों और उनके रेड इण्डियन मित्रों से लड़ रहे थे। इस युद्ध से सदा के लिए यह निर्णय हो जाना था कि उत्तरी अमेरिका में फ्रान्सीसियों का प्रभुत्व रहेगा अथवा अंग्रेज़ों का।

अंग्रेज़ी उपनिवेशों में एकता और कार्यशीलता की आवश्यकता इससे अधिक कभी नहीं अनुभव की गयी थी। फ्रान्सीसियों ने केवल ब्रिटिश साम्राज्य को ही नहीं, अमेरिकी उपनिवेशों को भी संकट में डाल दिया था, क्योंकि फ्रान्स मिसिसिपी घाटी को अपने अधिकार में रख कर उनका पश्चिम की ओर प्रसार रोक सकता था। कैनेडा और लुइज़ियाना की फ्रान्सीसी सरकार की न केवल शक्ति बढ़ गयी थी, बल्कि रेड इण्डियनों में—यहां तक कि अंग्रेज़ों के परम्परागत मित्र इरोकी कबीले में भी—उसकी प्रतिष्ठा भी बढ़ गयी थी। रेड इण्डियनों के मामलों से सुपरिचित प्रत्येक अंग्रेज़ उपनिवेशी यह जानता था कि यदि कोई नया युद्ध हुआ तो घोर संकट से बचने के लिए कठोर उपायों का सहारा लेना पड़ेगा।

एकता की प्रथम उत्तेजना

इस परिस्थिति में रेड इण्डियनों के साथ बिगड़ते हुए सम्बन्ध की सूचना पा कर 'ब्रिटिश बोर्ड आफ ट्रेड' ने न्यूयॉर्क के गवर्नर तथा अन्य उपनिवेशों के कमिश्नरों को यह आदेश दिया कि वे सन्धि करने के लिए इरोकी सरदारों की एक सभा बुलाएं। जून १७५४ ई० में न्यूयॉर्क, पेनसिलवैनिया, मेरीलैण्ड और न्यूइंग्लैण्ड के उपनिवेशों के प्रतिनिधि इरोकियों से अल्बनी में मिले। रेड इण्डियनों ने, जो अपनी स्थिति से भीतर ही भीतर बहुत असन्तुष्ट थे, अपनी शिकायतें सामने रखीं और प्रतिनिधियों ने उचित उपाय किये जाने की संस्तुति की।

परन्तु अल्बनी की सभा रेड इण्डियनों की समस्या के समाधान के अपने मूल उद्देश्य से भी आगे बढ़ गयी। इसने घोषणा की कि अमेरिकी उपनिवेशों का एक संघ

"उनकी सुरक्षा के लिए नितान्त आवश्यक है," और उपनिवेशों के उपस्थित प्रतिनिधियों ने संघ की अल्बनी-योजना स्वीकृत की। इस योजना में, जिसका प्रारूप बेंजामिन फ्रैंकलिन द्वारा तैयार किया गया था, यह उपबन्ध था कि शाही अधिनियम के अधीन एक अध्यक्ष (प्रेसीडेंट) नियुक्त हो और वह विधान-सभाओं द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों की एक प्रमुख समिति के साथ काम करे। इस समिति में प्रत्येक उपनिवेश का प्रतिनिधित्व उसके द्वारा सार्वजनिक कोष में दी जाने वाली धनराशि के अनुपात में हो। पश्चिम में अंग्रेजों के सभी स्वार्थ–रेड इण्डियनों से सन्धियां, व्यापार, सुरक्षा और अधिवासन–सरकार के हाथ में हों। परन्तु किसी उपनिवेश ने भी फ्रैंकलिन की योजना को स्वीकार नहीं किया, क्योंकि कोई भी उपनिवेश कर लगाने के अधिकार अथवा पश्चिमी क्षेत्रों के विकास पर नियन्त्रण छोड़ने के लिए तैयार न था।

उपनिवेशों ने सब मिला कर युद्ध के लिए कोई सहायता नहीं दी। "उनमें राजा के प्रति कर्त्तव्य की भावना" को जगाने में सारी योजनाएं असफल रहीं। उपनिवेशियों को ऐसा लग रहा था कि यह युद्ध इंग्लैण्ड और फ़ान्स के बीच केवल साम्राज्य के लिए हो रहा है। जब ब्रिटिश सरकार को औपनिवेशिक युद्धों के लिए बड़ी संख्या में सैनिकों को भेजना पड़ा तो उपनिवेशियों को कोई अनुताप नहीं हुआ। न तो उन्हें इसका दुःख हुआ कि प्रान्तीय सेनाओं के बजाय ब्रिटिश सैनिकों (रेड कोट) की विजय हुई, और न उन्होंने 'शत्रु पक्ष के साथ व्यापार' घटाने की कोई आवश्यकता समझी।

उपनिवेशियों की हार्दिक सहायता के अभाव तथा आरम्भ में अनेक सैनिक पराजयों के बावजूद, अपनी अच्छी सामरिक स्थिति और योग्य नेतृत्व के कारण अन्त में इंग्लैण्ड को पूर्ण विजय प्राप्त हुई। आठ वर्ष के संघर्ष के पश्चात् कैनेडा और मिसिसिपी घाटी के उत्तरी भाग पर अन्ततः अधिकार हो गया और उत्तरी अमेरिका में फ़ान्सीसी साम्राज्य का स्वप्न लुप्त हो गया।

न केवल अमेरिका में, वरन् भारत तथा साधारणतया सम्पूर्ण औपनिवेशिक जगत में फ़ान्स पर विजय पाने के पश्चात् ब्रिटेन को एक ऐसी समस्या का सामना करना पड़ा जिसकी वह अब तक उपेक्षा करता रहा था। यह समस्या थी अपने साम्राज्य का शासन। अब यह आवश्यक हो गया था कि वह सुरक्षा, विभिन्न प्रदेशों और जातियों के भिन्न-भिन्न स्वार्थों के समन्वय, और साम्राज्य के शासन के व्यय के समानतर वितरण के के लिए अपने विशाल साम्राज्य को संगठित करे।

अकेले उत्तरी अमेरिका में ही समुद्र-पार का ब्रिटिश क्षेत्र दूने से अधिक हो गया था। अतलान्तिक समुद्र-तट की तंग पट्टी में अब कैनेडा का विस्तृत प्रदेश और मिसिसिपी नदी तथा ऐलेगनी पर्वत-श्रेणियों के बीच का क्षेत्र जुड़ गया था, जो स्वयं एक साम्राज्य था। पहले प्रोटेस्टेंट अंग्रेजों तथा आंग्ल भावापन्न अन्य यूरोपवासियों की ही आबादी थी, अब उसमें फ़ान्सीसी कैथलिक और बहुत-से अंशतः ईसाई बने रेड इण्डियन भी सम्मिलित हो गये। नये और पुराने प्रदेशों की सुरक्षा और शासन-व्यवस्था के लिए एक बड़ी धनराशि और अधिक कर्मचारियों की आवश्यकता थी। पुरानी "औपनिवेशिक पद्धति" स्पष्टतया अब अपर्याप्त थी। युद्ध की संकटमय अवस्था में भी–जिसमें उपनिवेशियों का अस्तित्व

ही संकट में पड़ जाता—पुरानी पद्धति उपनिवेशियों का सहयोग अथवा समर्थन प्राप्त करने में असफल रही। फिर शान्ति-काल में, जब किसी बाहरी संकट का भय नहीं था, उससे क्या आशा की जा सकती थी ?

उपनिवेशियों का प्रतिरोध

ब्रिटेन के लिए एक नयी साम्राज्य-नीति की आवश्यकता स्पष्ट थी। पर अमेरिका की परिस्थिति किसी परिवर्तन के लिए अनुकूल नहीं थी। बड़ी मात्रा में स्वतन्त्रता के अभ्यस्त उपनिवेश, विशेषकर उस समय जब फ्रान्सीसी भय समाप्त हो गया था, अपनी स्वतन्त्रता बढ़ाना ही चाहते थे, घटाना नहीं। नयी व्यवस्था को कार्यान्वित करने और नियन्त्रण को कसने के लिए इंग्लैण्ड के राजनीतिज्ञों को स्वशासन में अभ्यस्त, और बाह्य हस्तक्षेप के प्रति असहिष्णु उपनिवेशियों का सामना करना पड़ा। यह एक लम्बे संघर्ष की शुरुआत थी।

सबसे पहले अंग्रेज़ों ने आभ्यन्तर प्रदेशों के संगठन का प्रयास किया। कैनेडा और ओहायो घाटी की विजय ने ऐसी नीति की आवश्यकता उत्पन्न की जो फ़ान्सीसी तथा आदिवासी निवासियों में अलगाव-दुराव की भावना न भर दे। यहां राजा का उपनिवेशों के स्वार्थ से संघर्ष हो गया, क्योंकि अपनी तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या के साथ सभी उपनिवेश नव-विजित क्षेत्रों से स्वयं लाभ उठाने पर तुले हुए थे। नयी भूमि की आवश्यकता के कारण विभिन्न उपनिवेशों ने यह दावा किया कि पश्चिम में मिसिसिपी नदी तक अपनी सीमा बढ़ाने का उन्हें अधिकार है।

ब्रिटिश सरकार को यह भय था कि प्रवासी किसानों के नये क्षेत्रों में जाकर बसने से रेड इण्डियनों के साथ कहीं युद्धों का सिलसिला न आरम्भ हो जाये, इसलिए उसका विचार था कि रेड इण्डियनों को शान्त होने के लिए समय देना चाहिए और उपनिवेशियों के मध्य भूमि का वितरण धीरे-धीरे होना चाहिए। सन् १७६३ ई० में एक शाही घोषणा द्वारा ऐलेगनीज़ फ्लोरिडा, मिसिसिपी, और क्वेवेक के बीच का सारा प्रदेश रेड इण्डियनों के लिए सुरक्षित कर दिया गया। इस प्रकार राजा द्वारा तेरह उपनिवेशों के पश्चिमी भूमि पर के सारे अधिकार, और उनके पश्चिम की ओर प्रसार को समाप्त कर देने का प्रयत्न किया गया। यद्यपि यह कभी सफलतापूर्वक कार्यान्वित नहीं हुआ, परन्तु उपनिवेशियों की दृष्टि में यह कार्यवाही उनके आवश्यकतानुसार पश्चिमी भूमि पर अधिकार करने और उसका उपभोग करने के सर्वाधिक प्राथमिक अधिकार की मनमानी अवहेलना थी।

इससे भी अधिक गम्भीर परिणाम ब्रिटिश सरकार की नयी आर्थिक नीति के हुए। बढ़ते हुए साम्राज्य की सहायता के लिए अधिक धन की आवश्यकता थी। यदि इंग्लैण्ड के करदाता यह सारा धन देने में असमर्थ थे, तो उपनिवेशों से ही सहायता ली जा सकती थी। परन्तु उपनिवेशों से कर उगाहने का कार्य सशक्त केन्द्रीय शासन द्वारा ही हो सकता था, और वह औपनिवेशिक स्वशासन को सीमित करके ही किया जा सकता था।

नयी व्यवस्था आरम्भ करने में पहला कदम १७६४ ई० का 'शुगर ऐक्ट' था। बिना व्यापार को नियन्त्रित किये आय बढ़ाने के उद्देश्य से ही यह बनाया गया था। वास्तव में यह सन् १७३३ ई० के उस 'मोलेसेज ऐक्ट' (शीरा कानून) की जगह बनाया गया था, जिसने ग़ैर-अंग्रेज़ी क्षेत्रों से रम (शीरा से बननेवाली शराब) तथा शीरे के आयात पर निषेधात्मक उद्देश्य से भारी कर लगा दिया था। संशोधित 'शुगर ऐक्ट' ने विदेशी रम का आयात बन्द कर दिया, सभी स्थानों से आये शीरे पर साधारण कर लगा दिया, और शराबों, रेशम, काफ़ी तथा अनेक विलास-सामग्रियों पर भी कर लगा दिया। इसे कार्यान्वित करने के लिए सीमा-शुल्क अधिकारियों को यह आदेश दिया गया कि वे अधिक दृढ़ता और तत्परता से कार्य करें। अमेरिकी समुद्र में स्थित ब्रिटिश युद्धपोतों को यह आदेश दिया गया कि वे तस्कर-व्यापारियों को पकड़ लें; और शाही अधिकारियों को 'रिट्स आफ असिस्टेंस' (विस्तृत अधिकारों के वारंट) द्वारा संदिग्ध स्थानों की तलाशी लेने का अधिकार दे दिया गया।

बिना प्रतिनिधित्व के कर लगाने की समस्या

न्यूइंग्लैण्ड के व्यापारियों में नये कर लगाने से उतना असन्तोष नहीं फैला जितना इस बात से कि उनको लागू करने के लिए प्रभावशाली कदम उठाये जा रहे थे। यह बात उनके लिए सर्वथा नवीन थी। एक पीढ़ी से भी अधिक समय से न्यूइंग्लैण्ड वाले अपने रम की भट्ठियों के लिए अधिकांश शीरा फ़ान्सीसी और डच पश्चिमी द्वीप-समूह से बिना किसी आयात कर के मंगाते थे। अब उनका यह तर्क था कि उनके लिए अल्प कर देना भी अनर्थकारी सिद्ध होगा।

ऐसा हुआ कि शुगर ऐक्ट की प्रस्तावना ने उपनिवेशियों को अपना असंतोष वैधानिक आधार पर युक्तिसंगत ढंग से प्रस्तुत करने का अवसर दिया। व्यापार को नियन्त्रित करने के लिए औपनिवेशिक वस्तुओं पर कर लगाने का पार्लियामेण्ट का अधिकार सिद्धान्ततः बहुत दिनों से मान लिया गया था, पर उसका सदैव पालन नहीं होता था। परन्तु सन् १७६४ ई० के राजस्व अधिनियम (रेवेन्यू ऐक्ट) में घोषित 'राज्य की आय को बढ़ाने के लिए' कर लगाने का अधिकार नया था और इसलिए विवादास्पद भी था।

यह वैधानिक प्रश्न उस बड़े विवाद का समारम्भ था जिसने अन्ततः अमेरिकी उपनिवेशों को इंग्लैण्ड से अलग कर दिया। मैसाचूसेट्स के उग्र वक्ता जेम्स ओटिस ने लिखा, 'पार्लियामेण्ट के इस एक कानून ने इतने अधिक आदमियों को छः महीने में इतना अधिक सोचने के लिए विवश कर दिया है जितना उन्होंने अपने जीवन-भर में नहीं सोचा होगा।' व्यापारियों, विधान-सभाओं तथा नगर-सभाओं ने इस कानून को असामयिक बता कर उसका विरोध किया, और सैमुएल ऐडम्स जैसे उपनिवेशी अभिवक्ताओं को इसकी प्रस्तावना में 'बिना प्रतिनिधित्व के कर लगाने' का पहला आभास मिला। इस नारे ने इंग्लैण्ड के विरुद्ध अमेरिकी देशभक्तों के आन्दोलन की ओर बहुतों को आकृष्ट किया।

उसी वर्ष बाद में पार्लियामेण्ट ने एक मुद्रा-कानून (करेंसी ऐक्ट) बनाया, ताकि 'राजा के किसी भी उपनिवेश में भविष्य में जारी की गयी कोई हुंडी वैध न मानी जाये।' चूंकि उपनिवेशों का व्यापार घाटे में चल रहा था और उनको दुर्लभ मुद्रा की निरन्तर कमी रहती थी, इसलिए इस नये कानून ने उनका आर्थिक बोझ और बढ़ा दिया। सन् १७६५ ई० में 'बिलेटिंग ऐक्ट' बना, जिसके अनुसार उपनिवेशों को आदेश दिया गया कि वे राजकीय सैनिकों को निवास-स्थान और आवश्यक सामग्री दें। उपनिवेशियों के दृष्टिकोण से यह कानून भी उतना ही आपत्तिजनक था।

इन कानूनों का विरोध तो प्रबल था ही, नयी औपनिवेशिक पद्धति को आरम्भ करने के लिए जो अन्तिम क़ानून बनाया गया उसने तुरन्त इस विरोध को संगठित रूप दे दिया। इतिहास में 'स्टैम्प ऐक्ट' के नाम से प्रसिद्ध इस कानून के द्वारा समाचार-पत्रों, कड़ी आलोचनाओं वाली पत्रिकाओं, पुस्तिकाओं, लाइसेंसों, पट्टों तथा कानूनी दस्तावेज़ों पर रसीदी टिकट लगाना आवश्यक हो गया। अमेरिकी अभिकर्ताओं द्वारा एकत्रित इस आय का इस्तेमाल केवल उपनिवेशों के परिरक्षण, अभिरक्षण, तथा सुरक्षा के लिए ही किया जाने वाला था। इसका बोझ सब पर समान रूप से और इतना हल्का डाला गया था कि यह पार्लियामेण्ट में बिना बहस के पारित हो गया।

परन्तु तेरहों उपनिवेशों में इसकी प्रतिक्रिया इतनी तीव्र हुई कि सर्वत्र मध्यमार्गी आश्चर्यचकित रह गये। इस कानून ने उत्तर, दक्षिण, पूर्व, और पश्चिम के सभी पत्रकारों, अधिवक्ताओं, पादरियों, व्यापारियों और व्यवसायियों आदि जनता के सबसे शक्तिशाली और वाचाल वर्ग का विरोध उत्तेजित किया, क्योंकि इसका बोझ देश के सभी वर्गों पर समान रूप से पड़ा था। शीघ्र ही बड़े-बड़े व्यापारी, जिनकी प्रत्येक बिल्टियों पर कर लगता था, विरोध के लिए संगठित हो गये और उन्होंने 'आयात बहिष्कार-संघ' (नॉन-इम्पोर्टेशन एसोसियेशन) बनाया।

सन् १७६५ की गर्मियों में 'मातृदेश' से व्यापार तेज़ी से गिरने लगा। प्रमुख व्यक्तियों ने 'सन्स ऑफ़ लिबर्टी' (स्वतन्त्रता के पुत्रों) का दल संगठित किया और राजनीतिक विरोध शीघ्र विद्रोह के रूप में भड़क उठा। उत्तेजित भीड़ बॉस्टन की गलियों का चक्कर काटने लगी। मैसाचूसेट्स से दक्षिणी कैरोलाइना तक यह कानून रद्द कर दिया गया, और उत्तेजित भीड़ ने, जो अभागे अभिकर्ताओं को अपने पद से त्यागपत्र देने के लिए विवश कर रही थी, घृणित रसीदी टिकटों को नष्ट कर दिया।

पैट्रिक हेनरी की प्रेरणा से वर्जिनिया विधान-सभा ने भर्त्सना के कई प्रस्ताव पारित किये, जिनमें प्रतिनिधित्व के बिना कर लगाने को उपनिवेशों की स्वतन्त्रता के लिए ख़तरनाक कहा गया। कुछ दिनों बाद मैसाचूसेट्स की विधान-सभा ने सभी उपनिवेशों को स्टैम्प ऐक्ट की विभीषिका पर विचार करने के लिए न्यूयॉर्क में होने वाली एक सभा के लिए अपने प्रतिनिधि नियुक्त करने को निमन्त्रित किया। यह सभा अक्तूबर सन् १७६५ ई० में हुई। यह उपनिवेशों के प्रतिनिधियों की पहली सभा थी, जो अमेरिकी उपक्रमण पर बुलाई गई थी। नौ उपनिवेशों के सत्ताईस व्यक्तियों ने अवसर से लाभ उठा कर अमेरिकी मामलों में पार्लियामेण्ट के हस्तक्षेप के विरुद्ध उपनिवेशों के लोकमत



प्लीमथ, १६२१। पहली फसल के लिए ईश्वर को धन्यवाद देने के तीन दिन के उत्सव में रेड इण्डियनों की साझेदारी।

नये विश्व में जीवन-संघर्ष उत्सवों के लिए बहुत कम समय देता था, परन्तु आरम्भिक वर्षों के कलाकार और बहुत-से परवर्ती कलाकारों ने नये देश की प्रफुल्लता, कठोर श्रम तथा निर्णय के क्षणों का इतिहास सर्जित किया है।

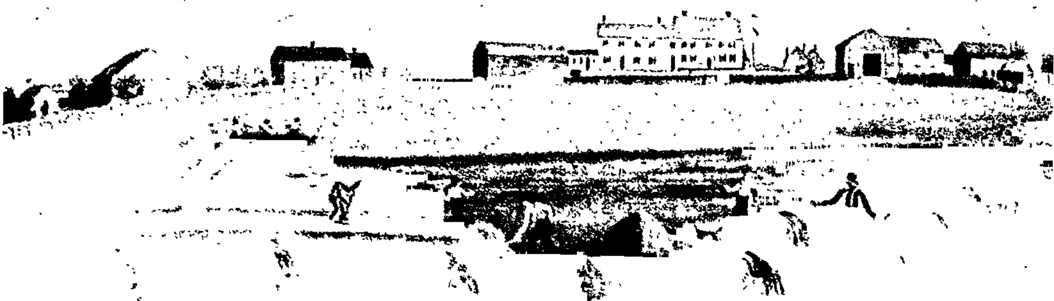
शिक्षा के विशिष्ट प्रेमी प्यूरिटनों ने केवल १६ वर्ष बाद ही हार्वर्ड कालेज की स्थापना कर दी। १७२६ ई० में वह कैसा था यह नीचे देखिए। ऊपर : बेंजामिन वेस्ट का चित्र जिसमें विलियम पेन १६८३ की सन्धि पर मुहर लगा रहा है। इस सन्धि के कारण रेड इण्डियन और उपनिवेशी शान्ति और परस्पर आदर के वातावरण में फले फूले।



"हमारा जीवन, हमारा भाग्य, और हमारी प्रतिष्ठा . . ." स्वतन्त्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर के ऐतिहासिक दृश्य का जॉन ट्रम्बुल द्वारा यथातथ्य चित्रण। क्रान्ति की भावना से अनुप्राणित न्यूयॉर्क के लोगों ने किंग जॉर्ज की मूर्ति को—गलाकर उसकी गोली बनाने के उद्देश्य से—गिरा कर अपनी भावी स्वतन्त्रता का उत्सव मनाया।

वियर संघर्ष की एक आरम्भिक घटना को स्मरणीय वना देता है । पहले से ही उत्तेजित वॉस्टन मे अंग्रेज़ो ने वर्फ़ के गोलो
क की गोलियों से उत्तर दिया, जो वॉस्टन का प्रसिद्ध हत्याकाण्ड कहलाया । ट्रम्वुल द्वारा चित्रित, आत्मसमर्पणकारी
कार्नवालिस का चित्र, जो आत्मसमर्पण की अनभ्यस्त भूमिका में उसके गर्व और मानमर्दन को प्रतिविम्वित करता है ।





फसल काटने का काम शीघ्र समाप्त करने और कभी-कभी पाले से वचने के लिए, पडोसी मिल-जुल कर काम करते थे। नृत्य आरम्भिक अमेरिका के सीमित मनोरंजनों में से एक था। यूरोपीय औपचारिक ढंग के नृत्य थे तो खलिहान के 'रील' और 'स्क्वायर' नृत्य भी प्रचलित थे, जो बहुधा फ़सल-काटने जैसे सामूहिक कृत्यों के वाद आयोजित किये जाते थे।

को संगठित किया। काफी वाद-विवाद के पश्चात् इस सभा ने कई प्रस्ताव पारित किये, जिनमें दृढ़तापूर्वक कहा गया कि "उनकी अपनी-अपनी विधान-सभाओं के अतिरिक्त उन पर कभी किसी ने न कोई कर लगाया है और न संविधान के अनुसार उन पर लगाया जा सकता है।" तथा यह भी कि 'स्टैम्प ऐक्ट' की "प्रवृत्ति स्पष्टत: उपनिवेशियों के अधिकारों और स्वतन्त्रताओं का हनन करने की है।"

कर-विवाद शान्त हुआ

इस प्रकार उपजी यह समस्या प्रतिनिधित्व के प्रश्न पर केन्द्रित हुई। उपनिवेशियों का मत था कि जब तक वे स्वयं हाउस ऑफ़ कॉमन्स के सदस्य नहीं चुनते, तब तक उनके लिए यह स्वीकार करना असम्भव था कि पार्लियामेण्ट में उनका प्रतिनिधित्व है। यह मत 'अप्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व' के रूढ़िवादी इंग्लिश सिद्धान्त के विरुद्ध था, जो स्थान की अपेक्षा वर्गों और स्वार्थों के प्रतिनिधित्व पर आधारित था।

अधिकांश ब्रिटिश अधिकारियों का मत था कि पार्लियामेण्ट साम्राज्य की एक संस्था है, जिसको उपनिवेशों का प्रतिनिधित्व करने और उन पर शासन करने का उतना ही अधिकार है जितना स्वदेश पर। वह मैसाचूसेट्स के लिए उसी प्रकार कानून बना सकती है जिस प्रकार इंग्लैण्ड में स्थित वर्कशायर के लिए।

अमेरिकी नेताओं का कहना था कि 'साम्राज्य' की कोई पार्लियामेण्ट है ही नहीं, उनका एकमात्र वैधानिक सम्बन्ध राजा से है। समुद्र-पार उपनिवेश बसाने की अनुमति राजा ने दी थी और उसने ही उनके लिए वहां शासन-व्यवस्था का प्रबन्ध किया था। वे इस बात से सहमत थे कि इंग्लैण्ड का शासक मैसाचूसेट्स का भी शासक है, परन्तु वे इस बात पर भी दृढ़ थे कि इंग्लिश पार्लियामेण्ट को मैसाचूसेट्स के लिए कानून बनाने का उतना ही अधिकार है जितना मैसाचूसेट्स-विधान-सभा को इंग्लैण्ड के लिए कानून बनाने का अधिकार है।

ब्रिटिश पार्लियामेण्ट उपनिवेशियों की इन युक्तियों को मानने को तैयार नहीं थी, तथापि अमेरिकी बहिष्कार के प्रभाव का अनुभव कर ब्रिटिश व्यापारियों ने कानून रद्द करने के आन्दोलन में सहयोग दिया, और सन् १७६६ ई० में पार्लियामेण्ट ने 'स्टैम्प ऐक्ट' का निरस्तीकरण तथा शुगर ऐक्ट में संशोधन मान लिया। उपनिवेशों ने खुशियां मनायीं। उपनिवेशी व्यापारियों ने आयात-बहिष्कार समझौता रद्द कर दिया, 'स्वतन्त्रता के पुत्र' (सन्स ऑफ़ लिबर्टी) शान्त हो गये, व्यापार पुन: आरम्भ हो गया तथा शान्ति समीप दीखने लगी।

परन्तु यह विश्राम मात्र था। सन् १७६७ ई० में फिर कुछ नये कानून बनाये गये, जिन्होंने झगड़े के सभी तत्वों को फिर से भड़का दिया। ब्रिटिश वित्तमन्त्री (चांसलर ऑफ एक्सचेकर) चार्ल्स टाउनशेण्ड को नयी वित्तीय योजना बनाने का कार्य सौंपा गया। अमेरिकी व्यापार पर लगे करों की वसूली अधिक चुस्ती से करके ब्रिटिश करों को घटाने के उद्देश्य से उसने तट-करों का शासन कठोर करने के साथ-साथ ब्रिटेन से उपनिवेशों को जाने वाले कागज़, कांच, सीसे और चाय पर लगा दिये।

इसका उद्देश्य यह था कि बढ़ी हुई आय का एक भाग अमेरिकी उपनिवेशों को शाही गवर्नरों, जजों, सीमा-शुल्क अधिकारियों और अमेरिका में तैनात ब्रिटिश सैनिकों पर खर्च किया जायेगा। टाउनशेण्ड द्वारा सुझाये गये एक अन्य कानून ने उपनिवेशों के उच्च न्यायालयों को विस्तृत अधिकारों के वारण्ट (रिट्स ऑफ़ असिस्टैंस) जारी करने का अधिकार दिया। इस प्रकार जिन सामान्य तलाशी-वारण्टों से उपनिवेशी घृणा करते थे उन्हें विशिष्ट वैधता प्राप्त हो गयी।

टाउनशेण्ड-शुल्क-प्रस्तावों के कानून बनने के पश्चात् जो आन्दोलन खड़ा हुआ वह उतना उग्र नहीं था जितना 'स्टैम्प ऐक्ट' विरोधी आन्दोलन था, परन्तु फिर भी यह प्रबल था। व्यापारियों ने फिर से आयात-बहिष्कार समझौते आरम्भ किये। पुरुष हाथ-कते कपड़े पहनने लगे, स्त्रियों ने चाय का अनुकल्प ढूंढ लिया। विद्यार्थियों ने उपनिवेशों में बना कागज़ इस्तेमाल किया। मकान बिना पुते रह गये। बॉस्टन के व्यापारी किसी भी प्रकार के हस्तक्षेप से बहुत चिढ़ते थे। वहां नये कानून लागू करने से हिंसा भड़क उठी। जब सीमा-शुल्क अधिकारियों ने कर वसूलना शुरू किया तो जनता उन पर पिल पड़ी और उन्हें पीटा। इस कारण सीमा-शुल्क आयुक्तों के रक्षार्थ वहां दो सैनिक टुकड़ियां भेजी गयीं।

बॉस्टन में ब्रिटिश सैनिकों की उपस्थिति उपद्रव के लिए एक स्थायी आमन्त्रण बन गयी। अठारह महीने के असन्तोष के पश्चात् ५ मार्च, १७७० ई० को नागरिकों और सैनिकों का आपसी विरोध भड़क उठा। लाल कोट-धारी ब्रिटिश सैनिकों पर बर्फ के गोले फेंकने का अहानिकर खिलवाड़ बढ़ते-बढ़ते भीड़ द्वारा आक्रमण में बदल गया। किसी ने गोली चलाने की आज्ञा दे दी। तीन बॉस्टनवासी सदा के लिए बर्फ में सो गये। उपनिवेश के उपद्रवियों को इंग्लैण्ड के विरुद्ध भड़काने वाले आन्दोलन में इससे बहुमूल्य सहयोग मिला। इस घटना को 'बॉस्टन हत्याकाण्ड' की संज्ञा दे कर इसे नाटकीय ढंग से ब्रिटिश हृदयहीनता और नृशंसता के प्रमाण रूप में चित्रित किया गया, जिसका बहुत अनुकूल प्रभाव पड़ा।

ऐसा विरोध देखकर सन् १७७० ई० में पार्लियामेण्ट ने कौशलपूर्वक झुकना ही उचित समझा और चाय के अतिरिक्त अन्य सभी वस्तुओं पर से टाउनशेण्ड-शुल्क हटा दिया। "चाय-कर" भी इसलिए रखा गया कि जार्ज तृतीय के कथनानुसार अधिकार की रक्षा के लिए एक कर रहना ही चाहिए। अधिकांश उपनिवेशियों ने पार्लियामेण्ट के इस कार्य को वस्तुत: 'शिकायतों का निवारण' समझा और इंग्लैण्ड के विरुद्ध आन्दोलन प्राय: शान्त हो गया। 'अंग्रेज़ी चाय' पर रोक लगी रही, परन्तु इस विषय में विशेष सतर्कता नहीं रही।

शाही सम्बन्धों को सुधारने के लिए परिस्थिति साधारणतया अनुकूल थी। समृद्धि बढ़ रही थी और अधिकांश उपनिवेशी नेता सब कुछ भविष्य के भरोसे छोड़ देना चाहते थे। जहां शक्ति प्रदर्शन की नीति असफल रही वहां निष्क्रियता और उपेक्षा से काम होता दीखने लगा। उपनिवेशों में सर्वत्र प्रबल मध्यमार्गी तत्वों ने इस शान्तिमय विराम का स्वागत किया।

देशभक्तों का आन्दोलन : बॉस्टन 'टी-पार्टी'

तीन वर्ष के शान्तिमय मध्यान्तर में 'देशभक्तों' अथवा 'अतिवादियों' का एक छोटा-सा वर्ग विवाद को जीवित रखने के लिए अथक प्रयास करता रहा। उनका कहना था कि जब तक चाय-कर रहेगा, उपनिवेशों पर पार्लियामेण्ट के अधिकार का सिद्धान्त बना रहेगा। भविष्य में किसी भी समय इस सिद्धान्त का पूर्ण प्रयोग किया जा सकता है जो उपनिवेशों की स्वतन्त्रता के लिए घातक सिद्ध होगा।

देशभक्तों का सबसे प्रभावशाली नेता मैसाचूसेट्स का सैमुएल ऐडम्स उनका आदर्श प्रतिनिधि था, जिसके अथक परिश्रम का एक मात्र लक्ष्य स्वतन्त्रता था। हार्वर्ड कालेज से ग्रेजुएट होने के पश्चात् ही वह चिमनियों के इन्स्पेक्टर, टैक्स कलैक्टर, नगर-सभाओं के संचालक आदि किसी-न-किसी रूप में लोक-सेवा करता रहा। वह व्यापार में सदा असफल, पर राजनीति में चतुर और योग्य था। उसका कार्यक्षेत्र न्यूइंग्लैण्ड की नगर-सभा था।

ऐडम्स के उपकरण मनुष्य थे : उसका लक्ष्य साधारण जनता का विश्वास और सहयोग प्राप्त करना, समाज और राजनीति के प्रवरों के भय से उन्हें मुक्त करना, उनमें उनके अपने महत्व का आभास कराना, और उन्हें आन्दोलन के लिए जाग्रत करना था। इसके लिए उसने समाचार-पत्रों में लेख छपवाये और नगर-सभाओं में भाषण दिये और उपनिवेशियों की लोकतांत्रिक भावनाओं को उत्तेजित करने वाले संकल्पों को प्रस्तावित किया।

सन् १७७२ ई० में उसने बॉस्टन-नगर सभा को एक 'पत्र-व्यवहार समिति' चुनने के लिए प्रेरित किया जो उपनिवेशियों के अधिकारों और शिकायतों को स्पष्ट करे, सम्बन्ध में अन्य नगरों से सम्पर्क स्थापित करे, और उनसे उत्तर लिखकर भेजने की प्रार्थना करे। शीघ्र ही यह विचार फैल गया। प्रायः सभी उपनिवेशों में समितियां बन गयीं और शीघ्र ही उनसे प्रभावशाली क्रान्तिकारी संगठनों का एक आधार तैयार हो गया।

सन् १७७३ में ब्रिटेन ने ऐडम्स और उसके सहयोगियों के लिए एक अभीष्ट अवसर उपस्थित कर दिया। शक्तिशाली ईस्ट इण्डिया कम्पनी की आर्थिक दशा संकटापन्न हो गयी थी। उसने ब्रिटिश सरकार से प्रार्थना की और उसे उपनिवेशों को निर्यात होने वाली चाय का पूरा एकाधिकार दे दिया गया। टाउनशेण्ड के चाय-कर के कारण उपनिवेशियों ने कम्पनी की चाय का बहिष्कार किया था। सन् १७७० ई० के बाद चाय का अवैधानिक व्यापार इतना बढ़ गया था कि अमेरिका में खपने वाली चाय का लगभग ६० प्रतिशत विदेशों से बिना कर के आता था।

कम्पनी ने अपनी चाय प्रचलित दर से कम मूल्य पर अपने ही प्रतिनिधियों द्वारा बेचने का निश्चय किया और इस प्रकार एक साथ तस्कर व्यापार को लाभहीन बनाने और स्वतन्त्र उपनिवेशी व्यापारियों को समाप्त कर देने का प्रयास किया। न केवल चाय के व्यापार में हानि से, बल्कि एकाधिकार के सिद्धान्त के लागू होने से उत्तेजित होकर

उपनिवेशी व्यापारी देशभक्तों से मिल गये। प्राय: सभी उपनिवेशों में ईस्ट इण्डिया कम्पनी को अपनी योजना कार्यान्वित करने से रोकने के लिए उपाय किये गये।

बॉस्टन के अतिरिक्त अन्य बन्दरगाहों में कम्पनी के अभिकर्ताओं को त्यागपत्र देने के लिए राज़ी किया गया, और चाय के नये लदान या तो इंग्लैण्ड भेज दिये गये या गोदामों में जमा कर दिये गये। बॉस्टन में अभिकर्ताओं ने त्यागपत्र देने से इनकार कर दिया और विरोध की परवाह न कर गवर्नर की सहायता से आने वाले माल को उतारने की तैयारी कर ली गयी। देशभक्तों ने सैमुएल ऐडम्स के नेतृत्व में इसका उत्तर हिंसा से दिया। १६ दिसम्बर, १७७३ ई० की रात में लोगों का एक दल मोहाक आदिवासियों के वेश में लंगर डाले हुए तीन ब्रिटिश जहाजों पर चढ़ गया और उनमें लदी चाय को बॉस्टन के बन्दरगाह में फेंक दिया।

अंग्रेज़ों द्वारा उपनिवेश का दमन : औरों द्वारा इसकी सहायता

अब ब्रिटेन के सामने एक भारी समस्या थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने पार्लियामेण्ट के एक कानून का पालन किया था। यदि वह चाय के विनाश की उपेक्षा करती तो उसे विश्व के सामने यह मान लेना पड़ता कि उपनिवेशों पर उसका नियन्त्रण नहीं है। ब्रिटेन के अधिकारियों ने प्राय: एक स्वर से बॉस्टन की 'टी पार्टी' को एक बर्बरतापूर्ण कृत्य कह कर उसकी निन्दा की और उपद्रवी उपनिवेशों को वश में लाने के लिए वैध कार्रवाई करने का समर्थन किया।

पार्लियामेण्ट ने इसका उत्तर नये कानूनों से दिया, जिन्हें उपनिवेशी 'दमनकारी कानून' (कोअर्सिव ऐक्ट्स) कहते थे। पहला कानून 'बॉस्टन पोर्ट बिल' था, जिसने बॉस्टन के बन्दरगाह को उस समय तक के लिए बन्द कर दिया जब तक चाय का हर्जाना न दे दिया जाये। इसने नगर का जीवन ही संकटमय कर दिया था, क्योंकि इसको समुद्र से अलग करने का अर्थ इसका आर्थिक विनाश था। अन्य कानूनों ने राजा को मैसाचूसेट्स के सभासदों को, जो पहले उपनिवेशियों द्वारा चुने जाते थे, नियुक्त करने का अधिकार दिया, और जूरियों को बुलाने का अधिकार शेरिफ़ों को दिया गया जो गवर्नर के प्रतिनिधि थे। अभी तक जूरी उपनिवेश की नगर-सभाओं द्वारा चुने जाते थे। परन्तु अब नगर-सभाएं करने के लिए गवर्नर की अनुमति आवश्यक हो गयी, और जजों तथा शेरिफ़ों की नियुक्ति का अधिकार भी उसके हाथ में दे दिया गया। 'क्वार्टरिंग ऐक्ट' नामक एक कानून द्वारा ब्रिटिश सैनिकों के ठहरने के लिए समुचित स्थान की व्यवस्था का भार स्थानीय अधिकारियों के ऊपर डाल दिया गया।

लगभग उसी समय 'क्वेबेक ऐक्ट' लागू हुआ जिसके अनुसार क्वेबेक प्रान्त की सीमा विस्तृत कर दी गयी, और वहां के फ़्रान्सीसी निवासियों की धार्मिक स्वतन्त्रता और अपने परम्परागत कानून मानने के अधिकार को सुरक्षित कर दिया गया। उपनिवेशियों ने इस कानून का विरोध किया, क्योंकि पुराने अधिकार-पत्र के अनुसार पश्चिमी भूमि पर दिये गये अधिकारों की उपेक्षा कर इसने पश्चिम दिशा में उनकी

प्रगति में हस्तक्षेप की स्थिति उत्पन्न कर दी और उत्तर तथा उत्तर-पश्चिम में रोमन कैथलिकों द्वारा शासित प्रान्त से उन्हें घेर-सा दिया। यद्यपि 'क्वेबेक ऐक्ट' दण्ड देने के उद्देश्य से नहीं बनाया गया था, परन्तु अमेरिकियों ने इसे भी 'दमनकारी कानूनों' की ही श्रेणी में रखा, और ये सभी मिल कर 'पांच असह्य कानून' कहलाये। ये अधिनियम मैसाचूसेट्स को दबाने के लिए बनाये गये थे, परन्तु इसके विपरीत इनके कारण उसके अन्य पड़ोसी उपनिवेश उसकी सहायता के लिए आ गये।

वर्जिनिया के नागरिकों के सुझाव पर औपनिवेशिक प्रतिनिधियों को ५ सितम्बर, १७७४ को 'उपनिवेशों की वर्तमान शोचनीय अवस्था पर परामर्श करने के लिए' फ़िलाडेल्फ़िया में बुलाया गया। 'प्रथम महाद्वीपी कांग्रेस' (फर्स्ट कॉण्टिनेण्टल कांग्रेस) के नाम से प्रसिद्ध इस सभा के प्रतिनिधि प्रान्तीय काग्रेसों अथवा सार्वजनिक सम्मेलनों द्वारा चुने गये थे। जॉर्जिया के अतिरिक्त अन्य सभी उपनिवेशों ने कम-से-कम एक प्रतिनिधि भेजा। ५५ प्रतिनिधियों की संख्या विचारों की विविधता की दृष्टि से तो काफ़ी बड़ी थी, परन्तु वास्तविक विचार-विमर्श और प्रभावपूर्ण कार्यवाही के लिए अपर्याप्त थी।

उपनिवेशों के मतभेद ने इस सभा के सामने एक वास्तविक धर्म-संकट उपस्थित कर दिया: ब्रिटिश सरकार को प्रभावित कर सुविधाएं लेने के लिए दृढ़ मतैक्य का प्रदर्शन करना आवश्यक था और साथ ही उसे ऐसी अतिवादिता और 'स्वतन्त्रता की भावना' के प्रदर्शन से भी बचना था, जिससे नरम दल के अमेरिकी भयभीत हो जायें। एक सतर्क मूल भाषण के पश्चात् यह संकल्पित हुआ कि दमनकारी कानूनों का पालन कर्त्तव्य नहीं है। और अन्त में 'अधिकारों और शिकायतों की एक घोषणा' ग्रेट ब्रिटेन की जनता को सम्बोधित की गयी।

परन्तु कांग्रेस का सबसे महत्वपूर्ण कार्य एक संघ (एसोसिशन) का संगठन था, जिसने व्यापार-बहिष्कार को पुनर्जीवित किया, तथा सीमा-शुल्क की प्रविष्टियों की देख-रेख के लिए समझौतों का उल्लंघन करने वाले व्यापारियों के नाम-प्रकाशन तथा उनके आयात को ज़ब्त करने के लिए और मितव्ययिता, बचत तथा उद्योगों को प्रोत्साहित करने के लिए समितियों का संगठन किया।

संघ ने सर्वत्र अपना नेतृत्व जमा लिया और बची-खुची शाही सत्ता को समाप्त करने के लिए नये स्थानीय संगठनों को प्रेरणा दी। इन्होंने द्विविधाग्रस्त लोगों को डरा कर सार्वजनिक आन्दोलन का साथ देने के लिए विवश किया और विरोधियों को दण्ड दिया। उन्होंने सामरिक वस्तुओं का संग्रह और सैनिकों का संगठन आरम्भ कर दिया और जनमत को उन्होंने क्रान्तिकारी उत्साह से भर दिया।

लोगों में धीरे-धीरे जो फूट पड़ रही थी वह संघ की समितियों के कार्यों से और बढ़ गयी। अमेरिका के अधिकारों में ब्रिटिश हस्तक्षेप के विरोधी बहुत-से अमेरिकियों ने विचार-विमर्श और समझौते को समस्या का समुचित समाधान समझा। इस दल में अधिकारी-वर्ग के अधिकांश लोग राजा द्वारा नियुक्त अधिकारी थे, बहुत-से क्वेकर तथा अन्य धार्मिक सम्प्रदायों के अनुयायी थे जो हिंसा के विरोधी थे, बहुत-से व्यापारी (विशेषतया मध्यवर्ती उपनिवेशों के) थे, और कुछ दक्षिणी उपनिवेशों के असन्तुष्ट

किसान और सीमावर्ती लोग थे। इसके विपरीत देशभक्तों को न केवल कम सम्पन्न लोगों से, वल्कि व्यावसायिक वर्ग के वहुत-से सदस्यों से सहायता मिली, जिनमें विशेष कर वकील, दक्षिण के अधिकांश वड़े वागान-मालिक और व्यापारी थे।

जिस समय दमनकारी कानून वनने के बाद का घटना-क्रम देख कर राजभक्त, भयभीत और स्तब्ध थे, उसी समय राजा उनसे समझौता कर सकता था और सामयिक सुविधाएं दे कर उनकी स्थिति इस प्रकार सुदृढ़ कर सकता था कि देशभक्तों के लिए विरोधी आन्दोलन चलाना कठिन हो जाता। परन्तु जार्ज तृतीय की यह इच्छा न थी कि सुविधाएं दी जायें। सितम्बर १७७४ ई० में फ़िलाडेल्फ़िया के क्वेकरों का एक प्रार्थना-पत्र ठुकराते हुए उसने लिखा, 'अव पासा फेंका जा चुका है। उपनिवेश या तो आत्म-समर्पण करें अथवा जीत जायें।' इसने राजभक्तों (जो अव 'टोरी' कहे जाने लगे थे) के पैर के नीचे की ज़मीन खिसका दी।

वॉस्टन नगर में व्यापार का स्थान प्रायः पूर्ण रूप से राजनीतिक हलचल ने ले लिया था। वहां की सेना के सेनापति जनरल टॉमस गेज नामक एक ब्रिटिश सज्जन थे, जिनकी पत्नी का जन्म अमेरिका में हुआ था। नगर के एक प्रमुख देशभक्त डा० जोजेफ़ वारेन ने २० फरवरी, १७७५ को अपने एक अंग्रेज़ मित्र को लिखा, 'झगड़े को शान्तिपूर्ण ढंग से सुलझाने के लिए अव भी वहुत देर नहीं हुई है। परन्तु मेरा विचार है कि पार्लियामेण्ट के कानूनों को लागू करने के उद्देश्य से जनरल गेज यदि एक वार अपनी सेना इस प्रदेश में ले आयें तो ग्रेट ब्रिटेन को कम से कम न्यूइंग्लैण्ड के उपनिवेशों से, और यदि मैं गलती नहीं करता तो सम्पूर्ण अमेरिका से, विदा लेनी पड़ेगी। यदि राष्ट्र में कुछ भी वुद्धि वची हो तो ईश्वर से प्रार्थना है कि उसका तत्काल प्रयोग हो।'

जनरल गेज का कर्तव्य ही दमनकारी कानूनों को लागू करना था। उसे समाचार मिला कि मैसाचूसेट्स के देशभक्त वॉस्टन से ३२ किलोमीटर दूर भीतर की ओर स्थित कन्कॉर्ड नामक नगर में वारूद और युद्ध-सामग्री एकत्र कर रहे हैं। १८ अप्रैल, १७७५ की रात में उसने अपनी सेना की एक सशक्त टुकड़ी को यह युद्ध-सामग्री जव्त करने और सैमुएल ऐडम्स और जॉन हैन्कॉक को पकड़ने के लिए भेजा। इन दोनों को इंग्लैण्ड भेजने की आज्ञा दी गयी, जहां इन पर मृत्युदण्ड मुकदमा चलाने का निश्चय था। परन्तु पॉल रिवियर तथा दो अन्य सन्देशवाहकों ने पूरे देहात को सावधान कर दिया था।

रात-भर के अभियान के पश्चात् जव ब्रिटिश टुकड़ी लेक्सिंगटन नामक ग्राम में पहुंची तो उन्होंने प्रातःकाल के धुंधले प्रकाश में सामने के मैदान के पार ५० मिनटमैनों* (सशस्त्र उपनिवेशियों) को दृढ़तापूर्वक खड़ा पाया। क्षण-भर के लिए दोनों पक्ष झिझके, शोर मचा, और आज्ञाएं दी गयीं, और शोर-गुल के वीच एक गोली चली। दोनों तरफ़ से गोलियां चलने लगीं, और हरी घास पर अपनी आठ लाशें छोड़ कर अमेरिकी विखर गये। अमेरिकी स्वातन्त्र्य-युद्ध का प्रथम रक्तपात हो गया।

ब्रिटिश सैनिक कन्कॉर्ड की ओर वढ़े। नॉर्थ ब्रिज नामक स्थान पर 'युद्ध के लिए उद्यत किसानों ने गोली चलायी, जो संसार भर में सुनायी पड़ी।' अपना काम अंशतः पूरा कर

*मिनटमैन वे राष्ट्रीय सैनिक थे जो एक मिनट की सूचना पर तैयार हो जाते थे।

ब्रिटिश सैनिक वापस लौटने लगे। सड़क के किनारे-किनारे पत्थर की दीवारों, पहाड़ियों और मकानों के पीछे से, ग्रामों और खेतों से नागरिक-सैनिक ब्रिटिश सैनिकों के चमकीले लाल कोटों को निशाना बनाते रहे। जब यह थकी हुई टुकड़ी बॉस्टन में लड़खड़ाती हुई पहुंची तब तक इनकी उपनिवेशियों से तीन गुनी हानि हो चुकी थी।

कांग्रेस में स्वतन्त्रता पर वाद-विवाद

लेक्सिगटन और कन्कॉर्ड का समाचार एक स्थानीय समुदाय से दूसरे तक होता हुआ तेरहों उपनिवेशों में फैल गया। २० दिन के अन्दर-अन्दर इस समाचार ने मेन से ले कर जॉर्जिया तक अमेरिकी देशभक्ति की एक सार्वजनिक भावना जाग्रत कर दी।

लेक्सिंगटन और कन्कॉर्ड की चेतावनियां अभी गूंज ही रही थीं कि १० मई, १७७५ को फ़िलाडेल्फ़िया में द्वितीय महाद्वीपी कांग्रेस की बैठक हुई। इसका अध्यक्ष जॉन हैन्कॉक नामक बॉस्टन का एक सम्पन्न व्यापारी था। वहां टॉमस जेफ़र्सन भी था और श्रद्धेय बेंजामिन फ़्रैंकलिन भी, जो विभिन्न उपनिवेशों के प्रतिनिधि के रूप में समझौते का असफल प्रयास करके लौटा था। कांग्रेस अभी केवल संगठित ही हो पायी थी कि उसे प्रकट युद्ध की समस्या का सामना करना पड़ा। यद्यपि कुछ विरोधी लोग भी थे, तथापि कांग्रेस की वास्तविक प्रकृति 'शस्त्र उठाने के कारण और आवश्यकता' की उस उत्तेजक घोषणा से प्रकट हो रही थी जो कि जॉन डिकिन्सन और टॉमस जेफ़र्सन ने मिल कर बनायी थी :

"हमारा उद्देश्य न्यायसंगत है। हमारी एकता सम्पूर्ण है। हमारे आन्तरिक साधन बहुत हैं, और यदि आवश्यकता पड़ी तो विदेशी सहायता निस्सन्देह लभ्य है. . . .जो शस्त्र हमारे शत्रुओं ने हमें उठाने के लिए विवश किये हैं उन्हें हम . . . .अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए प्रयुक्त करेंगे, हम दास होने की अपेक्षा स्वतन्त्र होकर मरने का एकमत से संकल्प कर चुके हैं।"

अभी इस घोषणा पर बहस चल ही रही थी कि कांग्रेस ने नागरिक सेना को महाद्वीप की सेवा में लेकर कर्नल जॉर्ज वाशिंगटन को अमेरिकी सेना का मुख्य सेनापति नियुक्त कर दिया। परन्तु इस सामरिक उलझन और मुख्य सेनापति की नियुक्ति के बाद भी इंग्लैण्ड से पूर्ण सम्बन्ध-विच्छेद का विचार कांग्रेस के कुछ सदस्यों तथा अमेरिकी जनता के काफी बड़े भाग के लिए अरुचिकर था। परन्तु यह भी स्पष्ट था कि उपनिवेश सदा के लिए अंशतः ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर और अंशतः बाहर नहीं रह सकते थे।

संकल्प दृढ़ होने लगा

जैसे-जैसे महीने बीतने लगे, ब्रिटिश साम्राज्य का अंग बने रह कर युद्ध चलाने की कठिनाइयां स्पष्टतर होती गयीं। इंग्लैण्ड की ओर से कोई समझौते की बात न हुई, और २३ अगस्त, सन् १७७५ ई० को जॉर्ज तृतीय ने एक घोषणा जारी कर उपनिवेशों को विद्रोही घोषित कर दिया।

पांच महीने बाद टॉमस पेन ने 'कॉमनसेंस' नामक ५० पृष्ठों की एक पुस्तिका प्रकाशित की, जिसमें उसने ओजपूर्ण शैली में स्वतन्त्रता की आवश्यकता को स्पष्ट किया। पेन एक राजनीति शास्त्री था जो इंग्लैण्ड से सन् १७७४ ई० में अमेरिका आया था। वंशानुगत राजतन्त्र की धारणा की खिल्ली उड़ाते हुए और इस बात की घोषणा करते हुए कि 'अब तक के मुकुट-मंडित तमाम बदमाशों' की अपेक्षा समाज के लिए एक ईमानदार व्यक्ति का मूल्य अधिक है, उसने राजा के पवित्र व्यक्तित्व पर भी प्रहार करने का साहस किया। विश्वासोत्पादक ढंग से उसने दो विकल्प उपस्थित किये—"निरन्तर एक अत्याचारी राजा और एक जीर्ण सरकार के अधीन रहना, अथवा आत्मनिर्भर स्वतन्त्र गणतन्त्र में सुख और स्वतन्त्रता से रहना।" सभी उपनिवेशों में प्रचारित इस पुस्तिका ने विचारों को निश्चित रूप देने और डावांडोल लोगों को पृथक्करण आन्दोलन के पक्ष में लाने में सहायता की।

पृथक्करण की विधिवत् घोषणा के लिए प्रत्येक उपनिवेश की स्वीकृति प्राप्त करने का कार्य अभी शेष था। इस बात पर सभी सहमत थे कि उपनिवेशों से बिना स्पष्ट आदेश प्राप्त किये महाद्वीपी कांग्रेस को स्वतन्त्रता जैसा निश्चयात्मक पग नहीं उठाना चाहिए। परन्तु कांग्रेस अवैधानिक उपनिवेशी सरकारों की स्थापना और उनके प्रतिनिधियों को स्वतन्त्रता के लिए मत देने के अधिकार दिये जाने के समाचार प्रतिदिन सुनती रहती थी। साथ ही, ज्यों-ज्यों उग्र-सुधारवादियों का पत्र-व्यवहार बढ़ने लगा, शक्तिहीन समितियां सशक्त होने लगीं तथा उत्तेजक संकल्पों से देशभक्तों का मस्तिष्क उद्दीप्त होने लगा, त्यों-त्यों उनका कांग्रेस में प्राधान्य बढ़ने लगा।

अन्त में, १० मई, १७७६ को कठिनाई को बलपूर्वक हल कर लेने का प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। अब केवल एक औपचारिक घोषणा की आवश्यकता थी। ७ जून को वर्जिनिया के रिचर्ड हेनरी ली ने स्वतन्त्रता, विदेशों से मित्रता, और अमेरिकी संघ के पक्ष में एक प्रस्ताव रखा। तुरन्त ही वर्जिनिया के टॉमस जेफ़र्सन के नेतृत्व में पांच सदस्यों की एक समिति, 'उन कारणों का उल्लेख करते हुए जिन्होंने हमें इस महान संकल्प के लिए विवश किया', एक विधिवत् घोषणा तैयार करने के लिए नियुक्त हुई।

उपनिवेशों ने स्वतन्त्रता की घोषणा स्वीकार की

४ जुलाई, १७७६ को स्वीकृत स्वतन्त्रता की घोषणा ने केवल एक नये राष्ट्र के जन्म को घोषित नहीं किया, उसने मानवीय स्वतन्त्रता का एक ऐसा सिद्धांत भी रखा जो आगे चल कर समस्त पश्चिमी विश्व में एक गतिशील शक्ति बन गया। यह विशेष असन्तोषों पर आधारित नहीं था, अपितु व्यक्तिगत स्वतन्त्रता इसका विस्तृत आधार था, जिसे अमेरिका में सर्वत्र समर्थन प्राप्त था। इसका राजनीतिक दर्शन स्पष्ट है :

"हम इन सत्यों को स्वयंसिद्ध मानते हैं कि सभी मनुष्य समान पैदा हुए हैं, कि उनके स्रष्टा ने उनको कुछ अविच्छिन्न अधिकारों से सम्पन्न किया है, कि उन्हें जीवन, स्वतन्त्रता

और सुख की खोज के अधिकार भी हैं। इन अधिकारों की प्राप्ति के लिए ही मानव-समाज में शासन की स्थापना होती है, और उनको न्यायोचित अधिकार शासितों की स्वीकृति से मिलता है। जब किसी प्रकार का शासन-तंत्र इन उद्देश्यों पर कुठाराघात करता है तो जनता को यह अधिकार है कि वह उसे बदल दे अथवा उसे समाप्त कर दे, और एक नयी सरकार स्थापित करे जिसकी आधारशिला ऐसे सिद्धान्तों पर हो, और शक्ति का संगठन इस प्रकार किया जाये, जिससे उन्हें ऐसी आशा हो कि उनको सुरक्षा और सुख की प्राप्ति होगी।"

स्वतन्त्रता की घोषणा से पृथक्करण की सार्वजनिक सूचना का ही कार्य नहीं, अन्य कई प्रयोजन सिद्ध हुए। इसके विचारों ने अमेरिका के पक्ष में जनता में जोश पैदा किया, क्योंकि इसने जनसाधारण को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, स्वशासन तथा समाज में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त करने के लिए संघर्ष करने को उत्तेजित कर उनमें आत्मगौरव की भावना भर दी।

यह क्रान्तिकारी युद्ध छः वर्ष से अधिक समय तक चला और सभी उपनिवेशों में युद्ध हुआ। स्वतन्त्रता की घोषणा के पहले भी सामरिक कार्रवाइयां हुई थीं, जिनका युद्ध के परिणाम पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा था——उदाहरणस्वरूप फरवरी सन् १७७६ ई० में उत्तरी कैरोलाइना के राजभक्तों का दमन और मार्च में बॉस्टन से ब्रिटिश सैनिकों का निष्क्रमण।

स्वतन्त्रता की घोषणा के बाद कई महीनों तक अमेरिकियों को कई बड़ी असफलताओं का सामना करना पड़ा। प्रथम असफलता न्यूयॉर्क में मिली। लांग आइलैण्ड के युद्ध में वाशिंगटन की स्थिति अरक्षणीय हो गयी और उसने ब्रुकलिन से छोटी-छोटी नावों द्वारा मैनहैटन-तट तक पीछे हटने का कार्य बड़ी दक्षता से पूरा किया। हवा उत्तर की ओर चल रही थी इसलिए ब्रिटिश जहाज ईस्ट नदी में ऊपर की ओर न जा सके। इस प्रकार ब्रिटिश जनरल हो ने अमेरिकी आन्दोलन को करारी हार देने और युद्ध को सम्भवतः समाप्त करने का अवसर खो दिया।

यद्यपि वाशिंगटन को निरन्तर पीछे हटना पड़ा, फिर भी वर्ष के अन्त तक वह अपनी सेना को अक्षुण्ण रख सका। ट्रेण्टन और प्रिस्टन की महत्वपूर्ण विजयों ने उपनिवेशियों की आशा को पुनर्जीवित किया, परन्तु एक बार फिर विपत्ति ने प्रहार किया। सितम्बर सन् १७७७ ई० में हो ने फ़िलाडेल्फ़िया पर अधिकार कर लिया, कांग्रेस के सदस्यों को भगा दिया, और वाशिंगटन को अपने सैनिकों सहित फ़ोर्ज की घाटी में जाड़े का मौसम बिताने के लिए विवश कर दिया।

फिर भी सन् १७७७ ई० में ही युद्ध में अमेरिका की सब से बड़ी विजय हुई और सैनिक दृष्टि से क्रान्ति में एक नया मोड़ आया। ब्रिटिश जनरल जॉन-बरगोइन कैनेडा से एक सेना ले कर इस मन्तव्य से आया कि शैम्प्लेन झील से हडसन नदी तक अधिकार जमा कर न्यूइंग्लैण्ड को अन्य उपनिवेशों से अलग कर दे। बरगोइन हडसन नदी के ऊपरी भाग तक पहुंच गया, परन्तु दक्षिण की ओर बढ़ने से पहले उसे सितम्बर के मध्य तक प्रतीक्षा करनी पड़ी।

अमेरिका के भूगोल से अपरिचित होने के कारण उसने यह कल्पना कर ली थी कि किसी भी आक्रमणकारी सेना के लिए केवल दो सप्ताह के अन्दर हैम्पशायर ग्राण्ट्स (वरमॉण्ट) पार करके हडसन नदी के किनारे-किनारे चलना और अपने लिए घोड़े, पशु और गाड़ियां इकट्ठा कर लेना सरल होगा। इस कार्य के लिए उसने ३७५ विना घोड़े के हेसवासी* अश्वारोहियों और लगभग ३०० कैनेडी तथा आदिवासी सैनिकों को भेजा। वे वरमॉण्ट की सीमा तक भी न पहुंच सके। वरमॉण्ट की नागरिक सेना उन्हें वेनिंग्टन के निकट मिली। केवल थोड़े से हेसवासी सैनिक ही वापस लौट पाये।

वेनिंगटन के युद्ध ने न्यूइंग्लैण्ड के नागरिक सैनिकों को एक स्थान पर एकत्र कर दिया और वाशिंगटन ने हडसन के निचले भाग से सहायक सेना भेजी। जब तक वरगोइन की सेना कार्यारम्भ करे, जनरल होरेशियो गेट्स की सेना उसकी प्रतीक्षा में तैयार खड़ी थी। वेनेडिक्ट आर्नल्ड के नेतृत्व में अमेरिकियों ने अंग्रेज़ों को दो बार पीछे हटाया। वरगोइन सराटोगा वापस लौटा, और १७ अक्तूबर, १७७७ को उसने आत्मसमर्पण कर दिया। युद्ध के इस निर्णयात्मक प्रहार ने फ़ान्स को अमेरिका के पक्ष में कर दिया।

उपनिवेशियों की विजय और स्वतन्त्रता की प्राप्ति

जिस समय स्वतन्त्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर हुए उसी समय से फ़ान्स तटस्थ न रह सका। सन् १७६३ ई० की फ्रान्स की पराजय के बाद से ही वहां की सरकार इंग्लैण्ड से वदला लेने के लिए उत्सुक थी। इसके अतिरिक्त अमेरिकी आन्दोलन के लिए उनमें वड़ा उत्साह था। फ़ान्स का वौद्धिक वर्ग स्वयं सामन्त-व्यवस्था और विशेषाधिकारों के विरुद्ध विद्रोह कर रहा था। यद्यपि फ़ान्स ने वेंजामिन फ़्रैंकलिन का फ़ान्सीसी दरवार में स्वागत किया था और संयुक्त राज्य को युद्ध-सामग्री तथा रसद से सहायता पहुंचायी थी, फिर भी प्रत्यक्ष हस्तक्षेप और इंग्लैण्ड से खुल्लमखुल्ला युद्ध का संकट उठाने के लिए वह तैयार नहीं था।

वरगोइन के आत्मसमर्पण के पश्चात् फ़्रैंकलिन फ्रान्स से व्यापार और मैत्री सन्धियां करने में सफल हुआ। इसके पूर्व भी कई फ्रान्सीसी स्वयंसेवक अमेरिका के लिए प्रस्थान कर चुके थे। उनमें सवसे प्रमुख मार्क्विस दे लाफ़ेयेत नामक एक नवयुवक सैनिक अफसर था, जिसने सन् १७७९-८० की सर्दियों में वर्साई जा कर अपनी सरकार को इस वात के लिए राज़ी किया था कि वह युद्ध समाप्त करने के लिए वास्तविक प्रयास करे। इसके तुरन्त पश्चात् लुई १६वें ने काम्त दे रोशाम्वो के नेतृत्व में ६००० सैनिकों का एक अभियान-दल भेजा। इसके अतिरिक्त फ़ान्सीसी समुद्री वेड़ों ने अंग्रेज़ों की सेना के लिए सामान और सैनिक भेजना कठिनतर वना दिया और व्रिटिश वाणिज्य को गम्भीर हानि पहुंचाने में फ़ासीसियों ने अमेरिकी अवरोधकारी ज़हाज़ों का साथ दिया।

सन् १७७८ ई० में फ़ान्सीसी वेड़े की कार्रवाई के डर से अंग्रेज फ़िलाडेल्फ़िया खाली करने के लिए विवश हो गये। उसी वर्ष ओहायो की घाटी में उन्हें कई वार पराजित

* हेस जर्मनी का एक प्रान्त है।

होना पड़ा, जिसके फलस्वरूप उत्तर-पश्चिम में अमेरिकी प्रभुत्व निश्चित हो गया। फिर भी अंग्रेज़ों ने दक्षिण में युद्ध जारी रखा। सन् १७८० ई० के आरम्भ में उन्होंने दक्षिण के प्रमुख बन्दरगाह चार्ल्सटन पर अधिकार कर लिया। अगले वर्ष उन्होंने वर्जिनिया को जीतने का प्रयत्न किया। परन्तु उस वर्ष की गर्मियों में फ़ान्सीसी बेड़े ने अस्थायी रूप से अमेरिकी तटवर्ती समुद्र पर अधिकार कर लिया था और उसने वाशिंगटन और रोशाम्बो की सेना को नावों द्वारा चेसापीक खाड़ी में पहुंचाया। १५००० सैनिकों की उनकी सम्मिलित सेनाओं ने लॉर्ड कॉर्नवालिस की ८००० जवानों की सेना को वर्जिनिया के समुद्र-तट पर स्थित यॉर्कटाउन में घेर लिया। १९ अक्तूबर १७८१ को कॉर्नवालिस ने आत्मसमर्पण कर दिया।

जब यूरोप में यॉर्कटाउन की अमेरिकी विजय का समाचार पहुंचा तो हाउस आफ़ कॉमन्स ने युद्ध समाप्त करने का निर्णय किया। सन्धि-वार्ता अप्रैल, सन् १७८२ ई० से आरम्भ हो कर नवम्बर में उस समय तक चलती रही जब तक आरम्भिक सन्धियों पर हस्ताक्षर नहीं हो गये। इनको तब तक कार्यान्वित नहीं किया जा सकता था जब तक फ़ान्स ग्रेटब्रिटेन के साथ सन्धि न कर ले। सन् १७८३ ई० में उन पर अन्तिम और निश्चित रूप से हस्ताक्षर हुए। सन्धि के अनुसार १३ राज्यों की स्वाधीनता, स्वतन्त्रता और सम्प्रभुता स्वीकार की गयी, उन्हें मिसिसिपी के पश्चिम का चिर-अभिलिषित क्षेत्र दिया गया, और राष्ट्र की उत्तरी सीमा निर्धारित कर दी गयी, जो लगभग उसी रूप में आज तक मान्य है। कांग्रेस राज्यों से यह संस्तुति करने वाली थी कि राज्यभक्तों की अपहृत सम्पत्ति उन्हें वापस कर दी जाये।

राष्ट्रीय सरकार का संगठन

"इस पृथ्वी पर प्रत्येक मनुष्य को और प्रत्येक मनुष्य-समूह को स्वशासन का अधिकार है।"

टॉमस जेफ़र्सन, १७९०

क्रान्ति की सफलता ने अमेरिकियों को स्वतन्त्रता की घोषणा में व्यक्त किये अपने राजनीतिक आदर्शों को वैधानिक रूप देने का और अपनी शिकायतों को अपने-अपने राज्यों के संविधानों द्वारा दूर करने का अवसर दिया। आज अमेरिका के लोग लिखित संविधान के अन्तर्गत रहने के इतने अभ्यस्त हो गये हैं कि वे उसकी उपस्थिति को सहज और स्वाभाविक मान कर चलते हैं। परन्तु लिखित संविधान का विकास अमेरिका में ही हुआ और उसका संविधान इतिहास में सबसे प्राचीन संविधानों में से है। संयुक्त राज्य के राष्ट्रपति जॉन ऐडम्स ने लिखा था कि 'सभी स्वतन्त्र राज्यों में संविधान निर्णायक होता है।' और अमेरिकियों ने हर जगह 'जीवनयापन के लिये एक स्थायी निश्चित् विधि' की मांग की।

१० मई, सन् १७७६ में ही कांग्रेस ने एक प्रस्ताव पारित कर उपनिवेशों को ऐसी नयी सरकारें बनाने का परामर्श दिया था 'जो उनके सभी निवासियों के सुख और सुरक्षा में सहायक हों।' उनमें से कुछ तो पहले ही संविधान बना चुके थे, और स्वतन्त्रता की घोषणा के पश्चात् एक वर्ष के अन्दर तीन राज्यों को छोड़कर शेष सभी ने संविधान बना लिये।

नये संविधानों में से अधिकांश पर लोकतन्त्री विचारों का प्रभाव था। चूंकि सभी संविधान उपनिवेशकालीन अनुभव, अंग्रेज़ी व्यवहार और फ्रान्सीसी राजनीतिक दर्शन की ठोस आधारशिला पर बनाये गये थे, इसलिए किसी ने प्राचीन व्यवस्था से उग्र विचलन नहीं किया। परन्तु यह बात महत्वपूर्ण है कि राज्यों के इन संविधानों की वास्तविक रचना में अमेरिकी क्रान्ति पूरी हुई।

स्वाभाविक रूप से संविधानों के रचयिताओं का पहला उद्देश्य उन 'अनपहरणीय अधिकारों' को सुरक्षित करना था जिनके उल्लंघन के कारण पहले के उपनिवेशों को इंग्लैण्ड से अपना सम्बन्ध-विच्छेद करना पड़ा था। फलतः प्रत्येक संविधान का आरम्भ अधिकारों की घोषणा या विधेयक से हुआ। वर्जिनिया के संविधान में, जो दूसरों के लिए आदर्श बना, कुछ सिद्धान्तों की घोषणा की गयी, जैसे सार्वजनिक सम्प्रभुता, पदों का क्रमानुवर्त्तन, निर्वाचन की स्वतन्त्रता और मौलिक स्वतन्त्रताओं की एक सूची,

यथा साधारण जमानत और मानवोचित दण्ड, स्थायी सेना के स्थान पर नागरिक सेना, जूरी द्वारा शीघ्र सुनवाई, प्रेस और अन्त:करण की स्वतन्त्रता, शासन को बहुमत द्वारा सुधारने या बदलने का अधिकार, और व्यापक वारण्टों का निषेध।

अन्य राज्यों ने अपनी स्वतन्त्रताओं की सूची को विस्तृत कर उसमें भाषण, सम्मेलन, प्रार्थना-पत्र की स्वतन्त्रता, और ऐसे अधिकार जैसे शस्त्र-धारण का अधिकार, बन्दी-प्रत्यक्षीकरण-याचिका, अधिवास का अनतिक्रमण, तथा विधि के अन्तर्गत समान सुरक्षा के अधिकार भी सम्मिलित कर लिये। इसके अतिरिक्त सभी संविधानों में शासन के त्रिशाखीय संगठन को स्वीकार किया गया, जिसमें कार्यपालिका, विधायिका तथा न्यायपालिका परस्पर एक-दूसरे को प्रतिबन्धित तथा सन्तुलित करती हैं।

जिस समय तेरह उपनिवेश राज्यों के रूप में परिवर्तित हो रहे थे और अपने को स्वतन्त्रता की परिस्थिति के अनुकूल ढाल रहे थे, तटवर्ती बस्तियों से पश्चिम की ओर फैले विशाल भूखण्ड में नये राज्य पनप रहे थे। देश में अब तक प्राप्त सबसे समृद्ध भूमि से आकर्षित होकर अग्रगामी दल अपेलेशियन पर्वत और उसके पार फैल रहे थे। १७७५ ई० तक जलमार्गों के आस-पास दूर तक बिखरी चौकियों में सहस्त्रों उपनिवेशी बस चुके थे। पूर्व की राजनीतिक सत्ता के केन्द्रों से पर्वत-श्रेणियों द्वारा विलग और सैकड़ों किलोमीटर दूर इन निवासियों ने अपना शासन संगठित किया। समुद्र-तटवर्ती सभी राज्यों से उपनिवेशी भीतर की इन उपजाऊ घाटियों, कठोर-वृक्ष वनों, और घास के बड़े-बड़े चरागाहों में घुसने लगे। १७६० तक अपेलेशियन-पार के क्षेत्र की जनसंख्या १,२०,००० से ऊपर पहुंच गयी।

नये राष्ट्र की समस्याएं

क्रान्ति पूरी होते ही संयुक्त राज्य को पश्चिम की पुरानी अनसुलझी समस्या का सामना करना पड़ा, जिसमें 'साम्राज्य' की समस्या के साथ-साथ भूमि के झगड़े, समूर का व्यापार, आदिवासी, अधिवास, और अधीनस्थ क्षेत्रों के शासन की समस्याएं थीं। युद्ध के पहले कई उपनिवेश अपेलेशियन के उस पार की भूमि पर व्यापक और बहुधा परस्परविरोधी दावे कर रहे थे। जिन राज्यों का ऐसा कोई दावा नहीं था उन्हें इस सम्पन्न क्षेत्र का बंटवारा अन्यायपूर्ण लगता था।

इस दूसरे वर्ग के प्रवक्ता के रूप में मेरीलैण्ड ने यह प्रस्ताव रखा कि पश्चिमी भूमि को सबकी सम्मिलित सम्पत्ति समझा जाये और उसे कांग्रेस द्वारा स्वतन्त्र और स्वाधीन प्रशासनिक इकाइयों में विभक्त कर दिया जाये। इस विचार का उत्साहपूर्ण स्वागत नहीं हुआ। फिर भी सन् १७८० ई० में न्यूयॉर्क ने अपने दावे को संयुक्त राज्य को अर्पित कर इस दिशा में मार्ग प्रदर्शित किया। शीघ्र ही अन्य उपनिवेशों ने उसका अनुगमन किया, और युद्ध के अन्त तक यह स्पष्ट हो गया कि ओहायो नदी के उत्तर और ऐलेगनी पहाड़ के पश्चिम का लगभग सारा भूभाग कांग्रेस के अधिकार में आ जायेगा। करोड़ों हेक्टेयर भूमि पर सम्मिलित स्वामित्व उस राष्ट्रीयता और एकता का सबसे

प्रत्यक्ष प्रमाण था जो इन संकटपूर्ण वर्षों में विद्यमान थी और जिसने राष्ट्रीय सम्प्रभुता के विचार को निश्चित वास्तविकता प्रदान की। साथ ही साथ यह एक समस्या भी बनी रही, जिसका समाधान ढूंढना आवश्यक हो गया।

परिसंघ के अनुबन्ध (आर्टिकिल्स ऑव कनफ़ेडरेशन) द्वारा, जिसने १७८१ ई० से उपनिवेशों को एक श्लथ संगठन में संगठित कर दिया था, एक समाधान प्रस्तुत किया गया। इन उपबन्धों के अनुसार सीमित स्वशासन की एक व्यवस्था स्थापित की गयी, जिसे 'सन् १७८७ ई० के उत्तर-पश्चिम अधिनियम' (नार्थ वेस्ट ऑर्डिनेन्स) में घोषित किया गया। इसके द्वारा उत्तरी-पश्चिमी क्षेत्र को प्रारम्भ में एक जिले के रूप में संगठित कर दिया गया, जिसका शासन कांग्रेस द्वारा नियुक्त एक गवर्नर तथा न्यायाधीशों को सौंपा गया। इसके साथ ही यह व्यवस्था की गयी कि जब इस प्रदेश में मत देने योग्य अवस्था वाले ५,००० पुरुष बस जायेंगे, तो इन्हें दो सदनों का विधान-मण्डल स्थापित करने का अधिकार दिया जायेगा, जिनमें निचले संसद को चुनने का अधिकार इन्हीं को होगा। इसके अतिरिक्त, इस क्षेत्र को कांग्रेस में अपना एक प्रतिनिधि भेज सकने का अधिकार होगा पर वह मत देने का अधिकारी नहीं माना जायेगा।

इस क्षेत्र में अधिक-से-अधिक पांच, और कम-से-कम तीन राज्य बनाये जा सकते थे, और जब भी उनमें से किसी में ६०,००० स्वतन्त्र निवासी हो जायें, उसे संघ में 'सब प्रकार से आरम्भिक राज्यों के समान आधार पर' सम्मिलित कर लिया जायेगा। "आरम्भिक राज्यों तथा इस क्षेत्र के राज्यों और जनता के बीच हुए समझौते के छः नियमों" द्वारा नागरिक अधिकारों और स्वाधीनताओं को सुरक्षित किया गया, शिक्षा को प्रोत्साहित किया गया, और इस बात का आश्वासन दिया गया कि 'इस क्षेत्र में न तो दासता रहेगी और न अनैच्छिक पराधीनता।'

इस प्रकार, समानता के सिद्धान्त पर आधारित एक नयी औपनिवेशिक नीति का आरम्भ हुआ। इस नयी नीति ने उस परम्परागत सिद्धान्त को समाप्त कर दिया जिसके अनुसार उपनिवेशों का अस्तित्व मातृ देश के लाभ के लिए है, और वे राजनीतिक दृष्टि से अधीनस्थ तथा सामाजिक दृष्टि से हीन हैं। उस सिद्धान्त का स्थान इस विचार ने ले लिया कि उपनिवेश राष्ट्र के ही विस्तार हैं और उन्हें समानता के सब लाभ, सुविधा के रूप में नहीं, अधिकार के रूप में उपलब्ध हैं। इस अधिनियम की प्रबुद्ध धारा ने अमेरिका की सार्वजनिक भूमि-नीति का आधार निश्चित किया, और संयुक्त राज्य को, अपेक्षाकृत बहुत कम कठिनाई के, पश्चिम में प्रशान्त महासागर तक फैलकर १३ से ५० राज्यों की इकाई के रूप में विकसित होने में सहायता की।

अन्य समस्याओं के समाधान में 'परिसंघ के उपबन्ध' असन्तोषजनक सिद्ध हुए। उनकी एक मुख्य कमी यह थी कि वे उन १३ राज्यों के लिए एक वास्तविक राष्ट्रीय प्रशासन की व्यवस्था करने में असफल रहे, जो सन् १७७४ ई० से—जब ब्रिटिश सत्ता के अतिक्रमण को रोकने के लिए उनके प्रतिनिधि एकत्रित हुए थे—एकीकरण की ओर अग्रसर हो रहे थे।

नवीन प्रशासनिक धारणा का उदय

बीस वर्ष पूर्व की औपनिवेशिक मनोवृत्ति को परिवर्तित करने में इंग्लैण्ड के साथ हुए युद्धों ने विशेष योग दिया। स्थानीय विधान-सभाओं ने अल्वनी-संघ-योजना को अस्वीकृत कर दिया था। वे अपनी स्वायत्तता का न्यूनतम अंश भी किसी अन्य संस्था को, यहां तक कि अपनी स्वनिर्वाचित संस्था को भी, देने को प्रस्तुत नहीं थे। परन्तु क्रान्ति-काल में पारस्परिक सहायता प्रभावकारी सिद्ध हुई, और वैयक्तिक अधिकारों के खोने का भय बहुत-कुछ घट गया था।

ये उपबन्ध (आर्टिकिल्स) सन् १७८१ ई० में कार्यान्वित किये गये। यद्यपि महाद्वीपी कांग्रेस प्रणाली द्वारा जो शिथिल व्यवस्था की गयी थी, उससे इन उपबन्धों ने प्रगति की थी, परन्तु शासकीय व्यवस्था का जो ढांचा इन्होंने स्थापित किया उसमें भी कई दोष थे। सीमा रेखाओं पर झगड़े चल रहे थे। न्यायालयों के निर्णय परस्पर-विरोधी होते थे। मैसाचूसेट्स, न्यूयॉर्क और पेनसिलवैनिया की विधान-सभाओं ने सीमा-शुल्क सम्बन्धी ऐसे नियम बनाये जिनसे छोटे पड़ोसियों को हानि होती थी। राज्यों के मध्य व्यापारीय प्रतिबन्धों के कारण कटुता उत्पन्न हो गयी थी। उदाहरणस्वरूप, न्यूजर्सी के लोग अपनी सब्ज़ियां न्यूयॉर्क के बाज़ारों में बेचने के लिए बिना प्रवेश-कर और चुंगी दिये हडसन नदी नहीं पार कर सकते थे।

राष्ट्रीय सरकार को यह अधिकार मिलना चाहिए था कि वह जब आवश्यक हो तब सीमा-शुल्क निर्धारित करे, व्यापार नियन्त्रित करे, और राष्ट्रीय उद्देश्यों के लिए आवश्यक करारोपण करे। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर उसका एकाधिपत्य होना चाहिए था, लेकिन कई राज्यों ने स्वयं विदेशों से बातचीत आरम्भ कर दी थी। नौ राज्यों ने अपनी सेनाएं संगठित कर ली थीं और कइयों की तो अपनी छोटी-छोटी नौ-सेनाएं भी थीं। सिक्कों की विचित्र खिचड़ी हो रही थी, और राष्ट्रीय तथा राज्य प्रशासनों की काग़ज़ी हुंडियों में विस्मयकारी विविधता थी। इन सबका मूल्य तेज़ी से गिर रहा था।

युद्धोत्तर आर्थिक कठिनाइयों के कारण भी, विशेषकर किसानों में, असन्तोष फैल रहा था। खेतों की उपज बाज़ारों में भर गयी थी। कर्ज़दार किसानों में व्यापक असन्तोष था। वे बन्धक सम्पत्ति के विमोचन से सम्बन्धित अधिकार के तथा क़र्ज़ के लिए कारावास के दण्ड से बचने की सुविधा चाहते थे। क़र्ज़ के मुकदमों से अदालतें भरी हुई थीं। सन् १७८६ ई० की गर्मियों में विभिन्न राज्यों में सार्वजनिक सम्मेलनों तथा अनौपचारिक सभाओं ने राज्यों के प्रशासन में सुधार की मांग की। कई भूमिधरों ने पैतृक खेतों की हानि तथा कर्ज़ के कारण कारावास की आशंका से हिंसात्मक कार्यवाही आरम्भ कर दी।

सन् १७८६ ई० की शरद-ऋतु में एक भूतपूर्व सैनिक कप्तान डैनियल शेज़ के नेतृत्व में मैसाचूसेट्स में किसानों के झुण्ड के झुण्ड जिला अदालतों को अगले चुनाव तक काम करने और कर्ज़ के मुक़दमों में निर्णय लेने से बलपूर्वक रोकने लगे। उनका

कहना था कि जब तक राज्य में अगला चुनाव न हो जाये तब तक अदालतें बन्द रहें। राज्य सरकार ने उनका डटकर विरोध किया और उसे कुछ दिनों तक यह भय रहा कि उत्तेजित भूमिधर बॉस्टन-स्थित राज्य के कार्यालय पर कहीं आक्रमण न कर दें। परन्तु डण्डों और बेलचों से लैस उपद्रवियों को नागरिक सेना ने पीछे ढकेल कर पहाड़ियों में खदेड़ दिया। विद्रोह के शान्त होने के पश्चात् ही विधान-सभा ने भूमिधरों की शिकायतों पर विचार किया और उन्हें दूर करने के उपाय सोचे।

इस समय जॉर्ज वाशिंगटन ने लिखा कि राज्य केवल 'बालू की रस्सी' से बंधे हुए हैं, और कांग्रेस की प्रतिष्ठा बहुत नीचे गिर गयी है। पोटोमैक नदी में नौसंचालन के सम्बन्ध में वर्जिनिया और मेरीलैण्ड में जो झगड़ा हुआ उसके फलस्वरूप सन् १७८६ ई० में एनैपोलिस में पांच राज्यों के प्रतिनिधियों की एक सभा हुई। इनमें से एलेक्ज़ेण्डर हैमिल्टन नामक एक प्रतिनिधि ने अपने सहयोगियों से यह मनवा लिया कि व्यापार का प्रश्न अन्य प्रश्नों से काफ़ी उलझा हुआ है, और परिस्थिति इतनी गम्भीर है कि उनकी जैसी अप्रतिनिधिक संस्था को उसे सुलझाने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।

उसने उपस्थित प्रतिनिधियों को इस बात के लिए प्रेरित किया कि वे सभी राज्यों से यह मांग करें कि संयुक्त राज्य के प्रतिनिधि नियुक्त हों और 'संघीय शासन के संविधान में ऐसी आवश्यक व्यवस्था की जाये जो उनकी दृष्टि में संघ की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपेक्षित हो।' इस निर्भीक क़दम पर महाद्वीपी कांग्रेस पहले तो रुष्ट हुई, परन्तु उसका विरोध यह समाचार पहुंचते ही समाप्त हो गया कि वर्जिनिया ने जॉर्ज वाशिंगटन को एक प्रतिनिधि चुना है। अगली शरद और शीत ऋतु में रोड आइलैण्ड के अतिरिक्त अन्य सभी राज्यों में चुनाव हो गये।

मई सन् १७८७ ई० में फ़िलाडेल्फ़िया राजभवन (स्टेट हाउस) में जो संघीय सभा (फ़ेडरल कनवेंशन) हुई वह एक विशिष्ट व्यक्तियों की सभा थी। राज्य की विधान-सभाओं ने ऐसे नेताओं को भेजा जिन्हें उपनिवेश और राज्य के शासन का, कांग्रेस का, अदालतों का और युद्ध का अनुभव था। जॉर्ज वाशिंगटन को अपनी ईमानदारी तथा क्रान्ति-काल में सैनिक नेतृत्व के कारण देश का विशिष्ट नागरिक माना जाता था। उन्हें अध्यक्ष चुना गया। मनीषी बेंजामिन फ़्रैंकलिन ८१ वर्ष का हो चुका था। उसने नवयुवकों को ही वाद-विवाद का अवसर दिया, परन्तु उसके विनोदप्रिय स्वभाव तथा राजनय के व्यापक अनुभव ने अन्य प्रतिनिधियों की कुछ कठिनाइयों को हल करने में सहायता की।

अधिक क्रियाशील सदस्यों में मुख्य पेनसिलवैनिया के दो व्यक्ति थे—गूवेनियर मॉरिस, जो योग्य और साहसी था और जिसने राष्ट्रीय शासन की आवश्यकता समझी थी; और जेम्स विल्सन, जिसने राष्ट्रीयता के विचार के लिए अथक प्रयास किया। वर्जिनिया से जेम्स मैडिसन आया, जो एक व्यावहारिक युवा राजनीतिज्ञ, इतिहास और राजनीति का विद्वान, और अपने एक सहयोगी के अनुसार 'अपने परिश्रम और अध्यवसाय के कारण . . . . विवाद में किसी भी प्रश्न पर सर्वाधिक ज्ञानवान व्यक्ति था।'

मैसाचूसेट्स ने रूफ़स किंग और एलब्रिज गेरी को भेजा, जो योग्य और अनुभवी

नवयुवक थे। रोजर शर्मन, जो मोची से जज बन गया था, कनेक्टिकट के प्रतिनिधियों में से एक था। न्यूयॉर्क से एलेक्ज़ेण्डर हैमिल्टन आया था, जो केवल ३० वर्ष का होते हुए भी प्रसिद्ध हो चुका था। औपनिवेशिक अमेरिका के महान् व्यक्तियों में से गिने-चुने अनुपस्थित लोगों में टॉमस जेफ़र्सन भी था, जो राज्य के कार्य से फ़्रान्स गया हुआ था। ५५ प्रतिनिधियों में युवकों का प्राधान्य था और उनकी औसत आयु केवल ४२ वर्ष थी।

इस सभा (कनवेंशन) को केवल इतना ही अधिकार दिया गया था कि वह संघ के उपबन्धों में सुधार का प्रारूप तैयार करे। परन्तु, जैसा मैडिसन ने बाद में लिखा, प्रतिनिधियों ने 'अपने देश में पुरुषोचित विश्वास के कारण' नियमों को एक किनारे रखकर एक सर्वथा नवीन शासन-पद्धति के निर्माण का कार्य आरम्भ किया।

उन्होंने इस बात को स्वीकार किया कि सबसे बड़ी आवश्यकता दो विभिन्न शक्तियों में सामंजस्य स्थापित करने की है--स्थानीय नियन्त्रण की शक्ति जिसका १३ अर्द्धस्वतन्त्र राज्यों में प्रयोग हो रहा था, और केन्द्रीय शासन की शक्ति में सामंजस्य। उन्होंने इस सिद्धान्त को स्वीकार किया कि राष्ट्रीय सरकार के कर्त्तव्य और अधिकार नये, व्यापक, और अन्तर्देशीय होने के कारण सावधानी से निश्चित और स्पष्ट किये जाने चाहिए, और शेष सभी कर्त्तव्य और अधिकारों को राज्यों में सन्निहित समझना चाहिए। परन्तु यह अनुभव कर कि केन्द्रीय शासन के पास वास्तविक अधिकार होना चाहिए, प्रतिनिधियों ने सामान्यतया यह भी स्वीकार किया कि केन्द्रीय शासन को अन्य कार्यो के अतिरिक्त मुद्रा ढालने, व्यापार नियन्त्रित करने और युद्ध तथा शान्ति की घोषणा करने के भी अधिकार दिये जायें।

नेताओं द्वारा शक्ति-पृथक्करण का समर्थन

१८वीं शताब्दी के जो राजनीतिज्ञ फ़िलाडेलफ़िया में एकत्रित हुए थे वे राजनीति में मॉन्तेस्क्यू के शक्ति-सन्तुलन के विचार के अनुयायी थे। इस सिद्धान्त का समर्थन औपनिवेशिक अनुभव से होता था और इसकी पुष्टि लॉक के उन लेखों से होती थी जिनसे अधिकांश प्रतिनिधि परिचित थे। इन प्रभावों के फलस्वरूप यह दृढ़ धारणा बन गयी कि प्रशासन को तीन समान और एक-दूसरे के सहायक विभागों में बांट दिया जाये। विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका की शक्तियों को इस प्रकार सामंजस्यपूर्ण नीति से सन्तुलित कर दिया जाये कि उनमें से कोई एक पूर्ण प्रभुता न प्राप्त कर सके। प्रतिनिधियों ने यह भी मान लिया कि औपनिवेशिक विधान-सभाओं और ब्रिटिश संसद की भांति द्विसदनीय विधानमण्डल हो।

सभा (कनवेंशन) में इन बातों पर मतैक्य था। परन्तु उनके कार्यान्वयन के उपायों पर तीव्र मतभेद उठ खड़ा हुआ। न्यूजर्सी-जैसे छोटे राज्यों के प्रतिनिधियों ने संघ के प्रबन्धों के अनुसार राज्यों के आधार पर प्रतिनिधि चुनने की जगह, जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधियों के चुनाव के प्रस्ताव का विरोध किया, क्योंकि इनसे राष्ट्रीय सरकार पर उनका प्रभाव घट जायेगा।

दूसरी ओर, वर्जिनिया जैसे बड़े राज्यों के प्रतिनिधियों ने जनसंख्या के अनुपात से प्रतिनिधित्व की मांग की। लग रहा था कि इस विवाद का अन्त नहीं होगा। अन्ततः कनेक्टिकट के प्रतिनिधि ने योग्यतापूर्वक यह सुझाव रखा कि कांग्रेस के एक सदन में राज्यों की जनसंख्या के अनुपात से प्रतिनिधि रखे जायें और दूसरे सदन में सब राज्यों को समान प्रतिनिधित्व मिले।

इस प्रकार बड़े राज्यों की छोटे राज्यों के विरुद्ध दलबन्दी समाप्त हो गयी, परन्तु आगे चलकर सभी प्रश्नों पर नयी दलबन्दियां होती थीं, और उनका नये समझौतों द्वारा निराकरण होता था। कुछ सदस्यों की इच्छा थी कि संघीय शासन का कोई भी अंग जनता द्वारा सीधे न चुना जाय, तो कुछ दूसरे यह चाहते थे कि राष्ट्रीय सरकार का आधार जहां तक सम्भव हो सार्वजनिक चुनाव रहे। कुछ प्रतिनिधियों की इच्छा थी कि बढ़ते हुए पश्चिमी प्रदेश को राज्य बनने का अवसर न दिया जाये; दूसरे सन् १७८७ ई० के अध्यादेश में निहित समानता के समर्थक थे। काग़ज़ी मुद्रा तथा अनुबन्ध की जिम्मेदारियों से संबंधित क़ानून जैसे राष्ट्रीय आर्थिक प्रश्नों पर कोई गम्भीर मतभेद नहीं था। परन्तु विभिन्न क्षेत्रों के आर्थिक स्वार्थों में समन्वय; प्रधान प्रशासक के चुनाव, उसके कार्यकाल तथा उसके अधिकारों से सम्बन्धित प्रश्नों पर वादविवाद को समाप्त करना; तथा न्यायाधीशों के कार्यकाल और विभिन्न प्रकार न्यायालयों की स्थापना से सम्बन्धित समस्याओं का समाधान आवश्यक था।

फ़िलाडेल्फ़िया की पूरी गर्मी-भर परिश्रम कर इस सभा ने अन्त में एक प्रारूप तैयार किया, जिसमें एक छोटे-से प्रलेख में अब तक मनुष्य द्वारा रचित सबसे जटिल सरकार का संगठन प्रस्तुत किया गया—एक ऐसी सरकार का जो स्पष्ट परिभाषित और सीमित क्षेत्र के अन्तर्गत सर्वोच्च थी। जैसा कि सन् १७९१ ई० में दसवें संशोधन द्वारा स्पष्ट किया गया, 'संविधान द्वारा जो अधिकार संयुक्त राज्य को नहीं दिये गये, और न राज्यों को निषिद्ध किये गये, वे राज्यों अथवा जनता के लिए आरक्षित किये जाते हैं,' और संघीय क़ानूनों की सर्वोच्चता इस प्रकार सीमित है कि वे 'संविधान के अनुकूल ही बनाये जायेंगे।'

अधिकारों का वितरण करते समय सम्मेलन ने संघीय सरकार को कर लगाने, ऋण लेने, समान रूप से सीमा-शुल्क, उत्पादन-शुल्क और चुंगी लगाने, मुद्रा ढालने, तौल और नाप निश्चित करने, पेटेण्ट और प्रकाशनाधिकार देने, डाकघर स्थापित करने, और डाक के लिए सड़क बनाने का पूरा अधिकार दिया। राष्ट्रीय सरकार को यह भी अधिकार दिया गया कि वह स्थल-सेना और नौ-सेना एकत्रित कर उन्हें सुरक्षित रखे, तथा, राज्यों के आपसी व्यापार पर नियन्त्रण रखे। रेड इण्डियनों के साथ सम्बन्ध, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध तथा युद्ध का प्रबन्ध भी उसे ही सौंपा गया। उसे यह अधिकार था कि वह विदेशियों को नागरिक बनाने तथा सार्वजनिक भूमि पर नियन्त्रण रखने के लिए कानून बनाये, और पुराने राज्यों के साथ पूर्ण समानता के आधार पर नये राज्यों को संघ में सम्मिलित करे। इन स्पष्ट परिभाषित अधिकारों को कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक और उचित क़ानून बनाने के अधिकार मिल जाने से संघीय प्रशासन इतना

लचीला हो गया कि वह आगामी पीढ़ियों की और बढ़ते हुए राष्ट्र की आवश्यकताएं पूरी करने में समर्थ हो सका।

सिद्धान्त पहले ही से सुपरीक्षित थे

अधिकारों के पृथक्करण का सिद्धान्त, जो अनेक उपनिवेशी सरकारों ने लागू कर रखा था, अधिकांश राज्यों के संविधान में आज़माया जा चुका था और उपयोगी पाया गया था। इसलिए सम्मेलन ने प्रशासन की एक ऐसी पद्धति स्वीकार की जिसमें विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका अलग-अलग रखी गयीं और प्रत्येक पर अन्य दो का नियन्त्रण रहा।

इस प्रकार, कांग्रेस तव तक कोई विधयेक पारित नहीं कर सकती थी जव तक उसे राष्ट्रपति की स्वीकृति न मिल जाये। राष्ट्रपति को भी अपनी सभी प्रमुख नियुक्तियां तथा सन्धियां स्वीकृति के लिए सेनेट के सामने रखना आवश्यक समझा गया। कांग्रेस को अधिकार दिया गया कि वह राष्ट्रपति पर महाभियोग लगाकर उसे पद से अलग कर सकती है। क़ानून और संविधान के अन्तर्गत उठने वाले सभी मुक़दमे सुनने का कार्य न्यायपालिका को सौंपा गया, फलतः न्यायालयों को यह अधिकार था कि वे मौलिक तथा वैधानिक, दोनों प्रकार के कानूनों की व्यवस्था करें। परन्तु राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त और सेनेट द्वारा स्वीकृत न्यायाधिकारियों पर भी कांग्रेस को महाभियोग लगाने का अधिकार दिया गया।

संविधान को उतावले संशोधनों से वचाने के लिए पांचवीं धारा में ऐसी व्यवस्था की गयी कि संविधान में कोई भी संशोधन प्रस्तावित करने का अधिकार या तो कांग्रेस के दोनों सदनों के दो-तिहाई सदस्यों को होगा, या दो-तिहाई राज्य एक सम्मेलन वुलाकर संशोधन का प्रस्ताव रखेंगे। इन प्रस्तावों का अनुसमर्थन दो प्रकार से हो सकता था—या तो तीन-चौथाई राज्यों की विधान-सभाओं द्वारा, या तीन-चौथाई राज्यों के सम्मेलन द्वारा। इनमें से किस उपाय का प्रयोग किया जाये, इसका निर्णय करने का अधिकार कांग्रेस को दिया गया।

अन्त में, सभा के सामने सवसे मुख्य समस्या आयी कि नयी सरकार को जो अधिकार दिये जा रहे हैं उन्हें कार्यान्वित कैसे किया जाये? संघ के उपवन्धों के अन्तर्गत राष्ट्रीय सरकार को काग़ज़ पर तो वहुत, यद्यपि अपर्याप्त अधिकार थे, परन्तु व्यवहार में वे शून्य थे, क्योंकि राज्यों ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया था। नयी सरकार को इस स्थिति से उवारने का क्या उपाय था?

आरम्भ में, अधिकांश प्रतिनिधियों के पास इसका एक ही उत्तर था—शक्ति का प्रयोग। परन्तु शीघ्र ही यह स्पष्ट हो गया कि राज्यों पर शक्ति के प्रयोग से संघ नष्ट हो जायेगा। इसलिए यह निर्णय हुआ कि सरकार को राज्यों पर नहीं, वल्कि राज्यों की जनता पर अपने अधिकारों का प्रयोग करना चाहिए, और देश के प्रत्येक निवासी के लिए कानून वनाना चाहिए। संविधान के मूल सिद्धान्त के रूप में सम्मेलन ने एक संक्षिप्त,

पर बहुत महत्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत किया : 'कांग्रेस को ऐसी सभी विधियों के निर्माण का अधिकार होगा जो इस संविधान द्वारा संयुक्त राज्य की सरकार के निहित अधिकारों के कार्यान्विन के लिए आवश्यक तथा उचित हों।' . . . (धारा १, खण्ड ८)

"यह संविधान, इसके अनुसार बनाये गये संयुक्त राज्य के कानून और संयुक्त राज्य की ओर से की गयी तथा की जाने वाली सभी सन्धियां, इस देश के सर्वोच्च क़ानून होंगे; और किसी राज्य के संविधान या क़ानून में इनके विपरीत व्यवस्था होने पर भी सभी राज्यों के न्यायाधीश इन्हीं क़ानूनों से बाधित होंगे" (धारा ६)

इस प्रकार संयुक्त राज्य के क़ानूनों का पालन, उसके न्यायाधीशों तथा मार्शलों द्वारा सभी राष्ट्रीय न्यायालयों में करने की, और साथ ही सभी राज्यों में वहां के न्यायाधीशों तथा न्यायिक अधिकारियों के द्वारा लागू करने की व्यवस्था हो गयी।

१६ सप्ताह के विचार-विमर्श के पश्चात् १७ सितम्बर, सन् १७८७ ई० को उपस्थित राज्यों के प्रतिनिधियों ने सर्वसम्मति से सम्पूर्ण संविधान पर हस्ताक्षर किये। उस क्षण की पवित्रता से प्रभावित हो वाशिंगटन तथा अन्य प्रतिनिधि गम्भीर मुद्रा में बैठे हुए थे। फ़्रैंकलिन ने अपनी विशिष्ट शैली में एक बात कह कर इस तनाव को भंग किया। वाशिंगटन की कुर्सी की पीठ पर चमकदार सुनहरे रंग में चित्रित अर्द्ध-सूर्य की ओर संकेत कर उसने कहा :

"सत्र की अवधि में, और सभा के परिणामों के प्रति अपनी आशाओं और निराशा के उतार-चढ़ाव में मैं राष्ट्रपति के पीछे जो अंकन है उसे बार-बार देखता रहा हूं, परन्तु यह नहीं निश्चय कर पाया था कि वह चढ़ता सूर्य है या डूबता सूर्य। परन्तु, अन्त में अब मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि यह डूबता नहीं, अपितु चढ़ता हुआ सूर्य है।"

सभा समाप्त हो गयी; सदस्यगण 'नगर-सराय में गये, उन्होंने साथ-साथ भोजन किया और एक-दूसरे से हार्दिक विदाई ली।' फिर भी सर्वांग परिपूर्ण संघ के लिए संघर्ष के एक निर्णायक दौर का सामना करना अभी शेष था। इस संविधान को कार्यान्वित करने से पूर्व विभिन्न राज्यों की जन-निर्वाचित सभाओं अथवा सम्मेलनों की स्वीकृति लेना आवश्यक था।

राष्ट्रीय सम्मेलन ने यह निश्चय किया था कि ज्यों ही १३ में से ९ राज्यों के सम्मेलनों की स्वीकृति मिल जायेगी, संविधान लागू कर दिया जायेगा। सन् १७८७ ई० के अन्त तक तीन राज्यों ने इसका अनुसमर्थन कर दिया था। परन्तु क्या अन्य छः भी इसे स्वीकार कर लेंगे ? अनेक साधारण लोगों को यह संविधान खतरनाक जान पड़ता था, क्योंकि उन्हें भय था कि इसने जिस शक्तिशाली केन्द्रीय शासन की स्थापना की है वह उन पर अत्याचार करेगा, उन पर भारी करों का बोझ लादेगा, और उन्हें युद्धों में घसीटेगा।

इन प्रश्नों पर मतभेद होने के कारण दो दल बन गये, संघवादी (फ़ेडरलिस्ट) और संघ-विरोधी (ऐण्टी फ़ेडरलिस्ट)—अर्थात् वे जो शक्तिशाली केंद्रीय सरकार चाहते थे, और वे जो विविध राज्यों का एक शिथिल संघ चाहते थे। समाचार-पत्रों में,

विधान-सभाओं में, तथा राज्यों के सम्मेलनों में दोनों दलों की ओर से जोशीली दलीलें पेश की गयीं। उनमें सबसे योग्यतापूर्ण दलीलें 'फ़ेडरलिस्ट पेपर्स' में प्रकाशित हुईं। ये लेख नये संविधान के समर्थन में हैमिल्टन, मैडिसन और जॉन जे द्वारा लिखे गये थे और अब उत्कृष्ट राजनीतिक कृति माने जाते हैं।

मैसाचूसेट्स में किसानों में अब भी असन्तोष फैला हुआ था। वहां अत्यन्त तीव्र संघर्ष के पश्चात् राज्य के संविधान में संशोधनस्वरूप एक अधिकार-पत्र जोड़ा गया। अन्य राज्यों ने भी अपने-अपने संविधानों में इस प्रकार का विस्तार किया। इस प्रकार संघीय संविधान के प्रथम दस संशोधनों को एक अधिकार-पत्र के रूप में देश के सर्वोच्च क़ानून में सम्मिलित कर लिया गया।

इन संशोधनों ने संयुक्त राज्य के नागरिकों को जो अधिकार दिये उनमें अन्य अधिकारों के अतिरिक्त धर्म, भाषण, मुद्रण और सभा करने की स्वतन्त्रता, स्थायी सेना के स्थान पर नागरिक सेना, जूरी द्वारा मुक़दमों की सुनवाई का अधिकार, देश के कानून के अनुसार शीघ्र निर्णय, और खुले वारण्टों के निषेध की भी व्यवस्था है। अधिकार-पत्र की स्वीकृति के परिणामस्वरूप डावांडोल राज्यों का भी संविधान के लिए समर्थन प्राप्त हो गया और वह २५ जून, सन् १७८८ ई० को अन्तिम रूप से स्वीकृत हो गया।

संघ की कांग्रेस ने प्रथम राष्ट्रपति के चुनाव की व्यवस्था की और यह घोषणा की कि ४ मार्च, सन् १७८९ ई० से नयी सरकार अस्तित्व में आ जायेगी।

वाशिंगटन की विवेकपूर्ण योजना

राष्ट्र के नये प्रधान के लिए प्रत्येक व्यक्ति के होठों पर केवल एक ही नाम था—जॉर्ज वाशिंगटन, जो सर्वसम्मति से राष्ट्रपति चुना गया। ३० अप्रैल सन् १७८९ ई० को वाशिंगटन ने पद की शपथ ली। उसने राष्ट्रपति के अधिकारों का निष्ठापूर्वक पालन करने और अपने पूरे सामर्थ्य से 'संयुक्त राज्य के संविधान के परिरक्षण, संरक्षण और प्रतिरक्षण' का वादा किया।

इस प्रकार एक सशक्त गणतन्त्र ने अपना जीवन आरम्भ किया। युद्ध-जनित आर्थिक समस्याएं सुलझती जा रही थीं और देश बराबर उन्नति कर रहा था। यूरोप से आप्रवासन बड़े परिमाण में होने लगा, थोड़े मूल्य पर अच्छे खेत मिल जाते थे, मज़दूरों की बेहद मांग थी। उत्तरी न्यूयॉर्क, पेनसिलवैनिया और वर्जिनिया की सम्पन्न घाटियां शीघ्र ही विशाल गेहूं-उत्पादक क्षेत्रों में परिणत हो गयीं।

यद्यपि अधिकांश सामान देश में ही बनने लगा था, तथापि उद्योगों का भी विकास होता जा रहा था। मैसाचूसेट्स और रोड आइलैण्ड में कपड़े के महत्वपूर्ण उद्योग की नींव पड़ रही थी। कनेक्टिकट में टिन का सामान और घड़ियां बनने लगी थीं। न्यूयॉर्क, न्यूजर्सी और पेनसिलवैनिया काग़ज़, कांच और लोहे का निर्माण करने लगे थे। जहाजरानी इतनी बढ़ गयी थी कि समुद्र पर इंग्लैण्ड के बाद अमेरिका का ही स्थान था। सन् १७९० ई० के पूर्व ही अमेरिकी जहाज़ समूर बेचने और वहां से चाय, मसाले और रेशम लाने के लिए चीन जाने लगे थे।

परन्तु अमेरिकी शक्ति का विस्तार प्रधानतया पश्चिम की ओर हो रहा था। न्यूइंग्लैण्ड और पेनसिलवैनिया के लोग ओहायो की ओर बढ़ रहे थे, वर्जिनिया और दोनों कैरोलाइना के रहने वाले केंटुकी और टेनेसी की ओर अग्रसर हो रहे थे। ऐलेगनी पर्वत के लम्बे ढालों पर सीमावर्ती लोगों की सफ़ेद छत वाली गाड़ियों की पंक्तियां चढ़ती जा रही थीं। मृगचर्म पहने हुए शिकारी तथा फ़र्नीचर, बीज, खेती के औज़ारों से भरी गाड़ियां और पालतू जानवरों को लिये हुए पथ-प्रदर्शक केंटुकी में घुसे जा रहे थे। अनेक स्थानों पर जंगल साफ़ करके सीमावर्ती किसान और उनके पड़ोसी लकड़ी की झोपड़ियां बनाते, उनकी दरारों को मिट्टी से मूंदते, और उनकी छत बलूत की टहनियों से छाते थे। प्रतिवर्ष अनाज, नमकीन मांस, तथा पोटाश से भरी नावें और बेड़े मिसिसिपी नदी के रास्ते न्यूआर्लियन्स पहुंचते थे। धीरे-धीरे पश्चिमी नगर अधिक महत्वपूर्ण हो गये थे।

जिस समय वाशिंगटन ने अपना पद संभाला उस समय देश की यह दशा थी। नये संविधान को न तो किसी परम्परा का सहारा था और न संगठित लोकमत का ही समर्थन प्राप्त था। संविधान के अनुसमर्थन के समय जो दो दल बने थे वे अब भी एक-दूसरे के विरोधी थे। संघवादी दल वाले शक्तिशाली केन्द्रीय सत्ता के पक्ष में थे और व्यापार तथा व्यापारिक हितों की रक्षा करना चाहते थे। संघ-विरोधी दल वाले राज्यों को अधिकार देने तथा कृषि को प्रधानता देने के पक्ष में थे।

इसके अतिरिक्त नये शासन को अपने संचालन के लिए कार्य-प्रणाली की व्यवस्था स्वयं करनी थी। कर एकत्र नहीं हो रहे थे। जब तक न्याय-विभाग की स्थापना न हो जाये, क़ानून लागू करने का कोई साधन न था। सेना बहुत छोटी थी। नौसेना का अस्तित्व ही समाप्त हो गया था। ऐसी संकटमय परिस्थिति में वाशिंगटन का विवेकपूर्ण नेतृत्व कसौटी पर था। जिन गुणों के कारण वह क्रान्ति का प्रथम सैनिक बना उन्हीं गुणों ने उसे नव-संगठित गणतन्त्र का प्रथम राजनीतिज्ञ बना दिया। उसमें भविष्य के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए बुद्धिमत्तापूर्ण योजनाएं बनाने की दूरदर्शिता और असीम कष्ट सहन करने की क्षमता थी। वह चतुर की अपेक्षा सरल होना पसन्द करता था, साहसी और पराक्रमी होते हुए भी शालीन था, गम्भीर और यथार्थतः नम्र था, और लोगों में अपने प्रति सम्मान तथा विश्वास उत्पन्न कर लेता था।

दो दृढ़ दृष्टिकोणों में प्रतिद्वन्द्विता

कांग्रेस ने शीघ्र ही विदेश और अर्थ विभाग स्थापित किये। वाशिंगटन ने टॉमस जेफ़र्सन को विदेश-मंत्री (सेक्रेटरी ऑफ स्टेट) और अपने क्रान्तिकालीन सहायक एलेक्जेण्डर हैमिल्टन को अर्थ-मन्त्री (सैक्रेटरी ऑफ़ ट्रेज़री) नियुक्त किया। साथ ही कांग्रेस ने संघीय न्यायपालिका गठित की। सर्वोच्च न्यायालय में एक मुख्य न्यायाधीश तथा पांच सहायक न्यायाधीश नियुक्त किये गये। मुख्य न्यायाधीश के पद पर जॉन जे को नियुक्त किया गया। इसके अतिरिक्त तीन सर्किट न्यायालय और तेरह ज़िला न्यायालय स्थापित किये गये।

पहले प्रशासन में एक युद्ध-मन्त्री और एक महान्यायवादी (एटार्नी जनरल) भी नियुक्त किये गये। वाशिंगटन अपने सभी निर्णय उन व्यक्तियों की सलाह से करना चाहता था जिनकी विचार-शक्ति का वह आदर करता था, इसलिए अमेरिकी मंत्रिमण्डल अपने आप बन गया, जिसमें कांग्रेस द्वारा बनाये जाने वाले सभी विभागों के प्रमुख सम्मिलित थे।

हैमिल्टन और जेफ़र्सन अमेरिका की दो शक्तिशाली परन्तु कुछ हद तक परस्पर-विरोधी शक्तियों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। हैमिल्टन विशेष संगठित संघ तथा शक्तिशाली राष्ट्रीय शासन के पक्ष में था, जेफ़र्सन अधिक व्यापक और स्वतन्त्र लोकतन्त्र के पक्ष में था। हैमिल्टन ने सार्वजनिक जीवन में कुशलता, व्यवस्था और संगठन के प्रति प्रेम उत्पन्न किया। जब प्रतिनिधि-सभा (हाउस ऑफ़ रिप्रेज़ेण्टेटिव्स) ने उसे 'सार्वजनिक ऋण को पर्याप्त अवलम्ब' देने की योजना बनाने को कहा तो हैमिल्टन ने न केवल सार्वजनिक मितव्ययिता, अपितु प्रभावशाली प्रशासन के भी सिद्धान्तों का प्रतिपादन और समर्थन किया।

उसने कहा कि अमेरिका को औद्योगिक विकास, व्यापारिक कार्यों, तथा शासन संचालन के लिए ऋण मिलना चाहिए। उसे जनता का पूर्ण विश्वास और समर्थन भी मिलना चाहिए। बहुत-से लोग ऐसे थे जो चाहते थे कि राष्ट्रीय ऋण की देनदारी अमान्य कर दी जाये या इसका भुगतान केवल आंशिक रूप में किया जाय। परन्तु हैमिल्टन ने ऋण के पूर्ण भुगतान पर बल दिया और उसने एक ऐसी योजना भी बनायी जिसके अनुसार क्रान्ति के प्रोत्साहन के लिए विभिन्न राज्यों द्वारा लिये गये जिन ऋणों का अभी तक पूरी तरह भुगतान नहीं किया गया था उनके भुगतान का भार संघीय शासन ले ले।

हैमिल्टन ने और भी बहुत कुछ किया। उसने बैंक आफ यूनाइटेड स्टेट्स की एक योजना बनायी और उसे देश के विभिन्न भागों में शाखाएं खोलने का अधिकार दिया। उसने एक राष्ट्रीय टकसाल भी खोलने का समर्थन किया और राष्ट्रीय उद्योगों के विकास के लिए उद्योगों के संरक्षण के सिद्धान्त पर सीमा-शुल्क निर्धारित करने की नीति का समर्थन किया। इन उपायों से संघीय शासन की साख जम गयी और उसे जितने राजस्व की आवश्यकता थी वह मिल गयी। इससे व्यापार और उद्योग की उन्नति हुई, और ऐसे व्यापारियों का एक ठोस वर्ग बन गया जो राष्ट्रीय शासन के दृढ़ समर्थक थे और उसे निर्बल करने के सभी प्रयत्नों को रोकने के लिये तैयार थे।

जेफ़र्सन चिन्तनशील और दार्शनिक अधिक था और अक्सर हैमिल्टन से उसका मतभेद हो जाता था। विदेशों से सम्बन्ध रखने के लिए एक सशक्त केन्द्रीय सरकार की आवश्यकता को जेफ़र्सन भी स्वीकार करता था, परन्तु इस डर से कि वह कहीं मनुष्यों की स्वतन्त्रता में बाधक न हो जाये, वह इस शासन को अन्य क्षेत्रों में शक्तिशाली नहीं होने देना चाहता था। हैमिल्टन का प्रधान उद्देश्य था अधिक कुशल संगठन, जेफ़र्सन का उद्देश्य था अधिकाधिक व्यक्तिगत स्वतन्त्रता, क्योंकि उसका विश्वास था कि संसार में 'प्रत्येक मनुष्य और प्रत्येक जनसमूह को स्वशासन का अधिकार है।' हैमिल्टन अराजकता से डरता था और व्यवस्था के विषय में सोचता था, जेफ़र्सन अत्याचार से डरता था और

स्वतन्त्रता की बात सोचता था। अमेरिका को दोनों की आवश्यकता थी। यह देश का सौभाग्य था कि उसे दोनों व्यक्ति मिल गये और कालान्तर में उन्होंने अपने विचारों में सामंजस्य स्थापित कर लिया। जेफ़र्सन के विदेश-मन्त्री का पद संभालते ही इन दोनों में एक संघर्ष हुआ, जिसके फलस्वरूप संविधान की एक नयी और अत्यन्त महत्वपूर्ण व्याख्या की गयी। जब हैमिल्टन ने राष्ट्रीय बैंक की स्थापना के लिए अपना विधेयक प्रस्तुत किया, तब जेफ़र्सन ने उसका विरोध किया। उसने राष्ट्रीय अधिकारों के विरुद्ध राज्य के अधिकारों का समर्थन किया, और बड़े-बड़े निगमों से आतंकित लोगों की ओर से बहस करते हुए यह कहा कि संघीय शासन के सभी अधिकारों की संविधान में स्पष्ट गणना कर दी गयी है और शेष सभी अधिकार राज्यों के लिए सुरक्षित कर दिये गये हैं। संघीय प्रशासन को बैंक स्थापित करने का अधिकार कहीं भी नहीं दिया गया है।

हैमिल्टन का कहना था कि संघीय शासन को बहुत-से ऐसे अधिकार दिये गये हैं जो अनावश्यक विस्तार से बचने के लिए सामान्य धाराओं में ही निहित हैं, और इन्हीं में से एक धारा द्वारा कांग्रेस को विशेष रूप से दिये गये अधिकारों का पालन कराने के लिए आवश्यक कानून बनाने का अधिकार है। संविधान ने राष्ट्रीय सरकार को कर लगाने और वसूल करने, ऋण चुकाने और धन उधार लेने का अधिकार दिया है। इन कार्यों के कुशल सम्पादन में राष्ट्रीय बैंक से विशेष सहायता मिलेगी। इसलिए कांग्रेस अपने निहित अधिकारों के अनुसार ऐसा बैंक खोल सकती है। वाशिंगटन और कांग्रेस ने हैमिल्टन के मत का समर्थन किया और इस प्रकार एक दृष्टान्त स्थापित कर दिया।

यद्यपि पहला काम आन्तरिक अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ करना और संघ को आर्थिक दृष्टि से सुरक्षित बनाना था, तथापि यह नवीन राष्ट्र विदेशों की राजनीतिक घटनाओं की उपेक्षा नहीं कर सकता था। वाशिंगटन की वैदेशिक नीति का आधार था : शान्ति को सुरक्षित रखना, देश को अपने घाव भरने के लिए समय देना, और मन्द गति से बढ़ते हुए राष्ट्रीय एकीकरण को आगे बढ़ाना। यूरोप की घटनाओं से इस उद्देश्य को आघात पहुंचने का भय था। बहुत-से अमेरिकी फ्रान्स की क्रान्ति की ओर बड़ी दिलचस्पी और सहानुभूति से देख रहे थे। अप्रैल सन् १७९३ ई० में एक ऐसा समाचार मिला जिसने इस संघर्ष को अमेरिकी राजनीति का एक प्रश्न बना दिया। फ्रान्स ने ग्रेट ब्रिटेन और स्पेन के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी थी, और सिटिज़न ज़ेने फ्रान्स के गणतन्त्र का राजदूत बनकर संयुक्त राज्य आ रहा था।

औपचारिक रूप से अमेरिका अब भी फ्रान्स का मित्र था और स्वतन्त्रता-संग्राम में प्राप्त सहायता के लिए उसके प्रति कृतज्ञ और ऋणी था। यद्यपि अमेरिका की जनता और सरकार फ्रान्सीसियों का भला चाहती थी, परन्तु वे इस युद्ध से अलग रहना चाहते थे। वाशिंगटन ने तटस्थता की नीति घोषित कर दी, और जब ज़ेने वहां पहुचा तब उसका स्वागत कोरी औपचारिकता से किया गया। क्रुद्ध हो उसने इस आदेश की अवहेलना की कि फ्रान्स के गैरसरकारी युद्ध-पोत अमेरिकी बन्दरगाहों को अपनी कार्रवाइयों का आधार न बनायें। कुछ ही समय बाद संयुक्त राज्य ने फ्रान्सीसी सरकार से यह प्रार्थना की कि वह वापस बुला लिया जाये।

जेने वाली घटना के परिणामस्वरूप अमेरिका और फ्रान्स के सम्बन्धों में तनाव आ गया। साथ ही ग्रेट ब्रिटेन के साथ भी सम्बन्ध संतोषजनक नहीं थे। ब्रिटिश सैनिकों ने अब भी पश्चिम में किलों पर अधिकार जमा रखा था। क्रान्ति के समय ब्रिटिश सैनिक जो सम्पत्ति उठा ले गये थे वह न तो अभी तक वापस की गयी थी और न उसका मूल्य ही दिया गया था, और ब्रिटिश नौसेना अमेरिकी व्यापार को भारी क्षति पहुंचा रही थी। इन समस्याओं को सुलझाने के लिए वाशिंगटन ने अमेरिका के प्रमुख न्यायाधीश जॉन जे को विशेष दूत के रूप में लन्दन भेजा। संयमपूर्वक कार्य कर जे ने एक सन्धि की, जिसके अनुसार पश्चिमी दुर्गों से ब्रिटिश सेना हटा ली गयी और कुछ व्यापारिक सुविधाएं भी प्राप्त हुई। परन्तु सम्पत्ति की वापसी, भविष्य में अमेरिकी जहाज़ों की पकड़-धकड़, और इम्प्रेसमेण्ट अर्थात् अमेरिकी नाविकों की ब्रिटिश नौसेना में बलपूर्वक भर्ती के विषय में कुछ भी नहीं कहा गया।

वाशिंगटन का अवकाशग्रहण

जे की सन्धि से व्यापक असन्तोष फैला, परन्तु ज्यों-ज्यों वाशिंगटन का द्वितीय शासन-काल समाप्त होने लगा त्यों-त्यों यह स्पष्ट होता गया कि अन्य क्षेत्रों में निश्चित प्रगति हुई है। सरकार संगठित हो चुकी थी, राष्ट्रीय साख जम चुकी थी, समुद्री व्यापार बढ़ रहा था, उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र पर पुनः अधिकार हो गया था, और शान्ति सुरक्षित हो गयी थी।

वाशिंगटन ने सन् १७९७ ई० में अवकाश ग्रहण किया और राष्ट्र के प्रधान के पद पर आठ वर्ष से अधिक काम करना स्वीकार नहीं किया। उनका उप-राष्ट्रपति मैसाचूसेट्स का जॉन ऐडम्स नया राष्ट्रपति चुना गया। राष्ट्रपति बनने से पूर्व ही उसका एलेक्ज़ेण्डर हैमिल्टन से झगड़ा हो गया था और इस प्रकार दल में विभाजन हो जाने से वह असुविधा-जनक परिस्थिति में था। हैमिल्टन ने पहले शासन में विशेष योगदान दिया था। इन आन्तरिक कठिनाइयों को अन्तर्राष्ट्रीय कठिनाइयों ने और जटिल बना दिया था। ब्रिटेन के साथ जे की सन्धि से क्रुद्ध होकर फ्रान्स ने ऐडम्स के दूत का स्वागत करना अस्वीकार कर दिया। जब ऐडम्स ने तीन अन्य कमिश्नर पेरिस भेजे और वे भी अस्वीकार कर दिये गये, तब अमेरिका का रोष अधिक प्रज्वलित हो उठा। सैनिकों की भर्ती की गयी, नौसेना को सशक्त बनाया गया और सन् १७९९ ई० में फ्रान्सीसियों के साथ ऐसे अनेक समुद्री युद्धों के पश्चात् जिनमें अमेरिकी जहाज़ विजयी रहे, युद्ध अनिवार्य प्रतीत होने लगा। हैमिल्टन युद्ध चाहता था। ऐडम्स ने उसकी सलाह की उपेक्षा कर फ्रान्स में एक नया दूत भेजा। नैपोलियन ने हाल ही में शासन-सूत्र संभाला था। उसने इस दूत का हार्दिक स्वागत किया और संघर्ष का खतरा टल गया।

जेफ़र्सन के लोकतन्त्री विचार

सन् १८०० ई० तक ऐडम्स की आन्तरिक नीति से असन्तुष्ट अमेरिकी जनता

परिवर्तन के लिए तैयार थी। वाशिंगटन और ऐडम्स के नेतृत्व में संघवादी दल ने सशक्त सरकार की स्थापना कर ली थी। परन्तु कभी-कभी इस सिद्धान्त का अनादर करके, कि अमेरिकी शासन को जनता की इच्छा के अनुकूल चलना चाहिए, उन्होंने ऐसी नीतियां अपनायीं जिनसे जनता का एक बड़ा भाग उनके विरुद्ध हो गया।

जन्मजात लोकप्रिय नेता, जेफ़र्सन ने धीरे-धीरे अपने साथ छोटे किसानों, दूकानदारों और अन्य कर्मकारों की एक बड़ी संख्या एकत्रित कर ली थी, और सन् १८०० ई० के चुनाव में ये असाधारण शक्ति से जमे रहे। जेफ़र्सन ने अपने एक मित्र को लिखा, "हमारे पोत के दृढ़ पार्श्वों की पूरी परीक्षा हो चुकी है। हम उसे उसके गणतान्त्रिक मार्ग पर बढ़ायेंगे और अब वह अपनी मनोहर गति से अपने निर्माताओं की कुशलता को स्पष्ट करेगा।"

अमेरिकी आदर्शवादिता के प्रति अपने आग्रह के कारण जेफ़र्सन को असाधारण समर्थन प्राप्त हुआ। अपने उद्घाटन-भाषण में उसने एक विवेकपूर्ण और मितव्ययी सरकार स्थापित करने की प्रतिज्ञा की, जो देश के निवासियों के मध्य व्यवस्था की रक्षा करते हुए उन्हें अपने उद्योग और विकास के प्रयत्नों को नियन्त्रित करने के लिए पूरी स्वतन्त्रता देगी।

राष्ट्रपति-निवास (व्हाइट हाउस) में जेफ़र्सन की उपस्थिति मात्र से प्रजातान्त्रिक प्रणालियों को प्रोत्साहन मिला। उसके लिए साधारण नागरिक भी सम्मान के उतना ही योग्य था जितना उच्चतम अधिकारी। उसने अपने अधीनस्थ कर्मचारियों को यह सिखलाया कि अपने को जनता का न्यासी समझें। उसने कृषि तथा पश्चिम की ओर विस्तार को प्रोत्साहित किया। यह विश्वास कर कि अमेरिका उत्पीड़ितों का आश्रय स्थान है, उसने नागरिकता के कानून को उदार बना दिया। सन् १८०९ ई० के अन्त तक उसके दूरदर्शी अर्थमन्त्री अलबर्ट गैलेटिन ने राष्ट्रीय ऋण घटाकर ६ करोड़ डालर से भी कम कर दिया। राष्ट्र में जेफ़र्सनवादी भावना की लहर दौड़ जाने के फलस्वरूप एक के बाद एक राज्यों ने मताधिकार के लिए सम्पत्ति की योग्यता को समाप्त कर दिया और कर्जदारों तथा अपराधियों के लिए अधिक मानवीय कानून बनाने लगे।

जेफ़र्सन के एक कार्य ने देश का क्षेत्रफल दुगुना कर दिया। मिसिसिपी नदी के पश्चिम का प्रदेश, उसके मुहाने पर स्थित न्यू ऑर्लियन्स के बन्दरगाह सहित, चिरकाल से स्पेन के अन्तर्गत था। यह बन्दरगाह ओहायो और मिसिसिपी घाटियों में उत्पन्न अमेरिकी माल के निर्यात के लिए अनिवार्य था। जेफ़र्सन के पद-ग्रहण करने के बाद ही नैपोलियन ने स्पेन की निर्बल सरकार को विवश किया कि वह लुइज़ियाना नामक विशाल प्रदेश फ्रान्स को वापस कर दे। इससे अमेरिका के लोग आशंकित और क्रुद्ध हुए। संयुक्त राज्य के ठीक पश्चिम में एक बड़ा औपनिवेशिक साम्राज्य बसाने की नैपोलियन की योजनाओं से व्यापारिक अधिकार और भीतर की सभी बस्तियों की सुरक्षा को संकट उत्पन्न हो जाता।

जेफ़र्सन ने बलपूर्वक यह कहा कि यदि फ्रान्स ने लुइज़ियाना पर अधिकार किया तो उसी क्षण से हमें ब्रिटिश बेड़े और राष्ट्र से गठबन्धन कर लेना चाहिए, और यूरोप के

युद्ध में चला पहला तोप का गोला न्यू ऑर्लियन्स पर इंग्लैण्ड और अमेरिका की संयुक्त सेना के आक्रमण का संकेत होगा।

नैपोलियन यह जानता था कि ऐमियन्ज़ की स्वल्पकालिक सन्धि के पश्चात् ग्रेट ब्रिटेन से एक दूसरा युद्ध होने वाला है और जब यह होगा तब लुइज़ियाना उसके हाथ से निकल जायेगा। इसलिए उसने लुइज़ियाना को संयुक्त राज्य के हाथ बेचकर अपना राज्यकोष भर लेने और उसे अंग्रेज़ों की पहुंच के बाहर कर देने का निश्चय कर लिया।

डेढ़ करोड़ डालर में सन् १८०३ ई० में संयुक्त राज्य को २६ लाख वर्ग किलोमीटर से भी अधिक भूमि के साथ-साथ न्यू ऑर्लियन्स का बन्दरगाह भी मिला। राष्ट्र को सम्पन्न मैदानों का एक बहुत बड़ा क्षेत्र मिल गया था, जो अगले ८० वर्षों के भीतर संसार का बहुत बड़ा अन्न-भण्डार बनने वाला था। इसके द्वारा महाद्वीप की सभी केन्द्रीय नदियों पर भी नियन्त्रण रखा जा सकता था।

इंग्लैण्ड से द्वितीय युद्ध

जेफ़र्सन की दूर-दूर तक फैली लोकप्रियता ने सन् १८०४ ई० में उसका पुनर्निर्वाचन निश्चित कर दिया था। स्पष्टत: लुइज़ियाना बहुत बड़ा उपहार था, देश सम्पन्न था, और राष्ट्रपति ने सभी वर्गों के लोगों को प्रसन्न करने का कठोर प्रयास किया था। सन् १८०५ से आरम्भ हुए अपने द्वितीय शासनकाल में जेफ़र्सन ने ग्रेट ब्रिटेन और फ़ान्स के बीच संघर्ष में अमेरिका की तटस्थता घोषित की। इन दोनों शक्तियों ने नाकेबन्दी कर दी, जिसके फलस्वरूप अमेरिकी व्यापार को काफ़ी क्षति पहुंची। कोई भी अमेरिकी जहाज़ बिना पकड़े जाने के भय के फ़ान्स अथवा ब्रिटेन से व्यापार नहीं कर सकता था।

ब्रिटिश लोगों ने अपनी नौसेना में ७०० से अधिक युद्धपोत एकत्रित कर लिये थे, जिनमें १,५०,००० नाविक और नौसैनिक थे। इससे ब्रिटेन सुरक्षित रहता था, उसका व्यापार सुरक्षित था, और अपने उपनिवेशों के साथ उसका यातायात भी सुरक्षित था। फिर भी उसके बेड़े के कर्मीदल के साथ इतना हेय व्यवहार किया जाता था कि स्वतन्त्र भरती द्वारा नाविकों का मिलना कठिन था। बहुत-से नाविकों ने भागकर अमेरिकी जहाजों में शरण ली। इन परिस्थितियों में ब्रिटिश अधिकारियों ने अमेरिकी जहाज़ों की तलाशी लेना और ब्रिटिश प्रजाजनों को वहां से वापस लेना अपना अधिकार समझा। अमेरिकियों की इससे बड़ी मानहानि हुई। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश अधिकारी बहुधा अमेरिकी नौसैनिकों को बलपूर्वक पकडकर अपनी सेवा में रख लेते थे।

जेफ़र्सन ने अन्त में कांग्रेस को प्रेरित किया कि वह पोत अधिरोध अधिनियम (एम्बार्गो ऐक्ट) लागू करके विदेशी व्यापार रोक दे। परन्तु इसके परिणाम भयंकर हुए। इससे जहाज़रानी का हित प्राय: नष्ट हो गया और न्यूइंग्लैण्ड तथा न्यूयॉर्क में असन्तोष फैलने लगा। कृषकों ने देखा कि उन्हें भी बहुत हानि हो रही है, क्योंकि जब दक्षिणी और पश्चिमी क्षेत्रों के किसान अपना बचा हुआ अनाज, मांस, और तम्बाकू बाहर भेजने में असमर्थ हो गये तो वस्तुओं के मूल्य गिरने लगे।

एक वर्ष के भीतर अमेरिका का निर्यात पहले का पांचवां भाग रह गया, परन्तु यह आशा पूरी नहीं हुई कि इस प्रतिवन्ध से विवश होकर ग्रेट ब्रिटेन अपनी नीति बदल देगा। जब आन्तरिक असन्तोष बढ़ने लगा तो जेफ़र्सन ने मध्यम मार्ग का सहारा लिया, जिससे देश की जहाज़रानी के हितों को सन्तोष हुआ। तटबन्दी के स्थान पर एक असहयोग कानून बनाया गया, जिसने ब्रिटेन और फ़ान्स तथा उनके अधीन देशों के अतिरिक्त अन्य सभी देशों से व्यापार करने की अनुमति दी। इसने राष्ट्रपति को यह अधिकार देकर कि वह इन दोनों देशों में से जो कोई अमेरिकी व्यापार पर से प्रतिवन्ध हटा ले उसके विरुद्ध इस क़ानून की कार्यवाही रोक सकता था, वार्त्ता का मार्ग प्रशस्त किया। सन् १८१० ई० में नैपोलियन ने यह घोषणा की कि उसने अपने प्रतिवन्ध हटा लिये हैं। वास्तव में ये प्रतिबन्ध जारी रहे, परन्तु संयुक्त राज्य ने उसके शब्दों पर विश्वास कर लिया और इसके पश्चात केवल ग्रेट ब्रिटेन से अपना असहयोग जारी रखा।

सन् १८०९ ई० में जेम्स मैडिसन जेफ़र्सन का उत्तराधिकारी बना। ग्रेट ब्रिटेन के साथ सम्बन्ध और भी बिगड़ गये और दोनों देश युद्ध की दिशा में बहने लगे। राष्ट्रपति ने कांग्रेस के सामने 'एक विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया जिसमें उसने यह स्पष्ट किया कि ऐसे ६,०५७ उदाहरण हैं जिनमें अंग्रेज़ों ने अमेरिकी नागरिकों को बलपूर्वक भर्ती किया है। इसके अतिरिक्त उत्तर-पश्चिमी प्रदेश के निवासियों को रेड इण्डियनों के आक्रमण से कष्ट पहुंचा था और उनका विश्वास था कि ये आक्रमण कैनेडा-स्थित ब्रिटिश प्रतिनिधियों द्वारा उकसाये गये थे। सन् १८१२ ई० में संयुक्त राज्य ने ब्रिटेन के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया।

गेण्ट की सन्धि और युद्ध की समाप्ति

संयुक्त राज्य इस समय अत्यन्त गम्भीर आन्तरिक मतभेदों से पीड़ित था। दक्षिण और पश्चिम युद्ध के पक्ष में थे, परन्तु न्यूयॉर्क और न्यूइंग्लैण्ड साधारणतया इसके विरुद्ध थे। जब युद्ध की घोषणा की गयी थी तो सैनिक तैयारी सर्वथा अपूर्ण थी। नियमित सैनिक ७००० से भी कम थे, और वे भी समुद्र के किनारे कैनेडा की सीमा पर, तथा सुदूर अन्तर्प्रदेश में फैले विभिन्न चौकियों में बिखरे पड़े थे। इनकी सहायता के लिए कई राज्यों की अभ्यासहीन तथा अनुशासनहीन नागरिक सेना थी।

युद्ध का आरम्भ कैनेडा पर तीन ओर से आक्रमण की तैयारी के साथ हुआ। यदि यह ठीक समय पर ठीक ढंग से किया जाता तो माण्ट्रियल के विरुद्ध संगठित कार्रवाई हो सकती थी। परन्तु सम्पूर्ण अभियान असफल रहा और परिणामस्वरूप डिट्रॉयट पर ब्रिटिश अधिकार स्थापित हो गया। परन्तु नौसेना ने सफलताएं प्राप्त कीं और अमेरिकी आत्मविश्वास को पुनः स्थापित किया। कैप्टन आइज़क हल के नेतृत्व में 'कांस्टिट्यूशन' नामक एक युद्ध-पोत ने १९ अगस्त को बॉस्टन के दक्षिण-पूर्व में 'गोरियर' नामक ब्रिटिश जहाज़ का सामना किया और उसे नष्ट कर दिया। दो महीने पश्चात् 'वास्प' नामक एक छोटे अमेरिकी युद्ध-पोत ने 'फ़ॉलिक' नामक एक छोटे युद्ध-पोत को नष्ट कर दिया।

इसके अतिरिक्त झुण्ड के झुण्ड व्यक्तिगत सशस्त्र जहाज़ (प्राइवेटियर) अतलान्तिक महासागर में फैल गये और सन् १८१२-१३ ई० के शरद और जाड़े की ऋतु में उन्होंने ५०० ब्रिटिश जहाज़ पकड़े।

सन् १८१३ ई० का अभियान न्यूयॉर्क राज्य के ईरी झील के आस-पास केन्द्रित रहा। डिट्रॉयट को पुनः जीतने के उद्देश्य से विलियम हेनरी हैरिसन ने केंटुकी से नागरिक सैनिकों, स्वयंसेवकों और नियमित सैनिकों की एक सेना लेकर आक्रमण किया। १२ सितम्बर को वह अभी ओहायो के उत्तरी प्रदेश में ही था कि उसे सूचना मिली कि कमाडोर ओलिवर हैज़र्ड पेरी ने ईरी झील में शत्रु के जहाज़ों को नष्ट कर दिया है। हैरिसन ने डिट्रॉयट पर अधिकार कर लिया और ब्रिटिश और उनके रेड इण्डियन साथियों को कैनेडा में खदेड़ दिया। अब यह सारा प्रदेश अमेरिकी नियन्त्रण में आ गया था।

युद्ध का दूसरा निर्णायक मोड़ एक वर्ष पश्चात् उस समय आया जब कमाडोर टॉमस मैकडोनो ने उत्तरी न्यूयॉर्क में स्थित शैम्प्लेन झील में एक ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े को आमने-सामने की तोपों की लड़ाई में परास्त किया। नौसेना की सहायता के अभाव में १०,००० ब्रिटिश सैनिकों को कैनेडा की ओर पीछे लौटना पड़ा। लगभग उसी समय एक ब्रिटिश जहाज़ी बेड़ा पूर्वी समुद्र-तट वालों को परेशान कर रहा था। २४ अगस्त की रात को एक अभियान दल संघ सरकार के केन्द्र वाशिंगटन में घुस गया और उसे जला डाला। राष्ट्रपति मैडिसन तथा अधिकारी भाग कर वर्जिनिया चले गये।

तीन सप्ताह पश्चात् ब्रिटिश जहाज़ी बेड़े ने बाल्टीमोर पर आक्रमण किया और नगर की रक्षा करने वाले मैकहेनरी किले पर गोले बरसाना आरम्भ किया। क़िले वालों ने दुश्मन का डट कर सामना किया। एक ब्रिटिश जहाज़ में गिरफ़्तार मेरीलैण्ड का एक नवयुवक वकील फ्रान्सिस स्कॉट की इस युद्ध को देखकर इतना उत्प्रेरित हुआ कि उसने 'दि स्टार स्पैंग्ल्ड बैनर' नामक अमेरिकी राष्ट्रगीत लिख डाला।

युद्ध की समाप्ति गेण्ट की सन्धि से हुई, जिसके अनुसार संघर्ष समाप्त हो गया, विजित प्रदेश वापस लौटा दिये गये, और सीमा के झगड़े को सुलझाने के लिए एक आयोग की नियुक्ति हुई। न्यू ऑर्लियन्स में ऐण्ड्रू जैक्सन ने एक शक्तिशाली ब्रिटिश सेना पर जो आश्चर्यजनक विजय प्राप्त की उसके पहले ही इस सन्धि पर हस्ताक्षर हो चुके थे, परन्तु यह बात तब तक अमेरिका में किसी को ज्ञात नहीं थी।

सन् १८१२ ई० के युद्ध ने देश की एकता और राष्ट्रीयता की भावना को सशक्त बनाया। अलबर्ट गैलेटिन सन् १८०१ से १८१३ ई० तक वित्तमंत्री था। उसने कहा था कि इस युद्ध के पूर्व अमेरिका के लोग स्वार्थी थे और स्थानीय हितों की ओर अधिक देखते थे। उसने लिखा, "क्रान्ति ने जो राष्ट्रीय भावना और चरित्र-बल प्रदान किया था वह दिन-दिन शिथिल होता जा रहा था। इस युद्ध ने उसे पुनर्जीवित कर पुनः प्रतिष्ठित कर दिया है। वे सामान्य उद्देश्य जिनसे जनता का लगाव है और जो उनके गर्व तथा राजनीतिक सिद्धान्तों से सम्बद्ध हैं, अब संख्या में अधिक हो गये हैं। अब वे अधिक अमेरिकी बन गये हैं, वे अब एक राष्ट्र की भांति अधिक सोचने और काम करने लगे हैं, और मुझे आशा है कि इससे संघ का स्थायित्व अधिक सुरक्षित रहेगा।"

पश्चिम की ओर विस्तार और क्षेत्रीय मतभेद

"नौजवानो, पश्चिम की ओर जाओ और देश के साथ फूलो-फलो।"

होरेस ग्रीली, १८५१

सन् १८१२ ई० का युद्ध एक प्रकार से स्वतन्त्रता का द्वितीय युद्ध था, क्योंकि इसके पहले संयुक्त राज्य को राष्ट्रों के परिवार में समानता का पद नहीं मिला था। युद्ध समाप्त करने वाली सन्धि के पश्चात् कभी किसी ने संयुक्त राज्य के साथ वैसा व्यवहार करने से इनकार नहीं किया जो स्वतन्त्र राष्ट्रों को मिलना चाहिए। क्रान्ति के समय से इस नवीन गणतन्त्र को जिन गम्भीर कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था वे अब लुप्त हो गयी थीं। राष्ट्रीय एकता ने स्वतन्त्रता और व्यवस्था में समन्वय स्थापित कर दिया। राष्ट्रीय ऋण बहुत कम रह गया था, अव्यवहृत भूमि जोते जाने की प्रतीक्षा कर रही थी, राष्ट्र के सामने शान्ति, समृद्धि और सामाजिक उन्नति के द्वार खुल गये थे।

राजनीतिक दृष्टि से तत्कालीन लोगों के शब्दों में यह 'सद्भावना का युग' था। व्यापार राष्ट्रीय एकता को दृढ़ कर रहा था। युद्ध की कठिनाइयों ने इस बात का महत्व स्पष्ट कर दिया था कि जब तक अमेरिकी उद्योग विदेशी प्रतिस्पर्द्धा में अपने पांव पर खड़े होने योग्य न हो जायें, तब तक उन्हें संरक्षण देना चाहिए। इस बात पर बल दिया जा रहा था कि आर्थिक स्वतन्त्रता उतनी ही आवश्यक है जितनी कि राजनीतिक। वस्तुतः आर्थिक आत्मनिर्भरता के बिना राजनीतिक स्वतन्त्रता तत्वहीन थी। और जैसे एक के लिए क्रान्तिकारी युद्ध लड़ना पड़ा, वैसे ही दूसरे के लिए भी युद्ध करने की बात सोची जाने लगी। उस समय के कांग्रेस के नेता हेनरी क्ले और जॉन सी० कैलहून ने इस आत्म-निर्भरता की प्राप्ति के लिए 'संरक्षण'—अर्थात् ऐसी सीमा-शुल्क व्यवस्था की मांग की जो उद्योग के विकास में सहायक हो।

यह समय सीमा-शुल्क बढ़ाने के लिए अनुकूल था। वरमॉण्ट और ओहायो के गड़रिये इंग्लिश ऊन के प्रचुर आयात से संरक्षण चाहते थे। केंटुकी में स्थानीय पटसन से बोरे बुनने के नये उद्योग को स्कॉटलैण्ड के बोरा-उद्योग से भय था। पिट्सबर्ग, जो लोहा गलाने का एक विकसित केन्द्र बन चुका था, ब्रिटेन और स्वीडन के लोहे के व्यापारियों को ललकारने के लिए उत्सुक था। सन् १८१६ ई० में इतना ऊंचा सीमा-शुल्क निर्धारित कर दिया गया कि उत्पादकों को वास्तविक संरक्षण मिल गया। इसके अतिरिक्त, जो लोग इस विचार के थे कि यातायात की सुव्यवस्था से पूर्व और पश्चिम के लोग एक-

दूसरे के अधिक निकट आ सकेंगे, उन्होंने सड़कों और नहरों की एक राष्ट्रीय व्यवस्था का उत्साहपूर्ण समर्थन किया।

इस समय संघीय शासन की स्थिति सर्वोच्च न्यायालय की घोषणाओं से और भी दृढ़ हो गयी। जॉन मार्शल नामक वर्जीनिया का एक पक्का संघवादी सन् १८०१ ई० में प्रमुख न्यायाधीश बनाया गया, जिस पर वह आजीवन, सन् १८३५ ई० तक रहा। उसके पहले न्यायालय निर्बल था। उसने उसे शक्तिशाली बनाकर कांग्रेस या राष्ट्रपति की भांति ही महत्वपूर्ण स्थान दिलाया। अपने कई ऐतिहासिक निर्णयों में मार्शल संघीय शासन की सम्प्रभुता की सुरक्षा के मुख्य सिद्धान्त से कभी विचलित नहीं हुआ।

मार्शल केवल एक महान् न्यायाधीश ही नहीं था, वह एक सांविधानिक राजनीतिज्ञ भी था। जब उसने अपना लम्बा सेवा-काल समाप्त किया उस समय तक उसने ऐसे ५० विवादों का निर्णय किया था जिनमें सांविधानिक प्रश्न उलझे हुए थे।

अपने प्रसिद्ध निर्णयों में मारबरी-बनाम-मैडिसन (१८०३) नामक एक विवाद के निर्णय में उसने स्पष्ट रूप से यह व्यवस्था दी थी कि सर्वोच्च न्यायालय को कांग्रेस अथवा किसी भी राज्य विधान-सभा द्वारा बनाये गये हर क़ानून पर पुनः विचार करने का अधिकार है। मैकुलॉच-बनाम-मेरीलैण्ड (१८१९) नामक मुक़दमे में सरकार के निहित संवैधानिक अधिकारों के पुराने प्रश्न पर अपना विचार प्रकट करते हुए उसने हैमिल्टन के इस विचार का दृढ़तापूर्वक समर्थन किया कि संविधान ने केन्द्रीय शासन को स्पष्ट उल्लिखित अधिकारों की अतिरिक्त कुछ सन्निहित अधिकार भी दिये हैं। ऐसे निर्णयों द्वारा मार्शल ने अमेरिका की केन्द्रीय सरकार को प्रभावशाली शक्ति बनाने में उतना ही योगदान दिया है जितना किसी अन्य नेता ने।

साहित्य और सीमान्त प्रदेश

वास्तविक अमेरिकी साहित्य के विकास के साथ-साथ राष्ट्रीय चेतना प्रबल रूप से जाग्रत हो रही थी। इस नयी अमेरिकी शैली के लेखकों में वॉशिंगटन अरविंग और जेम्स फ़ेनिमोर कूपर प्रमुख थे। सन् १८०९ ई० में अरविंग की हास्य रचना 'हिस्ट्री आव न्यूयॉर्क बाइ डाइडरिच निकरबोकर' नाम से प्रकाशित हुई, जिसकी प्रेरणा उसे पूर्णतया स्थानीय अमेरिकी दृश्यों से मिली थी। अरविंग की 'रिप वैन विंकिल' नामक कहानी जैसी कई उच्चतम रचनाओं की पृष्ठभूमि न्यूयॉर्क की हडसन घाटी है। ये रचनाएं अमेरिका को रोमान्स और आख्यानों के देश के रूप में चित्रित करती हैं।

इसी प्रकार स्वदेशी सन्दर्भों के द्वारा ही कूपर की प्रतिभा प्रस्फुटित हुई। परम्परागत अंग्रेजी शैली का एक उपन्यास लिखने के पश्चात् उसने अमेरिकी क्रान्ति की 'दि स्पाई' नामक एक कहानी प्रकाशित की, जिसे तुरन्त लोकप्रियता प्राप्त हुई। तत्पश्चात् 'दि पायनियर्स' प्रकाशित हुआ, जिसमें अमेरिका के सीमान्त प्रदेश के सादे जीवन का सजीव गद्य चित्र है। सन् १८२३ और १८४१ के बीच प्रकाशित 'लेदर स्टॉकिंग टेल्स' नामक उपन्यास-माला में कूपर ने नैटी बम्पो नामक अग्रेसर और दबे पांव चलने वाले रेड इण्डियन

सरदार चिंगचगूक को विश्व-साहित्य में अमर कर दिया है। कूपर द्वारा रचित समुद्र की कहानियों पर भी अमेरिकी प्रभाव स्पष्ट है।

सन् १८१५ ई० में जेयर्ड स्पार्क्स के दक्ष सम्पादन में 'दि नॉर्थ अमेरिकन रिव्यू' की स्थापना अमेरिका में एक महत्वपूर्ण साहित्यिक घटना है। इस पत्रिका को न्यूइंग्लैण्ड के नवयुवक बुद्धिजीवियों से पर्याप्त योगदान और सहायता मिली, जिससे राष्ट्र की विकासोन्मुख संस्कृति में इसे स्थायी स्थान मिला।

वह शक्ति, जिसने अमेरिकी साहित्य——और विशेष रूप से अमेरिकी जीवन——को निश्चित स्वरूप देने में विशेष योग दिया, सीमान्त प्रदेश थी। समस्त अतलान्तिक समुद्र-तट की परिस्थितियों ने नये क्षेत्रों की ओर स्थानान्तरण के लिए प्रेरित किया। पश्चिम की सस्ती और उपजाऊ भूमि की तुलना में न्यूइंग्लैण्ड की भूमि अन्न नहीं उपजा सकती थी, फलत: वहां से स्त्री-पुरुषों का अनन्त प्रवाह तटवर्ती खेतों और गांवों को छोड़ कर महाद्वीप के भीतर की समृद्ध भूमि की ओर उन्मुख था।

दोनों कैरोलाइना और वर्जिनिया की भीतरी बस्तियों के लोग भी, जो तटवर्ती बाजारों तक पहुंचने में सड़कों और नहरों की कमी का अनुभव करते थे, और समुद्र-तटवर्ती बागान-मालिकों की राजनीतिक प्रभुता से पीड़ित थे, पश्चिम की ओर उन्मुख थे। इस निर्गमन ने अमेरिकी मानस को विशेष प्रभावित किया, इसने वैयक्तिक उपक्रम को प्रोत्साहित किया, राजनीतिक और आर्थिक लोकतन्त्र को विकसित किया, व्यवहार अशिष्ट बना दिया, रूढ़िवादिता को भंग कर दिया, और राष्ट्रीय सत्ता के प्रति सम्मान के साथ-साथ स्थानीय आत्मनिर्णय की भावना को जन्म दिया।

समय के साथ-साथ पश्चिम-गमन तटवर्ती नदियों के उद्गम से आगे बढ़ अपेलेशियन पर्वत भी पार कर गया। सन् १८०० ई० तक मिसिसिपी और ओहायो नदियों की घाटियां महान सीमान्त-प्रदेश बन रही थीं। 'हा-यो, अवे वी गो, फ्लोटिंग डाउन दि रिवर ऑन दि ओ-हा-यो'* (हा, हम ओहायो नदी पर बहते चले जा रहे हैं), यह सहस्रों उत्प्रवासियों का गीत बन गया था।

१८वीं शताब्दी के आरम्भ में अधिवासियों के पश्चिम की ओर प्रवाह के कारण पुराने प्रदेशों का विभाजन और नयी सीमाओं का निर्धारण हुआ। तत्पश्चात्, संयुक्त राज्य में जब नये राज्य सम्मिलित हुए, तब मिसिसिपी नदी के पूर्व का राजनीतिक मानचित्र स्थिर हो गया। छ: वर्षों में ही छ: नये राज्य बन गये——सन् १८१६ में इण्डियाना, १८१७ में मिसिसिपी, १८१८ में इलिनॉय, १८१९ में अलाबामा, १८२० में मेन, और १८२१ में मिसौरी। पहला सीमान्त यूरोप के साथ घनिष्ट रूप से बंधा था, दूसरा तटवर्ती उपनिवेशों से, परन्तु मिसिसिपी घाटी स्वतन्त्र थी और यहां के लोगों की दृष्टि पूर्व की अपेक्षा पश्चिम की ओर रहती थी।

सीमान्त-निवासी विभिन्न वर्गों के थे। आगे चलने वालों में शिकारी और जानवरों को पकड़ने वाले थे, जिनके बारे में फोर्डहम नामक एक अंग्रेज यात्री ने लिखा है, 'ये लोग साहसी और हृष्ट-पुष्ट हैं और कष्टकर झोंपड़ियों में रहते हैं। . . . ये असंस्कृत, पर

*"Hi-o, away we go, floating down the river on the O-hi-o."



पिकनिक तथा भाषणों के साथ चार जुलाई की परेड शीघ्र ही एक मूल्यवान् परम्परा बन गयी।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् पहले के उपनिवेशों ने शेष विश्व के साथ मिलकर सोचना आरम्भ किया कि अब क्या किया जाये ? सबसे पहले संगठित होवो, फिर आगे बढ़ो, निर्माण करो, व्यापार करो, खोज करो, और पश्चिम की ओर बढ़ो, सदा पश्चिम की ओर। स्वप्नद्रष्टा पथप्रदर्शकों का एक राष्ट्र जिसमें प्रत्येक का अपना स्वप्न था।



उत्तर-पश्चिम के रेड इण्डियनों से लुई और क्लार्क के मिल
का उपर्युक्त दृश्य चार्ल्स रसेल द्वारा चित्रित किया गया है
डेनियल बून बहुत दिनों से उपनिवेशियों को कम्बरलैण्ड द
से केंटुकी में ला रहा था। पश्चिम की ओर उन्मुख कोनेस्टोग
गाड़ियों से जीवन्त राष्ट्र-मार्ग अभी बनने को था। यात्रिय
के स्वागत के लिए फ़ेयरव्यू (दाहिनी ओर) सड़क पर स्थि
सरायों का निर्माण भी अभी भविष्य के गर्भ में था।



जब तक पेट्रोलियम की खोज नही हुई थी अमेरिका मे दीपको के लिए तेल ह्वेल मछली से मिलता था, जिसका शिकार श्रमसाध्य और जोखिम का काम था। खेती का काम छोटे लडको के लिए न तो उतना सरस था और न वैसा काव्यात्मक जैसा करियर और आइव्ज ने चित्रित किया है परन्तु यह बहुत-सी साहसिक वृत्तियो से दीर्घजीवी सिद्ध हुआ है—इसकी उत्पादकता बढी है जबकि दूसरों की घटी है।



नीचे चित्रित पहिया बनाने वाले कारखाने मे मालिक और सहायक साथ-साथ काम करते थे, अक्सर ग्राहक सामान के लिए प्रतीक्षा करता रहता था। जब उत्तरी राज्यो मे औद्योगिक क्रान्ति फैली तो इस प्रकार के पुराने ढंग के छोटे उद्योगो के स्थान पर इस लोहे की ढलाई के कारखाने की तरह फैक्टरिया खुल गयी जिनमे कई मजदूर काम करते थे।

अन्य लाखो व्यक्तियो के साथ सैमुअल वौ के "दि बैटरी" नामक जहाज मे आये उपनिवेशियो ने भी अमेरिकी इतिहास के निर्माण मे सहायता की। अमेरिका की बडी झीलो को ईरी नहर द्वारा अतलान्तिक महासागर मे मिला कर अमेरिका के यातायात और उद्योग मे एक नये युग के सूत्रपात करने का कार्य उनके बिना कभी नही हो सकता था।





सन् १८५८ के चुनाव-अभियान के अवकाशपूर्ण वातावरण में लिंकन की डगलस से वादविवाद की तैयारी।

अतिथि-प्रेमी हैं, अपरिचितों के प्रति दयालु, ईमानदार और विश्वासपात्र हैं। ये थोड़ा मक्का और कद्दू उगा लेते हैं, सुअर पालते हैं, और कभी-कभी एक या दो गायें भी रखते हैं। परन्तु बन्दूक उनके जीवन-निर्वाह का प्रधान साधन है।' ये लोग कुल्हाड़े, फन्दे और मछली के कांटे के प्रयोग में निपुण थे, इन्होंने जंगल जला कर रास्ता बनाया, पहले-पहल लकड़ी की झोंपड़ियां बनायीं और रेड इण्डियनों को दूर रखा।

जैसे-जैसे उपनिवेशी जंगलों में घुसते गये, उनमें बहुत-से शिकारी और किसान बन गये। झोंपड़ियों के स्थान पर कांच की खिड़कियों, अच्छी चिमनी और अलग-अलग कमरों वाले शहतीर के बने सुखदायी मकान बनने लगे; झरनों की जगह कुएं बन गये। उद्यमी व्यक्ति शीघ्र जंगल काट कर अपनी भूमि साफ़ कर लेता था और लकड़ी को पोटाश के लिए जला देता था और ठूंठों को स्वतः नष्ट होने के लिए छोड़ देता था। वह अपना अन्न, सब्जी और फल स्वयं उगाता था, हिरन के मांस, जंगली टर्की तथा शहद के लिएं जंगल छान डालता था, पास-पड़ोस के सोतों में मछलियां पकड़ता था, और अपने ढोरों और सुअरों की देखभाल करता था। जो अधिक अविश्रान्त थे वे सस्ती भूमि के बड़े-बड़े भूभाग खरीदते थे, और जब भूमि का मूल्य बढ़ जाता था तो उसे बेचकर पश्चिम की ओर बढ़ जाते और दूसरों के लिये रास्ता साफ़ कर देते थे।

किसानों के पीछे-पीछे शीघ्र ही डाक्टर, वकील, दूकानदार, सम्पादक, उपदेशक, यान्त्रिक, राजनीतिज्ञ आदि वे सभी लोग आने लगे जिनसे एक शक्तिशाली समाज बनता है। इस समाज के दृढ़ आधार किसान थे। वे जहां बस जाते थे वहीं रहने का विचार रखते थे और आशा करते थे कि उनके पश्चात् उनके बच्चे भी वहीं रहेंगे। वे बड़े-बड़े खलिहान और ईटों या लकड़ी के पक्के मकान बनाते थे। वे अच्छी नस्लों के ढोर लाते थे, भूमि को दक्षतापूर्वक जोतते थे, और अधिक उपज वाले बीज बोते थे। कुछ लोगों ने आटे की चक्कियां, लकड़ी काटने की मिलें और शराब की भट्ठियां भी खोल लीं। उन्होंने अच्छी सड़कें बनायीं, चर्च और स्कूल बनाये। कुछ ही वर्षों में वहां अविश्वसनीय परिवर्तन हो गये। उदाहरणार्थ, सन् १८३० ई० में शिकागो में केवल एक दुर्ग था और व्यापारिक बस्ती थी जिसका कोई भविष्य नहीं जान पड़ता था, परन्तु अपने कुछ आरम्भिक निवासियों की मृत्यु के पहले ही वह राष्ट्र के सबसे बड़े और सबसे सम्पन्न नगरों में गिना जाने लगा।

नवीन पश्चिम में विभिन्न रक्तों का सम्मिश्रण हुआ, जिनमें स्कॉच, आयरिश, पेनसिलवैनिया, जर्मनी, और न्यूइंग्लैण्ड के तथा अन्य स्थानों के लोग थे। सन् १८३० तक आधे से अधिक अमेरिका निवासी वातावरण में पले थे, जिसमें प्राचीन विश्व की परम्पराएं और रीति-रिवाज या तो थे ही नहीं या उनका प्रभाव क्षीण हो गया था।

पश्चिम में मनुष्यों का मूल्यांकन उनकी पारिवारिक पृष्ठभूमि, पैतृक सम्पत्ति, अथवा लम्बी शिक्षा से नहीं होता था, बल्कि इससे होता था कि वे क्या हैं और क्या कर सकते हैं। खेत प्राप्त करना सरल था, सन् १८२० ई० के पश्चात् सरकारी भूमि सवा डालर प्रति एकड़ (०.४ हेक्टेयर) की दर से मिलती थी, और सन् १८६२ ई० के पश्चात् केवल उस पर अधिकार कर उसे विकसित करने मात्र से ही किसान की हो जाती थी। इनके अतिरिक्त खेती के औजार भी सुलभ थे। पत्रकार होरेस ग्रीली ने लिखा है कि यह ऐसा

समय था कि जब नवयुवक 'पश्चिम जाकर देश के साथ फल-फूल' सकता था। न्यूइंग्लैण्ड और दक्षिण के उत्प्रवासी जाते समय जिन क्षेत्रों से गये वहां के बहुत-से आदर्श और बहुत-सी संस्थाएं भी साथ लेते गये।

कपास से दासता की वृद्धि

दास-प्रथा की ओर जनता ने अभी तक विशेष ध्यान नहीं दिया था, परन्तु जेफ़र्सन के शब्दों में 'रात में आग की चेतावनी की घण्टी की भांति' एकाएक इसे विशेष महत्व मिलने लगा। गणतन्त्र के आरम्भिक वर्षों में जब उत्तरी राज्य दासों के तुरन्त अथवा क्रमशः उद्धार की व्यवस्था कर रहे थे, बहुत-से नेताओं ने यह सोचा कि दास-प्रथा समाप्त हो जायेगी। सन् १७८६ ई० में वाशिंगटन ने लिखा कि मैं हृदय से चाहता हूं कि कोई ऐसी योजना कार्यान्वित की जाये 'जिसके द्वारा दास-प्रथा धीरे-धीरे निश्चित और अप्रत्यक्ष रूप से समाप्त हो जाये।' जेफ़र्सन, मैडिसन, मनरो, तथा दक्षिण के अन्य प्रधान राजनीतिज्ञों ने भी इसी प्रकार के वक्तव्य दिये। सन् १८०८ ई० में जब दासों का व्यापार समाप्त कर दिया गया तब बहुत-से दक्षिणी लोग यह सोचते थे कि दास-प्रथा शीघ्र समाप्त हो जायेगी।

परन्तु यह आशा व्यर्थ हुई, क्योंकि अगली पीढ़ी में दक्षिण के लोगों ने भली-भांति संगठित होकर दासता की संस्था का समर्थन किया। इसका कारण यह था कि नये आर्थिक तत्वों ने दास-प्रथा को सन् १७९० से पहले की अपेक्षा अब अधिक लाभप्रद बना दिया था।

दक्षिण में कपास उगाने के विशाल धन्धे का विकास इनमें सबसे मुख्य तत्व था। इस धन्धे को एक नये प्रकार का कपास उगाने तथा ऐली व्हिटनी द्वारा आविष्कृत उस 'काटन जिन' यन्त्र से विशेष प्रेरणा मिली जो बिनौले को रुई से अलग करने के लिए बनाया गया था। साथ ही साथ औद्योगिक क्रान्ति के फलस्वरूप कपड़ा बनाने के कारख़ाने बड़े परिमाण में खुल गये थे, जिनके कारण कच्ची रुई की मांग बहुत बढ़ गयी थी। साथ ही सन् १८१२ ई० में पश्चिम की नयी भूमि उपलब्ध होने के कारण कपास की खेती का क्षेत्र बहुत बढ़ गया था। कपास की खेती तटवर्ती राज्यों से शीघ्र सुदूर दक्षिण की ओर फैलती हुई मिसिसिपी नदी तक और अन्त में टेक्सास तक पहुंच गयी।

गन्ने की खेती भी फैलने लगी और दास-प्रथा को बढ़ाने लगी। दक्षिण-पूर्वी लुइज़ियाना की उपजाऊ और ऊष्ण भूमि लाभप्रद गन्ने की खेती के लिए आदर्श सिद्ध हुई। सन् १८३० ई० तक यह राज्य देश को उसकी आवश्यकता की आधी चीनी देने लगा था। अन्त में तम्बाकू की खेती पश्चिम में फैली और अपने साथ दास-प्रथा भी ले गयी।

जैसे-जैसे उत्तर का स्वतन्त्र समाज और दक्षिण का दास-समाज पश्चिम की ओर फैला, राजनीतिक दृष्टि से यह उचित समझा गया कि उस समय स्थापित हो रहे नये राज्यों में एक स्थूल सन्तुलन रखा जाये। सन् १८१८ ई० में जब इलिनॉय राज्य को

संघ में सम्मिलित किया जा रहा था, दस राज्यों में दास-प्रथा थी और ग्यारह में इसका निषेध था। परन्तु जब अलाबामा को दास-समर्थक राज्य के रूप में सम्मिलित किया गया तो सन्तुलन बराबर हो गया।

जब उत्तर वालों ने स्वतन्त्र राज्य के अतिरिक्त अन्य किसी रूप में मिसौरी के प्रवेश का विरोध किया तो देश में विरोध की आंधी आ गयी। कुछ समय तक कांग्रेस की गतिविधि रुक गई। हेनरी क्ले के नेतृत्व में एक समझौते की व्यवस्था हुई : मिसौरी दास-समर्थक राज्य के रूप में संघ में प्रविष्ट हुआ, पर उसी समय मेन एक स्वतन्त्र राज्य के रूप में प्रविष्ट हुआ। आखिरकार कांग्रेस ने यह भी आदेश दे दिया कि क्रय द्वारा प्राप्त लुइज़ियाना प्रदेश में मिसौरी की दक्षिणी सीमा से उत्तर में दास-प्रथा सदा के लिए बहिष्कृत रहेगी।

संयुक्त राज्य की सीमा के बाहर टेक्सास में प्रवसन के अतिरिक्त पश्चिम की ओर प्रगतिशील खेती की सीमा सन् १८४० ई० तक मिसौरी से आगे न बढ़ सकी। इस बीच सुदूर पश्चिम समूर के व्यापार का एक विशेष क्रियाशील क्षेत्र बन गया था, जिसका महत्व इन खालों के मूल्य से कहीं अधिक होने वाला था। जैसा कि फ़ान्सीसियों द्वारा मिसिसिपी घाटी की खोज के प्रारम्भ में हुआ था, और जैसा उस समय हुआ था जब डच और अंग्रेज़ों ने अतलान्तिक समुद्र-तट से पश्चिम की ओर पहला कदम उठाया था, इस समय भी व्यापारी उपनिवेशियों का पथ-प्रदर्शक बना। फ्रान्सीसी और स्कॉच-आयरिश शिकारियों ने बड़ी-बड़ी नदियों और सहायक नदियों का पर्यवेक्षण कर डाला, और रॉकी तथा सियरा पहाड़ों के सभी दर्रों को ढूंढ निकाला, और इस प्रकार सन् १८४० के दशक का स्थल-मार्ग द्वारा प्रवसन और बाद में भीतरी क्षेत्रों पर अधिकार करना सम्भव हो सका। तत्पश्चात् सन् १८१६ ई० में अमेरिकी नागरिकों के स्पेन पर ५० लाख डॉलर के दावे के बदले संयुक्त राज्य ने स्पेन से फ़्लॉरिडा तथा सुदूर पश्चिम में स्थित ऑरेगन का अधिकार ले लिया। इस प्रकार पश्चिमी और पूर्वी दोनों तटों पर अमेरिकियों का विस्तार बढ़ गया।

सन् १८१७ ई० में राष्ट्रपति के पद पर जेम्स मैडिसन का उत्तराधिकारी जेम्स मनरो बना। इस नये शासन की सबसे महत्वपूर्ण घटना है तथाकथित मनरो-सिद्धान्त की घोषणा।

इस सिद्धान्त के मूल तत्वों को यदि अलग-अलग देखा जाय तो यह स्पष्ट हो जाता है कि वे सभी पूर्णतया स्वीकृत अमेरिकी सिद्धान्त थे। वाशिंगटन, जेफ़र्सन और मैडिसन सभी ने यह राय दी थी कि विदेशों से स्थायी और 'उलझावपूर्ण' सन्धियां न की जायें। जिस समय जेफ़र्सन ने स्पेन द्वारा संयुक्त राज्य के अतिरिक्त अन्य किसी शक्ति को लुइज़ियाना के हस्तान्तरण का विरोध किया था, उसी समय उसने यह घोषणा कर दी थी कि पड़ोसी क्षेत्रों के भविष्य में संयुक्त राज्य का सर्वप्रधान स्वार्थ है। और स्पेनी-अमेरिकी उपनिवेशों के तत्कालीन स्वतन्त्रता संग्राम में वहां के निवासियों के प्रति सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए संयुक्त राज्य की जनता ने आत्मनिर्णय के सिद्धान्त को स्पष्ट कर दिया था।

लैटिन अमेरिका की स्वतन्त्रता

जब से अंग्रेज़ों के उपनिवेश स्वतन्त्र हुए थे तभी से स्वतन्त्रता का स्वप्न लैटिन अमेरिका की जनता को अनुप्राणित कर रहा था। अर्जेण्टिना और चिली सन् १८२१ ई० के पहले ही स्वतन्त्र हो चुके थे, और सन् १८२२ ई० में जोज़े डि सैन मार्टिन और साइमन बोलिवर के नेतृत्व में दक्षिणी अमेरिका के अन्य राज्यों ने भी स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली। सन् १८२४ ई० तक यूरोपीय उपनिवेश केवल पशिचमी द्वीप समूह तथा दक्षिणी अमेरिका के उत्तरी तट तक ही सीमित थे।

संयुक्त राज्य की जनता ने यूरोपीय शासन से मुक्त होने की प्रक्रिया में विशेष रुचि ली, क्योंकि यह उन्हें अपने अनुभव की पुनरावृत्ति-सी लगी। सन् १८२२ ई० में राष्ट्रपति मनरो को जनता के शक्तिपूर्ण दबाव के कारण कोलम्बिया, चिली, मैक्सिको, और ब्राज़ील आदि देशों की स्वतन्त्रता को मान्यता प्रदान करने का अधिकार प्राप्त हुआ और उसने शीघ्र ही इन देशों से दूतों का आदान-प्रदान कर लिया। इस प्रकार उसने यह भी मान लिया कि ये देश स्वावलम्वी, सचमुच स्वतन्त्र तथा पुराने यूरोपीय सम्वन्धों से पूर्णतया मुक्त हैं।

ठीक इसी समय केन्द्रीय यूरोप की कुछ शक्तियों ने मिलकर क्रान्ति से अपनी रक्षा के लिए संगठन स्थापित किया, जिसका नाम था 'पवित्र संघ' (होली एलायंस)। जिन देशों में सार्वजनिक आन्दोलनों से राजाओं की गद्दी भयाक्रान्त थी उनमें यह संगठन इस आशा से हस्तक्षेप करता था कि क्रान्ति उनके अपने राज्यों में न फैलने पाये। यह नीति अमेरिका के आत्म-निर्णय के सिद्धान्त के पूर्णतया प्रतिकूल थी।

संयुक्त राज्य द्वारा यूरोप की धमकियों का विरोध

जब पवित्र संघ ने अपना ध्यान स्पेन और नये विश्व में उसके उपनिवेशों की ओर दिया तब संयुक्त राज्य को दक्षिणी अमेरिका के नये शासनों के स्थायित्व में सन्देह होने लगा। संयुक्त राज्य की सरकार ने वर्षो से तटस्थता की नीति का पालन किया था, जिसे वाशिंगटन, हैमिल्टन, जेफ़र्सन, जॉन ऐडम्स तथा अन्य लोगों ने निर्धारित किया था। यूरोपीय शक्तियों द्वारा उन प्रदेशों पर अधिकार करने का प्रयत्न, जिन्होंने अपने पुराने शासकों से स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी, जघन्य प्रयास लगा।

२ दिसम्बर, सन् १८२३ ई० को मनरो ने कांग्रेस में अपना वार्षिक सन्देश पढ़ा, जिसके कई अंश मनरो-सिद्धान्त के अंग हैं: (१) 'अमेरिकी महाद्वीप, उस स्वतन्त्र और स्वाधीन स्थिति के कारण, जिसे वे प्राप्त कर चुके हैं और जिसकी रक्षा कर रहे हैं, अब यूरोपीय शक्तियों द्वारा भविष्य में उपनिवेश नहीं बनाये जा सकते हैं।' (२) 'मित्र राष्ट्रों की राजनीतिक पद्धति अमेरिका की पद्धति से सर्वथा भिन्न है. . . इस गोलार्द्ध के किसी भाग पर अपनी पद्धति लादने का उनका प्रयास हम अपनी शान्ति और सुरक्षा के लिए घातक समझते हैं।' (३) 'किसी भी यूरोपीय शक्ति के किसी भी वर्तमान

उपनिवेश अथवा अधीनस्थ प्रदेश में हमने न तो कोई हस्तक्षेप किया है और न करेंगे।' (४) 'यूरोपीय शक्तियों के आपसी मामलों से उत्पन्न युद्धों में हमने कभी कोई भाग नहीं लिया है और न वैसा करना हमारी नीति के अनुकूल है।'

जिस समय मनरो-सिद्धान्त विश्व की समस्याओं के प्रति अमेरिका की नीति स्पष्ट कर रहा था, देश में लोगों की दिलचस्पी राष्ट्रपति के आगामी चुनाव पर केन्द्रित थी। पांच प्रत्याशियों की कड़ी प्रतियोगिता के फलस्वरूप, जिसमें न्यू आर्लियन्स के युद्ध का नायक ऐण्ड्रू जैक्सन भी था, संयुक्त राज्य के द्वितीय राष्ट्रपति जॉन ऐडम्स का पुत्र जॉन क्विसी ऐडम्स निर्वाचित हुआ।

जॉन क्विसी ऐडम्स के प्रशासन-काल में नये दलों के नये संगठन वने। ऐडम्स के अनुयायियों ने अपने दल का नाम 'नेशनल रिपब्लिकन्स' रखा, जो वाद में बदलकर 'व्हिग्स' कर दिया गया। यद्यपि उसने ईमानदारी से और योग्यतापूर्वक शासन किया परन्तु ऐडम्स लोकप्रिय राष्ट्रपति न वन सका, और उसके शासनकाल पर निराशा की छाप वनी रही। अन्य वस्तुओं के साथ-साथ उसे सड़कों और नहरों की एक राष्ट्रीय व्यवस्था की स्थापना में भी सफलता नहीं मिली। उसका कार्यकाल पुनर्निर्वाचन के लिए लम्बे अभियान में बीता और अपने शुष्क प्रज्ञात्मक स्वभाव के कारण वह अधिक मित्र न वना सका। इसके विपरीत जैक्सन विशेष लोकप्रिय था--प्रधानतया नये डेमोक्रैटिक दल के अपने अनुयायियों में। और सन् १८२८ ई० के चुनाव में जैक्सन की शक्तियों ने ऐडम्स और उसके समर्थकों को कुचल दिया।

घने जंगलों के निवासी जिन स्वावलम्बी लोगों ने ऐलेगनी पर्वतों के पश्चिम में राज्य बसाये थे उन्होंने अपने संविधानों में सीमान्त प्रदेश के जनतान्त्रिक विचारों का उल्लेख कर दिया था। सन् १८२८ ई० तक पुराने राज्यों में से अधिकांश में उनके विचारों के प्रभाव से जनता को मताधिकार प्राप्त हो चुका था। सन् १८१२ के युद्ध से संघ में शक्ति का सन्तुलन पश्चिम के हाथ में था। अब जब पश्चिम वयस्क हो चला था, जनसंख्या के केन्द्र की भांति राजनीति के केन्द्र ने भी समुद्र-तट छोड़ दिया था, और टेनेसी की एक प्रिय सन्तान को प्रधान शासक के पद पर प्रतिष्ठित करने में सहायता की थी।

शक्तिशाली राष्ट्रपति जैक्सन

अपने पहले कार्यकाल के अन्तिम दिनों में संरक्षणकारी सीमा-शुल्क के प्रश्न पर जैक्सन को दक्षिणी कैरोलाइना से संघर्ष करना पड़ा। इस राज्य के व्यापारियों ने आशा की थी कि जैक्सन राष्ट्रपति के अधिकारों का प्रयोग कर शुल्क के उन नियमों में संशोधन करेगा जिनका वे वहुत दिनों से विरोध कर रहे हैं। उनके विचार से संरक्षण का सारा लाभ उत्तर के निर्माताओं को मिल रहा था, और जिस समय सारा देश समृद्ध हो रहा था, दक्षिणी कैरोलाइना निर्धन होता जा रहा था और उसके किसानों पर वढ़ते हुए मूल्यों का वोझ पड़ रहा था। फिर भी, जव कांग्रेस ने सन् १८३२ ई० में नया शुल्क-क़ानून वनाया तो जैक्सन ने निस्संकोच उस पर हस्ताक्षर कर दिये।

तब दक्षिणी कैरोलाइना वालों ने एक 'राज्याधिकार दल' संगठित किया जिसने 'निष्फलीकरण' (नलिफ़िकेशन) के सिद्धान्त को स्वीकार किया। इसके अनुसार किसी राज्य के प्रतिनिधियों की विशेष परिषद् अपने राज्य की सीमा में कांग्रेस द्वारा पारित किसी अधिनियम को असंवैधानिक तथा अवैध घोषित कर सकता था। दक्षिणी कैरोलाइना ने यह भी धमकी दी कि यदि कांग्रेस ने इस राज्य के विरुद्ध बल-प्रयोग का कोई क़ानून पारित किया तो वह संघ से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेगा।

इस धमकी के उत्तर में नवम्बर सन् १८३२ ई० में जैक्सन ने सात छोटे जहाज़ और एक युद्धपोत चार्ल्सटन भेजे और उन्हें आज्ञा दी कि वे तुरन्त कार्रवाई के लिए तैयार रहें। १० दिसम्बर को उसने निष्फलीकरण के नेताओं के विरुद्ध एक प्रबल घोषणा की। राष्ट्रपति ने घोषित किया कि दक्षिणी कैरोलाइना 'राजद्रोह और विप्लव की सीमा' पर खड़ा है और उसने राज्य की जनता से प्रार्थना की कि जिस संघ के लिए उनके पूर्वजों ने युद्ध किया था उसके प्रति अपनी निष्ठा को वे पुन: दृढ़ करें।

संघ के सिद्धान्तों की विजय

कांग्रेस के सामने जब फिर सीमा-शुल्क का प्रश्न आया, तो शीघ्र यह स्पष्ट हो गया कि संरक्षण का महान् समर्थक सेनेटर हेनरी क्ले ही अकेला ऐसा व्यक्ति है जो समझौता करा सकता है। क्ले का शुल्क-विधेयक सन् १८३३ ई० में शीघ्र पारित हो गया। इसके अनुसार यह निश्चित हुआ कि आयात के मूल्य से २० प्रतिशत से अधिक जितना भी शुल्क है वह क्रमश: घटा दिया जायेगा, ताकि सन् १८४२ तक सभी वस्तुओं पर कर सन् १८१६ ई० के साधारण शुल्क के स्तर पर आ जाय।

दक्षिणी कैरोलाइना के निष्फलीकरण के नेताओं ने अन्य दक्षिणी राज्यों से सहयोग की आशा की थी, परन्तु उन सबने बिना किसी अपवाद के दक्षिणी कैरोलाइना द्वारा अपनाये मार्ग को मूर्खतापूर्ण और असंवैधानिक बताया, और अन्तत: दक्षिणी कैरोलाइना ने अपनी कार्यवाही निरस्त कर दी। दोनों पक्षों ने विजयी होने का दावा किया। जैक्सन ने संघीय सरकार को संघ की प्रभुता के सिद्धान्त को बिना किसी शर्त के मनवाने के लिए प्रतिबद्ध कर दिया था। परन्तु दक्षिणी कैरोलाइना ने विरोध प्रदर्शित कर अपनी बहुत-सी मांगे पूरी करा लीं और यह दिखा दिया कि एक अकेला राज्य अपनी इच्छा कांग्रेस पर लाद सकता है।

निष्फलीकरण की समस्या के समाधान के पूर्व ही एक ऐसा विवाद उठ खड़ा हुआ जिसने जैक्सन के नेतृत्व को चुनौती दे दी। यह था 'द्वितीय संयुक्त राज्य बैंक' को पुन: अधिकार-पत्र देने की समस्या। प्रथम बैंक हैमिल्टन के नेतृत्व में सन् १७९१ ई० में स्थापित हुआ था और उसे २० वर्ष का अधिकार-पत्र दिया गया था। यद्यपि इसकी कुछ पूंजी सरकारी थी, परन्तु यह राजकीय बैंक नहीं था। यह एक ग़ैरसरकारी निकाय था, जिसका लाभ साझेदारों में बंट जाता था। इसका उद्देश्य देश की मुद्रा को स्थिर करना और व्यापार को प्रोत्साहित करना था, परन्तु कुछ ऐसे लोगों ने इसका विरोध किया जो

यह समझते थे कि सरकार कुछ शक्तिशाली लोगों को विशेष सुविधाएं दे रही है। सन् १८११ ई० में जब उसके अधिकार-पत्र की अवधि समाप्त हुई तब नवीकरण नहीं हुआ।

आगामी कुछ वर्षो तक बैंकों का कार्य राज्यों से अधिकार-पत्र प्राप्त बैंकों के हाथ में रहा। इन्होंने इतनी अधिक मुद्रा जारी कर दी कि उसकी देनदारी का भुगतान करना उनकी सामर्थ्य के बाहर हो गया, जिससे बड़ी अव्यवस्था फैली। धीरे-धीरे इतना स्पष्ट हो गया कि राज्यों के बैंक देश को एक-सी मुद्रा देने में असमर्थ हैं, और सन् १८१६ ई० में प्रथम बैंक की भांति द्वितीय संयुक्त राज्य बैंक को बीस वर्ष का अधिकार-पत्र दे दिया गया।

अपने आरम्भ से ही द्वितीय संयुक्त राज्य बैंक देश के नये भागों में और कम सम्पन्न लोगों में सर्वत्र अप्रिय रहा। विरोधियों का यह दावा था कि देश की मुद्रा और साख पर बैंक का एकाधिकार है और यह देश के कुछ सम्पन्न लोगों के ही हितों का प्रतिनिधित्व करता है। बैंक सम्यक रूप से संचालित था तथा बहुमूल्य सेवा कर रहा था। परन्तु जैक्सन इसके लोकप्रिय विरोधी के रूप मे चुना गया था, इसलिए उसने इसके पुन: अधिकार-पत्र दिये जाने के विधेयक का दृढ़तापूर्वक निषेध कर दिया। उसने इसकी संवैधानिकता और इसे जारी रखने की उपयोगिता पर सन्देह प्रकट किया।

आगामी चुनाव-अभियान में बैंक का प्रश्न प्रमुख समस्या बन गया--इसने एक ओर व्यापारियों, उत्पादकों और वित्तीय वर्गों में तथा दूसरी ओर मज़दूरों और किसानों में मौलिक मतभेद उत्पन्न कर दिया। इसका परिणाम था 'जैक्सनवाद' की उत्साहपूर्ण स्वीकृति।

जैक्सन ने अपने पुनर्निर्वाचन का यह अर्थ लगाया कि जनता ने उसे बैंक को हमेशा के लिए कुचल देने का अधिकार दे दिया है। बैंक के अधिकार-पत्र के नियमों में ही उसे बना-बनाया अस्त्र मिल गया, जो उसे बैंक से सरकारी धन-राशि निकालने का अधिकार देता था। सितम्बर, सन् १८३३ ई० के अन्त में उसने यह आज्ञा दी कि संयुक्त राज्य बैंक में अब कोई धन न जमा किया जाय, और जो धन उसमें है उसे धीरे-धीरे सामान्य रूप से शासन के व्यय के लिए निकाल लिया जाये। इस बैंक के स्थान पर सावधानी से चुने हुए राज्य-बैंक कार्य करें और उन पर कठोर नियन्त्रण रखा जाय।

जैक्सन ने इसी प्रकार की सूझ-बूझ का प्रदर्शन वैदेशिक समस्याओं के संचालन में किया। जब फ्रान्स ने संयुक्त राज्य को अपनी कुछ देनदारियों की अदायगी रोक दी तो जैक्सन ने फ्रान्स की सम्पत्ति पर अधिकार करने का आदेश दे दिया और इस प्रकार वह उसे रास्ते पर लाया। परन्तु जब टेक्सास ने मेक्सिको के विरुद्ध विद्रोह किया और संयुक्त राज्य में सम्मिलन की प्रार्थना की तो उसने कौशलपूर्वक उसे टाल दिया।

जैक्सन के राजनीतिक विरोधी जब तक आपस में झगड़ते रहते, उन्हें सफलता की आशा नहीं थी, इसलिए उन्होंने सभी असन्तुष्ट तत्वों को 'व्हिग' नामक एक सामूहिक दल में एकत्रित करने का प्रयास किया। यद्यपि वे सन् १८३२ ई० के चुनाव-अभियान के पश्चात् शीघ्र ही संगठित हो गये थे तथापि उन्हें पारस्परिक मतभेदों को मिटा कर अपने राजनीतिक मंच का निर्माण करने में एक दशक से अधिक समय लग गया। प्रधानतया

व्हिग दल के श्रेष्ठतम और प्रतिभाशाली राजनीतिज्ञ हेनरी क्ले और डैनियल वेब्स्टर के आकर्षण से दल की सदस्यता दृढ़ हो सकी। सन् १८३६ ई० के निर्वाचन में व्हिग दल में इतना मतभेद था कि इसके समर्थक किसी एक व्यक्ति अथवा किसी एक कार्यक्रम पर एकमत न हो सके। फलत: जैक्सन द्वारा समर्थित मार्टिन वान ब्यूरेन चुनाव जीत गया।

जहां तक वान ब्यूरेन का प्रश्न है, उसके कार्य-काल की आर्थिक मन्दी तथा उसके पूर्ववर्ती के सुरम्य व्यक्तित्व ने उसके गुणों को ढक दिया। सरकारी कर्मचारियों के लिए दस घण्टे का दिन निर्धारित करने जैसे सार्वजनिक कार्यों से भी वान ब्यूरेन जनता में उत्साह न जागृत कर सका, क्योंकि उसमें नेतृत्व के प्रेरक गुणों के साथ-साथ उस नाटकीय चमत्कार का अभाव था, जो जैक्सन की प्रत्येक गतिविधि में झलकता था। सन् १८४० ई० के निर्वाचन के समय देश को बहुत कठिन परिस्थितियों और अपर्याप्त मज़दूरी का सामना करना पड़ रहा था और डेमोक्रैट अपनी सुरक्षा की चेष्टा में थे।

राष्ट्रपति पद के लिए व्हिग प्रत्याशी, ओहायो का विलियम हेनरी हैरिसन सन् १८१२ ई० के संग्राम में टिप्पकैनों की मुठभेड़ के नायक के रूप में विशेष लोकप्रिय हुआ था, और जैक्सन की भांति लोकतान्त्रिक पश्चिम का प्रतिनिधि समझा जाता था। उसके साथ उपराष्ट्रपति के पद का प्रत्याशी जॉन टाइलर था, जिसके राज्यों के अधिकार तथा स्वल्प शुल्क सम्बन्धी विचार दक्षिण में लोकप्रिय थे। हैरिसन को विशाल बहुमत से विजय प्राप्त हुई।

अपने प्रतिष्ठापन के एक मास के भीतर ही ६८ वर्षीय हैरिसन की मृत्यु हो गयी और टाइलर राष्ट्रपति बना। क्ले और वेब्स्टर इस समय भी देश के सबसे अधिक प्रभावशाली व्यक्ति थे, परन्तु टाइलर के विचार उनके विचारों से सर्वथा भिन्न थे। उसके कार्यकाल की समाप्ति के पूर्व ही इन मतभेदों के कारण उनका सम्बन्ध विच्छेद हो गया और जिस दल ने राष्ट्रपति को निर्वाचित किया था उसी ने उसका साथ छोड़ दिया।

राजनीतिक उत्तेजना से राष्ट्र में हलचल

सन् १८२९ ई० में जब जैक्सन राष्ट्रपति बना था, समस्त पश्चिमी विश्व में अशान्ति और विद्रोह की धारा बह रही थी। अमेरिका में सुधार की भावना के समर्थन के यद्यपि अपने ही स्रोत थे, तथापि उस लहर से इसका पूर्ण सामंजस्य था। राजनीति में लोकतान्त्रिक उथल-पुथल का जो उदाहरण जैक्सन के निर्वाचन में मूर्त हुआ था वह अधिकाधिक अधिकारों और सुअवसरों की ओर जन-साधारण की प्रगति का केवल एक पक्ष था।

उदार राजनीतिक आन्दोलन के साथ-साथ श्रमिक संगठनों का भी आरम्भ हो रहा था। सन् १८३५ ई० में फ़िलाडेल्फ़िया के श्रमिकों ने प्राचीन 'अन्धकार से अन्धकार तक' के कार्यदिवस को घटाकर १० घण्टे का कार्यदिवस निर्धारित करने में सफलता प्राप्त की। न्यू हैम्पशायर, रोड आइलैण्ड, ओहायो तथा सन् १८५० ई० में संघ में सम्मिलित कैलिफोर्निया के नये राज्य में इस प्रकार के सुधारों का यह केवल आरम्भ मात्र था।

मानवीय सुधारों के लिए श्रमिकों का उत्साह उस समय के सभी प्रगतिवादी आन्दोलनों का एक आवश्यक अंग था। शिक्षा में लोकतान्त्रिक व्यवस्था के लिए उनका संघर्ष विशेष महत्वपूर्ण था। मताधिकार के विस्तार ने शिक्षा के विषय में एक नवीन धारणा को पहले ही जन्म दे दिया था, क्योंकि दूरदर्शी राजनीतिज्ञों ने सर्वत्र अशिक्षित और निरक्षर निर्वाचकों को व्यापक मताधिकार देने के भयंकर परिणामों का अनुभव कर लिया था। न्यूयॉर्क के डी विट क्लिण्टन, इलिनॉय के अब्राहम लिंकन, मैसाचूसेट्स के होरेस मान आदि को उन संगठित श्रमिकों का समर्थन मिला, जिनके नेताओं ने सभी बालकों के लिए ऐसे निःशुल्क स्कूलों की मांग की जो करों की सहायता से चलाये जायें और चन्दों से कलंकित न हों। धीरे-धीरे एक के बाद दूसरे राज्यों में क़ानून द्वारा ऐसी निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था होने लगी। देश के उत्तरी भाग में सर्वत्र सार्वजनिक स्कूलों की पद्धति सामान्य हो गयी। परन्तु राष्ट्र के अन्य भागों में सार्वजनिक शिक्षा के लिए वर्षों संघर्ष चलता रहा।

जिन सुधारों ने पुरुषों को उनके बहुत-से प्राचीन बन्धनों से मुक्त किया उन्होंने ही स्त्रियों को जाग्रत कर समाज में उनकी असमान स्थिति का उन्हें आभास कराया। औपनिवेशिक काल से ही अविवाहित स्त्रियों के बहुत-से क़ानूनी अधिकार वही थे जो पुरुषों के थे, परन्तु प्रथा के अनुसार उन्हें शीघ्र विवाह कर लेना पड़ता था और विवाह के साथ-साथ वह क़ानून की दृष्टि में अपना अलग अस्तित्व खो देती थीं। स्त्रियों को मतदान का अधिकार नहीं था और उनकी शिक्षा प्रधानतया लिखने, पढ़ने, संगीत, नृत्य और सीने-पिरोने तक ही सीमित थी। अमेरिका में स्त्रियों की जागृति फ्रैंसिस राइट नामक प्रगतिशील विचारों की एक स्कॉच महिला के आगमन से आरम्भ हुई। धर्म-शास्त्र और स्त्रियों के अधिकारों पर दिये गये उसके सार्वजनिक भाषणों ने बहुत-से लोगों को स्तब्ध कर दिया। परन्तु उसके उदाहरण ने अमेरिकी स्त्री-आन्दोलन में फ़िलाडेल्फ़िया की एक क्वेकर ल्यूक्रोशिया मॉट, सूसन बी० एण्टनी, और एलिज़ाबेथ कैडी स्टैण्टन जैसी महान् विभूतियों को शीघ्र कार्य-रत होने के लिए प्रेरित किया। इन्होंने स्त्रियों के अधिकारों के समर्थन, दास-प्रथा के विरोध, तथा श्रमिकों के सुधार में खुलेआम अपनी शक्ति लगाकर पुरुषों और बहुत-सी स्त्रियों की भी अवहेलना का सामना किया।

स्त्री-अधिकारवादी नेता पूर्णतया मित्र-रहित नहीं थीं। राल्फ़ वाल्डो एमर्सन, अब्राहम लिंकन, और होरेस ग्रीली सरीखे प्रमुख व्यक्ति उनकी ओर से कार्य करते और व्याख्यान देते थे। यद्यपि यह सुधार के स्थान पर आन्दोलन का समय था, फिर भी कुछ निश्चित उन्नति की जा सकी। सन् १८२० ई० में एम्मा विलर्ड ने लड़कियों के लिए एक सेमिनरी खोली, सन् १८३७ ई० में माउण्ट होलीओक नामक कालेज-स्तर की एक लड़कियों की संस्था स्थापित की गयी। इससे भी साहसपूर्ण कार्य था सहशिक्षा का, जिसमें ओहायो के तीन कालेजों ने नेतृत्व किया—ओबरलिन ने १८३३ में, अरब्राना ने १८५० में, और ऐंटिओक ने १८५३ में।

इस बीच सन् १८४८ ई० में स्त्रियों के अधिकारों के लिए विश्व के इतिहास में प्रथम सम्मेलन न्यूयार्क में स्थित सेनेका फ़ाल्स में हुआ। यहां प्रतिनिधियों ने एक घोषणा-

पत्र तैयार किया, जिसमें क़ानून की दृष्टि में शिक्षा और आर्थिक सुविधाओं में, तथा मतदान में पुरुषों से समानता की मांग की गयी थी।

संस्कृति और उद्योग में नव शक्ति का संचार

इन वर्षों में राष्ट्रीय आत्मविश्वास की भावना बड़े पैमाने पर सर्जित साहित्य में अभिव्यक्त हो रही थी। हेनरी वैड्सवर्थ, लांगफ़ेलो, जॉन ग्रीनलीफ़ व्हिटियर, ओलिवर वेंडेल होम्स, और जेम्स रसेल लोवेल आदि कवियों का कार्यकाल सन् १८३० के दशक से ही आरम्भ हो गया था। दार्शनिक राल्फ़ वाल्डो एमर्सन ने ओजस्वी गद्य और पद्य में व्यक्तिवाद और मानव की श्रेष्ठता का प्रचार किया। नथैलियन हॉथर्न और एडगर एलेन पो आदि कथाकारों ने मनुष्य की गम्भीर और लोकातीत अनुभूतियों का साहित्य में समावेश कर इस तथ्य का उदाहरण प्रस्तुत किया कि अमेरिकी विचार-शक्ति सर्वतोमुखी है।

यद्यपि इनमें से अधिकांश व्यक्तियों ने अपनी रचनाओं से ही स्थायी ख्याति प्राप्त की थी, परन्तु इनमें से बहुतों ने उस युग के मानवीय तथा राजनीतिक संघर्षों में भी सक्रिय रुचि ली थी। व्हिटियर दासता के विरुद्ध संघर्ष का प्रमुख राजकवि था। लांगफ़ेलो ने अपनी 'पोयम्स आन स्लेवरी' शीर्षक कृति सन् १८४२ ई० में प्रकाशित की। लोवेल 'पेनसिलवैनिया फ़्रीमैन' का सम्पादक था। विलियम कलेन ब्रायंट का चमत्कारपूर्ण कवि-जीवन सन् १८२९ से १८७८ ई० तक 'न्यूयॉर्क ईवनिंग पोस्ट' के सम्पादन-कार्य के साथ-साथ चलता रहा।

इस युग की प्रवृत्तियों ने गणतन्त्र के इतिहास में एक नयी अभिरुचि उत्पन्न की और यहीं से ऐतिहासिक अध्ययन का आरम्भ हुआ। १८३० ई० के दशक में जेयर्ड स्पार्क ने, जिसने कई वर्ष पूर्व 'नार्थ अमेरिकन रिव्यू' आरम्भ किया था, ऐतिहासिक अभिलेखों का सम्पादन आरम्भ किया, जिनमें वाशिंगटन और फ़्रैंकलिन के लेख तथा क्रांतिकालीन राजनयिक पत्र-व्यवहार भी थे। सन् १८३४ ई० में जार्ज बैन्क्राफ्ट ने संयुक्त राज्य की आरम्भिक खोज से ले कर संविधान बनने तक के इतिहास का प्रथम भाग प्रकाशित किया।

जनता की दैनिक जीवन की सुविधाएं स्पष्टतया बढ़ रही थीं। सन् १८२५ ई० के पश्चात् मूसल और ओखली का स्थान कूटने वाली मशीन ने ले लिया, और कुछ ही समय पश्चात् फ़सल काटने और मांडने वाली मशीनों का आविष्कार हुआ। तीव्र गति से हो रहे भौगोलिक विस्तार के साथ-साथ राष्ट्र की एकता को सुरक्षित रखने में जो कठिनाई हो रही थी, वह रेलवे के विस्तार से कुछ सीमा तक दूर हो गयी। घोड़ों से खींची जाने वाली सार्वजनिक गाड़ियों के चलने के केवल बीस वर्ष पश्चात् सन् १८५० ई० में कोई भी व्यक्ति रेलगाड़ी से मेन से उत्तरी कैरोलाइना तक, अतलान्तिक समुद्र-तट से इरी झील के तट पर स्थित बफ़ेलो तक, और इरी झील के पश्चिमी किनारे से शिकागो या सिनसिनाटी तक यात्रा कर सकता था। सन् १८३५ ई० में सैमुअल एफ़० बी० मोर्स

द्वारा आविष्कृत बिजली के तार-यन्त्र का प्रथम प्रयोग सन् १८४४ ई० में हुआ। सन् १८४७ ई० में रिचर्ड हो द्वारा निर्मित छपाई की रोटरी मशीन ने प्रकाशन की प्रक्रिया में क्रान्ति ला दी, और समाचार-पत्रों को अमेरिकी जीवन में महत्वपूर्ण स्थान दिलाने में प्रमुख योगदान किया।

सन् १८१२ से १८५२ ई० तक अनुमानतः ७२,५०,००० से २,३०,००,००० तक जनसंख्या की जो वृद्धि हुई वह भी राष्ट्र के विकास की ओर संकेत करती है। इस अवधि में बसने के लिए उपलब्ध भूमि ४४,२०,००० वर्ग किलोमीटर से बढ़कर ७८,००,००० किलोमीटर––अर्थात् लगभग यूरोपीय महाद्वीप के बराबर––हो गयी। उन्नतिशील कृषि के अतिरिक्त विभिन्न उद्योग-धन्धे, न केवल पूर्वी समुद्रतट पर अपितु पश्चिम के द्रुतगति से विकासशील नगरों में भी शीघ्रता से बढ़ रहे थे। राष्ट्र की स्थिरता, उसकी अर्थ-व्यवस्था तथा उसकी संस्थाओं की जीवन-शक्ति प्रतिष्ठित हो चुकी थी। परन्तु प्रादेशिक मतभेदों में जमे हुए जिन मौलिक संघर्षों का अभी तक समाधान नहीं हो पाया था, वे ही निश्चिततः अगले दशक में प्रज्वलित होकर गृह-युद्ध को जन्म देने वाले थे।

प्रादेशिक संघर्ष

"'परस्पर कलह-रत घर टिक नहीं सकता।' मेरा विश्वास है कि यह सरकार आधी दास और आधी स्वतन्त्र रह कर स्थायी रूप से नहीं चल सकती।"

—अब्राहम लिंकन

स्प्रिंगफ़ील्ड, इलिनॉय, जून १७, १८५८

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य के दशकों में विश्व का कोई भी देश दूसरे राष्ट्रों के लिए इतना रोचक नहीं था जितना कि संयुक्त राज्य, और बहुत कम ऐसे थे जिनकी ओर इतने प्रतिष्ठित दर्शक आकृष्ट होते थे। उनमें से एक फ्रान्सीसी राजनीतिक लेखक अलेक्सि डि टॉकवेल भी था, जिसकी पुस्तक 'डेमोक्रेसी इन अमेरिका' का सन् १८३५ ई० में प्रथम प्रकाशन हुआ। इस पुस्तक का यूरोपीय महाद्वीप में हार्दिक स्वागत हुआ। नये देश के विषय में लोगों का मत अधिकाधिक अनुकूल होने लगा। जो यात्री वहां पहुंचे उन्हें बॉस्टन की खाड़ी और बॉस्टन नगर मनोरम लगे, वन्य-प्रदेश में "यूटिका, सिरेक्यूज़ और ऑवर्न की भांति उन्नतिशील नगर एक के बाद एक" विकसित होते देख वे आश्चर्य-चकित हो गये। जैसे-जैसे उन्होंने उत्तरी राज्यों का भ्रमण किया, उन्हें "सर्वत्र समृद्धि के, और कृषि, व्यापार तथा बड़े-बड़े सार्वजनिक निर्माणकार्यों में तीव्र प्रगति के पूर्ण स्पष्ट प्रमाण मिले।"

अब राष्ट्रीय क्षेत्र जंगलों, मैदानों और पहाड़ों पर फैल चुका था। इन दूरवर्ती सीमाओं के भीतर ३१ राज्यों के संघ में २ करोड़ ३० लाख लोग बसे हुए थे। आशाओं का देश पूर्व इतनी प्रत्यक्ष सफलताओं का देश कभी सिद्ध नहीं हुआ था। पूर्व में उद्योग-धन्धों की धूम मची हुई थी। मध्य-पश्चिम और दक्षिण में कृषि फल-फूल रही थी। देश के बसे हुए भागों को एक-दूसरे से सम्बद्ध करने के लिए रेलों का जाल बिछ रहा था, और कैलिफ़ोर्निया की खानें व्यापार-प्रवाह में स्वर्णिम धाराएं बहा रही थीं।

फिर भी यात्रियों को शीघ्र स्पष्ट हो जाता था कि अमेरिका दो हैं—एक उत्तर का और दूसरा दक्षिण का। और विकास की गति में ही वर्गीय सामंजस्य स्थापित न होने के खतरे अन्तर्हित थे। न्यूइंगलैण्ड और मध्य अतलान्तिक राज्य ही उद्योग, व्यापार और वित्त के प्रधान केन्द्र थे। इस क्षेत्र के प्रमुख उत्पादन थे—सूती कपड़े, शहतीर, वस्त्र, मशीनें, चमड़े तथा ऊन का सामान। साथ ही साथ, नौ-परिवहन अपनी समृद्धि की

पराकाष्ठा तक पहुंच गया था, और अमेरिकी ध्वज फहराते हुए पोत सातों समुद्रों में भ्रमण करते हुए सभी राष्ट्रों का माल यथास्थान पहुंचा रहे थे।

दक्षिण में आय का प्रमुख साधन कपास की खेती थी, यद्यपि तटवर्ती प्रदेशों में चावल, लुइज़ियाना में गन्ना, तथा सीमावर्ती राज्यों में तम्बाकू तथा अन्य वस्तुओं की खेती होती थी, और जहां-तहां उद्योग भी थे। मेक्सिको की खाड़ी के निकटवर्ती मैदानों में की उर्वर काली भूमि के पूर्ण विकास के पश्चात् सन् १८५० के दशक में कपास का उत्पादन लगभग दूना हो गया और गाड़ियां, नौकायें और रेलें कपास की गांठों को उत्तर और दक्षिण के बाज़ारों में पहुंचने लगीं। कपास से उत्तर के कपड़ों की मिलों को कच्चा माल मिलता था, और देश का आधे से अधिक निर्यात भी वही था।

मध्य-पश्चिम क्षेत्र अपने घास के असीम मैदानों और तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या के साथ इस समृद्धि में अपना पूरा-पूरा योग दे रहा था। यूरोप में और अमेरिका के पुराने बसे हुए भागों में दोनों ही जगह इसके गेहूं और मांस की मांग थी। श्रम बचाने वाले यन्त्रों, विशेषकर मैकार्मिक रीपर के आविष्कार से खेती के उत्पादन में अद्वितीय वृद्धि सम्भव हो सकी। सन् १८४८ ई० की फ़सल में ५०० रीपर प्रयोग में लाये गये, और सन् १८६० में १,००,००० से भी अधिक। इस बीच राष्ट्र की गेहूं की खेती सन् १८५० में साढ़े तीन करोड़ हेक्टोलिटर से बढ़ कर सन् १८६० तक लगभग छः करोड़ दस लाख हेक्टोलिटर तक पहुंच गयी थी, और इसका आधे से अधिक अंश मध्य-पश्चिम में ही उपजाया जाता था।

यातायात की सुविधाओं में जो महत्वपूर्ण सुधार हुए वे पश्चिमी समृद्धि के प्रमुख उत्प्रेरक थे। सन् १८५० ई० से १८५७ ई० तक अपेलेशियन पर्वत के अवरोध को पांच रेल की बड़ी लाइनों ने भेद दिया था। रेल के जाल के विस्तार में दक्षिण ने पहले बहुत कम भाग लिया था और सन् १८५० के दशक के अन्तिम वर्षों में ही मिसिसिपी नदी के निचले भाग को दक्षिणी अतलान्तिक समुद्र तट से मिलाने के लिए पर्वतों से होकर रेल की एक सीधी लाइन निकाली गयी।

दासता—अर्थ-व्यवस्था का अंग

उत्तर और दक्षिण के स्वार्थों में संघर्ष अधिकाधिक स्पष्ट होने लगा। कपास की फसल बेचने से उत्तर के व्यापारियों ने जो भारी लाभ कमाया उससे दक्षिण वाले कुढ़ने लगे, और उत्तर वालों के उत्कर्ष को ही अपने प्रदेश के पिछड़े होने का कारण समझने लगे। इसके विपरीत उत्तर वालों का व्यक्त मत था कि दास-प्रथा ही—वह विचित्र संस्था जिसे दक्षिण वाले अपनी अर्थ-व्यवस्था के लिए आवश्यक समझते थे—उस क्षेत्र के अपेक्षाकृत पिछड़े होने के लिए उत्तरदायी है।

सन् १८३० ई० से ही दास-प्रथा के प्रश्न को लेकर प्रादेशिक मतभेद तीव्रतर होने लगे थे। उत्तर में दास-प्रथा-विरोधी भावना सशक्त होने लगी। स्वतन्त्र भूमि-आन्दोलन ने भी, जो ऐसे क्षेत्रों में दास-प्रथा के प्रसार का प्रबल विरोधी था जो अभी तक राज्य का

दर्जा नहीं पा सके थे, इस भावना को उत्तेजित किया। सन् १८५० ई० में दक्षिणी जनता का विचार था कि दास-प्रथा के लिए वह उतनी ही जिम्मेदार ठहराई जा सकती है जितनी कि अपनी अंग्रेजी भाषा के लिए, अथवा अपनी प्रतिनिधि संस्थाओं के लिए। कुछ समुद्र-तटवर्ती क्षेत्रों में सन् १८५० ई० तक दास-प्रथा २०० वर्ष से भी अधिक पुरानी हो चली थी और उस क्षेत्र की मूल अर्थ-व्यवस्था का अनिवार्य अंग वन चुकी थी। दक्षिणी और सीमावर्ती १५ राज्यों में नीग्रो जनसंख्या श्वेतों की जनसंख्या की लगभग आधी थी जव कि उत्तर में उनकी संख्या नगण्य थी।

सन् १८४० के दशक के मध्य से दास-प्रथा का प्रश्न अमेरिकी राजनीति के अन्य सभी प्रश्नों से अधिक महत्वपूर्ण हो गया। अतलान्तिक से मिसिसिपी नदी और उसके पार तक का सारा दक्षिणी क्षेत्र एक अपेक्षाकृत संगठित राजनीतिक इकाई था, जो कपास की खेती और दास-प्रथा से सम्वन्धित सभी मूलभूत नीतियों पर एकमत था। दक्षिण के अधिकांश वागान-मालिक दास-प्रथा को आवश्यक और स्थायी समझने लगे थे। कपास की खेती, जिसमें केवल पुराने औज़ारों का इस्तेमाल होता था, दासों के प्रयोग के लिए विशेष उपयुक्त थी। इसमें वर्ष में नौ महीने काम लगा रहता था और पुरुषों के साथ-साथ स्त्रियों, वच्चों को भी काम दिया जा सकता था।

दास-प्रथा पर वाद-विवाद में वृद्धि

दक्षिण के राजनीतिक नेता, व्यावसायिक वर्ग, और अधिकांश पादरी उत्तरी जनमत से जूझते-जूझते अव दास-प्रथा के केवल पक्ष-पोषक ही नहीं, वरन् इसके प्रवल समर्थक वन गये थे। यह सिद्ध किया जाने लगा कि इससे नीग्रो जनता को वहुत लाभ है, और दक्षिण के प्रचारक इस वात पर वल देने लगे कि दास-प्रथा में मालिक और मज़दूर के सम्वन्ध उत्तर की मज़दूरी-प्रथा की अपेक्षा कहीं अधिक मानवतापूर्ण हैं।

सन् १८३० ई० के पूर्व वागानों में पितृसत्तात्मक शासन-व्यवस्था चलती थी, जिसमें मालिकों द्वारा दासों की व्यक्तिगत देख-रेख की जाती थी और प्रवन्ध व्यवस्था सहज ढंग की थी। किन्तु सन् १८३० के पश्चात् जव नीचे दक्षिण में वड़े पैमाने पर कपास का उत्पादन होने लगा तो मालिकों ने धीरे-धीरे अपने दासों पर नजदीक से निजी निरीक्षण रखना छोड़ दिया और वे ऐसे पेशेवर निरीक्षकों का उपयोग करने लगे जिनकी नौकरी इस वात पर निर्भर करती थी कि उनमें दासों से अधिक से अधिक कार्य लेने की कितनी योग्यता है।

वहुत-से वागान-मालिक जहां अपने नीग्रो दासों के साथ अच्छा व्यवहार करते थे, वहां हृदयहीन क्रूरता के भी उदाहरण थे, खासकर ऐसे मामलों में जिनमें दासों के परिवार ही टूट जाते थे। परन्तु दास-प्रथा की तीव्र आलोचना का आधार निरीक्षकों का अमानवीय व्यवहार न होकर, मनुष्य की स्वतन्त्रता के मौलिक अधिकार का हनन था।

कपास की खेती और इसकी मज़दूर-व्यवस्था दक्षिण में एक वहुत वड़े परिमाण में लगी पूंजी का प्रतिनिधित्व करने लगी। कपास का उत्पादन एक उपेक्षणीय महत्व

की खेती से आरम्भ होकर सन् १८०० ई० में १ करोड़ ६० लाख किलोग्राम पहुंच गया, सन् १८२० में वह ७ करोड़ २० लाख किलोग्राम तक पहुंचा, और सन् १८४० तक यह बढ़कर ३० करोड़ १५ लाख किलोग्राम से भी ऊपर पहुंच गया था। सन् १८५० ई० तक विश्व के समस्त कपास के उत्पादन का ८ में से ७ हिस्सा अमेरिका के अकेले दक्षिण भाग में उत्पन्न होता था।

दास-प्रथा भी इसी अनुपात में बढ़ने लगी, और राष्ट्रीय राजनीति में दक्षिण वालों ने कपास की दास-व्यवस्था से सम्बन्धित हितों की रक्षा और उनके विस्तार का मुख्य प्रयास किया। प्रसार एक आवश्यकता समझी जाने लगी, क्योंकि कपास की एक फसल उगाने की प्रथा के कारण भूमि की उर्वरता तीव्रता से घटने लगी, और नये उर्वर क्षेत्रों की आवश्यकता पड़ने लगी। इसके अलावा, राजनीतिक शक्ति की दृष्टि से भी दक्षिण वालों को अतिरिक्त दासता-समर्थक राज्यों के निर्माण हेतु नये क्षेत्र की आवश्यकता थी, जिससे संघ में नये स्वतन्त्र राज्यों के प्रवेश का प्रतिकार हो सके। दास-प्रथा-विरोधी उत्तर वालों को दक्षिण के दृष्टिकोण में दास-प्रथा-समर्थकों के विवर्धनार्थ षड़यन्त्र का सन्देह हुआ, और १८३० ई० के दशक में उनका विरोध उग्र हो गया।

एक आरम्भिक दास-प्रथा-विरोधी आन्दोलन, जो अमेरिकी क्रान्ति की एक प्रशाखा मात्र था, अपनी पिछली विजय सन् १८०८ में उस समय प्राप्त कर चुका था जब कांग्रेस ने अफ्रीका से दास-व्यापार समाप्त कर दिया था। तत्पश्चात् इसका विरोध प्रधानतया क्वेकरों द्वारा होता रहा, जो उस समय इसका साधारण और निष्फल विरोध कर रहे थे, जब कि 'काटन-जिन' दासों की मांग को बढ़ा रहा था। सन् १८२० के दशक में आन्दोलनों का एक नया रूप सामने आया, जो प्रधानतः उस समय के गतिशील लोकतांत्रिक आदर्शवाद तथा सब वर्गों के लिए सामाजिक न्याय की नयी भावना की उपज था।

अपने उग्रतर रूप में अमेरिका में दास-प्रथा की समाप्ति का आन्दोलन संघर्षशील और दुराग्रही हो गया तथा दास-प्रथा की तुरन्त समाप्ति की मांग पर अड़ गया। इस उग्र विचार-धारा का नेतृत्व मैसाचूसेट्स के एक नव युवक विलियम लॉयड गैरिसन ने किया, जिसमें एक शहीद की वीरता तथा जन-नेता के धार्मिक जोश का समन्वय था।

१ जनवरी सन् १८३१ ई० को गैरिसन ने अपने समाचारपत्र 'दि लिबरेटर' का पहला अंक प्रकाशित किया, जिसमें घोषणा की गयी थी : "मैं अपनी दास जनता को तुरन्त मताधिकार दिलाने के लिए गम्भीरतापूर्वक लड़ूंगा . . . इस विषय पर मैं संयम से सोचना, बोलना और लिखना नहीं चाहता . . . मैं इसमें जी-जान से हूं—मैं टालमटोल नहीं करूंगा—मैं क्षमा नहीं करूंगा—मैं एक इंच भी पीछे नहीं हटूंगा—और मेरी बात सुनी जायगी।"

गैरिसन के सनसनीपूर्ण उपायों ने उत्तरवासियों को उस संस्था के दोषों के प्रति सजग कर दिया जिसे बहुतेरे अपरिवर्तनीय समझने लगे थे। उसकी नीति यह थी कि नीग्रो-दासता के सब से घृणोत्पादक स्वरूप को जनता की दृष्टि के सामने लाया जाये, और दास रखने वालों को मानव जीवन के उत्पीड़कों और व्यापार करने वालों के रूप

में प्रस्तुत किया जाये। वह मालिकों के कोई अधिकार नहीं मानता था, किसी समझौते के लिए तैयार नहीं था और विलम्ब नहीं सह सकता था। उत्तर के लोग जो इतने उग्र नहीं थे और उसकी कानून-विरोधी युक्तियों से असहमत थे, उनके विचार में वैधानिक और ढंग से ही सुधार होना चाहिए था।

दास-प्रथा-विरोधी आन्दोलन का एक रूप यह भी था कि दासों को अपने मालिकों से बचकर उत्तर, अथवा सीमा पार कर कैनेडा में भागने में सहायता की जाये। १८३० ई० के दशक में उत्तर के सभी भागों में गुप्त मार्गों का एक विस्तृत जाल स्थापित हो चुका था, जो अण्डरग्राउण्ड रेल रोड (भूगर्भस्थ रेल-मार्ग) के नाम से प्रसिद्ध था। इसका सब से सफल प्रयोग पुराने उत्तर-पश्चिमी प्रदेश में हो रहा था। अनुमान है कि केवल ओहायो राज्य में सन् १८३० से लेकर १८६० ई० तक कम से कम ४०,००० फ़रार दासों को स्वतन्त्रता प्राप्त करने में सहायता दी गयी थी। स्थानीय दासता-विरोधी संस्थाओं की संख्या इस गति से बढ़ी कि सन् १८४० में उनकी संख्या २,००० थी, जिनमें लगभग २,००,००० सदस्य थे।

यद्यपि दासता समाप्त करने में जुटे सक्रिय व्यक्तियों का प्रयास यह था कि दासता को अन्तःकरण की समस्या बना दिया जाये, परन्तु उत्तर के लोग दासता-विरोधी आन्दोलन से प्रायः अलग ही रहे। अपने ही मामलों में व्यस्त वे दासता को दक्षिणवासियों की समस्या समझते थे, जिसका समाधान करना राज्य का काम था। उनके विचार से कट्टर दासता-विरोधियों का असंयत आन्दोलन स्वयं संघ की अखण्डता के लिए घातक था।

सन् १८४५ में टेक्सास के अधिग्रहण ने—और कुछ ही समय पश्चात्, मैक्सिकी युद्ध के परिणामस्वरूप दक्षिण प्रदेश पर अधिकार ने—दास-प्रथा के नैतिक प्रश्न को एक तीव्र राजनीतिक समस्या में परिवर्तित कर दिया। उस समय तक ऐसा लगता था कि दास-प्रथा उन्हीं क्षेत्रों तक सीमित रहेगी जहां अभी तक रही है। सन् १८२० ई० के मिसौरी-समझौते द्वारा इसे सीमाबद्ध कर दिया गया था, और उसके उल्लंघन का इसे कोई अवसर नहीं मिला था। नये प्रदेशों ने दास-प्रथा के पुनर्विस्तार को सचमुच सम्भाव्य बना दिया।

बहुत-से उत्तरवासियों का यह विश्वास था कि यदि दास-प्रथा को भली भांति सीमित कर दिया जाये तो अन्त में वह क्षीण होकर नष्ट हो जायेगी। नये दासता-समर्थक राज्यों की संख्या में वृद्धि के विरोध को न्यायोचित सिद्ध करने के लिए उन्होंने वाशिंगटन और जेफ़र्सन के उन वक्तव्यों, तथा सन् १७८७ के अध्यादेश की ओर संकेत किया, जिन्होंने उत्तर-पश्चिम में दास-प्रथा के विस्तार को निषिद्ध किया था। टेक्सास में दास-प्रथा पहले ही से विद्यमान थी, इसलिए स्वभावतः संघ में उसका प्रवेश दासता-समर्थक राज्य के रूप में हुआ। परन्तु कैलिफोर्निया, न्यू मेक्सिको, और यूटा में दास-प्रथा नहीं थी, और जब सन् १८४६ ई० में संयुक्त राज्य इन प्रदेशों को आत्मसात् करने को तत्पर हुआ तो इस प्रश्न पर परस्पर विरोधी सुझाव आने लगे कि इनके साथ क्या बरताव किया जाये?

दक्षिण के उग्रवादियों की मांग थी कि मेक्सिको से प्राप्त सभी भूमि दासों के स्वामियों के लिए उन्मुक्त कर दी जाये। सशक्त दासता-विरोधी उत्तरवासियों ने मांग की

कि सभी नये क्षेत्र दास-प्रथा के लिए बन्द कर दिये जायें। मध्यमार्गावलम्बियों के एक वर्ग ने राय दी कि मिसौरी समझौते की रेखा को प्रशान्त महासागर तक बढ़ा दिया जाये, और इसके उत्तर में स्वन्तत्र राज्य हों तथा दक्षिण में दास-प्रथा-समर्थक राज्य हों। एक अन्य वर्ग ने यह प्रस्ताव रखा कि इस प्रश्न का निर्णय 'सार्वजनिक सम्प्रभुता' पर छोड़ दिया जाये--अर्थात् सरकार उपनिवेशियों को अपनी इच्छानुसार दासों के साथ अथवा बिना दासों के, इस नये क्षेत्र में बसने की अनुमति दे, और जब इस प्रदेश को राज्य के रूप में संगठित करने का समय आये तो वहां के निवासियों को इस प्रश्न का निर्णय स्वयं करने का अधिकार हो।

दक्षिणवासियों की धारणा थी कि दास-प्रथा को सभी प्रदेशों में अपना अस्तित्व बनाये रखने का अधिकार है। उत्तरवासियों ने यह दावा किया कि इसे कहीं भी बने रहने का अधिकार नहीं। सन् १८४८ ई० में लगभग ३,००,००० व्यक्तियों ने 'फ्री सायल पार्टी' (स्वतन्त्र भूमि दल) के प्रत्याशियों को मत दिया। इस दल ने घोषणा की थी कि सर्वोत्कृष्ट नीति तो यह है कि दास-प्रथा को सीमित, स्थानबद्ध और निरुत्साहित किया जाये।

जनवरी सन् १८४८ ई० में सोने की खोज के फलस्वरूप कैलिफोर्निया में ८०,००० से भी अधिक आप्रवासी केवल सन् १८४९ में सिर के बल दौड़ पड़े। कैलिफोर्निया का प्रश्न एक कठिन प्रश्न बन गया, क्योंकि स्पष्टत: कांग्रेस को संगठित शासन स्थापित होने से पूर्व ही उस नये क्षेत्र की स्थिति का निश्चय कर देना आवश्यक था। राष्ट्र की आशाएं सेनेटर हेनरी क्ले पर आधारित थीं, जो पहले दो बार संकट के समय समझौते की व्यवस्था कर चुका था। उसने एक बार पुन: खतरनाक प्रादेशिक झगड़े को एक सुव्यवस्थित योजना की सहायता से रोका।

उसके समझौते में (कांग्रेस द्वारा संशोधित रूप में) और बातों के साथ-साथ यह भी प्रस्ताव था कि कैलिफोर्निया को एक स्वतन्त्र-भूमि (दास-प्रथा-निषिद्ध) संविधान वाले राज्य के रूप में सम्मिलित किया जाये, और शेष नये हस्तगत क्षेत्रों को न्यू मेक्सिको और यूटा के प्रदेशों में विभाजित कर दास-प्रथा का बिना कोई उल्लेख किये संगठित कर दिया जाये। न्यू मेक्सिको के कुछ भाग पर टेक्सास का दावा, उसे एक करोड़ डालर देकर शान्त कर दिया जाये, भागे हुए दासों को पकड़ने के लिए और उन्हें उनके स्वामियों को वापस करने के लिये अधिक प्रभावशाली कार्यप्रणाली स्थापित की जाये, और दासों का क्रय-विक्रय (दास-प्रथा नहीं) कोलम्बिया के ज़िले में समाप्त कर दिया जाये। ये प्रस्ताव--जो अमेरिकी इतिहास में '१८५० का समझौता' के नाम से प्रसिद्ध हैं--स्वीकृत हो गये, और देश ने चैन की सांस ली।

तीन वर्ष तक तो ऐसा लगा कि इस समझौते ने प्राय: सब मतभेद समाप्त कर दिये हैं, परन्तु अन्दर-अन्दर तनाव बढ़ता ही गया। नये फ़रार-दास-कानून से बहुत-से उत्तरवासी असन्तुष्ट थे और उन्होंने दासों को पकड़ने में कोई भाग लेने से मना कर दिया। इसके विपरीत, वे फरारों की भागने में सहायता करते रहे और अण्डरग्राउण्ड रेल रोड को पहले की अपेक्षा अधिक कुशल और दुस्साहसिक बनाने लगे।

घरेलू संघर्ष का उपागमन

जो लोग यह समझते थे कि दासता की समस्या अपने आप सुलझ जायेगी उनकी दृष्टि केवल राजनीतिज्ञों और सम्पादकों पर थी। समय ने यह सिद्ध कर दिया कि सन् १८५२ ई० में प्रकाशित केवल एक पुस्तक–हैरियट बीचर स्टो की 'टाम काका की कुटिया' (अंकिल टॉम्स केविन)–का प्रभाव विधायकों और समाचार-पत्रों से बहुत अधिक पड़ा।

जिस समय श्रीमती स्टो ने अपनी पुस्तक लिखना आरम्भ किया था, उन्होंने इसे केवल एक साधारण शब्द-चित्र ही समझा था। परन्तु जैसे-जैसे पुस्तक आगे बढ़ी, इसका क्षेत्र विस्तृत होने लगा। इसके प्रकाशित होते ही सनसनी फैल गयी। पहले ही वर्ष ३ लाख से अधिक प्रतियां बिक गयीं और, आठ शक्तिचालित मुद्रणालय इस बढ़ती हुई मांग को पूरा करने के लिए रात-दिन चलते थे। शीघ्र ही इसका कई भाषाओं में अनुवाद हो गया।

इस उपन्यास ने दिखलाया कि किस प्रकार दासता को निर्दयता से पृथक नहीं किया जा सकता और किस प्रकार स्वतन्त्र समाज और दास समाज में मूलत: सामंजस्य नहीं स्थापित हो सकता। उत्तर के मतदाताओं की नई पीढ़ी इससे गम्भीर रूप से प्रभावित हुई। दास-प्रथा-विरोध के निमित्त उसने सर्वत्र नवयुवकों और वृद्धों में उत्साह अनुप्राणित किया, क्योंकि उसने निर्दयता से शोषित असहाय व्यक्तियों के लिए दया और उनके साथ हो रहे अन्याय के प्रति आक्रोश की मूल मानवीय भावनाओं को जागृत किया था।

सन् १८५४ ई० में दास-प्रथा का पुराना प्रश्न सजीव हो उठा और विवाद कटुतर होता गया। जो क्षेत्र आजकल कैन्सस और नेब्रास्का कहलाता है, उस समय उपनिवेशियों को आकर्षित कर रहा था, और एक स्थायी शासन की स्थापना हो जाने पर उसकी द्रुत विकास की आशा बढ़ गई थी।

खाई गहरी होने लगी

मिसौरी समझौते के अनुसार यह सारा क्षेत्र दास-प्रथा के लिए बन्द था। परन्तु मिसौरी के प्रभावशाली दास-स्वामियों ने पश्चिमवर्ती कैन्सस को स्वतन्त्र प्रदेश बनाये जाने का विरोध किया, क्योंकि इस प्रकार मिसौरी के तीन पड़ोसी स्वतन्त्र हो जायेंगे और मिसौरी को स्वयं शीघ्र ही एक सशक्त आन्दोलन के सामने झुककर एक स्वतन्त्र राज्य बनाने को बाध्य होना पड़ेगा। कुछ समय तक दक्षिणवासियों की सहायता से मिसौरी वालों ने इस क्षेत्र को संगठित करने के सभी प्रयत्नों को कांग्रेस में रोक दिया।

इस समय इलिनॉय के वरिष्ठ सेनेटर स्टीफ़न ए० डगलस ने एक ऐसा विधेयक प्रस्तावित कर उपद्रव खड़ा कर दिया जिससे स्वतन्त्र-भूमि के सभी पक्षपाती क्रुद्ध हो गये। उसने यह युक्ति रखी कि चूंकि १८५० के समझौते ने यूटा और न्यू मेक्सिको को दास-प्रथा के सम्बन्ध में स्वयं निर्णय करने की छूट दे रखी है, इसलिए मिसौरी-समझौता उसी समय से निरस्त हो गया है। उसकी योजना यह थी कि कैन्सस और नेब्रास्का को दो प्रदेशों में

संगठित किया जाये और उनमें उपनिवेशियों को अपने साथ दास लाकर बसाने की अनुमति दी जाये। तत्पश्चात् इन निवासियों को ही यह निश्चित करने का अधिकार दे दिया जाये कि वे संघ में स्वतन्त्र राज्य के रूप में प्रवेश करेंगे अथवा दास-समर्थक राज्य के रूप में।

उत्तरवासियों ने डगलस पर यह आक्षेप लगाया कि वह सन् १८५६ ई० में राष्ट्रपति का चुनाव जीतने के लिए दक्षिण वालों की चापलूसी कर रहा है। क्रोधपूर्ण विवादों ने विधेयक की प्रगति रोक दी। स्वतन्त्र-भूमि के समर्थक समाचारपत्रों ने इसकी तीव्र निन्दा की। उत्तर के पादरियों ने इस पर प्रहार किया। व्यापारियों ने अब तक दक्षिण वालों से मित्रता रखी थी, पर अब उन्होंने भी अचानक मुंह मोड़ लिया। फिर भी, मई के महीने में एक दिन प्रातःकाल उत्साही दक्षिणवासियों की तोपों की गड़गड़ाहट के बीच यह विधेयक सेनेट में पारित हो गया। उस समय एक दास-प्रथा-विरोधी नेता साल्मन पी० चेज़ ने भविष्यवाणी की: वे इस समय जीत मना रहे हैं, परन्तु जो प्रतिध्वनि उन्होंने जगा दी है वह तब तक शान्त नहीं होगी जब तक दास-प्रथा स्वयं न समाप्त हो जाये। बाद में डगलस जब स्वयं अपनी सफ़ाई में बोलने के लिए शिकागो पहुंचा तो वहां बन्दरगाह में जहाजों ने अपने झण्डे नीचे कर लिए, एक घण्टे तक गिरजाघर के घण्टे बजते रहे, और १०,००० की भीड़ ने इतना हो-हल्ला मचाया कि उसकी बात कोई न सुन सका।

डगलस के दुर्भाग्यपूर्ण कानून के तात्कालिक परिणाम महत्वपूर्ण थे। व्हिग दल, जो अब तक दास-प्रथा के विस्तार की समस्या को टालता आ रहा था, पूर्णतया समाप्त हो गया और उनके स्थान पर एक सशक्त नया संगठन रिपब्लिकन दल (गणतान्त्रिक दल) खड़ा हो गया, जिसकी मुख्य मांग यह थी कि सभी प्रदेशों से दास-प्रथा हटा दी जाये। सन् १८५६ ई० में इसने राष्ट्रपति के पद के लिए जॉन फ्रीमॉण्ट को नामांकित किया, जिसकी सुदूर पश्चिम की पांच अन्वेषणयात्राओं ने उसे प्रसिद्ध बना दिया था। यद्यपि यह चुनाव हार गया, परन्तु उत्तर के एक बड़े भाग पर इस नये दल का प्रभाव छा गया। चेज़ और विलियम सीवर्ड जैसे स्वतन्त्र-भूमि के समर्थक नेता पहले की अपेक्षा बहुत प्रभावशाली हो गये। उनके साथ इलिनॉय का एक लम्बा, दुबला वकील अब्राहम लिंकन भी सामने आया।

कैन्सस में दक्षिण के दास रखने वाले तथा उत्तर के दास-प्रथा-विरोधियों के प्रवेश के परिणामस्वरूप सशस्त्र संघर्ष हुआ और शीघ्र ही यह प्रदेश ब्लीडिंग-कैन्सस (रक्तस्रावी कैन्सस) कहलाने लगा। अन्य घटनाओं ने राष्ट्र को संघर्ष के और निकट पहुंचा दिया, विशेषकर सन् १८५७ ई० में सर्वोच्च न्यायलय के ड्रेड स्कॉट सम्बन्धी प्रसिद्ध निर्णय ने।

स्कॉट मिसौरी का एक दास था जिसे लगभग २० वर्ष पूर्व उसका स्वामी इलिनॉय और विसकॉन्सिन प्रदेश में रहने के लिए ले गया था, जहां दास-प्रथा निषिद्ध थी। मिसौरी में लौटने पर वहां के जीवन से असन्तुष्ट होने के कारण स्कॉट ने इस आधार पर स्वतन्त्र किये जाने के लिए मुक़दमा दायर किया कि वह स्वतन्त्र भूमि में रह चुका है। न्यायालय ने, जिसमें दक्षिण का प्राबल्य था, यह निर्णय दिया कि स्वेच्छा से दास-प्रथा-समर्थक राज्य में लौट आने के कारण स्कॉट ने स्वतन्त्र होने का अधिकार खो दिया है, और यह

व्यवस्था भी दी कि इस प्रदेश में दास-प्रथा रोकने का कांग्रेस का प्रत्येक प्रयास अवैध होगा।

ड्रेड स्कॉट के मामले पर निर्णय ने उत्तर में सर्वत्र घोर उत्तेजना फैला दी। न्यायालय की इतनी कड़ी निन्दा पहले कभी नहीं हुई थी। दक्षिण के डेमोक्रैटों (लोकतन्त्रवादियों) के लिए यह निर्णय बहुत बड़ी विजय था, क्योंकि इससे इन प्रदेशों में दास-प्रथा को न्यायोचित ठहराने में उन्हें न्यायालय की स्वीकृति मिल गयी।

लिंकन का दास-प्रथा पर प्रहार

अब्राहम लिंकन चिरकाल से दासता को एक बुराई मानता था। इलिनॉय के पियोरिया नामक स्थान में सन् १८५४ ई० में एक भाषण में उसने घोषणा की थी कि सभी राष्ट्रीय कानून इस सिद्धान्त पर बनने चाहिए कि दास-प्रथा को सीमित और अन्त में समाप्त करना है। उसने यह भी कहा कि सार्वजनिक सम्प्रभुता का सिद्धान्त झूठा है, क्योंकि पश्चिमी प्रदेशों में दास-प्रथा स्थानीय निवासियों का नहीं, बल्कि समस्त संयुक्त राज्य का प्रश्न है। इस भाषण ने उसे फैलते हुए पश्चिम में प्रसिद्ध कर दिया।

सन् १८५८ ई० में लिंकन ने संयुक्त राज्य के सेनेट में इलिनॉय से निर्वाचित होने के लिए स्टीफन ए० डगलस का विरोध किया। १७ जून को अपने चुनाव के प्रथम भाषण के प्रथम पैरा में लिंकन ने आगामी अगले सात वर्ष के अमेरिकी इतिहास का मूल विचार रखा :

"परस्पर कलह-रत घर टिक नहीं सकता। मेरा विश्वास है कि यह सरकार आधी दास और आधी स्वतन्त्र रहकर स्थायी रूप से नहीं चल सकती। मुझे यह विश्वास नहीं है कि संघ छिन्न-भिन्न हो जायेगा——मुझे यह आशा नहीं है कि यह घर ढह जायेगा——परन्तु मुझे यह आशा अवश्य है कि यह विभाजित नहीं रहेगा।"

सन् १८५८ के आगामी महीनों में लिंकन और डगलस के बीच सात विवाद हुए। पांच फुट के गठीले सेनेटर डगलस की, जो 'छोटे दैत्य' के नाम से प्रसिद्ध था, एक वक्ता के रूप में विशेष ख्याति थी। परन्तु उसे अपनी टक्कर का व्यक्ति लिंकन मिला, जिसने सार्वजनिक सम्प्रभुता के विचार को वाग्मितापूर्ण चुनौती दी। अन्त में, यद्यपि डगलस चुनाव में थोड़े मत से जीत गया, परन्तु लिंकन को राष्ट्रीय महत्व प्राप्त हो गया।

प्रादेशिक संघर्ष पुनः तीव्र हो गया। १६ अक्टूबर, १८५६ की रात में एक दास-प्रथा-विरोधी, दुराग्रही जॉन ब्राउन ने, जिसने तीन वर्ष पूर्व कैन्सस में दास-प्रथा पर एक घातक प्रहार किया था, कुछ उग्रवादी दास-प्रथा उन्मूलकों की सहायता से हार्पर्स फ़ेरी के संघीय शस्त्रागार पर अधिकार कर लिया, जो अब पश्चिमी वर्जीनिया में है। जब प्रातःकाल हुआ तो नगर के सशस्त्र नागरिकों ने नागरिक सेना की कुछ टुकड़ियों की सहायता से प्रत्याक्रमण किया और ब्राउन तथा उसके बचे-खुचे साथियों को गिरफ्तार कर लिया।

सारे राष्ट्र में संकट की सूचना फैल गयी। ब्राउन के इस प्रयास ने बहुत-से दक्षिण-

वासियों के गम्भीरतम भय को पक्का कर दिया। दूसरी ओर दास-प्रथा-विरोधी कट्टर-पन्थियों ने ब्राउन का एक महान उद्देश्य के लिए शहीद होने वाले के रूप में अभिवादन किया। अधिकांश उत्तरवासियों ने उसके इस दुस्साहस का विरोध किया क्योंकि उन्होंने देखा कि यह कानून और व्यवस्था पर तथा सामाजिक प्रगति के लोकतन्त्री उपायों पर आघात है। ब्राउन पर षड़यन्त्र, विद्रोह और हत्या का आरोप लगाया गया और २ दिसम्बर सन् १८५९ ई० को उसे फांसी दे दी गयी। अन्त तक वह यही विश्वास करता रहा कि वह केवल ईश्वर का साधन मात्र है।

सन् १८६० ई० में राष्ट्रपति के चुनाव के लिए रिपब्लिकन दल ने अब्राहम लिंकन को अपना प्रत्याशी नामांकित किया। जब नेताओं ने यह घोषित किया कि वे दास-प्रथा को अब प्रसरित नहीं होने देंगे, तब दलबन्दी उग्र हो गई। इस दल ने उद्योग की सुरक्षा के लिए तट-कर लगाने की भी प्रतिज्ञा की और वचन दिया कि जो लोग पश्चिमी प्रदेश को प्रशस्त करने में सहायता देंगे उन्हें बिना मूल्य वास-स्थान दिलाने के लिए कानून बनाया जायेगा। स्टीफन ए० डगलस के नेतृत्व में विरोधी डेमोक्रेटिक दल के आपसी मतभेद ने अनुभवहीन रिपब्लिकन दल को चुनाव जीतने में सहायता की।

यह पहले ही से निश्चित था कि यदि लिंकन जीत गया तो दक्षिणी कैरोलाइना संघ से अलग हो जायगा, क्योंकि यह राज्य बहुत दिनों से ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में था जो दक्षिणी राज्यों को दास-प्रथा विरोधी शक्तियों के विरुद्ध संगठित कर सके। चुनाव के परिणामों का निश्चय होते ही, दक्षिणी कैरोलाइना द्वारा विशेष रूप से बुलाये गये एक सम्मेलन ने घोषणा की कि दक्षिणी कैरोलाइना का अन्य राज्यों के साथ जो संघ संयुक्त राज्य अमेरिका के नाम से विद्यमान है वह आज से भंग किया जाता है। दक्षिण के अन्य राज्यों ने दक्षिणी कैरोलाइना के उदाहरण का अनुकरण किया, और ८ जनवरी सन् १८६१ ई० को उन्होंने 'कनफेडरेट स्टेट्स ऑव अमेरिका' संगठन किया।

गृह-युद्ध का आरम्भ

एक महीने के अन्दर ही, ४ मार्च सन् १८६१ ई० को अब्राहम लिंकन ने संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति पद की शपथ ली। अपने उद्घाटन भाषण में उसने संघ से विच्छेद को अवैध मानकर उसे मान्यता देना अस्वीकार कर दिया। संघ के बन्धनों को फिर से जोड़ने के निवेदन के साथ उसका भाषण समाप्त हुआ। परन्तु दक्षिण ने अपने कान बन्द कर लिए; और १२ अप्रैल को दक्षिणी कैरोलाइना में चार्ल्सटन बन्दरगाह के फोर्ट समटर पर तोपों ने आग उगलना आरम्भ कर दिया। उत्तरवासियों के मन का सारा संकोच मिट गया।

जो सात राज्य अलग हुए, उनमें जनता ने अपने राष्ट्रपति जेफ़र्सन डेविस के अनुरोध के प्रति तुरन्त अपनी प्रतिक्रिया प्रकट की। जो दासता-समर्थक राज्य अभी तक संघ में थे उनकी गतिविधि की दोनों पक्ष बड़ी व्यग्रता से प्रतीक्षा कर रहे थे। वर्जिनिया ने १७ अप्रैल को भाग्य-निर्णायक कदम उठाया, और आर्कन्सस तथा उत्तरी कैरोलाइना

ने शीघ्र उनका अनुगमन किया। कोई भी राज्य संघ से इतनी अनिच्छापूर्वक विलग नहीं हुआ जितना कि वर्जिनिया। उसके राजनीतिज्ञों ने क्रान्ति को सफल बनाने तथा संविधान की रचना करने में प्रमुख भाग लिया था, और उसने राष्ट्र को पांच राष्ट्रपति दिए थे। कर्नल रॉबर्ट ई० ली ने भी वर्जिनिया का साथ दिया और अपने राज्य के प्रति निष्ठा के कारण उसने संघ की सेना का नेतृत्व करने से इन्कार कर दिया। सम्वर्द्धित राज्य संघ (कनफ़ेडरेसी) और स्वतन्त्र-भूमि-पक्षपाती उत्तरी राज्यों के बीच सीमावर्ती राज्य थे, जिन्होंने अप्रत्याशित रूप से अपनी राष्ट्रीय-भावना का परिचय दिया और संघ से अपना सम्बन्ध नहीं तोड़ा।

दोनों वर्गों के लोग शीघ्र विजय की प्रबल आशा लेकर युद्ध में उतरे थे। भौतिक साधनों की दृष्टि से उत्तर निश्चित रूप से आगे था। २ करोड़ २० लाख की जनसंख्या सहित २२ राज्य ९० लाख की कुल जनसंख्या वाले ११ राज्यों के विरुद्ध खड़े थे। उत्तर की औद्योगिक श्रेष्ठता उसकी जनशक्ति के बाहुल्य से भी महत्वपूर्ण थी और इस कारण उसे अस्त्र-शस्त्र और गोला-बारूद, कपड़े तथा अन्य सामान के निर्माण के लिए प्रचुर सुविधाएं थीं। इसी प्रकार उत्तर में रेलों के जाल ने भी संघ की सामरिक सफलता में योग दिया।

पूर्व और पश्चिम में रक्तरंजित युद्ध

युद्ध के आरम्भ में अधिकांश नौ-सेना संघ के अधिकार में थी, परन्तु वह असंगठित और दुर्बल थी। नौ-सेना सचिव गिडियन वेल्ज़ ने इसे सशक्त बनाने के लिए तुरन्त कार्यवाही की। तब लिंकन ने दक्षिण तटों की नाकेबन्दी की घोषणा की। यद्यपि आरम्भ में इसका प्रभाव नगण्य था, परन्तु सन् १८६३ ई० तक यह यूरोप को रुई का निर्यात और दक्षिण के लिए नितान्त आवश्यक युद्ध-सामग्री, कपड़े तथा ओषधि का आयात लगभग पूर्णतया रोकने में सफल हो गयी।

इस बीच, एक प्रतिभाशाली नौ-सेना नायक डेविड फ़ैरागर ने दो उल्लेखनीय सैनिक कार्य कर डाले। वह संघ के एक बेड़े को मिसिसिपी के मुहाने में ले गया और उसने दक्षिण के सब से बड़े नगर को आत्मसमर्पण के लिए विवश कर दिया। दूसरा उसने मोबाइल खाड़ी के दुर्ग-बद्ध द्वार को पार कर एक सशस्त्र राज्यसंघीय जहाज़ को पकड़ लिया और बन्दरगाह को बन्द कर दिया।

मिसिसिपी घाटी में संघीय सेनाओं ने अनेक मोर्चे जीते। उन्होंने टेनेसी में राज्यसंघ की एक लम्बी सैनिक पंक्ति भंग कर अपनी सफलता आरम्भ की, और इस प्रकार उस राज्य के लगभग सभी पश्चिमी भाग पर अधिकार करना सम्भव हो गया। जब मिसिसिपी नदी पर स्थित मेम्फिस के महत्वपूर्ण बन्दरगाह पर अधिकार हो गया, तब संघ की सेना राज्यसंघ के मध्य भाग में ३२० किलोमीटर तक प्रवेश कर सकती थी। दृढ़ संकल्प, जनरल यूलिसीज़ एस० ग्राण्ट के नेतृत्व में संघ की सेना ने शिलो नामक स्थान पर, जो ऐसी चौड़ी चट्टान पर था जहां से टेनेसी नदी दिखाई पड़ती थी, अचानक आक्रमण कर

दिया, और तब तक दृढ़तापूर्वक डटा रहा जब तक नयी कुमुक ने राज्यसंघीय सैनिकों को पीछे ढकेलने में सहायता नहीं की। ग्राण्ट तब धीरे-धीरे, पर दृढ़तापूर्वक दक्षिण की ओर बढ़ने लगा। उसका मुख्य उद्देश्य मिसिसिपी पर नियन्त्रण करना था, जिसकी निचली परिधि को न्यू ऑर्लियन्स पर अधिकार कर फैरागट ने पहले ही राज्यसन्धियों से मुक्त करा दिया था।

कुछ समय तक ग्राण्ट को विक्सबर्ग में रुकना पड़ा, क्योंकि वहां राज्यसंघियों ने इतने ऊंचे टीलों पर किलेबन्दी कर ली थी कि उन पर नौसेना का आक्रमण सम्भव नहीं था। तब वह सन् १८६३ ई० में नीचे की ओर विक्सबर्ग के चारों ओर बढ़ने लगा और छः सप्ताह तक उसने उस स्थान को अपने घेरे में रखा। ४ जुलाई को उसने इस नगर पर तथा पश्चिम में सब से अधिक शक्तिशाली राज्यसन्घीय सेना पर अधिकार कर लिया। नदी अब पूर्णतया संघ के अधिकार में थी। राज्यसंघ दो भागों में विभाजित हो गया और टेक्सास तथा आर्कैन्सस से रसद लाना लगभग असम्भव हो गया।

दूसरी ओर वर्जिनिया में संघ की सेनाएं एक के बाद दूसरी पराजय का सामना कर रही थीं। राज्यसंघ की राजधानी रिचमण्ड पर अधिकार करने के लिए लगातार रक्तरंजित प्रयासों में संघ की सेनाओं को बार-बार विफलता मिली। राज्यसंघियों को दो मुख्य सुविधाएं थीं : वाशिंगटन और रिचमण्ड के बीच की सड़क को काटने वाली अनेक जल-धाराओं से निर्मित सुदृढ़ सुरक्षा-व्यवस्था, और दो जनरल–रॉबर्ट ई० ली और टॉमस जे० (स्टोनवॉल) जैक्सन–जो दोनों ही संघ के आरम्भिक सेनापतियों से कहीं श्रेष्ठ थे। जॉर्ज मैक्लेलन नामक संघ के एक जनरल ने रिचमण्ड पर अधिकार जमाने का जी तोड़ प्रयास किया। परन्तु २५ जून से १ जुलाई, सन् १८६२ ई० के सात दिनों के युद्ध में संघ की सेना निरन्तर पीछे धकेली जा रही थी, और दोनों पक्ष भयंकर हानि उठा रहे थे।

ज्वार का उतार-चढ़ाव

१ जनवरी सन् १८६३ ई० को राष्ट्रपति लिंकन ने एक मुक्ति-घोषणा (इमैन्सिपेशन प्रोक्लेमेशन) जारी की, जिसके अनुसार विद्रोही राज्यों के दासों को मुक्त कर दिया गया और उन्हें उत्तर की सशस्त्र सेना में सम्मिलित होने के लिए आमंत्रित किया गया। इस घोषणा ने इस प्रकार संघ की रक्षा के पूर्व-घोषित उद्देश्य के अतिरिक्त इस युद्ध का उद्देश्य दास-प्रथा का उन्मूलन भी बताया।

पूर्व में उत्तर वालों को विशेष सफलता न मिली। स्थल मार्ग से रिचमण्ड की ओर उनकी प्रगति अभी तक अवरुद्ध थी, और चांसलर्सविल के रक्तरंजित युद्ध में संघ की सेनाओं को गहरी हार खानी पड़ी। परन्तु राज्यसंघियों को यह विजय स्टोनवॉल जैक्सन की मृत्यु के कारण मंहगी पड़ी।

राज्यसंघियों की कोई विजय निर्णायक नहीं थी। संघ सरकार नयी सेना संगठित कर फिर से प्रयत्न करती थी। जुलाई सन् १८६३ ई० से युद्ध ने नया मोड़ लिया। यह

समझ कर कि चान्सलर्सविल में उत्तर की घोर पराजय ने उसे अभिलषित अवसर दिया, ली ने उत्तर की ओर आक्रमण कर पेनसिलवैनिया में प्रवेश किया और वह लगभग इस राज्य की राजधानी तक पहुंच गया। संघ की एक सशक्त सेना ने गेटिसवर्ग में ली की गति अवरुद्ध की और वहां एक त्रिदिवसीय युद्ध में राज्यसंघियों ने संघ की रक्षा-पंक्ति तोड़ने का साहसिक प्रयास किया। परन्तु वे असफल रहे और ली के अनुभवी सैनिक क्षति से पंगु हो पीछे पोटोमैक की ओर लौटे।

उस समय ग्राण्ट की सेना मिसिसिपी नदी पर स्थित विक्सवर्ग पर अधिकार कर रही थी। दक्षिणी तट की नाकेवन्दी लोहे की एक ऐसी दीवार वन चुकी थी जिसे थोड़े ही जहाज़ पार कर पाते थे, और राज्यसंघियों के साधन समाप्त-प्राय थे। दूसरी ओर उत्तर के राज्य पहले से अधिक सम्पन्न दिखाई पड़ते थे, उनकी मिलें और कारख़ाने पूरे वेग से चल रहे थे, उनके खेतों की प्रचुर उपज का यूरोप को निर्यात हो रहा था, और उनकी जनशक्ति आप्रवासियों से पूरी हो रही थी।

सन् १८६४ में रिचमण्ड पर ग्राण्ट की मन्द परन्तु दृढ़ प्रगति ने युद्ध के अन्त का आभास दे दिया। सभी दिशाओं से उत्तरी सेनाओं ने इसे घेर लिया, और १ फरवरी, सन् १८६५ ई० को जनरल शर्मन की पश्चिमी सेना ने जॉर्जिया से उत्तर की ओर प्रयाण प्रारम्भ किया।

१७ फरवरी को राज्यसंघियों ने दक्षिणी कैरोलाइना की राजधानी कोलम्बिया को खाली कर दिया। जव चार्ल्सटन का अन्तर्प्रदेश से रेल-सम्वन्ध विच्छिन्न हो गया तो विना किसी युद्ध के वह संघ की नौसेना के हाथ आ गया। इस वीच पीटर्सवर्ग और रिचमण्ड में राज्यसंघियों की स्थिति अरक्षणीय हो गयी, और २ अप्रैल को ली ने उन्हें खाली कर दिया। एक सप्ताह पश्चात् वर्जिनिया में स्थित ऐपोमैटॉक्स में शत्रु से घिर जाने पर उसके सामने आत्मसमर्पण के अतिरिक्त और कोई चारा न था।

आत्मसमर्पण की शर्तें उदार थीं, और शान्ति-सम्मेलनों से लौटने के पश्चात् ग्राण्ट ने अपने सैनिकों के कोलाहलपूर्ण प्रदर्शन को यह स्मरण दिलाकर शान्त किया कि 'विद्रोही फिर हमारे देशवासी वन गये हैं।' दक्षिण का स्वातन्त्र्य युद्ध, जिसके नायक रॉवर्ट ई० ली ने अपने तेजस्वी नेतृत्व और पराजय में भी महानता के द्वारा सर्वत्र प्रशंसा प्राप्त की, "ध्वस्त-लक्ष्य" हो गया था।

युद्ध ने उत्तर के लिए इससे भी वड़े नेता अब्राहम लिंकन को जन्म दिया, जो संघ को–शक्ति और दवाव से नहीं अपितु प्रेम और उदारता से–पुन: एक कर देने के लिए सव से अधिक सचेष्ट था। यद्यपि उसे युद्ध और शान्ति दोनों में अभूतपूर्व शक्ति का प्रयोग करना पड़ा, परन्तु उसने लोकतान्त्रिक स्वशासन के सिद्धान्तों का कभी अतिक्रमण नहीं किया। सन् १८६४ में वह दूसरे कार्यकाल के लिए राष्ट्रपति चुना गया।

"किसी के प्रति द्वेष नहीं"

लिंकन का दूसरा उद्घाटन भाषण इन शब्दों के साथ समाप्त हुआ : ". . . किसी के प्रति द्वेष न रख कर, सव के प्रति सद्भाव के साथ, ईश्वर ने जिस सत्य को हमें देखने

की शक्ति दी है उस सत्य पर दृढ़ रह कर, हमें उस कार्य को पूरा करने का प्रयास करना चाहिए जो हमने अपने हाथ में लिया है : राष्ट्र के घावों को भरने के लिए; उसका ध्यान रखने के लिए जिसने युद्ध का भार वहन किया होगा, उसकी विधवा और उसके अनाथ बच्चों के लिए. . . . वह सभी कुछ करने के लिए जिससे हमें आपस में और दूसरे राष्ट्रों के साथ न्यायपूर्ण और स्थायी शान्ति प्राप्त हो, यत्नशील होना चाहिए।'' तीन सप्ताह पश्चात्, ली के आत्मसमर्पण के दो दिन बाद, लिंकन ने अपना अन्तिम सार्वजनिक भाषण दिया, जिसमें उसने पुनर्निर्माण की अपनी उदार नीति को स्पष्ट किया।

गुरुवार १३ अप्रैल की रात में ली के आत्मसमर्पण पर उत्सव मनाने के लिए वाशिंगटन दीपमालाओं से सुसज्जित किया गया था और प्रमुदित जनता ने सड़कों पर जुलूस निकाला। दूसरे दिन राष्ट्रपति ने अपने मंत्रि-परिषद् की बैठक की, जो अन्तिम सिद्ध हुई। उसी सन्ध्या को—अपनी पत्नी और अपने एक नव-दम्पति अतिथि के साथ वह फ़ोर्ड थिएटर में एक प्रदर्शन देखने गया। वहां ज्यों हो वह राष्ट्रपति कक्ष में बैठा, जॉन विल्क्स बूथ नामक एक सनकी अभिनेता ने उसकी हत्या कर दी और स्वयं कक्ष से मंच पर कूद कर भाग गया। कुछ दिनों बाद बूथ वर्जिनिया के ग्रामीण क्षेत्र में एक खलिहान में पकड़ा गया।

१५ अप्रैल को प्रातःकाल सड़क की दूसरी ओर फ़ोर्ड के सामने के एक मकान की निचली मंज़िल के एक शयनकक्ष में लिंकन का देहावसान हुआ। कवि जेम्स रसेल लोवेल ने लिखा : ''अप्रैल के उस स्तब्ध करने वाले प्रातःकाल से पूर्व, इतनी बहुसंख्यक जनता ने किसी ऐसे व्यक्ति की मृत्यु पर इतने आंसू नहीं बहाये थे जिसे उसने कभी देखा भी नहीं था; ऐसा लगता था कि उसके साथ ही जनता के जीवन में से एक मित्र का लोप हो गया और वह निर्जीव और अन्धकार-निमग्न हो गयी थी। उस दिन परस्पर अपरिचित लोगों ने एकत्र होकर अपनी सहानुभूतिपूर्ण दृष्टियों के विनिमय द्वारा मृतात्मा के प्रति प्रशंसा के भावों की जैसी मूक अभिव्यक्ति की वैसी किसी ने किसी की मृत्यु के पश्चात् वाणी द्वारा भी न की होगी। मानव-परिवार ने अपना एक प्रिय जन खो दिया था।''

विजयी उत्तर के सामने, जो अब लिंकन के उपराष्ट्रपति ऐण्ड्रू जॉनसन के नेतृत्व में था, पहला कार्य यह था कि जो राज्य अलग हो गये थे उनकी स्थिति निश्चित की जाये।

लिंकन ने इसकी तैयारी पहले ही कर ली थी। उसका विचार था कि दक्षिणी राज्यों की जनता वैधानिक रूप से कभी अलग नहीं हुई थी; उन्हें कुछ देशद्रोही नागरिकों ने बहका कर संघीय सरकार की अवज्ञा के लिए प्रेरित किया था। और चूंकि यह युद्ध कुछ व्यक्तियों का काम था, इसलिए संघीय सरकार को उन व्यक्तियों से निपटना था, राज्यों से नहीं। लिंकन ने सन् १८६३ में ही घोषणा की थी कि यदि किसी राज्य में सन् १८६० की सूची के १० प्रतिशत मतदाता ऐसे राज्य का संगठन करेंगे जो संयुक्त राज्य के संविधान के प्रति निष्ठावान हो और जो कांग्रेस के कानूनों और राष्ट्रपति की घोषणाओं के अनुसार चलना स्वीकार करें, तो वह ऐसी सरकार को राज्य की वैधानिक सरकार मान लेगा।

कांग्रेस ने इस योजना को अस्वीकार कर दिया और बिना उसके सदस्यों की सलाह

आक्षेप यह लगा सकते थे कि 'टेन्योर ऑव ऑफ़िस ऐक्ट' (पद के कार्यकाल-अधिनियम) के बावजूद उसने मंत्रिमण्डल से युद्ध-सचिव को, जो कांग्रेस का दृढ़ समर्थक था, निकाल दिया। जब सेनेट में महाभियोग का मुकदमा चला, तो यह सिद्ध हो गया कि मंत्रिमण्डल के सदस्य को निकालने में राष्ट्रपति अपने अधिकारों की सीमा के अन्तर्गत था, और इससे भी महत्वपूर्ण बात यह हुई कि यह स्पष्ट किया गया कि यदि कांग्रेस ने राष्ट्रपति को इसलिए हटा दिया कि उसका कांग्रेस के बहुमत से मतभेद था तो एक भयंकर परम्परा का सूत्रपात हो जायगा। महाभियोग का प्रयास असफल हुआ, और जॉनसन अपने कार्यकाल के अन्त तक अपने पद पर प्रतिष्ठित रहा।

सन् १८६८ ई० की गर्मियों तक पुनर्निर्माण अधिनियम के अन्तर्गत कांग्रेस ने आर्कैन्सस, उत्तरी कैरोलाइना, दक्षिणी कैरोलाइना, लुइज़ियाना, जॉर्जिया, अलाबामा और फ़्लोरिडा को संघ में फिर से सम्मिलित कर लिया था। इन सात पुनर्निर्मित राज्यों की सरकारें कितनी प्रतिनिधिक थीं, इस बात का निर्णय इस तथ्य से किया जा सकता है कि निर्वाचित गवर्नरों, प्रतिनिधियों और सेनेट-सदस्यों में बहुसंख्या उत्तर के उन लोगों की थी जो युद्ध के पश्चात् अपना राजनीतिक भविष्य बनाने के लिए दक्षिण चले गये थे। लुइज़ियाना, दक्षिणी कैरोलाइना, और मिसिसिपी की विधान-सभाओं में नीग्रो लोगों ने अपना पूर्ण अधिकार स्थापित कर लिया था।

अपनी सभ्यता संकट में देख और घटनाचक्र को रोकने का कोई वैधानिक उपाय न पाकर दक्षिण के गोरे भयभीत होकर अवैधानिक उपायों की ओर मुड़े। शीघ्र ही हिंसा निरन्तर बढ़ती गयी, और बढ़ते हुए उपद्रवों के कारण सन् १८७० ई० में एक 'एनफ़ोर्समेण्ट ऐक्ट' (प्रवर्तन अधिनियम) पारित हुआ, जिसके अनुसार उन लोगों को कठोर दण्ड दिया जा सकता था जो नीग्रो लोगों को उनके नागरिक अधिकारों से वंचित करने का प्रयत्न करते थे।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, यह स्पष्टतर होता गया कि दक्षिण की समस्याओं का समाधान कठोर कानूनों और पहले के राज्यसंघियों के प्रति अविरल विद्वेष की भावना से नहीं किया जा रहा था। मई, सन् १८७२ ई० में कांग्रेस ने एक व्यापक 'एम्नेस्टी ऐक्ट' (सार्वजनिक क्षमा-अधिनियम) पारित कर राज्यसंघियों से सहानुभूति रखने वाले लगभग ५०० व्यक्तियों को छोड़कर शेष सभी को उनके पूरे राजनीतिक अधिकार वापस कर दिये।

दक्षिण के राज्यों ने धीरे-धीरे डेमोक्रैटिक दल के सदस्यों को सरकारी पदों के लिए निर्वाचित करना आरम्भ किया। सन् १८७६ तक गणतन्त्री दल केवल तीन दक्षिणी राज्यों में पदासीन रह गया। उस वर्ष के चुनाव ने, जो अमेरिका के इतिहास के गम्भीर प्रतिद्वन्द्विता वाले चुनावों में से एक था, यह स्पष्ट कर दिया कि जब तक उत्तरी सेनाएं नहीं हटायी जायेंगी, दक्षिण को शान्ति नहीं मिलेगी। अगले वर्ष राष्ट्रपति रदरफ़ोर्ड बी० हेज़ ने उन्हें हटा लिया और इस प्रकार उग्र पुनर्निर्माण-नीति की असफलता को स्वीकार कर लिया।

दक्षिण पर उत्तर का शासन समाप्त हो गया। परन्तु अब दक्षिण केवल युद्ध

से विध्वंस-क्षेत्र ही नहीं था, वरन् कुशासन के कारण ऋण से दबा हुआ और एक दशक के जातीय युद्ध से उत्साहभ्रष्ट हो चुका था। सन् १८६५ से १८७७ ई० तक के १२ वर्षो के 'मिथ्या' पुनर्निर्माण के पश्चात् दक्षिण को पुनर्निर्मित करने के वास्तविक प्रयत्न आरम्भ हुए।

साधनों, परिवहन, तथा इस्पात बनाने वाले औद्योगिक यन्त्रोपकरणों पर उसे कभी एकाधिकार न मिल सका। १८९० ई० के दशक में नयी कम्पनियों ने उसकी प्रभुता को चुनौती दी, और प्रतिस्पर्धा से संतप्त हो पहले कारनेगी ने और भी अधिक शक्तिशाली व्यवसाय-संगठन बनाने की धमकी दी। परन्तु अब एक क्लांत, वृद्ध व्यक्ति होने के कारण वह अपनी सम्पत्ति को एक ऐसे संगठन में मिला देने के लिए तैयार कर लिया गया जो अन्ततः राष्ट्र के अधिकांश लोहे और इस्पात के प्रमुख कारखानों को अपने अन्दर समेट लेने वाला था।

सन् १९०१ में इस विलयन के परिणामस्वरूप जिस यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन का ज़न्म हुआ वह उस प्रक्रिया का एक उदाहरण है जो तीस वर्ष से चल रही थी। यह प्रक्रिया थी स्वतन्त्र औद्योगिक उद्यमों का संघीय अथवा केन्द्रीय कम्पनियों में संयोजन। यह प्रवृत्ति गृह-युद्धकाल में आरम्भ हुई थी और सन् १८७० ई० के पश्चात् वह बलवती होने लगी। जब व्यवसायियों ने यह अनुभव किया कि यदि वे प्रतिस्पर्धी कम्पनियों को एक संगठन में ला सकें तो वे उत्पादन और व्यापार, दोनों को नियन्त्रित कर सकते हैं, तो इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए निगम (कारपोरेशन) और 'ट्रस्ट' अथवा न्यास विकसित किये गये।

पूंजी का अतुल भण्डार लभ्य बनाकर तथा व्यावसायिक उद्योगों को स्थायी जीवन और सतत नियन्त्रण प्रदान कर कार्पोरेशन ने पूंजी लगाने वालों को आशान्वित लाभ, और व्यापार की असफलता में सीमित दायित्व--इन दोनों से अपनी ओर आकर्षित किया। ट्रस्ट, व्यवहार में कार्पोरेशनों के संगठन थे, जिनमें प्रत्येक कार्पोरेशन के अंशधारी अपने अंश ट्रस्टियों को सौंप देते थे जो सब के व्यापार का प्रबन्ध करते थे, बड़े-बड़े संगठन संम्भव बनाते थे, नियन्त्रण और शासन का केन्द्रीकरण करते थे और एकस्वों को एकत्र करते थे। उनमें अपनी विशाल पूंजी के कारण विस्तार की, विदेशी व्यापारी संगठनों से प्रतिस्पर्द्धा करने की, और श्रमिकों के साथ जो प्रभावकारी ढंग से संगठित होने लगे थे, मोल भाव करने की सामर्थ्य अधिक रहती थी। ये ट्रस्ट रेलों से भी रियायती शर्तें प्राप्त कर लेते थे और राजनीति पर भी अपना प्रभाव डालते थे।

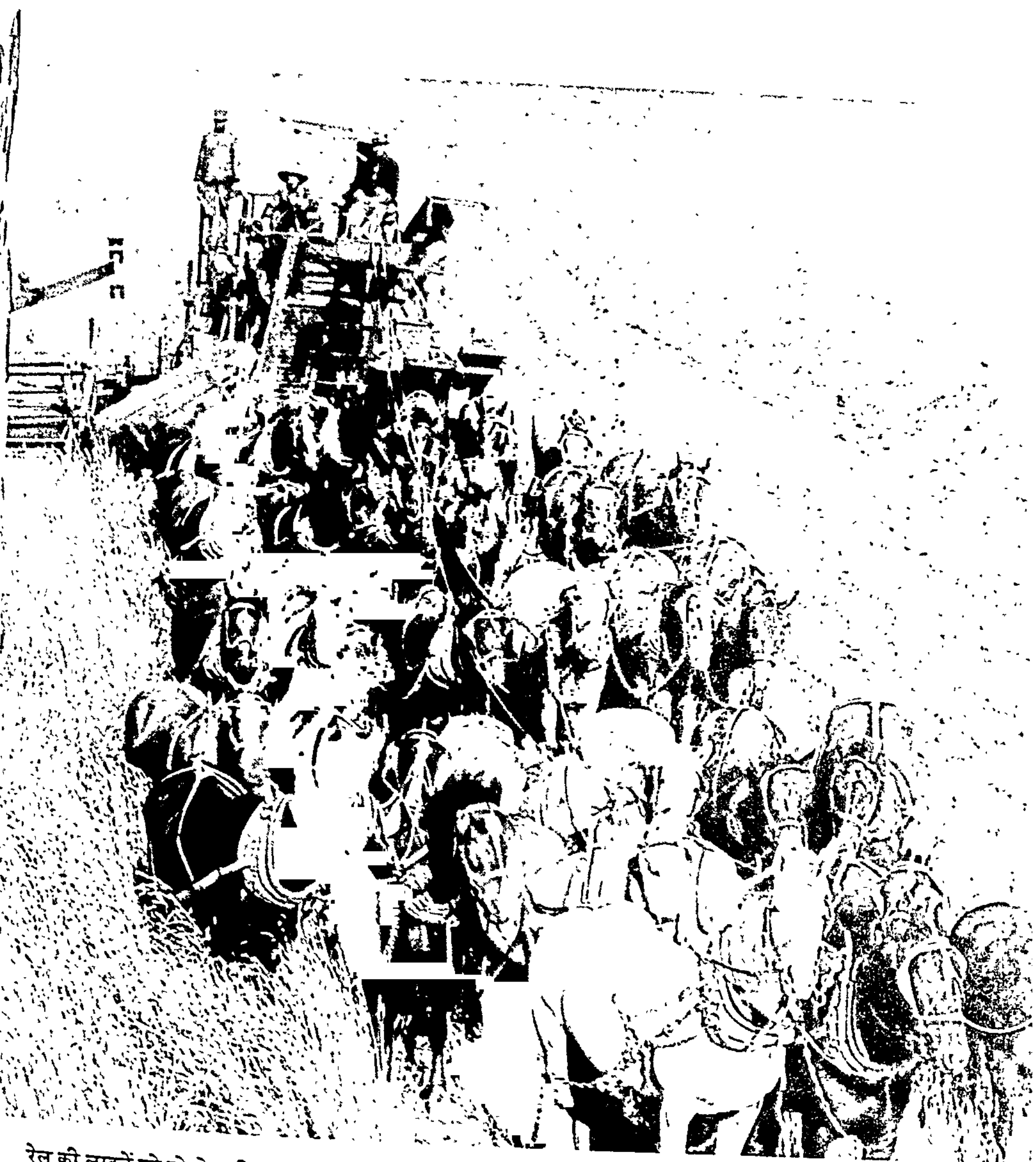
स्टैण्डर्ड आयल कम्पनी सब से आरम्भिक और शक्तिशाली कार्पोरेशनों में से एक थी। इसके पश्चात् तीव्र गति से बिनौले के तेल, सीसा, चीनी, तम्बाकू और रबर के उद्योगों के संगठन बने। शीघ्र ही उद्यमी व्यापारी औद्योगिक क्षेत्रों में अपने साम्राज्य स्थापित करने लगे। डिब्बों में मांस भरने वाले चार बड़े व्यापारियों ने--जिनमें फ़िलिप आर्मर और गुस्टेवस स्विफ्ट प्रमुख थे--एक बीफ़-ट्रस्ट (गोमांस-ट्रस्ट) बनाया। मैकार्मिक्स ने रीपर (फसल काटने वाले यन्त्र) के व्यापार में प्रमुखता प्राप्त की। सन् १९०४ ई० के एक सर्वेक्षण से यह स्पष्ट हो गया कि पहले की पांच हज़ार से अधिक स्वतन्त्र कम्पनियां लगभग ३०० औद्योगिक ट्रस्टों में संगठित हो चुकी थी।

अन्य व्यवसायों में भी--विशेषकर संचार और परिवहन में--समामेलन की यह प्रवृत्ति स्पष्ट होने लगी थी। बड़े संचार संगठनों में सब से प्रारम्भिक 'वेस्टर्न यूनियन' था, तत्पश्चात् 'बेल टेलीफ़ोन सिस्टम' स्थापित हुआ और अन्त में 'अमेरिकन टेलीफ़ोन ऐण्ड



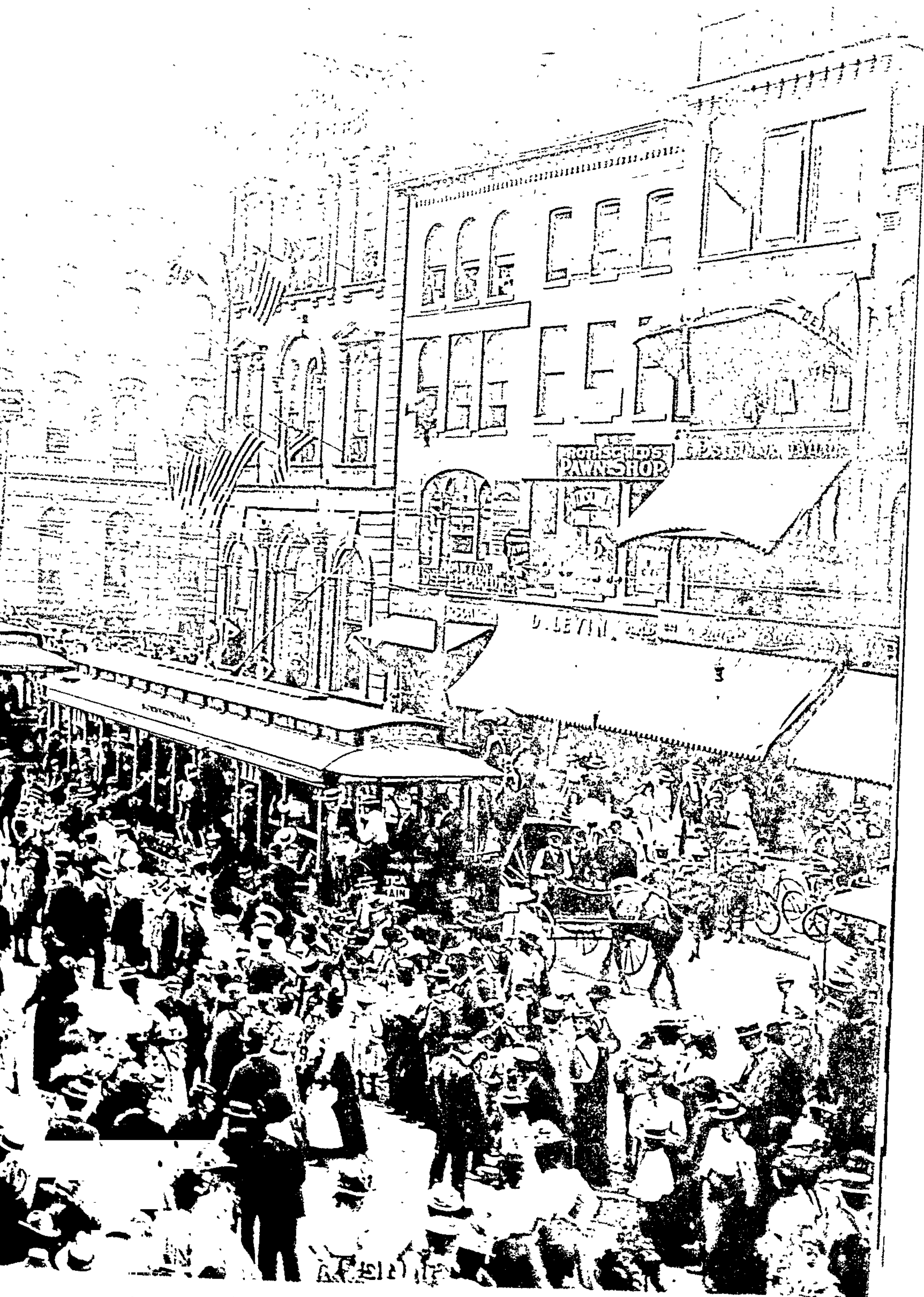
राजधानी में गृह-युद्ध की समाप्ति पर संघीय सेना की पेनसिलवैनिया एवेन्यू में परेड

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में जब देश के लोग विशाल नगर बसाने, मैदानों में खेती करने तथा पहाड़ों को खोदने के लिए अधिकाधिक संख्या में पश्चिम की ओर अग्रसर हो रहे थे, उस समय जिसे अन्य लोग लिखते उसे दृश्य-बद्ध कर कैमरा ने इतिहास लिखना आरम्भ कर दिया था।



रेल की लाइनें जो प्रोमोण्टरी प्वाइंट पर जाकर मिलीं (बायें नीचे) उन्होंने १८६९ में समुद्र तटों को मिला दिया। गाड़ियों की इस शृंखला में चलने वालों के समान ही महत्वपूर्ण, आवास भूमि ढूंढने वाले शिकारी थे, जिन्होंने सन् १८७२ ई० में कैन्सस से नगरों का सम्बन्ध जोड़ा। शीघ्र ही पश्चिम के समृद्ध कृषि-क्षेत्रों को अपनी विशाल फ़सल काटने के लिए ऊपर जैसे कम्बाइन (फ़सल काटने और कूटने की मशीन) की भांति यान्त्रिक दैत्यों की आवश्यकता पड़ी।

हेनरी फ़ोर्ड ने १६०८ में अपनी कार प्रस्तुत की। यह खिलौना नहीं थी, वल्कि काम करने वालों की सेवक वन गयी। १६१३ में फ़ोर्ड ने पुर्जों को जोड़ने वाली गतिशील शृंखलाएं (लाइनें) स्थापित कीं (ऊपर, नीचे), जो २४ घण्टे का काम ६३ मिनट में पूरा करने लगीं। अधिक संख्या में उत्पादन की व्यवस्था ने लागत कम कर दी और मूल्य घटा दिये।



१९०६ में छुट्टी के दिन [illegible] में [illegible] और [illegible] ।

जव १९वी शती २०वी शती में विलीन हो रही थी, अमेरिका आविष्कारों के ज्वार में वह रहा था। १८९० के दशक में टामस एडिसन ने चल-चित्र कैमरा और प्रोजेक्टर विकसित किया (ऊपर); १९०३ में विल्वर और ऑरविल राइट उडे, केवल ५९ सेकण्ड तक, परन्तु यह उडान थी।



सम्भवत: किसी आविष्कार ने इतने लोगों पर प्रभाव नहीं डाला जितना पर [illegible] के [illegible] ने। १८७६ में [illegible] के प्रयोग करने वालों [illegible] १८७७ ई० में १० [illegible] थी।



१९०७ में उन आप्रवासियों की संख्या, जो न्यूयार्क से होकर आये, १३ लाख तक पहुंच गयी थी। बहुत-से लोग अच्छे खेत ढूंढते आये थे; और, दूसरे, जिनमें सम्भवतः यह युवा परिवार भी सम्मिलित था, पूर्व के औद्योगिक केन्द्रों में बस गये।

टेलीग्राफ कम्पनी' बनी। कॉर्नेलियस वैंडरबिल्ट ने यह समझ लिया था कि रेलगाड़ियों के कुशल संचालन के लिए उनके एकीकरण की आवश्यकता है, इसलिए उसने सन् १८६० के दशक में १३ विभिन्न रेल-पथों को एक सूत्र में संगठित कर एक-दूसरे से लगभग ३८० किलोमीटर की दूरी पर स्थित न्यूयॉर्क नगर और बफेलो को जोड़ दिया। दूसरे दशक में उसने शिकागो और डिट्रॉयट जाने वाले रेल-पथों पर अधिकार किया और 'न्यूयॉर्क सेण्ट्रल सिस्टम' की स्थापना की। अन्य संगठन भी बन रहे थे और शीघ्र ही राष्ट्र के बड़े-बड़े रेल-पथ मुख्य रेल-मार्गों और प्रणालियों में संगठित हो गये जिनका संचालन मुट्ठीभर व्यक्ति कर रहे थे।

नगरों और समस्याओं में वृद्धि

इस नयी औद्योगिक व्यवस्था का स्नायु-केन्द्र नगर था, जहां—अगाध पूंजी, व्यापारिक और आर्थिक संस्थाएं, फैलते हुए रेलवे-यार्ड, धूमाच्छादित कारखाने, और श्रमिकों तथा क्लर्कों की अपार भीड़—ये सभी गतिशील आर्थिक शक्तियां केन्द्रित होती थीं। देहातों से और समुद्र-पार से लोगों को आकर्षित कर गांव, कस्बे और कस्बे शहर बन जाते थे। सन् १८३० ई० में प्रति १५ में केवल एक व्यक्ति ८००० के या इससे बड़े जन-समुदाय में रहता था, सन् १८६० ई० में यह अनुपात लगभग प्रति ६ में से एक का हो गया, और सन् १८९० में प्रति १० में ३ का। सन् १८६० ई० में किसी भी एक नगर में १० लाख निवासी नहीं थे, परन्तु ३० वर्ष पश्चात् न्यूयॉर्क में १५ लाख और शिकागो तथा फ़िलाडेल्फिया, प्रत्येक में १० लाख से अधिक निवासी थे। इन तीन दशकों में फ़िलाडेल्फ़िया और बाल्टीमोर की जनसंख्या दूनी हो गयी, कैन्सस सिटी और डिट्रॉयट की चौगुनी, क्लीवलैण्ड की छः गुनी, और शिकागो की दस गुनी हो गयी थी। मिनियापोलिस, ओमाहा, और इन जैसी अनेक बस्तियों की, जो गृह-युद्ध के आरम्भ में गांव थीं, जनसंख्या पचास गुनी अथवा उससे भी अधिक बढ़ गयी।

लोकतांत्रिक (डेमोक्रैटिक) दल का सदस्य ग्रोवर क्लीवलैण्ड, जो सन् १८८४ ई० में राष्ट्रपति निर्वाचित हुआ, उन शक्तियों को भली भांति समझता था जो देश में परिवर्तन ला रही थीं, और उनको नियन्त्रित करने के लिए उसने कुछ प्रयास भी किये। रेलवे मार्गों में कई दोषों के निवारण की आवश्यकता थी। बड़ी मात्रा में माल भेजने वाले पोत-वणिकों को महसूल का कुछ अंश काटकर सस्ते दर की सुविधा देना, थोड़ी मात्रा में माल भेजने वाले पोत-वणिकों के हित के विरुद्ध थी। इसके अतिरिक्त कुछ रेल-मार्ग कुछ निश्चित स्थानों के बीच दूरी का विचार किये बिना, कुछ पोत-वणिकों से दूसरों की अपेक्षा मनमानी ऊंची दरें वसूल करते थे।

साथ ही, जिन नगरों के बीच कई रेलें चलती थीं वहां प्रतिस्पर्धा के कारण भाड़े की दरें कम थीं, परन्तु जहां एक ही रेल-पथ था, वहां दरें बहुत अधिक थीं। इस प्रकार शिकागो से कुछ सौ किलोमीटर की दूरी पर स्थित स्थानों के लिए सामान भेजने में जितना खर्च होता था, उससे १२८० किलोमीटर दूर न्यूयॉर्क के लिए सामान कम खर्च में जाता था।

और संगठित होकर प्रतिस्पर्धा बचाने के लिए प्रतिद्वन्द्वी कम्पनियां पूर्व निश्चित योजना के अनुसार माल ढोने का काम आपस में बांट लेती थीं और पूरी आय वितरण के लिए एक सार्वजनिक कोष में एकत्र होती थी। इसे 'पूलिंग' कहा जाता है।

इस प्रकार के आचरण के विरुद्ध सार्वजनिक असन्तोष ने राज्यों को इनके नियन्त्रण के लिए प्रेरित किया। इसका कुछ लाभदायक प्रभाव पड़ा, परन्तु समस्या राष्ट्रव्यापी थी और इस सम्बन्ध में कांग्रेस की कार्यवाही आवश्यक थी।

सन् १८८७ ई० में राष्ट्रपति क्लीवलैण्ड ने 'इण्टर स्टेट कॉमर्स ऐक्ट' (अंतर्राज्य वाणिज्य अधिनियम) पर हस्ताक्षर किया। इस नियम ने अत्यधिक ऊंची दरें, व्यवसाय एकीकरण, दरों में छूट तथा भेद-भाव को रोक दिया। और अधिनियम का उल्लंघन रोकने तथा रेल-मार्गों की दरों और उनकी रीति-नीति को नियन्त्रित करने के लिए 'अन्तर्राज्य व्यापार आयोग' की स्थापना की।

क्लीवलैण्ड ऊंचे कराधान के विरुद्ध भी क्रियारत था, जो युद्धकाल में तात्कालिक आवश्यकता की पूर्ति के लिए आरम्भ किया गया था। क्लीवलैण्ड ने जीवन-निर्वाह के व्यय में अत्यधिक वृद्धि तथा ट्रस्टों के तीव्र विकास के लिए इसे विशेष रूप से उत्तरदायी समझा। कई वर्षों पश्चात्, जिस बीच शुल्क का प्रश्न राजनीतिक प्रश्न नहीं बना था, सन् १८८० ई० में लोकतान्त्रिक दल वालों ने 'शुल्क केवल राजस्व के लिए' की मांग की, और शीघ्र ही सुधार के लिए पुकार मच गयी। सन् १८८७ ई० में अपने वार्षिक सन्देश में क्लीवलैंड ने, इस विस्फोटकारी विषय को न छेड़ने की चेतावनियां पाने पर भी, अमेरिकी उद्योग की विदेशी प्रतिस्पर्धा से रक्षा करने के सिद्धान्त को चरम सीमा तक ले जाने की प्रवृत्ति की भर्त्सना कर राष्ट्र को चकित कर दिया।

राष्ट्रपति के आगामी निर्वाचन-अभियान में शुल्क ही मुख्य प्रश्न बन गया और संरक्षण की नीति का समर्थन करने वाला गणतान्त्रिक (रिपब्लिकन) दल का प्रत्याशी बेंजामिन हैरिसन विजयी हुआ। हैरिसन के प्रशासन ने निर्वाचन-अभियान के समय किये गये वादों को पूरा करने के लिए सन् १८९० ई० में 'मैकिनले टैरिफ़ बिल' (मैकिनले शुल्क विधेयक) पारित किया, जो केवल सुदृढ़ उद्योगों की रक्षा के लिए ही नहीं बल्कि आरम्भिक उद्योगों की सहायता और संरक्षणकारी कर द्वारा नये उद्योगों की स्थापना के लिए बनाया गया था। नये शुल्क की ऊंची दरों का परिणाम शीघ्र ही फुटकर बाजार में ऊंचे दामों से स्पष्ट हो गया और थोड़े ही समय में चारों ओर असंतोष फैल गया।

इस काल में ट्रस्टों के प्रति जनता में विरोध की भावना बढ़ गयी, और बड़े-बड़े कार्पोरेशन, जिनकी कटु आलोचना १८८० ई० के दशक में हेनरी जॉर्ज और एडवर्ड बेलामी कर रहे थे, प्रचंड विवादास्पद राजनीतिक विषय बन गये। एकाधिकारों को समाप्त करने के लिए सन् १८९० ई० में जो 'शर्मन ऐण्टीट्रस्ट ऐक्ट' पारित हुआ उसने अन्तर्राज्य व्यापार पर प्रतिबन्ध लगाने वाले सभी संघटनों का निषेध कर दिया और नियमोल्लंघन करने वालों के लिए कठोर दंड की व्यवस्था करके इसे लागू करने के विभिन्न ढंग निकाले। इसका स्वरूप अस्पष्ट होने के कारण पारित होने के पश्चात् भी इस कानून से कोई विशेष लाभ नहीं हुआ। परन्तु एक दशक पश्चात् थियोडोर रूज़वेल्ट के

शासन में इसके प्रभावोत्पादक रूप से कार्यान्वित करने के परिणामस्वरूप राष्ट्रपति को 'ट्रस्ट बस्टर' (ट्रस्ट तोड़ने वाला) का उपनाम मिला।

इन महत्वपूर्ण प्रवृत्तियों के बावजूद इस काल का राजनीतिक चित्र प्रधानतया नकारात्मक है। एक प्रतिष्ठित इतिहासकार ने लिखा है : "सन् १८६५ और १८९७ ई० के बीच संघीय विधि-ग्रन्थों में दो या तीन से अधिक ऐसे अधिनियम नहीं लिखे गये जो ऐसे नागरिकों को अपनी ओर देर तक आकृष्ट रख सकें जिनकी राजनीतिक शक्तियों की केवल उन अभिव्यक्तियों में रुचि है जो मानवीय सम्बन्धों में आवश्यक पुन: समंजन करते हैं।" लोगों की शक्ति दूसरी ओर लगी हुई थी जो पश्चिम के इतिहास में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। सन् १८६५ ई० में सीमान्त-प्रदेशीय रेखा साधारणतया मिसिसिपी नदी के तटवर्ती राज्यों की पश्चिमी सीमा के साथ-साथ चलती थी, और बाहर निकल कर कैन्सस और नेब्रास्का के पूर्वी भाग को भी अपने में समेट लेती थी। पहले के स्थापित बागानों की इस पतली सीमा रेखा के पीछे अब भी बहुत-सी अनधिकृत भूमि पड़ी हुई थी और उसके परे घास के असीम मैदान पड़े थे, जो रॉकी पर्वत श्रेणियों के पादान्त तक फैले सेजब्रश (भूरी हरी पत्तियों वाले पौधे जो अमेरिका के बंजर में उगते हैं) के मैदानों में लीन हो जाते थे। तत्पश्चात् लगभग १६०० किलोमीटर तक पर्वत श्रेणियों का विशाल विस्तार था, जिनमें से बहुतों में चांदी, सोना तथा अन्य धातुओं का समृद्ध भंडार था। दूसरी और अछूते मैदान और रेगिस्तान तटवर्ती जंगली पहाड़ियों और प्रशान्त महासागर तक फैले हुए थे। कैलिफ़ोर्निया के बसे हुए जिलों और बिखरी चौकियों के अतिरिक्त सारे अन्तर्प्रदेश में रेड-इण्डियन रहते थे।

पश्चिम में लभ्य सुयोग

केवल २५ वर्षो में ही लगभग सारा देश राज्यों और प्रदेशों में बंट गया। सन् १८६२ के 'होमस्टेड ऐक्ट' द्वारा जो नागरिक भूमि पर अधिकार कर उसे विकसित करते थे उन्हें ६४ हेक्टेयर का खेत मुफ्त दिया जाता था। फलस्वरूप बस्तियां शीघ्रता से बढ़ने लगीं। सन् १८८० ई० तक इस अधिनियम से लगभग २,२४,००,००० हेक्टेयर भूमि नागरिकों की निजी सम्पति बन चुकी थी। रेड-इण्डियनों के साथ उनका संघर्ष समाप्त हो चुका था। खनिक सारे पहाड़ी क्षेत्रों में भूमि में सुरंग लगाते हुए फैल गये थे और नेवादा, मोण्टाना और कोलोराडो में उन्होंने छोटी-छोटी बस्तियां बसा ली थीं। विस्तृत चरागाहों से लाभ उठाकर पशु-पालकों ने टेक्सास से लेकर मिसौरी नदी के ऊपरी भाग तक फैले क्षेत्र पर अपना अधिकार जमाना आरम्भ कर दिया था। भेड़ पालने वाले भी घाटियों और पहाड़ों की ढलानों तक पहुंच गये थे। किसान मैदानों और घाटियों में उमड़ पड़े और पूर्व तथा पश्चिम के बीच की दूरी को उन्होंने समाप्त कर दिया। सन् १८९० ई० तक सीमान्त प्रदेश समाप्त हो चुका था। जहां केवल दो दशक पूर्व भैंसे घूमा करते थे वहां अब ५० से ६० लाख तक नर-नारी खेती करते थे।

इन बस्तियों की स्थापना की गति को रेल-मार्ग ने तेज़ कर दिया था। सन् १८६२

ई० में कांग्रेस ने 'यूनियन पैसिफिक रेलरोड' को एक अधिकार-पत्र दिया, जिसने आयोवा में स्थित 'काउन्सिल ब्लफ्स' से पश्चिम की ओर अपना प्रसार किया। इसी समय सेण्ट्रल पैसिफिक रेलवे कैलिफोर्निया में स्थित सैक्रामेण्टो से पूर्व की ओर रेल-मार्ग बनाने लगी। जैसे जैसे यह दोनों रेल-मार्ग एक दूसरे के निकट पहुंचने लगे और अन्त में १० मई १८६९ ई० को यूटा में प्रोमोण्टरी प्वाइंट में आकर मिले, सारे देश में हलचल मच गयी। अब तक दो महासागरों को अलग किए हुए महीनों की जो परिश्रमपूर्ण यात्रा थी उसके लिए अब इस समय का एक अंशमात्र चाहिए था। महाद्वीपी रेल का जाल धीरे-धीरे बढ़ने लगा, और १८८४ ई० तक मध्यवर्ती मिसिसिपी घाटी को प्रशान्त महासागर से चार बड़े रेल-मार्गों ने मिला दिया।

सुदूर पश्चिम की ओर जनसंख्या का प्रथम बड़ा प्रवाह पहाड़ी प्रदेशों की ओर बढ़ा, जहां सन् १८४८ में कैलिफोर्निया में, १० वर्ष पश्चात् कोलोराडो और नेवादा में, १८६० ई० के दशक में मोण्टाना और वायोमिंग में, और १८७० ई० के दशक में डकोटा क्षेत्र के 'ब्लैकहिल्स' में सोना पाया गया। खनिकों ने ही इस प्रदेश को खोला, बस्तियां बसायीं, और अधिक स्थायी बस्तियों की नींव डाली। फिर भी, पहाड़ों में खुदाई करते समय ही कुछ उपनिवेशियों ने इस क्षेत्र की खेती तथा पशु-पालन की सम्भावनाओं को समझ लिया था। अन्ततः यद्यपि कुछ लोगों ने अपना पूरा ध्यान उत्खनन-कार्य में ही ही लगाया, पर मोण्टाना, कोलोराडो, वायोमिंग, इडाहो, और कैलिफोर्निया का वास्तविक धन वहां की घास और मिट्टी में ही निकला।

टेक्सास में बहुत दिनों से चले आ रहे पशु-पालन का महत्वपूर्ण उद्योग तब और बढ़ा जब युद्ध के पश्चात् साहसी लोग टेक्सास के बड़े लम्बे सींग वाले जानवरों को उत्तर में निर्मुक्त सार्वजनिक क्षेत्र के पार ले जाने लगे। ये पशु रास्ते में चरते हुए जब कैन्सस के रेलवे-स्टेशनों पर पहुंचे तो यात्रारम्भ के समय की अपेक्षा अधिक मोटे और बड़े हो गये थे। शीघ्र ही यह लम्बा हंकावा एक नियमित घटना बन गया, और सैकड़ों किलोमीटर तक उत्तर की ओर जाने वाले मार्गों पर पशुओं के झुण्ड के झुण्ड ही दिखाई पड़ने लगे। पशु-पालन मिसौरी-पार के प्रदेशों में फैल गया और कोलोराडो, वायोमिंग, कैन्सस, नेब्रास्का और डकोटा क्षेत्र में बड़ी-बड़ी पशुशालाएं स्थापित हो गयीं। पश्चिम के नगर पशु-वध करने और मांस तैयार करने के केन्द्रों के रूप में विकसित होने लगे।

पशु-पालन ने रहन-सहन की एक मनोरंजक व्यवस्था का प्रारम्भ किया, जिसका केन्द्र चित्रोपम अश्वारोही गोपालक (काउ ब्वाय) था। संयुक्त राज्य के पचीसवें राष्ट्रपति थियोडोर रूज़वेल्ट ने अपने डकोटा के अनुभवों के संस्मरण में लिखा है "हम घोड़े और बन्दूक साथ लेकर उन्मुक्त, परन्तु कठोर जीवन व्यतीत करते थे। मध्य ग्रीष्म ऋतु में जब विस्तृत मैदान गर्मी में झिलमिलाते और डगमगाते थे, हम जलती हुई धूप में काम करते थे, और जो घुड़सवार रात में पशुओं की रखवाली करता था उसे जाड़ों की शरीर जमा देने वाली जिस सर्दी का सामना करना पड़ता था उसे भी हम जानते थे—परन्तु हम इस कठोर जीवन की धड़कन का अपनी धमनियों में अनुभव करते थे और परिश्रम की महानता तथा जीवन में आनन्द की हमें अनुभूति होती थी।"

सन् १८६६ ई० से १८८८ ई० तक कुल मिलाकर लगभग ६० लाख पशु टेक्सास से सर्दी बिताने के लिए कोलोराडो, वायोमिंग, और मोण्टाना के ऊंचे मैदानों में भेजे गये। सन् १८८५ ई० तक पशु-पालन अपनी चरम सीमा तक पहुंच गया था, और यह क्षेत्र चरागाहों से इस प्रकार भर गया था कि पशुओं का लम्बा हांका सम्भव नहीं था, और साथ ही रेलों का जाल भी बिछ गया था। पशु-पालकों के कुछ ही पीछे किसानों की गाड़ियां चूं-चूं करती हुई उनकी स्त्रियों और बच्चों, घोड़ों, गायों, और सुअरों के दल को लेकर आ रही थीं। 'होमस्टेड ऐक्ट' के अनुसार उन्होंने भूमि पर अपना हिस्सा मांगा और उसे कांटेदार तारों से घेर लिया। जिस भूमि पर पशु-पालक विना कानूनी अधिकार के घूम रहे थे वहां से उन्हें हटा दिया गया। शीघ्र ही रोमानी 'जंगली पश्चिम' समाप्त हो गया।

किसानों के सहायतार्थ यन्त्र तथा विज्ञान

उद्योग में महान उन्नति होते हुए भी देश का मुख्य व्यवसाय कृषि ही था। जिस प्रकार युद्ध के पश्चात् औद्योगिक निर्माण में क्रान्ति हुई, उसी प्रकार कृषि की क्रान्ति में हाथ के परिश्रम का स्थान 'मशीन से खेती' ने ले लिया और साधारण निर्वाह-योग्य खेती व्यापारिक खेती में परिवर्तित हो गयी। सन् १८६० और १९१० ई० के बीच संयुक्त राज्य में खेतों की संख्या तीन गुनी बढ़कर २० लाख से ६० लाख हो गयी और खेती का क्षेत्रफल १६ करोड़ हेक्टेयर से बढ़कर ३५ करोड़ २० लाख हेक्टेयर अर्थात् दूने से भी अधिक हो गया।

सन् १८६० और १८९० के बीच गेहूं, मक्का और कपास जैसी मुख्य वस्तुओं का उत्पादन, संयुक्त राज्य के पहले के उत्पादन के सभी आंकड़ों से अधिक हो गया था। इस काल में राष्ट्र की जनसंख्या दूनी से भी अधिक हो गयी। अधिकतर वृद्धि नगरों में हुई। पर अमेरिकी किसान पर्याप्त गेहूं और कपास उपजाते रहे, उन्होंने पर्याप्त गोमांस और सुअर का मांस और ऊन का उत्पादन किया, जो केवल अमेरिकी श्रमिकों और उनके परिवारों के लिए पर्याप्त ही नहीं था, बल्कि यह वृद्धि लगातार हो रही थी।

इस असाधारण सफलता के कई कारण थे। एक था पश्चिम की ओर प्रसार और दूसरा खेती में मशीन का प्रयोग। सन् १८०० ई० का किसान हंसिया का प्रयोग कर १/५ हेक्टेयर गेहूं एक दिन में काटने की आशा कर सकता था। तीस वर्ष पश्चात् क्रैडिल (यान्त्रिक हंसिया) से वह ८/१० हेक्टेयर एक दिन में काट सकता था। सन् १८४० ई० में अपने एक विचित्र यन्त्र से, जिसे वह पिछले दस वर्षो से विकसित कर रहा था, एक दिन में दो से ढाई हेक्टेयर तक काट कर साइरस मैक्कार्मिक ने एक चमत्कार कर दिखाया। इस यन्त्र की मांग का अनुमान कर वह घास के विस्तृत मैदान में नवोदित शिकागो नगर की ओर पश्चिम में बढ़ा जहां उसने रीपर बनाने का एक कारखाना खोला, और सन् १८६० तक वह ढाई लाख रीपर बेच चुका था।

खेती के अन्य यन्त्र भी जल्दी-जल्दी विकसित होने लगे, अपने-आप तार से गट्ठर

बांधने की मशीन, दांवने की मशीन तथा काटने और दांवने की संयुक्त मशीनें भी बनीं। अनाज बोने, काटने, दाने को भूसे से अलग करने, छिलका उतारने की मशीनों के साथ-साथ मलाई निकालने, खाद फैलाने, आलू बोने, घास सुखाने, अण्डे सेने वाले अन्य सैकड़ों यन्त्रों के आविष्कार हुए।

कृषि की क्रान्ति में विज्ञान का महत्व मशीनों से किंचित् भी कम नहीं था। सन् १८६२ ई० में मोरिल लैण्ड-ग्राण्ट कॉलेज ऐक्ट (मोरिल महाविद्यालय-भूमि-अनुदान अधिनियम) ने प्रत्येक राज्य को औद्योगिक और कृषि महाविद्यालयों की स्थापना के लिए सार्वजनिक भूमि सौंपी। ये महाविद्यालय शिक्षण संस्थायें होने के साथ-साथ वैज्ञानिक खेती के अनुसन्धान केन्द्र भी थे। आगे चलकर कांग्रेस ने देश-भर में कृषि-परिक्षण केन्द्रों की स्थापना के लिए निधि निर्धारित की और कृषि-विभाग को भी अनुसन्धान-कार्य के लिए धन दिया। नयी शताब्दी के आरम्भ तक देश-भर में वैज्ञानिक कृषि-योजनाओं पर अनुसन्धान-कार्य कर रहे थे।

इनमें से मार्क कार्लेटन नामक एक वैज्ञानिक कृषि-विभाग की ओर से रूस गया। वहां उसने जाड़े में पैदा होने वाले फफूंद और सूखे का सामना करने वाला गेहूं देखा, जिसे वह अपने देश में ले आया। अब संयुक्त राज्य की गेहूं की उपज का आधा भाग उसी प्रकार के गेहूं का है। मैरियन डार्सेट नामक एक अन्य वैज्ञानिक ने सूअरों में फैलने वाली भयानक महामारी पर विजय प्राप्त की, तथा जार्ज मोलर नामक एक अन्य वैज्ञानिक ने पशुओं के खुर और मुंह पकने के रोग पर विजय प्राप्त की। उत्तरी अफ्रीका से एक अनुसन्धानकर्ता काफ़िर नामक एक प्रकार का मक्का लाया, दूसरा तुर्किस्तान से पीले फूलों वाली लसुनघास (अल्फ़ाल्फा) लाया। कैलिफोर्निया में लूथर बरबैंक ने बीसियों नये फल और सब्जियां पैदा कीं। विसकॉन्सिन में स्टीफ़न बैबकॉक ने एक ऐसा परीक्षण निकाला जिससे दुग्धस्थ मक्खन का परिमाण ज्ञात हो जाये, अलाबामा के टस्केजी इंस्टिट्यूट (संस्थान) में महान नीग्रो वैज्ञानिक जॉर्ज वाशिंगटन कार्वर ने मूंगफली, शकरकन्द और सोयाबीन के सैकड़ों नये उपयोग निकाले।

किसानों की कठिनाइयां

इस उल्लेखनीय प्रगति के होते हुए भी उन्नीसवीं शताब्दी में अमेरिकी किसान को रह-रह कर कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा था। इसमें कई मूल तत्व सम्मिलित थे—भूमि की उपज-शक्ति का क्षय, प्रकृति की अनिश्चितता, प्रमुख फसलों का अति-उत्पादन, आत्म-निर्भरता का ह्रास, और पर्याप्त वैधानिक सुरक्षा और सहायता की कमी। दक्षिण की भूमि तो तम्बाकू और कपास की खेती के कारण बहुत दिनों से अनुत्पादक हो गयी थी, परन्तु पश्चिम में और मैदानों में भी भूमि-क्षरण, आंधियों और कीड़ों से भूमि को क्षति पहुंच रही थी।

मिसिसिपी नदी के पश्चिम में कृषि का द्रुत यन्त्रीकरण केवल वरदान ही सिद्ध नहीं हुआ। इसने बहुत-से किसानों को अपने खेतों के विवेकहीन विस्तार के लिए प्रोत्साहित

किया; प्रमुख फसलों पर ही ध्यान केन्द्रित करने के लिए प्रेरित किया; बड़े किसानों को छोटे किसानों की अपेक्षा अधिक लाभान्वित किया और पट्टे पर काश्तकारी की प्रथा के विकास को गति दी। इस प्रकार की समस्याएं अनेक वर्षों तक साधारणतया तब तक सुलझाई न जा सकीं जब तक भूमि-संरक्षण की आधुनिक विधियाँ व्यापक रूप से न अपना ली गयीं।

इससे भी अधिक जटिल, परन्तु शीघ्र सुलझ सकने योग्य, समस्या मूल्यों की थी। किसान अपनी पैदावार प्रतियोगितापूर्ण विश्वव्यापी बाज़ार में बेचता था, परन्तु अपनी आवश्यकता की वस्तुएं, औज़ार और घरेलू सामान ऐसे बाजार से खरीदता था जो प्रतियोगिता से सुरक्षित थे। उसे अपने गेहूं, कपास या गोमांस का जो मूल्य मिलता था वह विदेशों में निश्चित होता था; पर अपने फ़सल काटने की मशीन, खाद, और कांटेदार तार के लिए जो मूल्य वह देता था, उसका निश्चय संरक्षणात्मक-शुल्क से संरक्षित ट्रस्ट करते थे। सन् १८७० से १८९० ई० तक खेती की पैदावारों के मूल्य अनियमित रूप से गिरते गये, और अमेरिका की समस्त कृषि-पैदावार का मूल्य केवल ५० करोड़ डालर बढ़ा। उतने ही समय में अमेरिकी कारखानों में बने माल का मूल्य ६ अरब डालर बढ़ गया।

इस आर्थिक विषमता के परिणाम स्वरूप अपनी कठिनाइयों पर विचार करने और उनसे मुक्ति का मार्ग ढूंढने के लिए किसानों ने अपना संगठन बनाया। इनमें से अधिकांश सन् १८६७ ई० में स्थापित 'ग्रेंज' नामक संघ के नमूने पर बने हुए थे। कुछ ही वर्षों में लगभग सभी राज्यों में 'ग्रेंज' बन गये, जिनके सदस्यों की कुल संख्या साढ़े सात लाख से ऊपर पहुंच गयी। आरम्भ में ये संगठन मुख्यतया किसानों के अलगाव को दूर करने के लिए सामाजिक संगठनों के रूप में बने थे। परन्तु अब वे व्यापार और राजनीति की चर्चा करने लगे, और शीघ्र ही बहुत से ग्रेंजों ने अपनी बाज़ार-व्यवस्था, अपनी दूकानें, अपने निर्माण यन्त्रोपकरण, तथा कारखाने स्थापित कर लिये। मध्य पश्चिम के कई राज्यों में उन्होंने विधान-सभाओं के सदस्य निर्वाचित किये और अपने आर्थिक कल्याण को प्रभावित करने वाले कानूनों को पारित कराने में उनका काफ़ी प्रभाव था।

फिर भी ग्रेंजों के बहुत-से प्रयास असफल रहे और १८७० ई० के दशक में समृद्धि के पुनरुत्थान के फलस्वरूप उनका महत्व घटने लगा। १८८० ई० के दशक के अन्तिम चरण में और १८९० ई० के दशक के आरंभ में जब मैदानों में सूखा पड़ा और गेहूं और कपास के मूल्य गिरने लगे, तब यह आन्दोलन पुनर्जागृत हुआ।

इसी समय कृषक-संघ (फ़ार्मर्स एलायन्सेज़) नामक नये संगठनों का जन्म हुआ और सन् १८९० ई० तक इनके सदस्यों की संख्या २० लाख हो गयी। एक विस्तृत शिक्षण-कार्यक्रम तैयार करने के अतिरिक्त इन संगठनों ने राजनीतिक सुधारों की प्रबल मांग उठायी। एलायन्स के सदस्यों ने शीघ्र ही 'पापुलिस्ट' नामक एक सक्रिय राजनीतिक दल का निर्माण किया, जो पुराने लोकतान्त्रिक और गणतान्त्रिक दलों का जोरदार विरोधी था।

पॉपुलिस्टों द्वारा सुलभ मुद्रा का समर्थन

अमेरिकी राजनीति में पहले कभी ऐसा आन्दोलन नहीं हुआ था जैसा पॉपुलिस्ट आन्दोलन सिद्ध हुआ और वह शीघ्र ही घास के मैदानों और कपास के क्षेत्रों में फैल गया। दिन-भर खेतों में कठिन परिश्रम करने के पश्चात् किसान अपनी बग्घियां जोतते और अपनी पत्नियों और बच्चों के साथ गिरते-पड़ते सभा-भवन तक पहुंच कर अपने नेताओं के आवेगपूर्ण भाषणों की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते थे। सन् १८९० ई० के निर्वाचन में एक दर्जन दक्षिणी और पश्चिमी राज्यों में नया दल सत्तारूढ़ हुआ और इसने लगभग २० सेनेट-सदस्य और प्रतिनिधि चुनकर कांग्रेस में भेजे। इस सफलता से उत्साहित होकर पॉपुलिस्टों ने एक प्रगतिशील कार्यक्रम बनाया और व्यापक सुधारों की मांग की, जिनमें क्रमबद्ध आयकर, किसानों के लिए ऋण की एक राष्ट्रीय व्यवस्था, रेलों पर सरकार का स्वामित्व, श्रमिकों के लिए आठ घण्टे का दिन, और चांदी के सिक्के स्वतन्त्र रूप से यथेष्ट संख्या में ढलवा कर मुद्रा में वृद्धि, ये सब मांगें सम्मिलित थीं।

सन् १८९२ ई० के निर्वाचन में पॉपुलिस्टों ने दक्षिण और पश्चिम में अपनी प्रभावशाली शक्ति का परिचय दिया। यद्यपि राष्ट्रपति के पद के लिए उनके प्रत्याशी को दस लाख से भी अधिक मत प्राप्त हुए, तथापि लोकतान्त्रिक दल का प्रत्याशी ग्रोवर क्लीवलैंड निर्वाचित हुआ। चार वर्ष पश्चात् गतिशील पॉपुलिस्ट सर्वत्र लोकतान्त्रिक दल में सम्मिलित हो गये और उन्होंने नये लोकतान्त्रिक नेताओं को मुद्रा की समस्या को प्रधान राजनीतिक समस्या बनाने के लिए प्रेरित किया।

संयुक्त राज्य में आरम्भ से ही मुद्रा दो धातुओं पर आधारित रही, अर्थात् जितना सोना और चांदी टकसाल में लाया जाता था, सरकार उसकी मुद्राएं ढाल देती थी। सन् १८७३ ई० में कांग्रेस ने मुद्रा-व्यवस्था को पुनर्गठित किया, और अन्य बातों के साथ-साथ चांदी के डालरों को अधिकृत सिक्कों की सूची में से निकाल दिया। उस समय चांदी दुर्लभ थी, इसलिए इस ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। वास्तव में चालीस वर्ष से चांदी के डालर प्रचलन में नहीं थे। जब पश्चिम के पहाड़ी राज्यों में चांदी की नयी खानों का पता चला, और साथ ही कई यूरोपीय देशों में चांदी के सिक्कों का प्रचलन बन्द होने के कारण चांदी असाधारण मात्रा में उपलब्ध हो गयी, तब परिस्थिति एकाएक बदल गयी।

चूंकि देश आर्थिक कठिनाइयों का अनुभव कर रहा था, इसलिए दक्षिण और पश्चिम के कृषि-प्रवक्ताओं ने—जिन्हें पूर्वी औद्योगिक केन्द्रों के श्रमिक-दलों का सहयोग प्राप्त था—यथापूर्व चांदी की असीम मुद्रा की मांग उठायी। उन्हें विश्वास था कि उनकी सारी कठिनाइयों की जड़ प्रचलन में मुद्रा की कमी है, इसलिए इन दलों ने यह तर्क प्रस्तुत किया कि प्रचलित मुद्रा का परिमाण बढ़ जाने से खेतों की पैदावार का मूल्य बढ़ जायेगा और उद्योगों में मज़दूरी बढ़ जायेगी, और इस प्रकार वे अपना ऋण चुका सकेंगे। दूसरी ओर अधिक रूढ़िवादी दलों का विश्वास था कि ऐसी नीति आर्थिक दृष्टि से घातक सिद्ध होगी, और वे बार-बार इस बात पर बल देने लगे कि मुद्रा-स्फीति एक बार

आरम्भ हो जाने पर रोकी नहीं जा सकती, और सरकार स्वयं दिवालिया हो जाने के लिए विवश हो जायेगी। उनका कहना था कि केवल स्वर्ण-मान ही स्थिरता ला सकता है।

चांदी के पक्षपातियों को—जिनमें लोकतान्त्रिक और पॉपुलिस्ट्स दोनों सम्मिलित थे—नेब्रास्का का विलियम जेनिंग्स ब्रायन नामक एक नेता मिल गया जिसको उन्होंने सन् १८९६ ई० के निर्वाचन में राष्ट्रपति पद के लिए अपना प्रत्याशी बनाया। परन्तु उसका दल निर्बल था और उसके विरोधी सशक्त थे। विलियम मैकिन्ले ५ लाख से अधिक मतों से चुनाव जीत गया। फिर भी ब्रायन का अभियान एक गाथा बन गया, और उनकी मुद्रा सम्बन्धी नीति के अतिरिक्त पॉपुलिस्टों और कृषक लोकतान्त्रिकों के अधिकांश विचार आगे चलकर कानून में परिणत हो गये। महत्वपूर्ण बात यह है कि इस अभियान में इस बात का प्रमाण मिल गया कि गृह-युद्ध के पश्चात् संघ ने कितनी दृढ़ता प्राप्त कर ली है। यद्यपि किसानों की शिकायतें दास-स्वामियों की शिकायतों से कम वास्तविक नहीं थीं, परन्तु अब निष्प्रभावीकरण अथवा सम्बन्ध-विच्छेद की कोई बात नहीं थी।

स्पेन की पराजय और उपनिवेश हानि

सन् १८९८ ई० में स्पेन के साथ युद्ध में राष्ट्रीय एकता और स्पष्ट हो उठी। फ्लोरिडा प्रायद्वीप के दक्षिण में स्थित क्यूबा द्वीप पर स्पेन का बहुत दिनों से शासन था। इस द्वीप के साथ संयुक्त राज्य का व्यापार फल-फूल रहा था। सन् १८९५ ई० में मातृदेश के अत्याचारों के विरुद्ध क्यूबा का बढ़ता हुआ क्रोध स्वतन्त्रता-संग्राम के रूप में भड़क उठा।

संयुक्त राज्य इस विद्रोह की प्रगति को दिलचस्पी से देखने लगा। बहुत से अमेरिकियों की क्यूबा वालों से सहानुभूति थी, पर राष्ट्रपति क्लीवलैंड तटस्थता की नीति को सुरक्षित रखने के लिए दृढ़-संकल्प था। परन्तु तीन वर्ष पश्चात् मैकिन्ले के शासनकाल में जब हवाना बन्दरगाह में लंगर डाले खड़ा संयुक्त राज्य का युद्धपोत 'मेन' नष्ट कर दिया गया और २६० व्यक्तियों की हत्या कर दी गयी तब क्रोधाग्नि भड़क उठी। यद्यपि मैकिन्ले ने कुछ समय तक शान्ति बनाये रखने की चेष्टा की, परन्तु कुछ ही महीने में, विलम्ब व्यर्थ समझकर, उसने सैनिक हस्तक्षेप की संस्तुति की।

स्पेन के साथ युद्ध तीव्र और निर्णायक सिद्ध हुआ। जिन चार महीनों तक यह चला उनमें अमेरिकियों की एक भी महत्वपूर्ण पराजय नहीं हुई। युद्ध की घोषणा के एक सप्ताह पश्चात कमोडोर जार्ज ड्यूई, जो उस समय हांगकांग में था, अपने छः जहाजों का बेड़ा लेकर फ़िलीपीन्स की ओर बढ़ा। उसे यह आदेश था कि वह वहां खड़े स्पेनी बेड़े को अमेरिकी समुद्र में कार्रवाई करने से रोके। उसने एक भी अमेरिकी सैनिक खोये बिना समस्त स्पेनिश बेड़े को नष्ट कर दिया। इस बीच क्यूबा में सैंटियागो के निकट सैन्य दल उतारे गये और वहां शीघ्र कई मुठभेड़ों में विजय प्राप्त करने के पश्चात् उन्होंने बन्दरगाह पर गोलाबारी की। चार सशस्त्र स्पेनी युद्ध-पोत सैंटियागो की खाड़ी से निकले और कुछ ही घण्टों के पश्चात् उनका केवल जीर्ण ढांचा मात्र शेष रहा।

जब यह समाचार मिला कि सैंटियागो का पतन हो चुका है तब बॉस्टन से सैन-फ्रैंसिस्को तक सीटियां बजीं और झण्डे फहराये गये। समाचार-पत्रों ने क्यूबा और फिलीपीन्स में अपने संवाददाता भेजे, जिन्होंने राष्ट्र के नये युद्ध वीरों की ख्याति का डंका पीट दिया। इनमें से प्रमुख मनिला-प्रसिद्धि के जॉन ड्यूई और थियोडोर रूज़वेल्ट थे। रूज़वेल्ट 'रफ़ राइडर्स' नामक एक घुड़सवार स्वयंसेवकों के दल का नेता था, जिसे उसने क्यूबा में ही भर्ती किया था। स्पेन ने शीघ्र शान्ति की प्रार्थना की, और १० दिसम्बर सन् १८९८ ई० को सन्धि पर हस्ताक्षर हुए, जिसके अनुसार स्पेन ने क्यूबा को तब तक अस्थायी रूप से संयुक्त राज्य के अधिकार में सौंप दिया जब तक द्वीप में स्वतन्त्रता न स्थापित हो जाये। इसके अतिरिक्त स्पेन ने युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में गुआम और प्वेर्टोरिको दिये और २ करोड़ डालर मूल्य में फ़िलीपीन्स बेच दिया।

फ़िलीपीन्स में नव-स्थापित संयुक्त राज्य अब चीन से बढ़ते हुए व्यापार की ऊंची आशाएं रखने लगा। सन् १८९४-९५ ई० में जापान द्वारा पराजित होने के पश्चात् विभिन्न यूरोपीय देशों ने चीन में नाविक अड्डे और पट्टे पर भूक्षेत्र प्राप्त कर लिये थे और वहां अपने-अपने प्रभाव-क्षेत्र स्थापित कर लिये थे। उन्होंने वहां न केवल व्यापार के एकाधिकार प्राप्त कर लिये थे अपितु रेलवे-निर्माण में पूंजी लगाने और आस-पास के प्रदेशों में खान-खुदाई के विकास के लिए अनन्य सुविधायें प्राप्त कर ली थीं।

पूर्व के साथ पहले से ही अपने राजनयिक सम्बन्धों में अमेरिकी सरकार सब राष्ट्रों के लिए सदा समान व्यापारिक अधिकारों के सिद्धान्त पर बल देती आ रही थी, और अब यदि इस सिद्धान्त की रक्षा करनी थी तो एक साहसिक मार्ग अपनाना आवश्यक हो गया था। सितम्बर सन् १८९९ ई० में विदेश-मंत्री जॉन हे ने सभी सम्बन्धित शक्तियों के पास एक गश्ती चिट्ठी भेजी, जिसके परिणामस्वरूप उन सब ने चीन में सब राष्ट्रों के लिए मुक्तद्वार का सिद्धान्त स्वीकार कर लिया—अर्थात् जिन प्रदेशों पर उनका अधिकार था उनमें सब को समान व्यापारिक सुविधायें दी गयीं, जिनमें समान सीमा-शुल्क, बन्दरगाह-कर, और रेल-भाड़े सम्मिलित थे।

परन्तु सन् १९०० ई० में चीनियों ने विदेशियों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। जून में विद्रोहियों ने पीपिंग पर अधिकार कर वहां के विदेशी दूतावासों को घेर लिया। जॉन हे ने तुरन्त सब शक्तियों को सूचना दी कि संयुक्त राज्य चीन के क्षेत्रीय अथवा प्रशासकीय अधिकारों अथवा 'मुक्त-द्वार' के सिद्धान्त में किसी भी प्रकार के परिवर्तन का विरोध करेगा। पर जब विद्रोह शान्त हो गया तो अमेरिकी कार्यक्रम को पूरा कराने और क्षतिपूर्ति के असह्य बोझ से चीन की रक्षा करने में उसे अपना समस्त कौशल लगा देना पड़ा। अक्टूबर में ग्रेट ब्रिटेन और जर्मनी ने मुक्त-द्वार नीति और चीन की स्वतन्त्रता की रक्षा का पुन: समर्थन किया और शीघ्र अन्य राष्ट्रों ने भी इसका अनुसरण किया।

इसी समय सन् १९०० ई० में राष्ट्रपति के निर्वाचन ने अमेरिकन जनता को मैकिन्ले-प्रशासन पर और विशेषकर उसकी विदेशी नीति पर अपना मत प्रकट करने का अवसर दिया। फ़िलाडेल्फिया में एकत्र होकर गणतान्त्रिकों ने स्पेन के साथ हुए युद्ध के सफल परिणाम पर, समृद्धि की पुन:स्थापना, तथा 'मुक्त-द्वार की नीति' द्वारा नये

बाजार प्राप्त करने के प्रयास पर उल्लास प्रकट किया। निर्वाचन में मैकिन्ले का उप-राष्ट्रपति पद के लिए साथी थियोडोर रूज़वेल्ट था और दोनों का निर्वाचन निश्चित था। परन्तु राष्ट्रपति अपनी विजय का आनन्द उठाने के लिए अधिक दिन तक जीवित न रह सका। सितम्बर, सन् १९०१ ई० में जिस समय वह बफ़ेलो (न्यूयॉर्क) में एक प्रदर्शनी में था उसे एक हत्यारे ने गोली से समाप्त कर दिया। मैकिन्ले की मृत्यु ने थियोडोर रूज़वेल्ट को राष्ट्रपति के आसन पर प्रतिष्ठित किया।

सामाजिक आलोचना का प्रसार

अमेरिकी राजनीतिक जीवन में, आन्तरिक और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही क्षेत्रों में, एक नये युग का पदार्पण और रूज़वेल्ट का पदारोहण साथ-साथ हुआ। महाद्वीप आबाद हो चुका था, सीमान्त-देश समाप्त हो चुका था। एक छोटा लड़खड़ाता गणतन्त्र विश्व-शक्ति बन गया था। देश के राजनीतिक आधार गृह-युद्ध और विदेशी युद्ध के उतार-चढ़ाव तथा समृद्धि और अपकर्ष के ज्वार-भाटे को सहन कर चुके थे। कृषि और उद्योग में महान प्रगति हो चुकी थी। निःशुल्क सार्वजनिक शिक्षा का उद्देश्य अधिकांशतः पूरा हो चुका था। समाचार-पत्रों की स्वतन्त्रता का आदर्श जीवित रहा। फिर भी, विचारशील अमेरिकी अपनी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों से आत्मतुष्ट नहीं थे, क्योंकि बड़े व्यापारी पहले की अपेक्षा अधिक दृढ़तापूर्वक जम गये थे। स्थानीय और नागरिक शासन बहुधा भ्रष्ट राजनीतिज्ञों के हाथ में चला जाता था, और समाज के सभी खण्डों को भौतिकवादी भावना दूषित कर रही थी।

इन बुराइयों का मुक्त कण्ठ से विरोध आरम्भ हुआ, जिसने लगभग सन् १८९० ई० से लेकर प्रथम विश्व-युद्ध तक की अमेरिकी राजनीति और विचारधारा को एक विलक्षण स्वरूप दिया। यह स्वर सर्वथा नवीन नहीं था। औद्योगिक क्रान्ति के आरम्भिक दिनों से किसान नगरों के विरुद्ध और उदीयमान उद्योगपतियों के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे। सन् १८५० ई० के दशक से ही सुधारवादी, संरक्षण की उस प्रणाली की तीव्र आलोचना कर रहे थे जिसके द्वारा सफल राजनीतिज्ञ अपने समर्थकों को सरकारी पद बांट रहे थे। ३० वर्ष के संघर्ष के पश्चात् सुधारकों ने १८८३ ई० में 'पेंडिल्टन सिविल सर्विस बिल' पारित करा लिया। योग्यता के आधार पर शासकीय सेवाओं में नियुक्ति की प्रथा की स्थापना कर इस कानून ने राजनीतिक सुधारों का आरम्भ किया।

औद्योगिक श्रमिकों ने भी अन्यायों के विरुद्ध अपना स्वर ऊंचा उठाया था। आत्मरक्षा के लिए उन्होंने सन् १८६९ ई० में 'नाइट्स ऑव लेबर' (श्रम-वीर) नामक संगठन की स्थापना की थी, जिसके सदस्यों की संख्या सन् १८८० के दशक के मध्य में ७ लाख तक पहुंच चुकी थी। उसके पश्चात् इस संगठन का पतन होने लगा, परन्तु शीघ्र ही इसके स्थान पर 'अमेरिकी श्रमिक संघ' (अमेरिकन फ़ेडरेशन ऑव लेबर) नामक शिल्प-संगठनों का एक सशक्त संघ बन गया। सन् १९०० ई० तक श्रमिक वर्ग एक शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित हो गया।

अभियोग लगाये गये। १४६२ भिन्न-भिन्न ठेकों पर लगाये गये जुर्माने की २,६२,४०,००० डालर धनराशि उस समय की प्रवृत्ति को परिलक्षित करती है।

रूज़वेल्ट द्वारा प्राकृतिक साधनों की रक्षा

राष्ट्र के प्राकृतिक साधनों का रक्षण, कच्चे माल के अपव्ययपूर्ण दोहन को रोकना, और उपेक्षित भूमि के विस्तृत भूखण्डों का पुनरुद्धार रूज़वेल्ट-युग की प्रमुख उपलब्धियों में है। सन् १९०१ ई० में कांग्रेस को अपना प्रथम संदेश देते समय रूज़वेल्ट ने रक्षण, पुनरुद्धार, और सिंचाई का एक महत्वपूर्ण और संघटित कार्यक्रम रखा था। उसके पूर्वाधिकारियों ने इमारती लकड़ी के लिए १,८८,००,००० हेक्टेयर भूमि सुरक्षित छोड़ रखी थी, परन्तु रूज़वेल्ट ने इसका क्षेत्र बढ़ा कर ५,९२,००,००० हेक्टेयर कर दिया, और जंगलों को आग से बचाने तथा वृक्षहीन भागों में पुन: वृक्ष लगवाने का उसने व्यवस्थित प्रयास आरम्भ किया।

सन् १९०७ में रूज़वेल्ट ने एक आन्तरिक जल-मार्ग आयोग (इनलैंड वाटरवेज़-कमीशन) इसलिए नियुक्त किया कि वह नदियों, भूमि और जंगलों के सम्बन्धों, जलशक्ति के विकास तथा जल-परिवहन का अध्ययन करे। इस आयोग की संस्तुति के आधार पर एक राष्ट्रीय संरक्षण सम्मेलन की योजना बनी, जिसने राष्ट्र का ध्यान संरक्षण की आवश्यकताओं की ओर आकर्षित किया।

इस आयोग ने अपने सिद्धान्तों की घोषणा में जंगलों, जल, और खनिज पदार्थों के संरक्षण पर बल दिया और भूमि-क्षरण तथा सिंचाई की समस्याओं के समाधान की ओर प्रवृत्त हुआ। इसकी संस्तुतियों में व्यक्तिगत भूमि पर वृक्ष काटने पर नियन्त्रण, नौ-गम्य नदियों का सुधार, और जल-विभाजकों का संरक्षण भी सम्मिलित थे। परिणाम-स्वरूप कई राज्यों ने संरक्षण आयोगों की स्थापना की, और जनता को इस विषय में शिक्षित करने के लिए सन् १९०९ ई० में एक राष्ट्रीय संरक्षण संघ (नेशनल कंज़र्वेशन एसोसिएशन) की स्थापना हुई। सन् १९०२ ई० में उद्धार-अधिनियम (रिक्लेमेशन ऐक्ट) पारित हुआ, जिसने सरकार को कई बड़े-बड़े बांध तथा जलाशय बनाने का अधिकार दिया।

ज्यों-ज्यों सन् १९०८ ई० का निर्वाचन-अभियान समीप आ रहा था, रूज़वेल्ट की लोकप्रियता अपनी चरम सीमा पर पहुंच रही थी, परन्तु वह उस परम्परा को तोड़ना नहीं चाहता था जिसके अनुसार कोई भी राष्ट्रपति दो कार्य-काल से अधिक इस पद पर नहीं रहा था। उसने विलियम होवर्ड टैफ्ट का समर्थन किया, जो चुनाव जीत गया और रूज़वेल्ट के ही कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का प्रयास करता रहा। टैफ्ट ने कुछ प्रगतिशील कदम उठाये। उसने ट्रस्टों के विरुद्ध कार्रवाई जारी रखी, 'अंतर्राज्य व्यापार आयोग' को और शक्तिशाली बनाया, डाकघर-बचत बैंक स्थापित किया, डाक द्वारा पार्सल भेजने की व्यवस्था की, लोक-सेवाओं का विस्तार किया, और राष्ट्रीय संविधान में दो संशोधन कराने का प्रयास किया।

सोलहवें संशोधन ने संघीय आयकर लगाने का अधिकार दिया; सत्रहवें संशोधन का अनुसमर्थन सन् १९१३ ई० में हुआ, जिसके अनुसार सेनेट-सदस्यों का निर्वाचन, जो पहले राज्यों की विधान-सभाओं द्वारा होता था, अब जनता द्वारा प्रत्यक्ष होने लगा। परन्तु टैफ्ट की संरक्षणात्मक दरों के शुल्क की स्वीकृति, जिसने उदारवादियों के दृष्टिकोण को भयंकर आघात पहुंचाया, अपने उदार संविधान के कारण संघ में एरिज़ोना राज्य के प्रवेश का उसका विरोध, और अपने दल के अतिरूढ़िवादी वर्ग पर उसका अधिकाधिक भरोसा उसकी सारी उपलब्धियों को निष्प्रभावित करने में समर्थ हो गये।

सन् १९१० ई० तक टैफ्ट के दल में विभाजन हो गया और कांग्रेस पर प्रवल बहुमत से लोकतान्त्रिक दल का फिर से अधिकार हो गया। दो वर्ष पश्चात् न्यूजर्सी के गवर्नर वुडरो विल्सन ने गणतान्त्रिक प्रत्याशी टैफ्ट के और रूज़वेल्ट के, जिसने गणतान्त्रिक सम्मेलन (रिपब्लिकन कनवेन्शन) द्वारा प्रत्याशी न बनाये जाने पर प्रोग्रेसिव्ज (प्रगतिशील) नामक तीसरा दल बना लिया था, विरुद्ध निर्वाचन-अभियान आरम्भ किया।

विल्सन ने एक ओजस्वी अभियान द्वारा दोनों प्रतिद्वन्द्वियों को पराजित कर दिया। उसके नेतृत्व में नव-निर्वाचित कांग्रेस ने अमेरिकी इतिहास के एक सब से महत्वपूर्ण वैधानिक कार्यक्रम को कार्यान्वित करने का प्रयास किया। इसका पहला कार्य था सीमा शुल्क संशोधन। वुडरो विल्सन ने कहा: "सीमा शुल्क अवश्य बदलना जाहिए। जिन वस्तुओं में विशेषाधिकार का आभास भी मिलता हो, उसे हमें समाप्त कर देना चाहिए।" अण्डरवुड सीमा शुल्क ने, जिस पर ३ अक्टूबर सन् १९१३ को राष्ट्रपति का हस्ताक्षर हुआ, प्रमुख कच्चे माल और खाद्य पदार्थों पर, ऊनी और सूती कपड़ों, तथा लोहे और इस्पात पर शुल्क की दरों में भारी कमी कर दी, और एक सौ से अधिक वस्तुओं पर से शुल्क हटा दिया। यद्यपि इस अधिनियम ने बहुत-सी संरक्षणात्मक विशिष्टताओं को बचा रखा, फिर भी जीवनयापन के व्यय को कम करने का यह एक सच्चा प्रयास था।

लोकतान्त्रिक कार्यक्रम का दूसरा विषय, जिस पर बहुत पहले ध्यान दिया जाना चाहिए था, अनमनीय बैंक और मुद्रा प्रणाली का पूर्ण रूप से पुनर्गठन था, जो अस्थायी आवश्यकता की पूर्ति के लिए बनाये गये कानूनों द्वारा परिचालित सामयिक मुद्रा के सहारे घिसट रहा था। विल्सन ने कहा, "नियन्त्रण सार्वजनिक होना चाहिए, व्यक्तिगत नहीं, और वह सरकार के हाथ में होना चाहिए ताकि बैंक व्यापार तथा वैयक्तिक उद्यम और उपक्रम के साधन हों, स्वामी नहीं।"

२३ दिसम्बर, सन् १९१३ ई० के फेडरल रिजर्व ऐक्ट ने विल्सन की आवश्यकताओं की पूर्ति की। इसने वर्तमान बैंकों पर एक नया संगठन आरोपित कर दिया, जिसने देश को १२ जिलों में विभक्त कर प्रत्येक में एक फेडरल रिजर्व बैंक स्थापित किया, जिन सब का निरीक्षण एक फेडरल रिजर्व बोर्ड करता था। जो बैंक इस व्यवस्था में सम्मिलित हुए उन सब की नगद निधि इन्हीं बैंकों में जमा होती थीं। मुद्रा की आपूर्ति को अधिक सुलभ बनाने के लिए यह व्यवस्था की गयी कि व्यावसायिक मांग की पूर्ति के लिए फेडरल रिजर्व बैंक को नोट जारी करने का अधिकार हो।

दूसरा मुख्य कार्य ट्रस्टों को नियन्त्रित करना और निगमों के दोषों की छान-बीन

करना था। अनुभव संकेत करता था कि जिस प्रकार 'अन्तर्राज्य व्यापार आयोग' ने रेलों पर नियन्त्रण किया था उसी प्रकार की नियन्त्रण-व्यवस्था होनी चाहिए। एक संघीय व्यापार आयोग (फेडरल ट्रेड कमीशन) को यह अधिकार दिया गया कि वह अन्तर्राज्य-व्यापार में संस्थाओं द्वारा प्रतिस्पर्धा की अनुचित पद्धतियों को रोकने के लिए आदेश जारी करे। एक अन्य कानून, क्लेटन ऐण्टी-ट्रस्ट-ऐक्ट ने ऐसे बहुत-सी परिपाटियों और प्रथाओं पर रोक लगायी जिनकी अब तक विशेष निन्दा हुई थी—जैसे संचालक-मंडलों का गठबंधन, ग्राहकों के मध्य विभेदीकरण और उद्यमों के सामान का एक निगम द्वारा स्वामित्व।

श्रमिकों और किसानों को भी नहीं भुलाया गया। एक संघीय कृषि-ऋण-अधिनियम (फेडरल फार्म लोन ऐक्ट) द्वारा किसानों को कम ब्याज पर ऋण मिलने लगा। क्लेटन ऐक्ट की एक धारा ने श्रमिकों के झगड़ों में निषेधादेश के प्रयोग को विशेष रूप से रोक दिया। सन् १९१५ के सीमेन्स ऐक्ट (नाविक अधिनियम) द्वारा समुद्र में चलने वाले जहाजों तथा झील और नदियों में चलने वाली नौकाओं के कर्मचारियों के जीवन और कार्य करने की परिस्थितियों में सुधार की व्यवस्था की गयी। सन् १९१६ में फेडरल वर्किंगमैन्स कम्पेन्सेशन ऐक्ट ने लोक-सेवाओं के कर्मचारियों को काम के समय अशक्त हो जाने पर भत्ते का अधिकार दिया। उसी वर्ष ऐडम्सन ऐक्ट द्वारा रेलवे के श्रमिकों के लिए आठ घण्टे का दिन निर्धारित हुआ।

यद्यपि ये सारी उपलब्धियां राष्ट्रपति विल्सन के नेतृत्व के कारण प्राप्त हुई थीं, परन्तु इतिहास में विल्सन का स्थान उसकी सामाजिक सुधारों के प्रति आस्था के कारण उतना नहीं है जितना उस विचित्र नियति के कारण है जिसने उसे युद्धकालीन राष्ट्रपति के रूप में तथा प्रथम विश्वयुद्ध के उपरान्त अशान्त शान्ति-संधि-निर्माता के रूप में प्रस्तुत किया।

विदेश में संघर्ष, घर में सामाजिक परिवर्तन

"हम प्रजातन्त्र के महान शस्त्रागार हों।"
—फ्रैंकलिन डी० रूज़वेल्ट

कांग्रेस को सन्देश, जनवरी ६, १९४१

सन् १९१४ ई० में यूरोप में युद्ध भड़क उठने से अमेरिका की जनता चौंक उठी। पहले तो यह संघर्ष अमेरिका से असम्बद्ध लगा, परन्तु शीघ्र ही उसके आर्थिक और राजनीतिक प्रभाव अनुभव होने लगे। अमेरिकी उद्योग जो इधर हलकी मन्दी के दौर से गुज़र रहा था, सन् १९१५ ई० से पश्चिमी मित्र राष्ट्रों द्वारा युद्ध-सामग्री की मांग के कारण फिर से फूलने-फलने लगा। अमेरिका की जनता के आवेश को उकसाने के लिए दोनों ही पक्ष प्रचार-रत थे, तथा ब्रिटेन और जर्मनी दोनों ही समुद्र पर अमेरिकी जहाजरानी के विरुद्ध ऐसी कार्रवाइयां कर रहे थे जिनका विल्सन-प्रशासन ने तीव्र विरोध किया। परन्तु अमेरिका और जर्मनी के मध्य विवाद उभरकर सामने आता गया।

फ़रवरी सन् १९१५ ई० में जर्मन सेना-नायकों ने घोषणा की कि वे ब्रिटिश द्वीप समूह के आस-पास समुद्र में स्थित सभी वाणिज्य पोतों को नष्ट कर देंगे। राष्ट्रपति विल्सन ने यह चेतावनी दी कि संयुक्त राज्य समुद्र पर व्यापार करने के अपने परम्परागत अधिकार को नहीं छोड़ सकता, और उसने यह घोषणा की कि यदि किसी भी अमेरिकी जलयान अथवा जीवन की हानि हुई तो राष्ट्र जर्मनी को "निश्चित रूप से उत्तरदायी" ठहरायेगा। शीघ्र ही सन् १९१५ ई० के वसन्त में जब "लूज़िटैनिया" नामक ब्रिटिश जलयान १२०० व्यक्तियों के साथ, जिनमें १२८ अमेरिकी भी थे, डुबा दिया गया, तब अमेरिका का क्रोध चरम सीमा पर पहुंच गया।

युद्धकालीन तनावों के कारण राष्ट्रपति विल्सन की नीतियों में असंगतियां पैदा हो गयीं। यद्यपि कोई भी अमेरिकी राष्ट्रपति कभी भी विल्सन से अधिक शान्ति के लिए दृढ़-संकल्प नहीं था, परन्तु जर्मनी की, विशेष कर पनडुब्बी-युद्ध में, नृशंसता देखकर उसको यह विश्वास हो गया कि जर्मनी की विजय यूरोप में सैन्यवाद की प्रधानता स्थापित करेगी जो अमेरिका की सुरक्षा के लिए खतरा सिद्ध होगी।

४ मई, सन् १९१६ ई० को जर्मन सरकार ने यह वचन दिया कि उसका पनडुब्बी-संग्राम अमेरिकी मांग के अनुसार सीमित कर दिया जायेगा, और ऐसा प्रतीत हुआ कि समस्या सुलझ गयी है। विल्सन के उस वर्ष पुनर्निर्वाचित होने का एक कारण उसके दल के इस नारे का प्रभाव था कि "उसने हमें युद्ध से अलग रखा है।" जनवरी

सन् १९१७ ई० में सेनेट के समक्ष भाषण करते हुए उसने "विजयहीन शान्ति" की मांग की, क्योंकि उसके अनुसार ऐसी ही सन्धि चिरस्थायी हो सकती है।

अमेरिका का प्रथम विश्वयुद्ध में प्रवेश

नौ दिन पश्चात् जर्मन सरकार ने यह सूचना दी कि पनडुब्वी-संग्राम विना प्रतिवन्ध के पुनः आरम्भ किया जायेगा। पांच अमेरिकी जलयान डुवाये जाने के पश्चात २ अप्रैल, १९१७ ई० को विल्सन ने कांग्रेस से युद्ध की घोषणा करने की मांग की। इस के बाद तुरन्त ही अमेरिकी सरकार ने अपने सैनिक साधनों और अपने उद्योगों, श्रमिकों, तथा कृषि को युद्ध में शामिल होने की दृष्टि से संघटित करना आरम्भ कर दिया। अक्टूबर सन् १९१८ ई० तक १७,५०,००० से भी अधिक सैनिकों की एक सेना फ्रान्स में पहुंच गयी थी।

पनडुब्वियों द्वारा जो तटवन्दी की गयी थी उसे तोड़ने में अमेरिकी नौसेना ने जो सहायता ब्रिटिश सेना को दी वह निर्णायक सिद्ध हुई, और सन् १९१८ ई० की गर्मियों में जर्मनी के चिर-प्रतीक्षित आक्रमण के समय अक्लान्त अमेरिकी सैनिकों ने निर्णयात्मक स्थल युद्ध किया। नवम्बर में दस लाख से भी अधिक सैनिकों की एक अमेरिकी सेना ने म्यूज़-अर्गान अभियान में महत्वपूर्ण भाग लिया और जिस हिण्डनवर्ग रेखा पर जर्मनी को बड़ा गर्व था, उसे तोड़ दिया।

विल्सन ने युद्ध में मित्र-राष्ट्रों के उद्देश्य को स्पष्ट कर, और इस तथ्य पर वल देकर कि यह संघर्ष जर्मन जनता के विरुद्ध नहीं अपितु उनकी निरंकुश सरकार के विरुद्ध है, युद्ध को शीघ्र समाप्त कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। जनवरी सन् १९१८ ई० में न्यायपूर्ण सन्धि के आधार-स्वरूप सेनेट में उसके जो प्रसिद्ध चौदह सूत्र प्रेषित किये गये थे उन्होंने गुप्त अन्तर्राष्ट्रीय समभौते की समाप्ति, समुद्रों की स्वतन्त्रता की गारण्टी, राष्ट्रों के वीच आर्थिक व्यवधानों का निराकरण, राष्ट्रों के शस्त्रीकरण में कमी, और उपनिवेशों के निवासियों के हितों को ध्यान में रखते हुए उपनिवेशी दावों के समंजन की मांग की। अन्य सूत्रों ने यूरोपीय राष्ट्रों को स्वशासन तथा निर्बाध आर्थिक विकास का आश्वासन दिया। ये चौदह सूत्र विल्सन की सन्धि के तोरणद्वार के मुख्य प्रस्तर खण्ड थे जो राष्ट्रों के एक संघ का निर्माण कर "बड़े तथा छोटे राज्यों को समान राजनीतिक स्वतन्त्रता तथा क्षेत्रीय अखण्डता की पारस्परिक प्रत्याभूति" देने के लिए रूपायित किये गये थे।

सन् १९१८ ई० की गर्मियों में जब जर्मनी की सेनायें पीछे ढकेली जा रही थीं, तब जर्मन सरकार ने विल्सन से प्रार्थना की कि वह चौदह सूत्रों के आधार पर सन्धि-वार्ता आरम्भ करे। जब विल्सन आश्वस्त हो गया कि यह प्रार्थना जनता के प्रतिनिधियों की है, सैनिक गुट की नहीं, तब राष्ट्रपति ने मित्र-राष्ट्रों से परामर्श किया, जिन्होंने जर्मन प्रस्ताव स्वीकार कर लिया। इस आधार पर ११ नवम्बर को एक अस्थायी विराम-सन्धि हुई।

सन्धि के पश्चात तटस्थतावादी नीति

विल्सन को आशा थी कि अन्तिम सन्धि समझौते के आधार पर होगी, परन्तु उसे यह भय था कि युद्ध-जनित आवेश के कारण उसके मित्रों की मांगें कठोर होंगी। उसकी यह आशंका ठीक निकली। यह विश्वास कर कि जब तक वह मित्र-राष्ट्रों को कुछ सुविधाएं नहीं देगा, विश्व-शान्ति के लिए उसकी महानतम आशा—राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स)—साकार न हो सकेगी, उसने पैरिस की सन्धि-वार्ता में अपने सूत्रों को एक-एक कर छोड़ना आरम्भ कर दिया। विल्सन को कुछ विषयों में निषेधात्मक सफलता अवश्य मिली : उसने इटली को फ्यूमा देने से इनकार कर दिया, जर्मनी से सम्पूर्ण राइन-प्रदेश को अलग कर देने की क्लेमांसू की मांग को रोका, फ्रान्स को सार-घाटी पर अधिकार करने से रोका, और जर्मनी पर युद्ध का पूरा व्यय लादने का प्रस्ताव रद्द करा दिया।

अन्त में, एक उदार और स्थायी सन्धि के लिए किये गये उसके रचनात्मक प्रस्तावों में केवल राष्ट्र-संघ ही बच रहा, और अपने ही देश द्वारा संघ की सदस्यता ठुकराये जाने की विडम्बना भी विल्सन को सहन करनी पड़ी। उस समय अंशतः उसकी अपनी अपर्याप्त सूझ-बूझ के कारण ऐसा हुआ। अपने सन्धि-आयोग में विरोधी गणतान्त्रिक दल के एक प्रमुख सदस्य को पैरिस न ले जाकर उसने एक राजनीतिक भूल की, और लौटकर जब इस संघ के समर्थन के लिए उसने अपने देश से अनुरोध किया तो उसने अपनी योजना में साधारण फेरबदल करना भी स्वीकार नहीं किया जो प्रधानतः गण-तन्त्रात्मक सेनेट से अनुसमर्थन प्राप्त करने के लिए आवश्यक थी।

वाशिंगटन में पराजित होने के पश्चात विल्सन ने सारे देश का भ्रमण कर अपने प्रस्ताव को जनता के सामने रखा। शान्ति-स्थापना की कठिनाइयों और युद्ध-कालीन राष्ट्रपति पद-जनित कार्याधिक्य के कारण उसका शरीर जर्जर हो चुका था, और २५ सितम्बर सन् १९१९ को प्यूब्लो (कोलोराडो) में उसे पक्षाघात का एक भयंकर दौरा पड़ा, जिससे वह कभी संभल न पाया। मार्च सन् १९२० ई० में सेनेट ने अपने अन्तिम मतदान में वर्साई की सन्धि और राष्ट्रसंघ के प्रसंविदा, दोनों को अस्वीकृत कर दिया। इसके पश्चात् संयुक्त राज्य पार्थक्य की ओर अधिक से अधिक मुड़ने लगा। विल्सन के साथ ही आदर्शवादी-चित्तवृत्ति समाप्त हो गयी और उदासीनता के एक युग का आरम्भ हुआ।

सन् १९२० ई० के राष्ट्रपति के चुनाव के लिए विल्सन के दल ने एक ऐसे व्यक्ति का नामांकन किया जो विल्सन के शासन से मुख्य रूप से सम्बन्धित नहीं था। वह ओहायो का गवर्नर जेम्स एम० कॉक्स था। गणतान्त्रिक प्रत्याशी वारेन जी० हार्डिंग की महान् विजय विल्सनवाद के सामान्य अस्वीकार का अन्तिम प्रमाण था। यद्यपि अपने अभियान में हार्डिंग ने राष्ट्र-संघ की समस्या पर अपना मत स्पष्ट करने से इनकार कर दिया था, परन्तु उसकी और उसके गणतन्त्रात्मक उत्तराधिकारियों की विदेशी नीति साधारणतया पार्थक्यता का ही अनुसरण करती रही।

यह पहला चुनाव था जिसमें सारे देश में स्त्रियों ने राष्ट्रपति पद के लिए किसी

प्रत्याशी के वास्ते मतदान किया। युद्धकाल में विल्सन ने स्त्रियों को मतदान की स्वीकृति दिलाने के लिए एक संघीय संशोधन का समर्थन किया, क्योंकि युद्ध के प्रयास में उनके महान योगदान ने उनके नागरिक सामर्थ्य और मतदान के अधिकार को प्रभावपूर्ण ढंग से स्पष्ट किया था। सन् १६१६ ई० में कांग्रेस ने १६वां संशोधन राज्यों के समक्ष रखा, जिसके अनुसमर्थन से अगले वर्ष स्त्रियों को मतदान की स्वीकृति मिल गयी।

रूढ़िवादी नीतियों का प्राधान्य

सन् १६२० ई० के दशक में, अमेरिका की सरकारी नीति देश में, कम-से-कम शहरी क्षेत्रों में, व्यापक समृद्धि के अनुकूल प्रधानतया रूढ़िवादी थी। यह इस विश्वास पर आधारित थी कि यदि सरकार निजी व्यवसाय को प्रोत्साहित करने के लिए यथा सामर्थ्य प्रयास करे, तो समृद्धि जनता के सभी वर्गों तक पहुंच सकती है।

अतएव गणतन्त्रात्मक नीतियां अमेरिकी उद्योग के लिए अनुकूलतम परिस्थितियां उत्पन्न करने के विचार से निर्धारित की गयीं। सन् १६२२ और १६३० ई० के शुल्क-अधिनियम ने शुल्क-सीमा को और ऊंचा उठा दिया और आन्तरिक व्यापार में, अमेरिकी उत्पादकों का, एक के बाद दूसरे क्षेत्र में, एकाधिकार सुरक्षित कर दिया। सन् १६३० के स्मूट-हॉली अधिनियम द्वारा लगाये गये दूसरे शुल्क की दरें इतनी ऊंची थीं कि एक सहस्त्र से भी अधिक अर्थशास्त्रियों ने राष्ट्रपति हूवर से प्रार्थना की कि वह इसे निषेधाधिकार के प्रयोग से अस्वीकृत कर दे। अन्य राष्ट्रों द्वारा इसके कठोर प्रतिकार की जो भविष्यवाणी उन्होंने की थी, वह परवर्ती घटनाओं से सिद्ध हो गयी। साथ ही साथ संघीय सरकार ने कर घटाने का एक कार्यक्रम आरम्भ किया जो वित्त मंत्री ऐण्ड्रू मेलन के इस विश्वास को प्रतिबिम्बित करता था कि ऊंचा आय-कर धनिकों को नये औद्योगिक कार्यों में पूंजी लगाने से रोकेगा। कांग्रेस ने सन् १६२१ और १६२६ ई० के बीच पारित कई कानूनों द्वारा उसके इन प्रस्तावों का समर्थन किया कि आय पर लगाये गये युद्धकालीन कर, अधिक लाभ पर लगे कर, और निगम-कर या तो पूर्णतया समाप्त कर दिये जायें या उन्हें बहुत कम कर दिया जाये।

सन् १६२० ई० के दशक में निजी व्यापार को भरपूर प्रोत्साहन मिला, जिसमें निर्माण के लिए ऋण, डाक-संचार के लिए लाभप्रद ठेके, तथा अन्य अप्रत्यक्ष आर्थिक सहायतायें सम्मिलित थीं। राष्ट्र की रेल-व्यवस्था, जो युद्ध काल में सरकार के कठोर नियन्त्रण में थी, सन् १६२० ई० के परिवहन अधिनियमों द्वारा व्यक्तिगत प्रबन्धकों को वापस की जा चुकी थी। व्यापारिक जहाज़ी बेड़े, जो सन् १६१७ से १६२० ई० तक सरकार के अधीन थे और प्रधानतया उसी के द्वारा संचालित थे, अब व्यक्तिगत संचालकों को बेच दिये गये।

परन्तु विद्युत-शक्ति के प्रश्न पर सरकार की कार्यपालिका और विधायिका में मत-वैभिन्य हो गया। युद्ध-काल में सरकार ने ५६ किलोमीटर की दूरी तक फैले, टेनेसी नदी के खड़े उतार मसल शोल्स नामक क्षेत्र के पास नाइट्रेट के दो कारखाने स्थापित

किये थे, और नदी के किनारे बिजली उत्पादन के लिए कई बांध भी खड़े किये थे। सरकार द्वारा विद्युत-शक्ति के उत्पादन और विक्रय के लिए सन् १९२८ ई० में कांग्रेस के दोनों सदनों ने एक कानून पारित किया, परन्तु राष्ट्रपति हूवर ने एक कटु निषेधाज्ञा के जरिए इसे वापस कर दिया। बाद में राष्ट्रपति फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट के कार्य-काल में मसल शोल्स-योजना के आधार पर आदर्श टी० वी० ए० (टेनेसी वैली अथॉरिटी) प्रयोग आरम्भ किया गया।

इस बीच गणतन्त्रात्मक दल की कृषि-नीति की आलोचना बढ़ने लगी, क्योंकि सन् १९२० के दशक की समृद्धि में किसानों को सबसे कम भाग मिला था। सन् १९०० से १९२० ई० तक का समय कृषि की व्यापक समृद्धि और बढ़ते मूल्यों का समय था, क्योंकि युद्धकाल में अमेरिका के खेतों की उपज की अभूतपूर्व मांग ने उत्पादन बढ़ाने के लिए शक्तिशाली प्रेरणा दी। किसानों ने ऐसी बहुत-सी भूमि को तोड़ा जो बहुत दिनों से बेकार पड़ी थी, अथवा जिसमें अभी तक खेती नहीं हुई थी। जब अमेरिकी खेतों का मूल्य दूना, और कुछ क्षेत्रों में तीन गुना हो गया तब किसानों ने ऐसी वस्तुएं और मशीनें खरीदना आरम्भ किया जो पहले उनके सामर्थ्य के परे थीं। परन्तु सन् १९२० ई० के अन्त तक युद्धकालीन मांग एकाएक समाप्त हो जाने पर मुख्य फसलों का व्यापारिक उत्पादन तीव्र गति से गिरने लगा। सन् १९३० ई० के दशक में जब व्यापक मन्दी आयी तो उसने पहले से ही गम्भीर परिस्थिति को गम्भीरतर कर दिया।

१९२० के दशक में अमेरिका

अमेरिका की कृषि में मन्दी के कई कारण थे, परन्तु सबसे मुख्य कारण विदेशी व्यापार-बाजार का चला जाना था। अमेरिकी किसान उन क्षेत्रों में अपनी उपज नहीं बेच पा रहे थे जहां से संयुक्त राज्य, अपने ही आयात शुल्क के कारण, सामान नहीं खरीदता था। विश्व के बाजारों के दरवाजे धीरे-धीरे बन्द हो रहे थे।

अमेरिकी नीति में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन का सूचक सन् १९२० ई० दशक में आप्रवासन पर नियन्त्रण था। बीसवीं शताब्दी के प्रथम पन्द्रह वर्षों में संयुक्त राज्य में १ करोड़ ३० लाख व्यक्ति आये थे। कुछ समय से निर्बाध आप्रवासन के प्रति जनता की विरोधी भावना बढ़ने लगी थी। संयुक्त राज्य को उपनिवेश बसाने के लिए अब एक बड़े आन्तरिक साम्राज्य की इच्छा नहीं थी, और अब वह आप्रवासियों के विशाल समूहों का स्वागत करने के लिए तैयार नहीं था। यह भावना कई कानूनों द्वारा स्पष्ट की गयी, जिनकी पराकाष्ठा सन् १९२४ ई० के आप्रवासन नियतांश विधि (इम्मिग्रेशन कोटा लॉ) तथा सन् १९२९ अधिनियम द्वारा हुई। इन्होंने आप्रवासियों की वार्षिक संख्या १,५०,००० निर्धारित कर दी, जिसमें विभिन्न देशों से आने वालों की संख्या के अनुपात का निश्चय उनके अपने देशवासियों की उस संख्या पर आधारित था जो सन् १९२० ई० में संयुक्त राज्य में थी। चूंकि अब आने वाले प्रवाह में उत्तरी और पश्चिमी यूरोप की अपेक्षा दक्षिणी और पूर्वी योरप के लोग थे, इसलिए आप्रवासन भी चयनात्मक

वना दिया गया। इस कानून ने आप्रवासियों की संख्या को कठोरतापूर्वक सीमित कर, विश्व इतिहास में जनसंख्या के एक महान सामूहिक संचलन की तीन शताव्दी पुरानी प्रक्रिया पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

जिस समय आप्रवासन क्षीण-धारा मात्र रह गया था, अमेरिकियों का यूरोप की ओर जाने का एक छोटा परन्तु महत्वपूर्ण आन्दोलन आरम्भ हो रहा था। उत्प्रवासी लेखक और बुद्धिजीवी थे, जो संयुक्त राज्य को कला और चिन्तन के लिए उपयुक्त स्थान न समझ कर मुख्यतया पैरिस जा रहे थे।

घरेलू और वाहरी, दोनों प्रकार के आलोचकों की दृष्टि में अमेरिकी संस्कृति वस्तुवादी और विशुद्धिवादी दोनों ही थी। मदिरा वनाने और वेचने पर निषेध उस समय के शुद्धाचारवाद का प्रतीक था। सौ वर्ष के आन्दोलन के पश्चात् सन् १९१९ ई० में संविधान के अठारहवें संशोधन द्वारा अन्ततः यह निषेध लागू किया गया था। इस निषेध का उद्देश्य अमेरिका से शरावखोरों और शरावखानों की समाप्ति था। परन्तु इसके विपरीत इसने सहस्रों अवैध मदिरालय उत्पन्न कर दिये और चोरी से मदिरा वेचने वालों के लिए एक लाभप्रद अपराधी-पेशा खोल दिया। निषेध जिसका व्यापक उल्लंघन होता था नैतिकता का एक ढोंग मात्र था, और वहुत-से अमेरिकी इसकी तुलना हार्डिंग-युग में प्रचलित राजनीतिक भ्रष्टाचार से करने लगे थे।

कटु आलोचना अमेरिकी साहित्य का प्रमुख लक्षण वन गयी। एच० एल० मेन्केन नामक पत्रकार और आलोचक, जो अमेरिकी जीवन के पाखण्ड और भ्रष्टाचार का कटु आलोचक था, विशेष लोकप्रिय हो गया। सम्भवतः कोई भी गम्भीर उपन्यासकार इतने पाठक न आकर्षित कर सका, जितने सिनक्लेयर लुइस ने किये जिसके "मेन स्ट्रीट" तथा "वैविट" जैसे उपन्यासों में अमेरिकी मध्यमवर्गीय जीवन पर किये गये व्यंग्य, राष्ट्रीय चेतना के महत्वपूर्ण चिन्ह वन गये। यह विडम्वनापूर्ण है कि अमेरिकी जीवन की यह आलोचना अमेरिकियों द्वारा ही उस समय की जा रही थी जव राष्ट्र एक उच्च कोटि की व्यापक समृद्धि का अनुभव कर रहा था।

सन् १९२० ई० के दशक में ऐसा प्रतीत होने लगा था कि यह समृद्धि शाश्वत है। सन् १९२९ ई० की शरद में जव शेयर-वाजार गिरने लगा तव भी उच्च पदस्थ आशापूर्ण भविष्यवाणियां करते रहे। परन्तु मन्दी वढ़ती गयी, लाखों पूंजी लगाने वाले अपने जीवनभर की वचत खो वैठे, वाणिज्य-गृहों ने अपने द्वार वन्द कर लिये, कारखाने वन्द हो गये, वैंक दिवालिया हो गये, और लाखों जीविका-रहित लोग निराश होकर काम की खोज में सड़कों पर टहलने लगे। सन् १८७० ई० की भूली-विसरी मन्दी के अतिरिक्त इस प्रकार की और कोई घटना अमेरिका के राष्ट्रीय जीवन में अव तक घटित नहीं हुई थी।

मन्दी के विरुद्ध रूज़वेल्ट का संघर्ष

जव लोग आरम्भिक झटके से संभले और मन्दी का कारण ढूंढ़ने लगे तव उन्होंने सन् १९२० के दशक की ऊपरी समृद्धि के पीछे छिपी उन दूपित प्रवृत्तियों को देखा

जिनकी ओर उनका ध्यान अब तक नहीं गया था। समस्या का मुख्य कारण यह था कि देश के उत्पादन में तथा अमेरिकी जनता द्वारा उसका उपभोग करने की शक्ति में महान अन्तर था। युद्ध-काल में और उसके उपरान्त उत्पादन-प्रणाली में महान नवीनीकरण ने अमेरिकी उद्योग का उत्पादन इतना बढ़ा दिया था कि वह अमेरिकी किसानों और श्रमिकों की क्रय शक्ति के बाहर हो गया था। धनिक और मध्यम वर्गों की बचत, जो समुचित विनियोजन की सम्भावित राशि से कहीं अधिक हो गयी थी, माल की उग्र सट्टेबाजी अथवा वास्तविक भू-सम्पत्ति में लगायी जा रही थी। इसलिए शेयर-बाज़ार का ध्वस्त होना उन अगणित विस्फोटों में से पहला था जिन्होंने सट्टेबाज़ी के जीर्ण ढांचे को धराशायी कर दिया।

सन् १६३२ ई० का राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव-अभियान मुख्यतया भीषण आर्थिक संकट के कारणों और उसके सम्भावित प्रतिकार पर वाद-विवाद था। हर्बर्ट हूवर ने, जिसने दुर्भाग्यवश शेयर-बाज़ार के गिरने के केवल आठ मास पूर्व राष्ट्रपति-भवन (व्हाइट हाउस) में प्रवेश किया था, उद्योग को पुनः संचारित करने का अथक प्रयास किया, परन्तु संघीय सरकार की समुचित भूमिका की परम्परागत धारणा से जकड़ा होने के कारण वह कोई प्रबल कार्रवाई न कर सका। उसका लोकतान्त्रिक प्रतिद्वन्द्वी फ्रैंकलिन डी० रूज़वेल्ट इस संकट के विकास-काल में ही न्यूयॉर्क राज्य के गवर्नर के रूप में लोकप्रिय हो चुका था। उसने यह तर्क रखा कि इस मन्दी के कारण अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था में निहित वे दोष हैं जिन्हें १६२० के दशक में गणतान्त्रिक दल की नीतियों ने और गम्भीर बना दिया है। राष्ट्रपति हूवर ने उत्तर दिया कि अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था मौलिक रूप में ठीक है, परन्तु यह उस विश्वव्यापी मन्दी के प्रभावस्वरूप अस्त-व्यस्त हो गयी है जिसके कारण प्रथम विश्व-युद्ध में देखे जा सकते हैं। इस तर्क के पीछे एक स्पष्ट आशय था। हूवर पुनरुद्धार के लिए प्रधानतया स्वाभाविक प्रक्रिया पर ही भरोसा रखना चाहता था, परन्तु रूज़वेल्ट प्रतिकारार्थ साहसिक प्रयोगों के लिए संघीय सरकार की शक्ति का भी प्रयोग करने को तैयार था। चुनाव के परिणामस्वरूप रूज़वेल्ट की शानदार विजय हुई : उसे २ करोड़ २८ लाख मत प्राप्त हुए जबकि हूवर को केवल १ करोड़ ५७ लाख मिले।

न्यू डील द्वारा सामाजिक सुधारों का प्रारम्भ

नया राष्ट्रपति प्रफुल्ल आत्मविश्वास का एक वातावरण लेकर आया, जिसने शीघ्र ही जनता को उसके झण्डे के नीचे एकत्रित कर दिया। शीघ्र ही न्यू डील के नाम से प्रसिद्ध कई सुधार आरम्भ हो गये। एक प्रकार से यह कहा जा सकता है कि न्यू डील ने संयुक्त राज्य में ऐसे सुधारों का ही समारम्भ किया, जिनसे अंग्रेज, जर्मन और स्कैण्डिनेवियन एक पीढ़ी पहले से ही परिचित थे। इसके अतिरिक्त, न्यू डील अहस्तक्षेप की नीति त्यागने की प्रवृत्ति की उस लम्बी परम्परा की पराकाष्ठा का द्योतक था जो सन् १८८० के दशक में रेल-मार्गों के नियन्त्रण तथा थियोडोर रूज़वेल्ट-विल्सन युग में राज्य तथा राष्ट्रीय सुधार कानूनों की बाढ़ से आरम्भ हुई थी।

न्यू डील की वास्तविक नवीनता उसकी तीव्र गति थी जिससे वे सभी कार्य पूरे हुए जिन्हें पूरा करने में अन्य स्थानों में पीढ़ियां व्यतीत हो गयीं। बहुत-सी सुधार-योजनाएं शीघ्रता में तैयार की गयी थीं और उनके संचालन में ढिलाई बरती गयी थी; कुछ वास्तव में एक-दूसरे की विरोधी भी थीं।

न्यू डील की पूरी अवधि में इसके निर्णय और कार्यान्वयन में तीव्र गति के होते हुए भी सार्वजनिक आलोचना और विचार-विनिमय में न तो कभी कोई व्यवधान डाला गया और न ये रोके गये। वास्तव में, न्यू डील के कारण नागरिकों में व्यक्तिगत रूप से शासन के प्रति अभिरुचि फिर तेज़ी से बढ़ने लगी।

जिस समय रूज़वेल्ट ने राष्ट्रपति के पद की शपथ ली, उस समय राष्ट्र की बैंक-व्यवस्था और ऋण-व्यवस्था पूर्णतया गतिहीन हो चुकी थी। आश्चर्यजनक शीघ्रता के साथ बैंक फिर से खोले गये, और वस्तुओं के मूल्य में वृद्धि करने तथा कर्ज़दारों को कुछ राहत देने के लिए सामान्य मुद्रा-स्फीति की नीति अपनायी गयी। नयी सरकारी एजेन्सियों से उद्योगों और कृषि को ऋण प्राप्त करने की प्रचुर सुविधाएं मिलीं। बचत-बैंक में जमा की गयी ५००० डालर तक की धन-राशियों का बीमा कर दिया गया और बाज़ार में ऋणपत्रों (सिक्योरिटीज़) के विक्रय पर कठोर नियन्त्रण लगा दिया गया।

कृषि में व्यापक सुधार किये गये। एग्रिकल्चरल ऐडजस्टमेण्ट ऐक्ट के पारित होने के तीन वर्ष बाद सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इनके निष्फलीकरण पर कांग्रेस ने एक और प्रभावपूर्ण कृषि-सहायता-अधिनियम पारित किया, जिसके द्वारा सरकार ने उन किसानों को नकद धन देना आरम्भ किया, जो अपनी भूमि के कुछ भाग में भूमि-संरक्षण करने वाली फसलें उगायेंगे अथवा कृषि के दीर्घकालिक उद्देश्यों की पूर्ति में सहयोग देंगे। सन् १९४० ई० तक इस योजना के अन्तर्गत लगभग ६० लाख किसान आर्थिक सहायता पा रहे थे। नये अधिनियम ने आवश्यकता से अधिक फसल पर कर्ज़ देने की, गेहूं का बीमा करने की, और "सदा सामान्य धान्यागार" सुरक्षित रखने के लिए नियोजित संचयन प्रणाली की व्यवस्था की। शीघ्र ही खेती की पैदावार का मूल्य बढ़ने लगा, और कृषकों के लिए आर्थिक स्थिरता सम्भव जान पड़ने लगी।

न्यू डील का दूसरा उद्देश्य काश्तकारों को स्वतन्त्रता दिलाना था। संघीय सरकार ने काश्तकारों के लिए सुविधाजनक शर्तों पर खेत खरीदने के हेतु आर्थिक सहायता देने के लिए कृषि-सुरक्षा-प्रशासन (फ़ार्म सिक्योरिटी ऐडमिनिस्ट्रेशन) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य आर्थिक सहायता द्वारा काश्तकारों के लिए आसान शर्तों पर खेतों का खरीदना और खेतों पर लिये गये ऋण को पूरा कर खेत को रेहन पर लेने वालों को सुविधाएं प्रदान करना था। साथ ही साथ, विदेश-मन्त्री कार्डेल हल आदान-प्रदान के समझौते द्वारा कुछ विदेशी बाजारों को पुनः प्राप्त करने की चेष्टा कर रहा था। इसका उद्देश्य उच्च शुल्क-जनित आर्थिक आत्मनिर्भरता को समाप्त करना था। जून सन् १९३४ ई० के "व्यापार समझौता अधिनियम" (ट्रेड एग्रीमेंट ऐक्ट) के अनुसार हल ने कैनेडा, क्यूबा, फ़ान्स, रूस तथा लगभग अन्य २० देशों से पारस्परिकता के आधार पर अप्रतिबन्धित, अधिकतम सुविधाप्राप्त-राष्ट्र सन्धियां कीं। एक वर्ष के अन्दर



प्रथम विश्व-युद्ध के सैनिक मैनहटन में एक परेड द्वारा १९१८ के युद्ध-विराम का उत्सव मना रहे हैं।

इस आशा से कि अब युद्ध समाप्त हो चुके हैं, अमेरिका के लोग विज्ञान, साहित्य और विश्व के नये सीमान्तों की खोज की ओर मुड़े। परन्तु राष्ट्र के सामने मन्दी, विनाशकारी आंधी-तूफ़ान तथा एक और युद्ध की सम्भावनाएं उमड़ रही थीं।

सन् १९२७। चार्ल्स लिण्डवर्ग नामक एक युवा डाक-विमान-चालक जो प्रथम बार अतलान्तिक समुद्र पार अकेले ही अविराम उड़ान भर कर प्रसिद्ध हुआ।



हवाई डाक-व्यवस्था प्रारम्भ में डांवाडोल थी। १९१८ में उड़ान की कठिनाइयों से (ऊपर विमान-चालक अपनी टाग मे बंधे मानचित्र पर निर्भर था) कइयों की मृत्यु हुई। अगणित संकटों के होते हुए भी निर्भीक रिचर्ड वर्ड ने (पैर सीढ़ी पर) मई १९२६ में उत्तरी ध्रुव के ऊपर प्रथम सफल उड़ान पूरी की।



अर्नेस्ट हेमिंगवे



एच० एल० मेन्केन

इस शताब्दी के लेखकों ने मनुष्य की गहराइयों को जानने में रुचि ली। प्रत्येक ने अपने ढंग से मानव-प्रकृति के सम्बन्ध में प्रश्न उठाया है; कुछ ने उत्तर का संकेत किया है, कुछ ने नहीं। मर्यादा में रुचि रखने के कारण हेमिंगवे ने कठिनाई से दबे लोगों के कार्यकलापों का परीक्षण किया है। स्टाइनबैक और डॉस पैसॉस शोषित श्रमिकों के कष्ट से क्रुद्ध थे। मेन्केन ने प्रान्तीयता की आलोचना की। लुइस ने पाखण्ड पर प्रहार किया। कैथर ने अग्रसरों की मनोवृत्ति का अध्ययन किया, और फिट्जेरल्ड १९२० के दशक का प्रतीक ही बन गया। फ़ॉकनर और नाटककार ओ'नील, दोनों मानव-मानस की खोज कर रहे थे।

जॉन स्टाइनबैक



एफ० स्कॉट फिट्जेरल्ड







जॉन डास पैमॉस

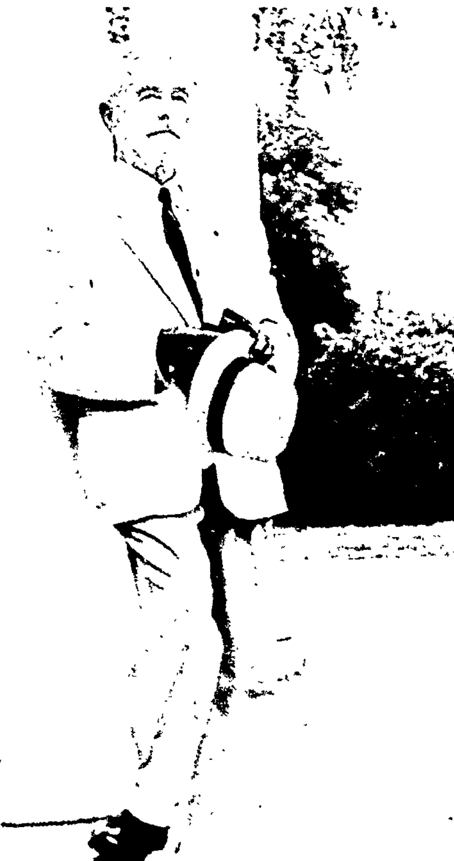
विला कैथर



जीन ओ'नील

विलियम फ़ॉकनर

सिन्क्लेयर लुइस





मन्दी में अपने बचाव में पहले ही से संघर्षरत अनेक किसानों ने उस समय अपना सब कुछ खो दिया जब सन् १६३६ ई० की भयंकर आंधियों ने लोगों को उन्मूलित कर और फ़सलों को उजाड़ कर दक्षिण-पश्चिम क्षेत्र को दफ़ना दिया।



सन् १६३२ ई० के अभियान में फ्रैंकलिन डी० रूजवेल्ट ने ऐसे बहुत-से लोगों को अपनी ओर आकर्षित किया जो उसकी ओर इस आशा से देख रहे थे कि वह मन्दी को उलट देगा। आरम्भ में जिन विधेयकों पर उसने हस्ताक्षर किये उनमें से एक ने टेनेसी घाटी योजना (टेनेसी वैली अथॉरिटी) का निर्माण किया, जिसने टेनेसी नदी को नियन्त्रित कर दक्षिण-पूर्व में समृद्धि का समारम्भ किया।



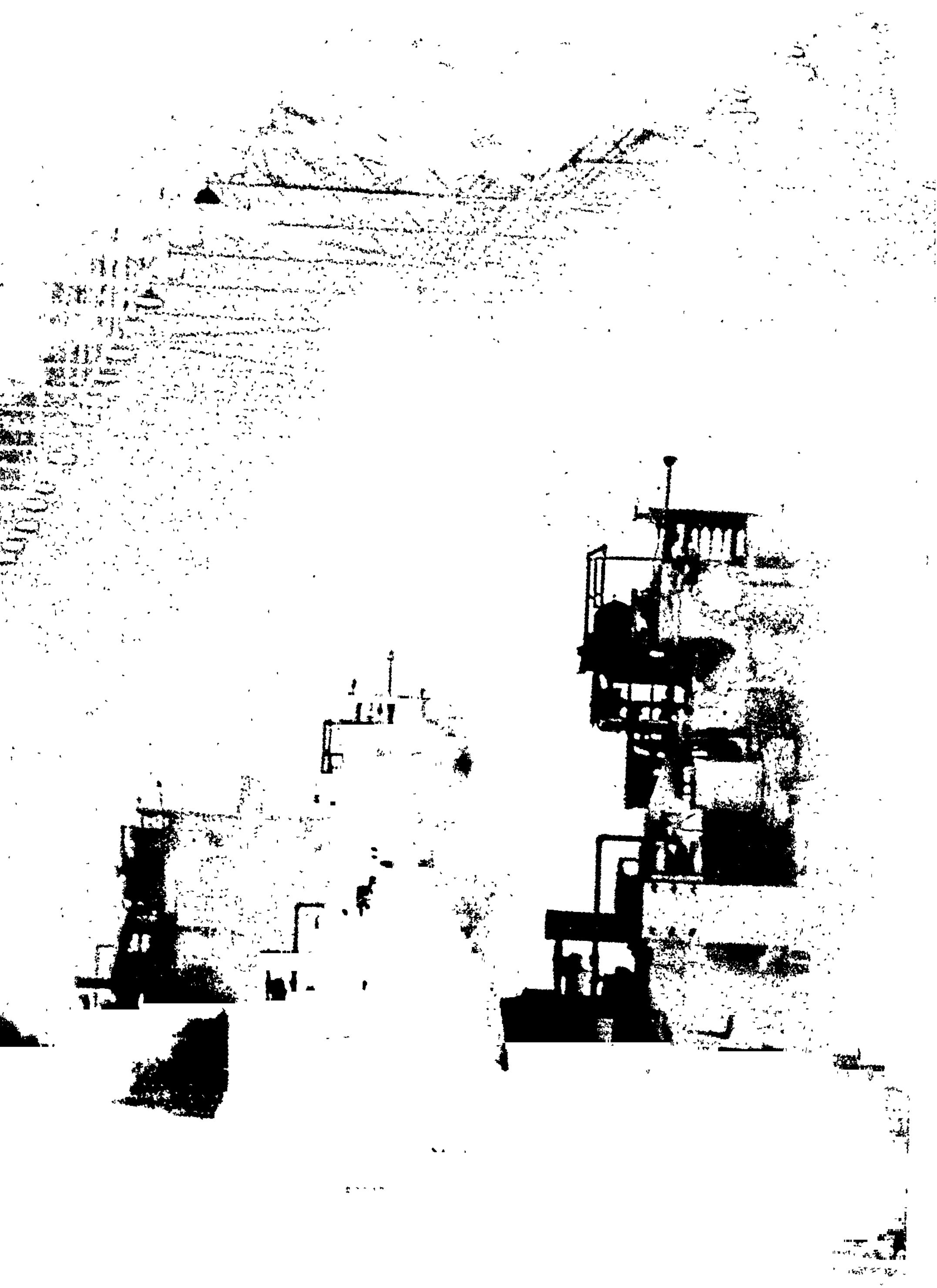
मुक्ति-दिवस के पूर्व-दिन (१९४४), जनरल आइसनहावर उन सैनिकों से मिले जो नॉरमण्डी पर आक्रमण करने ही वाले थे।



उदीयमान सूर्य को अपने में धारण किये प्रतीत होता संयुक्त राष्ट्र मानव की शान्ति की आशा का प्रतीक है।

युद्ध समाप्त होने पर संयुक्त राष्ट्र का जन्म, जीव-विज्ञान तथा कृषि शिल्प-विज्ञान में महान् प्रगति, नये राष्ट्रों का विकास—संसार तथा यह शताब्दी, सभी लोगों के लिए अधिक सुखद भविष्य की आशा से आलोकित प्रतीत होने लगी।

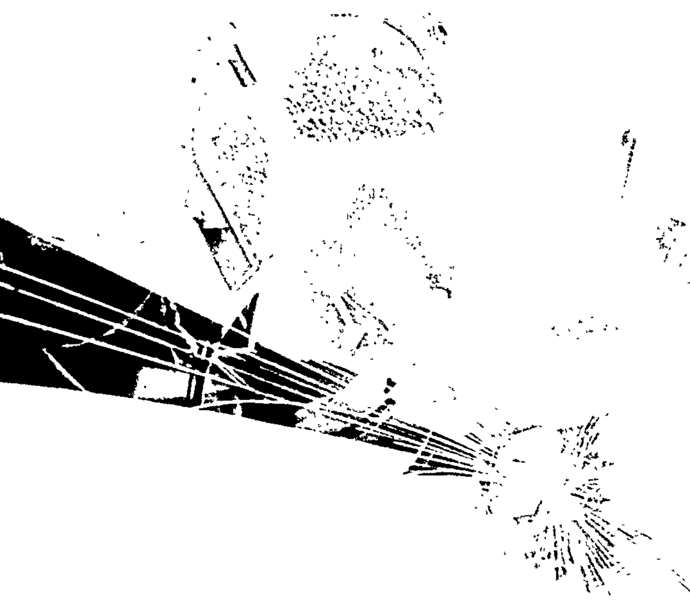
लहराते हुए गेहू के खेतो और पडोस के सुपरबाजारो मे भली-भांति सुस्पष्ट कृषि की प्रचुरता, आवश्यकता से बहुत अधिक उत्पादन की आशंका एक बार फिर उत्पन्न करने लगी। यद्यपि सरकारी योजनाओ ने निरर्थक वृद्धि रोकने में सहायता की, परन्तु अतिरिक्त पैदावार ने बहुत-से दु:ख-सन्तप्त क्षेत्रो को जीवन-दान दिया।



लोहे और इस्पात की खुली भट्ठियों से निकला धुआं और प्रकाश एक ऐन्द्रजालिक वातावरण उपस्थित कर रहे हैं।

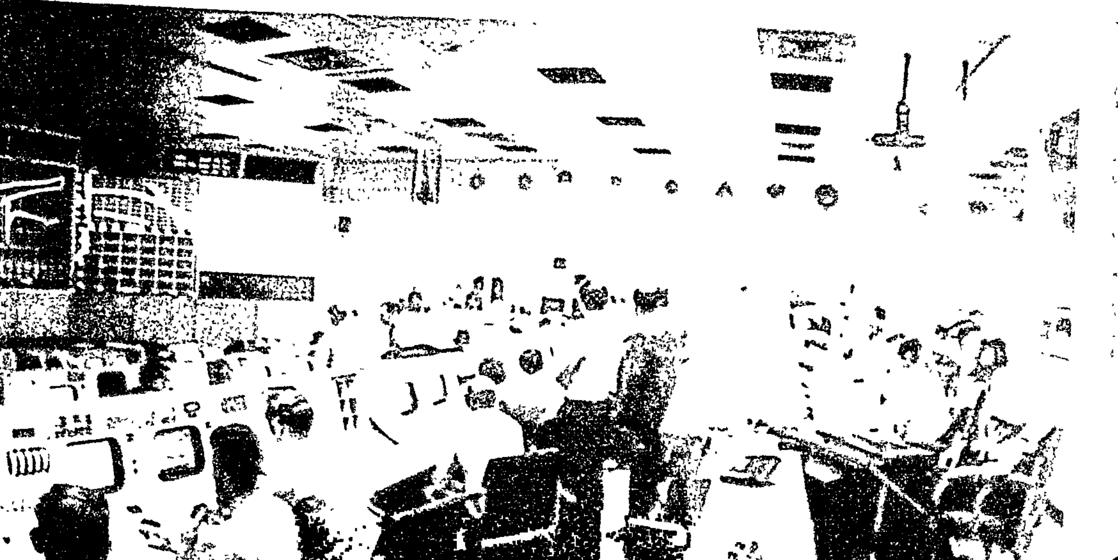


नृत्य की प्राचीन कला में प्रकाश के असाधारण प्रभाव और असाधारण पोशाक का समावेश कर एल्विन निकोलाइ वर्तमान और भविष्य की खोज कर रहा है। १७७६ में, अपेक्षाकृत एक नये प्रकार का थियेटर अतीत को एक संगीत-नाटिका का रूप दे कर स्वतन्त्रता की घोषणा की कहानी प्रस्तुत कर रहा है।





यदि कोई कार्य इस शताब्दी का चरित्र-चित्रण करता है तो वह है वैज्ञानिक अनुसन्धान। इसके परिणाम सर्वत्र स्पष्ट हैं; कई तो अन्तरिक्ष कार्यक्रम की उपज हैं। मनुष्य को चन्द्रमा तक पहुंचाने के लिए कम्प्यूटरों के परिमार्जन से (जैसा कि दाहिनी ओर चित्रित ह्यूस्टन केन्द्र में हो रहा है) चिकित्सा मे भी उनकी उपयोगिता बढ़ गयी है। दाहिनी ओर ऊपर, जैसे-जैसे सर्जन और जीव-भौतिकी विशेषज्ञ मिलकर रुग्ण मस्तिष्क-कोषाणुओ को नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं, उन्हें रोगी की दशा निरन्तर अनुश्रवण द्वारा ज्ञात हो रही है। ऊपर प्रकाश की किरण को लेसर से प्रसरित कर धातु के दो टुकड़े जोडे जा रहे है; दूसरी ऐसी किरण आंख के विकृत पर्दे को सुधार सकती है। बायी ओर की दहकती भट्ठी विभिन्न वस्तुओं को ईधन मे परिवर्तित कर सकती है जिनका प्रयोग प्रयोगात्मक अथवा विद्युत्-उत्पादक परमाणु भट्ठियों में होता है।





जलयात्री 'टेक्टाइट' निवास स्थल में उतर रहा है—जो समुद्र के गर्भ की खोज के लिए ६० दिनों तक उसका घर रहेगा।



प्राचीन स्वप्न साकार करता हुआ, प्राचीन प्रश्नों के उत्तर देता हुआ मानव चांद पर उतर गया है।



आरामदेह यात्रा के लिए ऐसे ही जहाज हैं जैसा एक यहां पर न्यूयार्क के [illegible] फुट ([illegible] कि० मी०) लम्बे वेराजानो नैरोज पुल के नीचे से गुजर रहा है। निश्चित कार्यक्रम से मुक्ति चाहने वाले गतिप्रेमी अमरीकी प्रतिवर्ष ६ [illegible] करोड़ मील (१ अरब ४० करोड़ कि० मी०) मोटर चलाते हैं।





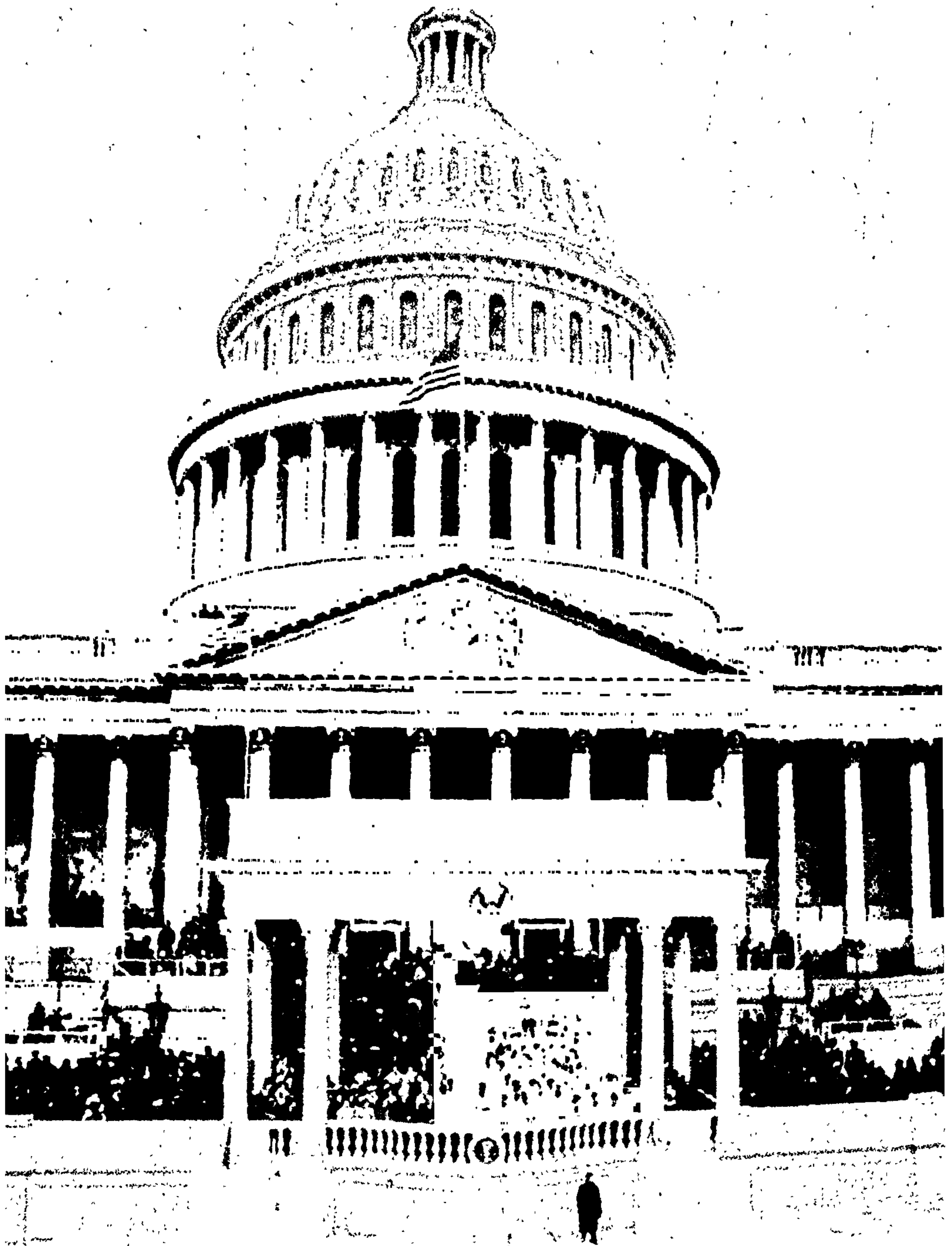
भविष्य का एक स्वप्न-कोलम्बिया (मेरीलैण्ड) है, जिसका विकास बेतरतीब न होकर निश्चित योजना के अनुसार हुआ है।



कोलम्बिया तथा अन्य "नये नगर" ग्रामीण और नागर, दोनों प्रकार के मान देने का प्रयास करते हैं।



"प्रतिबद्धता" एक नया मुहावरा बन गया है, परन्तु १९६० और १९७० के दशकों के नवयुवकों के लिए इसका विशेष अर्थ है। आदर्शवादिता इसका एक अंग है, पर सम्पूर्ण नहीं है। दूसरों के लिए और वातावरण के लिए भी चिन्ता होनी चाहिए, और अपनी मान्यताओं को चुनने और उनके अनुरूप जीवन बिताने का दृढ़ संकल्प होना चाहिए। बहुधा इसका अर्थ होता है, परम्पराओं को नये ढंग से देखना, कभी-कभी रूढ़ि-मुक्त व्यवहार (कल की परम्परा?), लगभग सदैव चिन्ता की अभिव्यक्ति। सेण्ट्रल पार्क में युवाओं द्वारा प्रारम्भ "प्रीति-सम्मेलन" (लव-इन) अब जीवन के कायाकल्प के लिए सार्वजनिक वार्षिक वसन्तोत्सव बन गया है। अधिक व्यावहारिक रूप में बायीं ओर, "विस्टा" स्वयं-सेवक एक जीविका-हीन व्यक्ति को यान्त्रिक कौशल सिखा रहा है। दाहिनी ओर, ऊपर उपनगरीय अधेड़ और युवा नगर-निवासियों के साथ सफाई के कार्यक्रम में जुटे हैं। नीचे की ओर 'पीस कोर' का सदस्य बोट्सवाना में विधिवत विज्ञान की शिक्षा दे रहा है।



रिचर्ड निक्सन का उद्घाटन-भाषण : "मैं अपने पद को . . .शान्ति के लिए समर्पित कर दूंगा।"

अमेरिकी व्यापार की पर्याप्त उन्नति हुई, और सन् १९३९ ई० तक खेतों की आय जो सात वर्ष पहले थी उससे दुगुनी से भी अधिक हो गयी।

उद्योग के क्षेत्र में न्यू डील का कार्यक्रम रूज़वेल्ट-शासन के आरम्भिक वर्षों में प्रायोगिक अवस्था में था। सन् १९३३ ई० में "नेशनल रिकवरी ऐडमिनिस्ट्रेशन" (एन. आर. ए.) (राष्ट्रीय समुत्थान व्यवस्था) की स्थापना की गयी, जो प्रधानतया इस विचार पर आधारित थी कि उत्पादन सीमित करके और ऊंचे मूल्य निर्धारित करके समस्या सुलझायी जा सकती है; परन्तु मई सन् १९३५ ई० में एन. आर. ए. के अवैधानिक घोषित हो जाने के पहले ही इसे बहुत-से लोग असफल समझने लगे थे। इस समय तक अन्य नीतियां समुत्थान को प्रोत्साहित कर रही थीं और प्रशासन ने शीघ्र यह कहना आरम्भ कर दिया था कि व्यापार के कुछ क्षेत्रों में जो मूल्य लागू किये गये हैं वे राष्ट्रीय अर्थ-व्यवस्था पर गम्भीर अपव्यय हैं और समुत्थान के मार्ग में बाधक हैं।

जैसे-जैसे पुनस्संस्थापन की प्रगति बढ़ती गयी, संघीय शासन ने जीविका-विहीन लोगों की सहायता के लिए, सार्वजनिक निर्माण के लिए, और राष्ट्रीय साधनों के संरक्षण के लिए लाखों डालर खर्च किये। "रिक्तता को भरने वाले" इन व्ययों ने देश में अमेरिकी उद्योग के माल के लिए नयी मांग उत्पन्न की।

न्यू डील के ही समय में संगठित श्रमिकों ने जितना लाभ उठाया उतना अमेरिकी इतिहास में किसी समय नहीं उठाया था। नेशनल रिकवरी ऐडमिनिस्ट्रेशन ऐक्ट की धारा ७ (अ) के अनुसार श्रमिकों का सामूहिक समझौते का अधिकार सुरक्षित कर दिया गया था, जुलाई सन् १९३५ ई० में रद्द एन०आर०ए० की श्रमिकों से सम्बन्धित धाराओं के स्थान पर कांग्रेस ने राष्ट्रीय श्रमिक-सम्बन्ध-अधिनियम (नेशनल लेबर रिलेशन्स ऐक्ट) पारित किया, जिसने सामूहिक समझौतों की देख-रेख करने, चुनाव कराने, और श्रमिकों को ऐसे संगठन चुनने का अधिकार दिलाने के लिए जो मालिकों से समझौता करते समय उनका प्रतिनिधित्व कर सकें, एक श्रमिक-मण्डल की स्थापना की।

श्रमिक-संगठनों में भी बड़ी प्रगति हुई। अमेरिकी श्रमिक-संघ (अमेरिका फ़ेडरेशन ऑव लेबर) शिल्प-संघवाद के सिद्धान्तों में विश्वास के बावजूद असंगठितों को संगठित करने में बहुत सुस्त था, अत: कुछ बड़े असन्तुष्ट श्रमिक-संघों ने अलग होकर औद्योगिक संगठन-कांग्रेस (कांग्रेस आव इण्डस्ट्रियल ऑरगैनिजेशन : सी० आई० ओ०) स्थापित की। सी० आई० ओ० के सफल संगठन-प्रयास ने, विशेष कर मोटरों और इस्पात जैसे मुख्य उद्योगों में ए० एफ० एल० को प्रतिस्पर्द्धी प्रक्रिया के लिए प्रेरित किया। जबकि सन् १९२९ ई० में ४० लाख संगठित श्रमिक थे, सन् १९३९ ई० में वे १ करोड़ १० लाख, और सन् १९४८ ई० में १ करोड़ ६० लाख हो गये।

संगठन से उनमें समान राजनीतिक हित की भावना बढ़ने लगी, और श्रमिकों की शक्ति केवल उद्योग में ही नहीं, राजनीति में भी बढ़ने लगी। इस शक्ति का प्रयोग अधिकतर दो प्रमुख दलों के ढांचे के अन्तर्गत ही किया गया, और यद्यपि संघों का सहयोग गणतन्त्रात्मक दल की अपेक्षा लोकतान्त्रिक दल को अधिक मिला, परन्तु कोई स्वतन्त्र श्रमिक दल विकसित न हो सका।

सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था

वृद्धावस्था में बेरोजगारी और परनिर्भरता का भय, जो बहुत दिनों से जनता में चर्चा का विषय था, सन् १९३५ ई० में सामाजिक सुरक्षा अधिनियम (सोशल सिक्योरिटी ऐक्ट) पारित कराने में सहायक हुआ। इसने कई प्रकार के श्रमिकों को ६५ वर्ष की अवस्था में एक साधारण सेवा-निवृत्ति भत्ते का आश्वासन दिया। इसके लिए श्रमिकों और मालिकों के चन्दे से एक बीमा-कोष स्थापित किया गया। एक अनिवार्य संघीय वेतन-कर द्वारा एकत्रित निधि से सभी राज्यों को अपने राज्य के सभी अवस्था के सक्रिय श्रमिकों को बेरोज़गारी का हर्जाना देना पड़ता था। सन् १९३८ ई० तक सभी राज्यों में किसी-न-किसी रूप में बेरोज़गारी का बीमा आरम्भ हो गया।

सन् १९३० ई० दशक में बार-बार अकाल पड़ने के कारण एक बहुप्रयोजन बाढ़-नियन्त्रण विधेयक (ऑम्नीबस फ़्लड कण्ट्रोल बिल) पारित किया गया, जिसके अन्तर्गत कई बड़े-बड़े जल कुण्ड तथा विद्युत उत्पन्न करने वाले बांध और सहस्त्रों छोटे बांध बनाये गये। भूमि-क्षरण को (विशेष कर मध्य-पश्चिम के मैदानों में जहां राष्ट्र के प्रचुर प्राकृतिक साधनों का अनुचित प्रयोग होता था) रोकने के लिए भूमि-संरक्षण का एक विशाल कार्यक्रम आरम्भ किया गया, जिसमें वृक्षारोपण भी सम्मिलित था। अन्य प्रमुख कार्यों में नदियों को गन्दगी से बचाना, मछलियों, शिकार के जानवरों, और पक्षियों के लिए स्थान सुरक्षित करना, कोयले, पेट्रोलियम, स्लेट के पत्थर, गैस, सोडा और हीलियम की खानों का संरक्षण, कुछ चरागाहों की भूमि को गृह-निर्माण के लिए निषिद्ध करना, तथा राष्ट्रीय जंगलों में अतुल वृद्धि करना था।

इन सभी कार्यों में, भविष्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण सम्भवतः टेनेसी घाटी योजना (टेनेसी वैली अथॉरिटी–टी० वी० ए०) थी, जो सामाजिक और आर्थिक परीक्षणों के लिए एक बहुत बड़ी प्रयोगशाला बन गयी। टेनेसी नदी के किनारे तीन राज्यों में तीन प्रमुख बांध बनाने के अतिरिक्त कई सहायक बांध बनाये गये थे। इनका प्रयोग केवल जलीय-यातायात, बाढ़-नियन्त्रण, और नाइट्रेट के उत्पादन के लिए ही नहीं, बल्कि विद्युत-उत्पादन के लिए भी किया जाता था। सरकार ने लगभग ८००० किलोमीटर लम्बी बिजली की लाइन बनायी और बिजली का उपयोग बढ़ाने के लिये आस-पास के लोगों को सस्ते दर से बेची। टी० वी० ए० की एक शाखा ने ग्रामों में बिजली के प्रसार के लिए धन दिया। टी० वी० ए० ने अल्प लाभ वाली भूमि को खेती से हटा लिया, किसानों की खेती के लिए नयी भूमि प्राप्त करने में सहायता की, खेती में विशेष कर फासफेट खाद के प्रयोग के लिए, परीक्षण किये, और सार्वजनिक स्वास्थ्य तथा मनोरंजन की सुविधाएं बढ़ा दीं।

अन्य न्यू डील-कार्यक्रम

न्यू डील के प्रयास, केवल गणतान्त्रिक दल की ही नहीं बल्कि अक्सर लोकतान्त्रिक दल की भी कठोर आलोचना के बावजूद, सामान्यतः चलते रहे। फिर भी सन् १९३६ ई०

के चुनाव में रूजवेल्ट अपने गणतान्त्रिक प्रतिद्वन्द्वी की तुलना में (इस वार कैन्सस का गवर्नर अल्फ्रेड ई० लैण्डन उम्मीदवार था) सन् १९३२ ई० की अपेक्षा अधिक निर्णायक रूप से विजयी हुआ।

सन् १९३२ ई० से १९३८ ई० तक व्यापक सार्वजनिक चर्चा इस वात पर होती रही कि राष्ट्र के राजनीतिक तथा आर्थिक जीवन में न्यू-डील की नीतियों का क्या अर्थ है। यह स्पष्ट हो गया कि शासन के सम्वन्ध में अमेरिकी धारणाएं वदल रही थीं, और जनता के कल्याण के लिए सरकार के अधिकाधिक उत्तरदायित्व का विचार अधिक मान्य होता जा रहा था। न्यू डील के कुछ आलोचकों ने यह तर्क रखा कि सरकारी कर्तव्यों का अनिश्चित प्रसार अन्त में जनता की सारी स्वतन्त्रताओं को समाप्त कर देगा। पर राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने इस वात पर वल दिया कि आर्थिक कल्याण वाले कार्यों से स्वतन्त्रता और प्रजातन्त्र अधिक शक्तिशाली वनेंगे।

सन् १९३८ ई० में एक रेडियो-भाषण में रूज़वेल्ट ने अमेरिकी जनता को स्मरण दिलाया : "प्रजातन्त्र अन्य कई वड़े राष्ट्रों से इसलिए नहीं लुप्त हो गया है कि उन राष्ट्रों की जनता प्रजातन्त्र पसन्द नहीं करती, वल्कि इसलिए कि लोग वेरोज़गारी और अरक्षा से थक गये थे, सरकार में योग्य नेतृत्व के अभाव के कारण सरकारी कमज़ोरी और अस्त-व्यस्तता के सम्मुख असहाय वैठे, अपने भूखे वच्चों को देखते-देखते वे थक गये थे। अन्त में, घोर नैराश्य में उन्होंने अपनी स्वतन्त्रता की वलि देने का निर्णय इस आशा से किया कि उन्हें कुछ खाने को मिलेगा। हम अमेरिका में यह जानते हैं कि हमारी प्रजा-तान्त्रिक संस्थाएं सुरक्षित रखी जा सकती हैं और उनसे काम लिया जा सकता है। परन्तु उन्हें सुरक्षित रखने के लिए. . . हमें यह सिद्ध करना होगा कि प्रजातान्त्रिक सरकार का वास्तविक संचालन जनता की सुरक्षा की व्यवस्था के वरावर है—अमेरिका के लोग किसी भी मूल्य पर अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा करने में एकमत हैं, और सुरक्षा की पहली पंक्ति आर्थिक निश्चिन्तता वनाये रखने में है।"

रूज़वेल्ट का दूसरा शासन-काल अभी भली-भांति जम भी न पाया था कि उसका आन्तरिक कार्यक्रम एक नये संकट से आच्छादित हो गया, जिसकी ओर सामान्य अमेरिकी ने ध्यान ही नहीं दिया था। यह संकट जापान, इटली, और जर्मनी के सर्वसत्तात्मक शासनों की प्रसारवादी योजना से उत्पन्न हो गया था। सन् १९३० ई० के दशक के आरम्भ में इनमें से पहले राष्ट्र ने प्रहार किया। सन् १९३१ ई० में जापान ने मंचूरिया पर आक्रमण किया और चीनी प्रतिरोध को कुचल दिया, एक वर्ष पश्चात उसने मंचूको का कठपुतली राज्य स्थापित किया। फ़ासिस्टवाद से अभिभूत हो इटली ने लीबिया में अपनी सीमाएं वढ़ा लीं और सन् १९३५-३६ ई० में इथिओपिया पर अपना प्रभुत्व जमा लिया। जर्मनी ने, जहां अडोल्फ़ हिटलर ने अपने राष्ट्रीय समाजवादी दल (नेशनल सोशलिस्ट पार्टी) को संगठित कर लिया था और शासन अपने हाथ में कर लिया था, राइनलैण्ड पर पुनः अधिकार कर लिया, और वड़े पैमाने पर पुनःशस्त्रीकरण आरम्भ कर दिया। इस प्रकार जर्मनी में अधिनायकशाही की जड़ें जमीं और दूसरे विश्वयुद्ध की भूमिका तैयार हो गयी।

अधिनायकतन्त्र द्वारा द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रवर्त्तन

जैसे-जैसे सर्वसत्तावाद की वास्तविक प्रकृति स्पष्ट होने लगी, और जर्मनी, इटली तथा जापान अपने आक्रमण बढ़ाते गये, अमेरिका की आशंका रोष में परिवर्तित होने लगी। हिटलर के आस्ट्रिया को जर्मन राज्य में मिला लेने के पश्चात् सन् १९३८ ई० में चेकोस्लोवाकिया के सूडेटन प्रदेश की उसकी मांग ने यूरोप में किसी भी क्षण युद्ध को सम्भव बना दिया था। प्रथम विश्वयुद्ध में प्रजातन्त्र के लिए किये गये प्रयासों की असफलता के पश्चात् अमेरिका के लोगों का भ्रम दूर हो गया, और उन्होंने घोषणा की कि कोई भी युद्धरत शक्ति किसी भी परिस्थिति में उनसे सहायता की आशा न करे। सन् १९३५ से १९३७ ई० तक खण्डश: पारित तटस्थता के कानून ने किसी भी युद्धरत देश को उधार देना या उससे व्यापार करना वर्जित कर दिया। उद्देश्य यह था कि किसी भी मूल्य पर गैर-अमेरिकी युद्ध में संयुक्त राज्य का उलझना रोका जाये।

राष्ट्रपति रूज़वेल्ट और विदेश-मन्त्री हल, दोनों ने आरम्भ से ही ऐसे कानून का विरोध किया। राष्ट्रपति ने, जिसने अमेरिकी नौसेना को सशक्त बनाने के लिए बहुत कुछ किया था, मंचूको के कठपुतली राज्य को मान्यता देने से इनकार कर दिया। हल के साथ उसने अच्छी पड़ोसी-नीति द्वारा पश्चिमी गोलार्द्ध के राष्ट्रों में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण प्रगति की थी। जब हल की पारस्परिक व्यापार-सन्धियां सन् १९३५ ई० में पुन: पुष्ट की गयीं, तो संयुक्त राज्य ने छ: लैटिन अमेरिकी राष्ट्रों से सन्धि की और उन पर हस्ताक्षर करने वालों को यह वचन दिया कि बलपूर्वक किये गये किसी भी क्षेत्रीय परिवर्तन को मान्यता नहीं दी जायेगी।

जब हिलटर पोलैण्ड, डेनमार्क, नार्वे, हालैण्ड, बेल्जियम और फ्रान्स के विरुद्ध गरजा, तो अमेरिकी मनोवृत्ति और कठोर हो गयी। यद्यपि आरम्भ में अमेरिका के लोगों का विचार यूरोपीय संघर्ष से दूर रहने का था, परन्तु अन्त में घटनाओं ने यह धारणा बनाने को विवश कर दिया कि शक्तियों के जिस संगठन ने यूरोप की सुरक्षा को खतरे में डाला है, उसने संयुक्त राज्य की सुरक्षा को भी ख़तरे में डाल दिया है।

फ्रान्स के पतन ने नात्सी सैन्य संगठन की शक्ति का प्रदर्शन कर इस धारणा को सुदृढ़ कर दिया। जब सन् १९४० ई० की गर्मियों में ब्रिटेन पर हवाई आक्रमण आरम्भ हुए, तब शायद ही कोई अमेरिकी अपने विचारों में तटस्थ बचा रह सका हो। संयुक्त राज्य और कैनेडा ने मिल कर एक संयुक्त सुरक्षा मण्डल (म्यूचुअल बोर्ड ऑव डिफेंस) बनाया, और लैटिन अमेरिकी गणतन्त्रों के साथ मिल कर अमेरिका ने सुरक्षा की इस व्यवस्था को पश्चिमी गोलार्द्ध में प्रजातान्त्रिक राष्ट्रों के क्षेत्रों तक विस्तीर्ण किया। बढ़ते हुए संकट का सामना करने के लिए कांग्रेस ने पुन:शस्त्रीकरण के लिए अपार धन दिया, और सितम्बर सन् १९४० ई० में संयुक्त राज्य के इतिहास में प्रथम शान्तिकालिक अनिवार्य भर्ती का विधेयक पारित हुआ।

सन् १९४० ई० के राष्ट्रपति के चुनाव-अभियान ने अत्यधिक अमेरिकी एकता का परिचय दिया। रूज़वेल्ट के प्रतिद्वन्द्वी वेण्डेल विल्की ने राष्ट्रपति की ही विदेश नीति

का समर्थन किया और वह रूज़वेल्ट की गृह-नीति के अधिकांश से सहमत था। इसलिए उसके पास कोई गम्भीर प्रश्न नहीं था। अतः नवम्बर के निर्वाचन में रूज़वेल्ट को पुनः बहुमत प्राप्त हुआ। अमेरिकी इतिहास में पहली बार एक राष्ट्रपति तृतीय शासन-सत्र के लिए निर्वाचित हुआ था।

जिन दिनों अमेरिका के अधिकांश लोग यूरोपीय युद्ध की प्रगति का अवलोकन कर रहे थे, एशिया में तनाव बढ़ रहा था। अपने सामरिक महत्व के स्थानों को सुधारने के इस अवसर से लाभ उठाकर जापान ने एक "नयी व्यवस्था" की घोषणा की, जिसमें उसने सभी प्रशान्त महासागरीय प्रदेशों पर अपने आधिपत्य की मांग की। प्रतिरोध में असहाय ब्रिटेन शंघाई छोड़ कर और बर्मा रोड को अस्थायी रूप से बन्द कर पीछे हट गया। सन् १९४० ई० की गर्मियों में जापान ने निर्बल विशी सरकार से फ्रेंच इंडोचाइना-स्थित हवाई अड्डों के प्रयोग का अधिकार ले लिया। जब जापान सितम्बर में रोम-बर्लिन धुरी में सम्मिलित हो गया, तब इसके विरोध में अमेरिका ने जापान को रद्दी लोहे के निर्यात पर निषेध लगा दिया।

संयुक्त राज्य का युद्ध में प्रवेश

सन् १९४० ई० तक ऐसा लगा कि जापानी दक्षिण की ओर ब्रिटिश मलाया तथा डच द्वीप-समूह के तेल, टिन, और रबड़ की तरफ मुड़ जायेंगे। जुलाई सन् १९४१ ई० में जब विशी सरकार ने जापानियों को शेष इण्डोचाइना पर भी अधिकार करने की स्वीकृति दे दी, तब संयुक्त राज्य ने जापानी परिसम्पत्ति को अनुपलभ्य बना दिया। १९ नवम्बर को जब जनरल तोजो की सरकार जापान में पदासीन हो गयी, तो उसके पश्चात् साबूरो कुरुसू नामक एक विशेष राजदूत संयुक्त राज्य पहुंचा और उसने घोषित किया कि वह शान्तिपूर्ण समझौता चाहता है। ६ दिसम्बर को राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने उत्तरस्वरूप जापान के सम्राट से शान्ति के लिए व्यक्तिगत रूप से अनुरोध किया। ७ दिसम्बर के प्रातः काल जापान का उत्तर अमेरिकी बेड़े पर और पर्लहार्बर की सुरक्षात्मक व्यवस्था के ऊपर बमवर्षा के रूप में मिला।

जब अमेरिकी रेडियो ने हवाई, मिडवे, वेक, और गुआम पर जापान के आक्रमणों का विस्तृत विवरण देना आरम्भ किया, तब राष्ट्रपति रूज़वेल्ट के शब्दों में इस "अकारण और कायरतापूर्ण" आक्रमण के प्रति सन्दिग्धता क्रोध में परिवर्तित हो गयी। ८ दिसम्बर को कांग्रेस ने जापान से युद्ध घोषित कर दिया, तीन दिन पश्चात् इटली और जर्मनी ने संयुक्त राज्य के विरुद्ध युद्ध घोषित कर दिया।

९ दिसम्बर को जब राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने अमेरिकी जनता को अपना युद्ध-सन्देश दिया, तो उसे स्मरण दिलाया : "हमारा वास्तविक उद्देश्य बीभत्स युद्ध-भूमि से बहुत ऊंचा और बहुत आगे है। जब हम शक्ति का प्रयोग करते हैं, जैसा कि इस समय हमें करना है, हम दृढ़ संकल्प होते हैं कि इस शक्ति का प्रयोग तात्कालिक बुराई के विरुद्ध और परम कल्याण के लिए होना चाहिए। हम अमेरिकी लोग विनाशक नहीं हैं, निर्माण-कर्ता हैं।"

राष्ट्र अपनी जन-शक्ति और अपनी समस्त औद्योगिक सामर्थ्य को संगठित करने में तेजी से जुट गया। ६ जनवरी सन् १९४२ ई० को राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने स्तब्ध कर देने वाले उत्पादन-लक्ष्यों की घोषणा की—एक ही वर्ष में उसने ६०,००० वायुयानों, ४५,००० टैंकों, २०,००० विमान-वेधी तोपों, और १८० लाख टन भार के व्यापारिक जहाजों की मांग की। राष्ट्र के सारे कार्य-कलाप—कृषि, उद्योग, खनन, व्यापार, श्रम, पूंजी-विनियोग संचरण, और यहां तक कि शिक्षा और सांस्कृतिक कार्य भी—किसी न किसी रूप में नये और व्यापक नियन्त्रण के अन्तर्गत आ गये। असाधारण परिमाण में धन एकत्र किया गया, बड़े-बड़े नये उद्योग स्थापित किये गये; आश्चर्यजनक नयी कार्य-प्रणालियां विकसित की गयीं, (जैसे जहाज़ों और वायुयानों के बड़ी संख्या में निर्माण में); जनसंख्या का बड़े परिमाण में स्थानान्तरण हुआ। अनिवार्य भर्ती के कई अधिनियमों के द्वारा संयुक्त राज्य के सशस्त्र सैनिकों की संख्या सब मिला कर १ करोड़ ५१ लाख हो गयी। सन् १९४३ ई० के अन्त तक, लगभग साढ़े छः करोड़ स्त्री-पुरुष या तो सैनिक बन चुके थे अथवा युद्ध से सम्बन्धित कार्यों में संलग्न थे।

संयुक्त राज्य के युद्ध में उतर पड़ने के कुछ ही समय पश्चात् पश्चिमी मित्र राष्ट्रों ने निश्चित किया कि उनका प्रमुख सैनिक प्रयास यूरोप में ही केन्द्रित रहेगा, जहां शत्रु की प्रमुख शक्ति थी, और प्रशान्त महासागर का क्षेत्र गौण समझा जायेगा। फिर भी, सन् १९४२ ई० में प्रशान्त महासागर में—जहां नौसेना ने युद्धपोत से उड़ान भरने वाले हवाई जहाज रखे थे—अमेरिकियों की कुछ महत्वपूर्ण आरम्भिक विजयें हुई।

मई सन् १९४२ ई० में कोरल समुद्र के युद्ध में जापान की गहरी क्षति ने जापानी नौसेना को विवश किया कि वह आस्ट्रेलिया पर आक्रमण करने का विचार त्याग दे, और जून में मिडवे द्वीप के पास के जापानी बेड़े पर हवाई आक्रमण कर उन्हें भारी क्षति पहुंचायी। अगस्त में स्थल-सेना और नौसेना के सम्मिलित प्रयास से अमेरिकी ग्वाडल-कैनाल पहुंचे और नौसेना की एक अन्य विजय बिस्मार्क समुद्र के युद्ध में हुई। जहाज़ बनाने वाले कारखानों के तीव्र उत्पादन के परिणामस्वरूप नौसेना की जो अविश्वसनीय प्रगति हुई उससे भविष्य में भी विजय की आशा बंधी।

मित्र राष्ट्रों ने धुरी राष्ट्रों को पराजित किया

इस बीच सामरिक आवश्यकता की वस्तुएं यूरोपीय युद्ध-क्षेत्र में पहुंचने लगीं। सन् १९४२ ई० की बसन्त और ग्रीष्म ऋतु में मिस्र के विरुद्ध जर्मनी की प्रगति को ब्रिटिश सेनाओं ने रोक दिया और जर्मन जनरल अर्विन रोमेल को पीछे त्रिपोली में ढकेल कर स्वेज पर आक्रमण का भय समाप्त कर दिया।

७ नवम्बर सन् १९४२ ई० को एक अमेरिकी सैनिक दल फ्रान्सीसी उत्तरी अफ्रीका में उतरा, और घोर युद्ध के पश्चात् उसने इटली और जर्मनी की सेनाओं को बुरी तरह परास्त किया। ३ लाख ४९ हजार सैनिक बन्दी बनाये गये, और सन् १९४३ ई० की मध्य गर्मी तक भूमध्यसागर का दक्षिणी समुद्र तट फ़ासिस्ट सैनिकों से मुक्त कर दिया गया। सितम्बर में मार्शल बदोग्लियो के नेतृत्व में स्थापित नयी इटैलियन सरकार ने

एक विराम-सन्धि पर हस्ताक्षर किये और अक्टूबर में इटली ने जर्मनी पर युद्ध की घोषणा की। जिस समय इटली में घोर युद्ध हो रहे थे, मित्र-राष्ट्रों ने जर्मन रेल-मार्गों, कारखानों, और हथियारों के अवस्थानों पर विनाशकारी हवाई आक्रमण किये। महाद्वीप के काफी भीतर रोमानिया के प्लोयेस्टी नगर में स्थित जर्मनी के तेल-केन्द्र पर भी आक्रमण हुआ।

सन् १९४३ ई० के अन्त में रण-नीति पर काफ़ी वाद-विवाद के पश्चात् मित्र राष्ट्रों ने एक पश्चिमी मोरचा खोल दिया ताकि जर्मन रूसी क्षेत्र से उतने से अधिक सैनिक हटाने को विवश हो जायें जितने इटली में न लगाये जा सकें। जनरल ड्वाइट डी० आइसनहॉवर सर्वोच्च सेनाध्यक्ष नियुक्त हुआ। गम्भीर तैयारी के पश्चात् ६ जून को जिस समय सोवियत प्रत्याक्रमण हो रहा था, अमेरिकी और ब्रिटिश आक्रमणकारी सेना की प्रथम टुकड़ी एक बहुत अच्छी वायुसेना की सुरक्षा में नॉरमण्डी के समुद्र-तट पर उतरी। समुद्र-तट की किलेबन्दी पर अधिकार हो गया, और सैनिक पहुंचाये गये, और उन्होंने आगे बढ़कर संसृत-प्रचलन द्वारा जर्मन सैनिकों की कई टुकड़ियों को पकड़ लिया। तब मित्र राष्ट्रों की सेनाएं फ्रान्स से होकर जर्मनी में प्रवेश करने लगीं और उन्होंने सबसे दृढ़ सुरक्षा-पंक्ति को भेदना आरम्भ किया।

२५ अगस्त को पैरिस पर पुन: अधिकार कर लिया गया। जर्मनी के अग्रिम मोर्चों पर मित्र राष्ट्रों को दृढ़ प्रत्याक्रमणों द्वारा रोका गया, परन्तु फरवरी और मार्च सन् १९४५ ई० में पश्चिम से जर्मनी में सेनाएं प्रवेश कर रही थीं, और पूर्व में रूसियों के सामने जर्मन सेनाएं लड़खड़ा रही थीं। ८ मई को तृतीय राइख की बची-खुची सभी स्थल, जल. और वायु सेनाओं ने आत्मसमर्पण कर दिया।

इस बीच प्रशान्त महासागर में अमेरिकी सेनाओं ने विशेष प्रगति की थी। जैसे-जैसे अमेरिकी और आस्ट्रेलियाई सैनिक उत्तर की ओर लड़ते हुए सालोमन्स, न्यू ब्रिटेन, न्यूगिनी और बोगेनविल नामक द्वीपों पर अधिकार करते हुए बढ़ रहे थे, वैसे-वैसे बढ़ती हुई नौसेना जापान की रसद पहुंचाने वाली पंक्ति को काटती जा रही थी।

युद्ध की समाप्ति

अक्टूबर सन् १९४४ ई० में फ़िलीपीन में नौसेना की एक विजय हुई। इवोजिमा और ओकिनावा में जो युद्ध हुए उनसे ऐसा आभास हुआ कि यद्यपि जापान की स्थिति निराशाजनक है, फिर भी जापान काफ़ी समय तक विरोध करेगा। अगस्त में, नागासाकी और हिरोशिमा पर अणु-बम गिराये जाने के पश्चात्, युद्ध एकाएक समाप्त कर दिया गया। जापान ने २ सितम्बर सन् १९४५ ई० को औपचारिक रूप से आत्मसमर्पण कर दिया।

मित्र राष्ट्रों के सैन्य प्रयास के साथ-साथ युद्ध के राजनीतिक उद्देश्यों पर विचार करने के लिए कई महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय सभाएं भी हुईं। इन में से प्रथम राष्ट्रपति रूज़वेल्ट और प्रधान-मंत्री विन्स्टन चर्चिल के बीच अगस्त सन् १९४१ ई० में उस समय हुई जब संयुक्त राज्य संघर्ष में सक्रिय भाग नहीं ले रहा था और ब्रिटेन तथा रूस की सामरिक अवस्था निराशाजनक थी।

न्यूफ़ाउण्डलैण्ड के पास रूज़वेल्ट और चर्चिल ने युद्ध-पोतों पर मिल कर अपने उद्देश्यों का एक विवरण—अतलान्तिक घोषणापत्र—निकाला, जिसमें उन्होंने अपने इन उद्देश्यों की पुष्टि की : क्षेत्रीय विवर्धन का निषेध; सम्वद्ध जनता की स्वीकृति के विना कोई क्षेत्रीय परिवर्तन न हो; सव लोगों को अपनी इच्छानुसार अपनी सरकार का स्वरूप निर्धारित करने का अधिकार हो; जिनसे स्व-शासन छीन लिया गया है उन्हें उसकी वापसी; सभी राष्ट्रों में आपस में आर्थिक सहयोग; युद्ध से, भय से, और अभावों से सभी लोगों को मुक्ति; समुद्रों की स्वतन्त्रता; और अन्तर्राष्ट्रीय नीति में वल प्रयोग का त्याग।

जनवरी सन् १९४३ ई० में कासाब्लांका में एक आंग्ल-अमेरिकी सम्मेलन ने यह निश्चित किया कि "विना शर्त आत्म-समर्पण" के अतिरिक्त अन्य किसी शर्त पर धुरी-राष्ट्रों और उनके अधीन वालकन राज्यों के साथ सन्धि नहीं की जा सकती। रूज़वेल्ट ने इस शर्त पर वल दिया और युद्ध में रत सभी राष्ट्रों को यह विश्वास दिलाया कि फ़ासिस्ट-वाद और नात्सीवाद के प्रतिनिधियों से कोई सन्धि-वार्ता नहीं की जायेगी; ऐसे प्रतिनिधियों से उनकी शक्ति के किसी अवशिष्ट अंश को वचाने के निमित्त किसी प्रकार का समझौता नहीं किया जायेगा; जर्मनी, इटली, और जापान के लोगों के सामने सन्धि की अन्तिम शर्तें रखी जाने के पूर्व उनके सैनिक शासकों को सारे विश्व के समक्ष अपनी सम्पूर्ण और असीम पराजय स्वीकार करनी पड़ेगी।

अगस्त सन् १९४३ ई० में क्वेवेक में एक आंग्ल-अमेरिकी सम्मेलन ने जापान के विरुद्ध कार्रवाई तथा सामरिक और राजनयिक योजना के अन्य पक्षों पर विचार किया। दो मास पश्चात् व्रिटेन, संयुक्त राज्य तथा रूस के विदेश मंत्री मास्को में मिले। उन्होंने विना शर्त आत्म-समर्पण की नीति का अनुमोदन किया, इतालवी फ़ासिस्टवाद के अन्त तथा आस्ट्रिया की स्वतन्त्रता के पुनर्स्थापन की मांग की, और सहयोग के हित में भविष्य में मित्र राष्ट्रों के मध्य युद्धोपरान्त सहयोग का समर्थन किया।

२२ नवम्बर सन् १९४३ ई० को रूज़वेल्ट और चर्चिल काहिरा में, जापान के लिए निश्चित की जाने वाली शर्तों पर समझौता करने के लिए च्यांग काई शेक से मिले; इसमें पिछले आक्रमणों में हस्तगत क्षेत्रों को छोड़ने का प्रश्न भी सम्मिलित था। २८ नवम्बर को तेहरान में रूज़वेल्ट, चर्चिल, और स्टालिन ने मास्को-सम्मेलन की शर्तों का अनुमोदन किया और संयुक्त राष्ट्र के द्वारा स्थायी शान्ति की मांग रखी। लगभग दो वर्ष पश्चात् फरवरी सन् १९४५ ई० में जिस समय विजय निश्चित जान पड़ने लगी थी, ये लोग याल्टा में मिले और समझौते किये। जर्मनी के आत्मसमर्पण के पश्चात् ही, रूस जापान के विरुद्ध युद्ध में प्रवेश करने के लिए गुप्त रूप से राजी हो गया। पोलैण्ड की पूर्वी सीमा सन् १९१९ ई० की कर्ज़न-रेखा के लगभग पास ही निश्चित कर दी गयी। जर्मनी से माल के रूप में भारी हर्जाना वसूल करने के प्रश्न पर कुछ विचार-विमर्श करने के पश्चात् निर्णय स्थगित कर दिया गया। इस विषय में स्टालिन वसूली चाहता था और रूज़वेल्ट तथा चर्चिल इसके विरुद्ध थे। जर्मनी पर मित्र राष्ट्रों के अधिकार तथा युद्ध-अपराधियों पर मुकदमा चलाने और दण्ड देने के लिए सुनिश्चित प्रवन्ध किये गये।

और मुक्त क्षेत्रों के लोगों के लिए अतलान्तिक चार्टर के सिद्धान्त लागू करने की बात निश्चित हुई।

याल्टा में यह भी स्वीकार किया गया कि संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा-परिषद में राज्यों को अपनी सुरक्षा से सम्बन्धित मामलों में निषेधाधिकार प्राप्त होगा। काफी मतभेद के पश्चात्, जिसमें रूज़वेल्ट स्टालिन और चर्चिल के विरुद्ध था, यह निश्चित हुआ कि सभी शक्तियां रूस की इस मांग का समर्थन करेंगी कि उसे संयुक्त राष्ट्र महासभा में यूक्रेन और बाइलोरशा की जनसंख्या के आधार पर दो अतिरिक्त मत मिलेंगे।

याल्टा से लौटने के दो मास पश्चात फ्रैंकलिन डी० रूज़वेल्ट की जॉर्जिया में अवकाश मनाते समय मस्तिष्क से रक्त-प्रवाह के कारण मृत्यु हो गयी। अमेरिका के इतिहास में कुछ ही ऐसे व्यक्ति हैं जिनके लिए इतना गम्भीर शोक मनाया गया और कुछ समय तक अमेरिकी जनता इस अपूरणीय हानि से संज्ञाहीन-सी हो गयी। इस बीच उप-राष्ट्रपति हैरी एस० ट्रूमन ने, राष्ट्रपति का पद ग्रहण कर, प्रभावशाली नेतृत्व का युग आरम्भ किया और वह न्यू डील की गृह तथा विदेशी नीतियों के आवश्यक उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए क्रियाशील हुआ।

७ मई सन् १९४५ ई० को जर्मनी ने आत्मसमर्पण कर दिया। जुलाई में ब्रिटेन, संयुक्त राज्य, और सोवियत संघ आधिपत्य-नीति, तथा जर्मनी के भविष्य के लिए कार्यक्रम निर्धारित करने के लिए पोट्सडैम में मिले। यह निर्णय हुआ कि जर्मनी में इतनी औद्योगिक क्षमता छोड़ दी जाये कि वहां प्रचुर शान्तिकालीन अर्थ-व्यवस्था चलायी जा सके, परन्तु उनके पास अधिशेष नहीं होना चाहिए जिससे वे अपना युद्ध-तन्त्र फिर बना लें। मुख्य नात्सियों पर मुकदमा चलाया जाये, और यदि यह सिद्ध हो जाये कि उन्होंने नात्सी-योजना के अनुसार दण्डनीय नरसंहार किया है, तो उन्हें मृत्यु-दण्ड दिया जाये।

सम्मेलन इस बात पर राज़ी हो गया कि नात्सीवाद के अन्तर्गत पली जर्मन पीढ़ी को फिर से शिक्षित करने के लिए सहायता की, और उस देश में प्रजातान्त्रिक राजनीतिक जीवन की पुनर्स्थापना के लिए मुख्य सिद्धान्तों को निश्चित करने की आवश्यकता है। सम्मेलन में भाग लेने वालों ने जर्मनी से हर्जाने की मांग पर भी विचार-विमर्श किया और यह निश्चय किया कि जर्मनी के रूस-नियन्त्रित क्षेत्र से औद्योगिक यन्त्रीकरण और सम्पत्ति के साथ-साथ पश्चिमी क्षेत्र से भी कुछ अतिरिक्त सम्पत्ति ले जाने का अधिकार सोवियत संघ को दिया जाये। परन्तु रूस की १० अरब डालर हर्जाने की मांग, जो याल्टा में पहले ही उठायी जा चुकी थी, अब भी विवाद का विषय बनी रही।

पोट्सडैम में युद्ध-अपराधियों पर मुकदमा चलाने का जो निर्णय लिया गया था उसके अनुसार नवम्बर सन् १९४५ ई० में न्यूरेम्बर्ग में कार्य आरम्भ हुआ। ब्रिटेन, फ्रान्स, सोवियत संघ और अमेरिका से आये लब्ध-प्रतिष्ठ विधिवेत्ताओं के सम्मुख जर्मन नेताओं पर केवल षड़यन्त्र रचने और आक्रामक युद्ध करने का ही अभियोग नहीं, अपितु युद्ध के और मानवता के कानूनों को तोड़ने का भी अभियोग लगाया गया। मुकदमा १० महीने से भी अधिक समय तक चलता रहा और परिणामस्वरूप तीन प्रतिवादियों के अतिरिक्त अन्य सभी को दण्डित किया गया।

विश्व में अमेरिका

"हम एक उन्मुक्त विश्व, उन्मुक्त आकाश, उन्मुक्त नगर, उन्मुक्त हृदय, उन्मुक्त मस्तिष्क के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कार्य करेंगे।"

—रिचर्ड निक्सन

चुनाव-अभियान भाषण, १९६८ ई०

जिस समय पोट्सडैम वार्ता चल रही थी, ५० राष्ट्रों के प्रतिनिधि संयुक्त राष्ट्र संघ के ढांचे का निर्माण करने के लिए सैनफ्रैन्सिस्को में एकत्र थे। जिस संयुक्त राष्ट्र का प्रारूप उन्होंने तैयार किया उसने एक ऐसे विश्व-संगठन की रूपरेखा प्रस्तुत की जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय मतभेदों पर शान्तिपूर्वक विचार-विमर्ष और भूख तथा रोग के विरुद्ध सम्मिलित प्रयास हो सकता था। अमेरिका की सेनेट ने प्रथम विश्व-युद्ध के पश्चात् राष्ट्र संघ में संयुक्त राज्य की सदस्यता की अस्वीकृति के पूर्णतया विपरीत, संयुक्त राष्ट्र के अधिकार-पत्र (चार्टर) को ८९ के विपरीत २ मत से तुरन्त अनुसमर्थित कर दिया। पार्थक्यवाद की समाप्ति को, जो अमेरिका की परराष्ट्र नीति का एक प्रमुख तत्व था, इस कार्यवाही ने पुष्ट कर दिया और अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में संयुक्त राज्य द्वारा अपने पूर्ण उत्तरदायित्व की स्वीकृति का भी संकेत इसने दिया।

अगस्त सन् १९४५ ई० में जापान के आत्मसमर्पण के पश्चात् अमेरिकी जनता फिर आन्तरिक समस्याओं की ओर मुड़ी। इनमें से प्रथम, लाखों वापस आये सैनिकों को नागरिक जीवन में समाविष्ट करने की थी। दो वर्ष के भीतर सशस्त्र सेना की संख्या १ करोड़ २० लाख से घटाकर १५ लाख कर दी गयी। सैनिकों के पुनर्समायोजन अधिनियम (सर्विसमेन्स रीऐडजस्टमेण्ट ऐक्ट, जो साधारणतया जी० आई० का अधिकार-पत्र कहलाता है) के पारित हो जाने से अवकाश-प्राप्त सैनिकों को मकान खरीदने और व्यापार अथवा खेती करने के लिए सरकार से ऋण मिलने लगा। इस अधिनियम ने लाखों भूतपूर्व सैनिकों की शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता का प्रवन्ध किया।

अमेरिकी अर्थ-व्यवस्था का युद्ध से शान्ति की दशा में संक्रमण विना वेरोजगारी की गम्भीर समस्या को जन्म दिये हो गया। उद्योग, जिसमें लाखों आदमियों को जीविका मिली, नागरिक आवश्यकताओं की पूर्ति में लग गया। उपभोग्य वस्तुओं की मांग, जो युद्धकालीन अभाव के कारण अभी तक थमी हुई थी, अब ऊंची मजदूरी और संग्रहीत वचत के कारण इतनी तेज़ी से वढ़ी कि उसकी पूर्ति करना कठिन हो गया। सन् १९४५

और १९४८ ई० के बीच श्रमिकों की संख्या ५ करोड़ ४० लाख से बढ़कर ६ करोड़ १० लाख से भी अधिक हो गयी और देश की आय १८१ अरब डालर से बढ़कर २२३ अरब डालर प्रतिवर्ष से भी आगे बढ़ गयी।

समृद्धि ने नयी समस्याएं उत्पन्न कीं। उपलब्ध मकान आवश्यकता से कहीं कम थे, और सन् १९४७ ई० के पश्चात् ही, जब निर्माण-उद्योग ने तीव्र गति से काम प्रारम्भ किया तभी कुछ सुधार दिखाई पड़ा। तुरन्त युद्धोपरान्त वर्षों में मूल्य तेजी से बढ़ने लगे थे, जिससे अनियन्त्रित मुद्रा-स्फीति का भय होने लगा, परन्तु जब वस्तुओं का उत्पादन मांग के बराबर हो गया तब स्थिरता आयी।

बढ़ते हुए मूल्यों ने कई श्रम संगठनों को अधिक पारिश्रमिक की मांग करने के लिए प्रेरित किया, और सन् १९४६ में जब उनकी मांगें पूरी नहीं हुई तो ४५ लाख से भी अधिक श्रमिकों ने हड़ताल कर दी। अगले वर्ष कांग्रेस ने श्रमिक नेताओं द्वारा घोर विरोध होने पर भी, टैफ़्ट-हार्ट्ले अधिनियम पारित किया, जिसके द्वारा कोई संविदा समाप्त करने के लिए किसी श्रमिक संघ को अथवा मालिक को ६० दिन की पूर्व-सूचना देना आवश्यक कर दिया गया, प्रबन्धकों को संविदा तोड़ने के लिए श्रमिक-संघों पर मुकदमा दायर करने का अधिकार दिया गया, और विद्यमान संविदाओं में दिये गये संघ के कुछ विशेषाधिकारों को सीमित कर दिया गया। इन नियन्त्रणों के होते हुए भी अवकाश-प्राप्ति पर पेंशन और मालिकों की लागत पर स्वास्थ्य-बीमा की सुविधा द्वारा श्रमिक अपनी बढ़ती हुई सुरक्षा के साथ-साथ अपनी मज़दूरी बढ़वाने में भी सफल होते गये।

एक सर्वोपरि महत्वपूर्ण राष्ट्रीय समस्या अणु-शक्ति का नियन्त्रण और विकास थी। जुलाई सन् १९४६ ई० में कांग्रेस ने यह दायित्व अणु-शक्ति आयोग को सौंप दिया, जिसकी अध्यक्षता पांच नागरिकों के हाथ में सौंपी गयी। इस आयोग की देख-रेख में अमेरिकी वैज्ञानिकों ने कृषि, उद्योग, और चिकित्सा के क्षेत्र में अणुज्ञान के शान्तिपूर्ण प्रयोग विकसित किये और उन्हें अन्य राष्ट्रों के लिए भी लभ्य बनाया।

सन् १९४८ ई० के चुनाव में गणतन्त्री दल के प्रत्याशी टॉमस ई० ड्यूवी के विरुद्ध राष्ट्रपति ट्रूमन की अप्रत्याशित परन्तु निश्चयात्मक विजय ने उसे 'फ़ेयर डील' सुधारों के लिए प्रेरित किया। यद्यपि कांग्रेस ने इस कार्यक्रम का कुछ अंग अस्वीकृत कर दिया, पर इसका अधिकांश क़ानून में परिवर्तित हो गया, और १ करोड़ व्यक्तियों के लिए सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था की गयी। अन्तर्राज्य उद्योगों में श्रमिकों के लिए न्यूनतम मज़दूरी ४० से बढ़ा कर ७५ सेण्ट प्रति घण्टा कर दी गयी। गन्दी बस्तियों की सफ़ाई और कम किराये पर मकानों की व्यवस्था का एक संघीय कार्यक्रम स्वीकृत हो गया। किसानों को बाढ़, सूखा, और गिरते मूल्यों के आतंक से बचाने के लिए अतिरिक्त सुरक्षा की व्यवस्था की गयी।

द्वितीय विश्व-युद्ध की समाप्ति पर कई अमेरिकियों ने कल्पना की थी कि सोवियत संघ और पश्चिमी प्रजातन्त्रों के बीच युद्धकालीन सहयोग एक सुरक्षित और शान्तिपूर्ण विश्व के निर्माण के लिए भी कायम रहेगा। यूरोप, एशिया और अफ्रीका के युद्ध-ध्वनि-

ग्रस्त क्षेत्रों में आर्थिक पुनर्निर्माण तथा दुःख-निवारण के लिए कटिवद्ध संयुक्त राष्ट्र के अनेक अभिकरणों के निर्माण और उनकी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति में संयुक्त राज्य ने सक्रिय कार्यशीलता का परिचय दिया। साम्यवादी तथा असाम्यवादी देशों की अभावग्रस्त जनता की आवश्यकता की पूर्ति के लिए बड़ी मात्रा में अमेरिकी सहायता भेजी गयी। परन्तु साम्यवादियों द्वारा पूर्वी यूरोप पर कब्जे ने तथा अन्य स्थानों में साम्यवादी आन्दोलनों ने अन्तर्राष्ट्रीय तनाव बढ़ा दिया।

संयुक्त राज्य का अन्तर्राष्ट्रीय अणु-नियन्त्रण के लिए आग्रह

इस बीच, यह मानकर कि अणु-अस्त्रों का प्रचार मानव के अस्तित्व को ही संकट में डाल सकता है, संयुक्त राज्य ने अणु-बम नियन्त्रण के लिए अन्तर्राष्ट्रीय समझौता करने का प्रयास किया। यह भयानक अस्त्र संयुक्त राज्य ने द्वितीय विश्व-युद्ध में तब विकसित किया था जब वैज्ञानिकों ने यह सिद्ध कर दिया कि जर्मन ऐसा बम बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इसका प्रयोग जापान से आत्मसमर्पण कराने के लिए किया गया, क्योंकि दूसरा विकल्प केवल यह था कि जापानी द्वीप समूह पर एक भारी आक्रमण किया जाये जिसमें दोनों ओर १० लाख लोगों के हताहत होने की सम्भावना थी।

जून सन् १९४६ ई० में संयुक्त राज्य के प्रतिनिधि बर्नार्ड बरूच ने संयुक्त राष्ट्र के अणुशक्ति आयोग में यह प्रस्ताव रखा कि अणु-अस्त्रों को अवैध घोषित कर दिया जाये और सभी आणविक वस्तुओं पर अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण स्थापित कर दिया जाये। अकेले संयुक्त राज्य के पास इस प्रकार के बम थे और वह अपने सभी बमों को नष्ट करने तथा अणु-शक्ति के रहस्यों को उद्घाटित करने के लिए तैयार था। बरूच-योजना के नाम से प्रसिद्ध इस योजना की एक शर्त थी कि जिस अन्तर्राष्ट्रीय संस्था को इसके निरीक्षण और कार्यान्वयन का अधिकार दिया जाये वह किसी एक देश के निषेधाधिकार से बाधित न हो।

परन्तु संयुक्त राज्य का प्रस्ताव, जिसका आयोग के दस में से नौ सदस्यों ने सिद्धान्ततः समर्थन किया, सोवियत संघ द्वारा रद्द कर दिया गया। इसके प्रत्युत्तर में सोवियत प्रस्ताव ने अणु-अस्त्रों का सभी राष्ट्रों द्वारा त्याग करने की मांग तो की थी, परन्तु इसके उल्लंघन का निरीक्षण करने की कोई व्यवस्था नहीं सुझायी और न उल्लंघन करने वालों को दण्ड देने की ही कोई व्यवस्था रखी। निरीक्षण और निषेधाधिकार के प्रश्नों पर इसी प्रकार के मतभेदों से बाद में हुए सामान्य निरस्त्रीकरण के सम्मेलनों में भी गत्यवरोध उत्पन्न होता रहा। इसी बीच और भी घातक अस्त्र विकसित हो गये।

जब सोवियत संघ ने पूर्वी यूरोप में असाम्यवादी दलों को नष्ट करने अथवा उनमें घुस-पैठ करने के लिए अल्पसंख्यक साम्यवादी दलों को सैनिक सहायता देना आरम्भ किया तो संयुक्त राज्य में उद्विग्नता बढ़ने लगी। युद्ध समाप्त होने के तीन वर्ष के भीतर पोलैण्ड, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, यूगोस्लाविया, बल्गेरिया, अल्बानिया और जर्मनी के सोवियत अधिकृत क्षेत्र में साम्यवादी दल की सरकारें शासनारूढ़ हो गयीं।

सन् १९४७ ई० के बसन्त में अतिरिक्त साम्यवादी-प्रसार का भय, ग्रीस में साम्यवादी छापामारों को दी गयी सोवियत सहायता द्वारा तथा डार्डनेल्स पर टर्की के अधिकार के विरुद्ध सोवियत की धमकियों द्वारा नाटकीय रूप से प्रस्तुत हुआ। राष्ट्रपति ट्रूमन ने कांग्रेस के समक्ष घोषणा की कि "संयुक्त राज्य की यह नीति होनी चाहिए कि वह उन स्वतन्त्र लोगों की सहायता करे जो सशस्त्र अल्पसंख्यकों अथवा वाहरी दवावों द्वारा किये गये अधीनीकरण के प्रयत्नों का विरोध कर रहे हैं।" कांग्रेस ने इस नीति का–जो "ट्रूमन-सिद्धान्त" के नाम से प्रसिद्ध हुई—समर्थन किया और ग्रीस तथा टर्की की आर्थिक और सैनिक सहायता के लिए ४० करोड़ डालर की आरम्भिक सहायता देना स्वीकार किया। दो वर्ष के भीतर ग्रीस में व्यवस्था पुनः स्थापित हो गयी, टर्की की प्रादेशिक अखण्डता सुरक्षित हो गयी, और भूमध्य सागर की ओर साम्यवादी प्रसार अवरुद्ध कर दिया गया।

संयुक्त राज्य द्वारा उपनिवेशवाद की शीघ्र समाप्ति का प्रयास

संयुक्त राज्य द्वारा उपनिवेशवाद के विरोध और आत्मनिर्णय के समर्थन का परिचय अन्य क्षेत्रों में भी मिला। सन् १९४६ ई० में राष्ट्रपति ट्रूमन ने फ़िलीपीन की पूर्ण स्वतन्त्रता घोषित कर दी। अगले वर्ष कांग्रेस ने प्वेर्टोरिको वालों को अपना गवर्नर चुनने का अधिकार दिया। यह सन् १९५२ ई० में एक ऐसे स्वशासित राष्ट्र की स्थापना की ओर पहला क़दम था जिसका संयुक्त राज्य से सम्बन्ध उभयनिष्ठ नागरिकता और स्वतन्त्र चुनाव पर आधारित था।

अमेरिकी नेताओं ने ग्रेट ब्रिटेन को भारत, पाकिस्तान, तथा बर्मा को स्वतन्त्रता देने के निर्णय के लिए प्रोत्साहित किया, और इंडोनेशिया को डच शासन से स्वतन्त्रता दिलाने में मध्यस्थता की। सन् १९४९ ई० में राष्ट्रपति ट्रूमन ने विश्व के नव-विकसित क्षेत्रों को संयुक्त राज्य से शीघ्र प्राविधिक और आर्थिक सहायता पहुंचाने के लिये अपने चतुर्सूत्री (प्वाइण्ट फ़ोर) कार्यक्रम को आगे बढ़ाया। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत कृषि, शिक्षा, सार्वजनिक स्वास्थ्य, आवासन तथा कई अन्य क्षेत्रों के अमेरिकी विशेषज्ञों ने एशिया, अफ़्रीका, और लैटिन अमेरिका के देशों को सहायता और परामर्श दिया।

जिस समय इन महाद्वीपों में नये राष्ट्रों का आविर्भाव हो रहा था, उस समय यूरोप के युद्ध से विध्वंस देश कठोर आर्थिक संकट का सामना कर रहे थे। सन् १९४७ ई० में जून के आरम्भ में विदेश मन्त्री जॉर्ज सी० मार्शल द्वारा हार्वर्ड विश्वविद्यालय में एक भाषण में यूरोप की अर्थ-व्यवस्था को पुनर्स्थापित करने का एक व्यापक कार्यक्रम सुझाया गया। यह कार्यक्रम 'मार्शल-योजना' कहलाया और इसने किसी भी यूरोपीय देश को जो इसमें भाग लेना चाहता था, अमेरिकी धन, समान, और यन्त्रादि देने का प्रस्ताव किया। (यद्यपि इस प्रस्ताव में सोवियत संघ और सोवियत परिधि के अन्तर्गत पूर्वी यूरोपीय देश भी सम्मिलित थे, परन्तु उन्होंने इसमें भाग लेने से मना कर दिया)।

अमेरिकी सहायता की यह विशाल योजना, जिसमें सामान और सेवाओं के

रूप में १२ अरब डालर लगाया गया, अप्रैल सन् १९४८ ई० में आरम्भ हुई। इसने आइसलैण्ड से टर्की तक फैले १६ देशों में तीव्र गति से आर्थिक विकास की प्रक्रिया आरम्भ करने में सहायता की। मार्शल योजना के परिणामस्वरूप तीन वर्ष से कम समय में ही औद्योगिक उत्पादन युद्ध-पूर्व स्तर से २५ प्रतिशत, और कृषि की उपज युद्ध-पूर्व उपज से १४ प्रतिशत ऊपर उठ गयीं।

जिस समय मार्शल-योजना कार्यान्वित हो रही थी उस समय भी पश्चिमी वर्लिन में, जो ब्रिटेन, फ़ान्स और अमेरिका की सेनाओं के अधिकार में था, एक गम्भीर परिस्थिति पनप रही थी। जर्मनी के सोवियत क्षेत्र में १७५ किलोमीटर अन्दर की ओर स्थित इस समृद्धिशील, प्रजातान्त्रिक, पश्चिमी शक्तियों के समर्थक समुदाय का अस्तित्व साम्यवादी नेताओं के लिए उलझन का विषय बन चुका था। पश्चिमी शक्तियों को वर्लिन से वाहर निकालने के प्रयास में सन् १९४८ ई० के बसन्त में सोवियत अधिकारियों ने वर्लिन और जर्मनी के पश्चिमी क्षेत्र के बीच सड़क और रेल यातायात पहले तो सीमित किया, फिर पूर्णतया बन्द कर दिया।

इस सोवियत चुनौती का आंग्ल-अमेरीकी उत्तर था—वर्लिन-विमान-वहन। सन् १९४८ ई० की गर्मियों से आरम्भ कर लगभग एक वर्ष तक अमेरिका और ब्रिटेन के वायुयान २० लाख टन से भी अधिक आहार, ईंधन, औषधि तथा आवश्यक वस्तुएं पश्चिमी वर्लिन के लोगों को पहुंचाते रहे। सोवियत संघ वालों ने अन्ततः मई सन् १९४९ ई० में अपनी नाकाबन्दी उठा ली।

पूर्वी यूरोप में सोवियत प्रभाव के प्रसार, और ग्रीस तथा टर्की के विरुद्ध धमकियों के पश्चात् वर्लिन के संकट ने सम्पूर्ण पश्चिमी यूरोप में आशंका उत्पन्न कर दी थी। परिणामस्वरूप अप्रैल सन् १९४९ ई० में सम्भावित सोवियत आक्रमण के विरुद्ध सदस्य राष्ट्रों की सैनिक सुरक्षा को समन्वित करने के लिए उत्तरी अतलान्तिक सन्धि संघटन (नॉर्थ अटलाण्टिक ट्रीटी ऑर्गेनिजेशन—नाटो) की स्थापना की गयी। वेल्जियम, कैनेडा, डेनमार्क, फ्रान्स, ग्रेट ब्रिटेन, आइसलैण्ड, इटली, लक्सम्वर्ग, दि नेदरलैण्ड्स, नार्वे, पुर्तगाल और संयुक्त राज्य—जिनमें ग्रीस, टर्की और जर्मनी का संघीय गणतन्त्र (फ़ेडरल रिपब्लिक ऑव जर्मनी) बाद में सम्मिलित हुए—इस वात पर एकमत हुए कि उनमें से किसी पर सशस्त्र आक्रमण सबके विरुद्ध आक्रमण समझा जायेगा। दिसम्बर सन् १९५० ई० में जनरल ड्वाइट डी० आइसनहावर को नाटो सेनाओं का सर्वोच्च सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया।

ट्रूमन शासन-काल में संयुक्त राज्य का अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में आवेष्टन यूरोप तक ही सीमित नहीं रहा। सन् १९४८ ई० में अमेरिकी राज्य संघटन (अमेरिकन स्टेट्स ऑर्गेनिज़ेशन) के निर्माण में संयुक्त राज्य ने २१ लैटिन अमेरिकी देशों का साथ दिया। यह संघटन अन्तर-अमेरिकी झगड़ों का निश्चिततः शान्तिपूर्ण समाधान करने के लिए, लैटिन अमेरिका में आर्थिक और सामाजिक विकास को उन्मुख करने के लिए, और आक्रमण के विरुद्ध सामूहिक कार्य करने के लिए वनाया गया था। यह संघटन कई अन्य अन्तर-अमेरिकी संगठनों का उत्तरवर्ती था, जिनकी प्रेरणा सर्वप्रथम लगभग डेढ़

सौ वर्ष पूर्व साइमन वोलिवर से मिली थी। इनमें से सबसे प्रथम सन् १८८९ ई० में स्थापित हुआ था।

पश्चिमी एशिया में, जब मई सन् १९४८ ई० में इज़राइल के स्वतन्त्र यहूदी राज्य की घोषणा के परिणामस्वरूप उसे पड़ोसी अरब राज्यों से युद्ध में जूझना पड़ा, तब युद्ध-विराम के प्रबन्ध के लिए संयुक्त राष्ट्र के सन्धि-दल ने जो सफल प्रयास किये उसका संयुक्त राज्य ने समर्थन किया। इस दल के नेता के रूप में एक अमेरिकी दास के पौत्र डाक्टर राल्फ़ बुंच ने जो कार्य किया उसके लिए उन्हें सन् १९५० ई० में नोवेल-शान्ति पुरस्कार मिला।

कोरिया में आक्रमण का संयुक्त राज्य और संयुक्त राष्ट्र द्वारा विरोध

राष्ट्रपति ट्रूमन के कार्यकाल के अन्तिम दिनों में अमेरिका की अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं में एशिया का प्राधान्य था। २५ जून सन् १९५० ई० को सोवियत संघ द्वारा प्रशिक्षित और सुसज्जित साम्यवादी उत्तरी कोरिया की सेना ने, उत्तरी कोरिया को कोरिया गणतन्त्र से अलग करने वाली ३८वीं अक्षांश-रेखा को पार कर दक्षिण में प्रवेश किया और उस कोरिया गणतन्त्र पर आक्रमण किया जिसकी सरकार संयुक्त राष्ट्र के निरीक्षण में स्वतन्त्र निर्वाचन द्वारा बनायी गयी थी।

संयुक्त राष्ट्र की सुरक्षा परिषद् की एक आपातिक बैठक ने इस आक्रमण को सन्धि का उल्लंघन ठहराया, तुरन्त वापस हटने की मांग की, उत्तरी कोरिया को आक्रामक घोषित किया, और संयुक्त राष्ट्र के सदस्यों से मांग की कि वे दक्षिणी कोरिया की सभी सम्भव सहायता करें। संयुक्त राज्य ने कोरिया को जापानी शासन से मुक्त किया था और वह इस दलित गणतन्त्र के प्रति अपने विशेष उत्तरदायित्व का अनुभव करता था। उसने तुरन्त वायु और स्थल सेनाएं भेजीं। उसके पीछे-पीछे १५ और राष्ट्रों के सैनिक तथा ४९ राष्ट्रों से आर्थिक सहायता पहुची। संयुक्त राष्ट्र की एक कमान स्थापित हुई, और इतिहास में प्रथम वार आक्रमण के विरुद्ध एक संगठित अन्तर्राष्ट्रीय सेना लड़ी। संयुक्त राष्ट्र की ये कार्रवाइयां केवल इसलिए सम्भव हो सकीं कि सोवियत संघ कुछ समय से सुरक्षा परिषद् की बैठकों का बहिष्कार कर रहा था और अपने निषेधाधिकार का प्रयोग करने के लिए वहां उपस्थित नहीं था।

कोरियाई युद्ध का क्रम दुःखद, रक्तरंजित, और कुण्ठापूर्ण था। आरम्भिक असफलताओं के पश्चात् संयुक्त राष्ट्र की सेनाओं ने धीरे-धीरे आक्रमण करना आरम्भ किया और आक्रमणकारियों को पीछे भगा दिया। युद्ध की समाप्ति निकट ही थी कि साम्यवादी चीन ने लाखों 'स्वयंसेवक' सैनिकों को संयुक्त राष्ट्र के सैनिकों के विरुद्ध लड़ने के लिए भेज दिया। इस हस्तक्षेप ने संघर्ष के कोरिया की सीमा के बाहर फैलने की आशंका उत्पन्न कर दी, परन्तु संयुक्त राष्ट्र कमान ने—जो एक बहुत बड़े अग्निकाण्ड को प्रज्वलित करने का संकट मोल लेने को तैयार नहीं थी—सीमित उद्देश्यों के लिए सीमित युद्ध का निश्चय किया। कुछ समय पश्चात् उत्तरी कोरियाई उन रेखा तक पीछे ढकेल दिये गये जो ३८वें अक्षांश के लगभग पास थी।

लम्बी वार्ताओं के पश्चात् सन् १९५३ ई० की गर्मियों में युद्धभूमि की वास्तविकताओं को स्वीकार करते हुए एक विराम-सन्धि की व्यवस्था की गयी। युद्ध की समाप्ति तक संयुक्त राज्य ढाई लाख व्यक्तियों को विश्व की आधी परिक्रमा कराते हुए कोरिया भेज चुका था, और साम्यवादी आक्रमण के विरुद्ध स्वतन्त्र राज्यों की रक्षा के लिए अपने दृढ़ संकल्प के प्रमाणस्वरूप ३०,००० अमेरिकी सैनिकों की बलि कोरिया में दे चुका था।

आइसनहावर का काल

नवम्बर सन् १९५२ ई० में अमेरिकी जनता ने राष्ट्रपति के पद पर २० वर्ष से स्थापित लोकतन्त्र (डेमोक्रेटिक) दल के अधिकार को तोड़कर एक गणतन्त्री (रिपब्लिकन) राष्ट्रपति का निर्वाचन किया। सफल प्रत्याशी, जनरल ड्वाइट डी० आइसनहावर ने लोकतन्त्री प्रत्याशी अदलाइ ई० स्टीवेन्सन को निश्चयात्मक बहुमत से हराया। यद्यपि आइसनहावर दूसरी बार १९५६ ई० में उससे भी बड़े बहुमत से विजयी हुआ, परन्तु उसे एक ऐसी कांग्रेस के साथ काम करना पड़ा जो उसके कार्यकाल में ही लोकतन्त्रीय दल के नियन्त्रण में आ गयी थी।

आन्तरिक समस्याओं में आइसनहावर-प्रशासन ने जिस नीति का अनुसरण किया उसे 'आधुनिक गणतन्त्रवाद' की संज्ञा दी गयी। इस नीति का एक सिद्धान्त यह था कि राज्यों तथा व्यक्तिगत व्यापार के मामलों में सरकार का कम से कम हस्तक्षेप होना चाहिए। फिर भी 'न्यू डील-फ़ेयर डील' युग के बहुत-से सामाजिक और आर्थिक क़ानून ज्यों-के-त्यों रहने दिये गये। इतना ही नहीं, सामाजिक सुरक्षा, शिक्षा के लिए संघीय सहायता, सार्वजनिक आवास, गन्दी बस्तियों की सफ़ाई, और सार्वजनिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में इनका विस्तार भी किया गया।

जनवरी सन् १९५३ ई० में पदासीन होने के उपरान्त ही राष्ट्रपति आइसनहावर ने संघीय सुरक्षा-अभिकरण (फ़ेडरल सिक्योरिटी एजेन्सी) को कैबिनेट-स्तर के स्वास्थ्य, शिक्षा और कल्याण विभाग (डिपार्टमेण्ट ऑव हेल्थ, एजूकेशन, ऐण्ड वेलफ़ेयर) में परिवर्तित करने की अनुमति दे दी। साथ ही न्यूनतम मज़दूरी ७५ सेंट से बढ़ाकर १ डालर प्रति घण्टे कर देने की कांग्रेस की कार्रवाई का भी उसने समर्थन किया।

सन् १९५५ ई० में दो प्रमुख घटनाओं ने संगठित श्रमिकों को सशक्त बनाया। इनमें से प्रथम यह था कि श्रमिक-संघ और प्रबन्धक मण्डल के बीच हुए कुछ अनुबन्धों में यह आवश्यक कर दिया जाये कि बेरोज़गार-सहायता-निधि में मालिक भी अंशदान करें जो राज्यों द्वारा दी गयी सहायता की पूरक हो। दूसरा प्रमुख कार्य था पहले के दो स्वतन्त्र श्रमिक संघों के विलयन के परिणामस्वरूप सम्मिलित ए० एफ़० एल०-सी० आई० ओ० की रचना, जिसके डेढ़ करोड़ सदस्य थे। कुछ संघों में भ्रष्ट आचरण के प्रमाण मिले, जिसके कारण नये संघटन में एक कठोर नैतिक व्यवहार की नियमावली बनायी गयी। इसने कांग्रेस को भी एक क़ानून बनाने के लिए प्रेरित किया, जिसके अनुसार संघों की वित्त-व्यवस्था का, विशेषकर पेन्शन और श्रमिक-कल्याण निधि के सम्बन्ध में, पूर्ण

सार्वजनिक प्रकाशन आवश्यक बना दिया गया और श्रमिक-संघ के सदस्यों के प्रजातान्त्रिक अधिकारों को सुरक्षित कर दिया गया।

अन्य आन्तरिक समस्याओं का समाधान कठिन सिद्ध हुआ। कृषि-प्रौद्योगिकी में नवीन प्रगति ने खेती की फ़सल की राष्ट्रीय आवश्यकता की तुलना में अधिक बड़े फार्मों में उपज की समस्या को और भी जटिल कर दिया। राष्ट्रीय सहायता द्वारा खेतिहरों को स्थिर मूल्यों का दृढ़ आश्वासन देने की प्रचलित नीति के स्थान पर आइसनहावर-शासन ने एक ऐसा लचीला मापदण्ड रखा जिससे किसानों को उन फ़सलों के उपजाने का प्रोत्साहन मिले जिनका आधिक्य नहीं था। इसके अतिरिक्त एक 'भूमि बैंक' योजना बनी, जिसने चरागाह बनाने, वृक्ष रोपने, और जलाशय बनाने के लिए अधिक भूमि के प्रयोग को प्रोत्साहित किया।

आइसनहावर के कार्यकाल में नीग्रो अमेरिकियों के राजनीतिक, वैधानिक, और सामाजिक अधिकारों के विकास में नियमित प्रगति हुई। पहले से कहीं अधिक नीग्रो इस समय कालेजों में गये, निर्वाचनों में उन्होंने मतदान किया, अपने घरों और मोटरों के मालिक बने, व्यावसायिक अथवा निरीक्षणात्मक पदों पर नियुक्त हुए, और उच्च शासकीय पदों पर प्रतिष्ठित हुए। इस काल में नागरिक अधिकारों में जो विशेष उल्लेखनीय प्रगति हुई वह सन् १९५४ ई० का सर्वोच्च न्यायालय का एकमत से निर्णय था, जिसने यह आदेश दिया कि जो राज्य अथवा स्थानीय कानून नीग्रो और गोरे बच्चों के लिए पृथक शिक्षालयों की अपेक्षा करते हैं वे संविधान के विरुद्ध हैं।

चूंकि अधिकांश सार्वजनिक शिक्षालयों में औपचारिक रूप से पार्थक्य नहीं था इसलिए यह आदेश प्रधानतया दक्षिणी राज्यों में लागू किया गया जहां जातीय पृथक्करण की पुरानी परम्परा थी। ऐसे क्षेत्रों में सर्वोच्च न्यायालय ने संघीय ज़िला न्यायालयों को यह आदेश दिया कि वे स्थानीय शिक्षा अधिकारियों से यह अपेक्षा करें कि वे "आदेश का शीघ्र और उचित रूप से पालन आरम्भ करें" और इस दिशा में "सुयोजित तीव्र गति से" आगे बढ़ें।

स्कूलों में वर्णभेद-निवारण कोलम्बिया डिस्ट्रिक्ट तथा कुछ सीमावर्ती राज्यों में तीव्रगति से हुआ, परन्तु सुदूर दक्षिण में इसका तीव्र विरोध हुआ। सन् १९५७ ई० में आर्कैन्सस में स्थित लिटिल रॉक में इस समस्या को लेकर उपद्रव आरम्भ हो जाने पर संघीय सेना का वहां भेजा जाना सरकार के इस संकल्प का परिचायक था कि वह स्कूलों में वर्णभेद-निवारण के लिए न्यायालय द्वारा दिये गये आदेश को लागू करायेगी। अलास्का और हवाई को, विभिन्न जातीय आबादी के बावजूद, सन् १९५९ ई० में पूर्ण राज्य का दर्जा दे देना सामाजिक और राजनीतिक प्रजातन्त्र की दिशा में विकास का एक दूसरा प्रमाण था।

सन् १९५० और १९६० ई० के मध्य सामान्यतः अमेरिकियों का जीवन-स्तर ऊंचा उठ रहा था। सन् १९५७-५८ की मन्दी के पश्चात् बेरोज़गारी में वृद्धि होने पर भी मजदूरी बढ़ती रही, व्यापार में संवेगशीलता आयी और आशा की लहर फैल गयी। समग्र राष्ट्रीय उत्पादन—राष्ट्र में उत्पन्न सारे सामान और सेवाओं का मूल्य—जो सन्

१९५० ई० में २८,५०० करोड़ डालर था, सन् १९६० ई० में बढ़कर लगभग ५०,४०० करोड़ डालर हो गया।

राष्ट्रपति आइसनहावर के प्रथम प्रशासन-काल का प्रारम्भ आशाजनक संकेत से हुआ था। जुलाई सन् १९५३ ई० में कोरिया में सैनिक गत्यवरोध के कारण उत्तरी कोरिया के साम्यवादियों ने संयुक्त राष्ट्र कमान के साथ विराम-सन्धि पर हस्ताक्षर किया, और कोरिया के विभाजन को मान्यता देने के लिए और युद्ध-वन्दियों के आदान-प्रदान के लिए औपचारिक रूप से सहमति दी। लगभग २० हज़ार उत्तरी कोरियाई और चीनी युद्ध-वन्दियों ने भारतीय पर्यवेक्षकों की उपस्थिति में अपने घर लौटने से इनकार कर दिया।

कोरिया की विराम-सन्धि ने एशिया की कठिनाइयों को समाप्त नहीं किया। सन् १९५४ ई० के वसन्त में इण्डोचाइना में स्थापित सरकार के विरुद्ध साम्यवादी चीन द्वारा प्रोत्साहित एक सुलगता हुआ गेरिला-अभियान प्रज्वलित होकर पूर्ण विकसित युद्ध में बदल गया। शान्ति की पुनर्स्थापना पर विचार करने के लिए फ्रान्स, सोवियत संघ, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य, और इसमें उलझे हुए एशियाई राष्ट्रों के प्रतिनिधि मई से जुलाई तक जेनेवा में एकत्रित हुए। पुनर्एकीकरण के लिए निर्वाचन होने तक परामर्श-दाताओं ने वियतनाम को उत्तरी वियतनाम (डेमोक्रैटिक रिपब्लिक ऑव वियतनाम) तथा दक्षिणी वियतनाम में विभाजित कर दिया। अपनी अन्तिम घोषणा में सम्मेलन ने कम्बोडिया, लाओस, और वियतनाम की सम्प्रभुता, स्वतन्त्रता और प्रादेशिक अखण्डता को मान्यता दी।

संयुक्त राज्य द्वारा एशियाई स्वतन्त्रता का समर्थन

भावी साम्यवादी प्रवेश और आक्रमण से स्वतन्त्र एशियाई राष्ट्रों की रक्षा में सहायता करने के लिए सितम्बर सन् १९५४ ई० में संयुक्त राज्य ने थाईलैण्ड, फ़िलीपीन, पाकिस्तान, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रान्स, आस्ट्रेलिया, और न्यूजीलैण्ड से मिलकर दक्षिण-पूर्व एशिया-सन्धि-संघटन (साउथ-ईस्ट एशिया ट्रीटी ऑर्गेनिज़ेशन) की स्थापना की। इस पारस्परिक-सहायता समझौता ने, जो सियटो के नाम से प्रसिद्ध हुआ, आर्थिक सहयोग, तकनीकी सहायता, और आक्रमण अथवा उच्छेदन के विरुद्ध सामूहिक प्रक्रिया की व्यवस्था की। इससे संलग्न एक धारा ने लाओस, कम्बोडिया और दक्षिणी वियतनाम की सुरक्षा और आर्थिक सहायता के लिए सन्धि की शर्तों को और विस्तृत किया।

यह मानकर कि अमेरिका की सुरक्षा और कल्याण का नवविकसित-प्रदेशों के लोगों के आर्थिक और सामाजिक विकास से सीधा सम्बन्ध है, संयुक्त राज्य ने अपना तकनीकी सहायता-कार्यक्रम एशिया, पश्चिमी एशिया (मध्य पूर्व), अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में भी फैलाया। युद्ध-क्षतिग्रस्त दक्षिणी कोरिया में सहायता और पुनर्निर्माण के लिए संयुक्त राज्य ने १०० करोड़ डालर से भी अधिक व्यय किया, और सन् १९५५ ई० तक उस देश ने अधिकांशतः उत्पादन और उपभोग को युद्ध-पूर्व स्तर तक या उससे भी आगे बढ़ा लिया था। उतनी ही प्रभावशाली वह महान सहायता थी जो

फ़िलीपीन गणतन्त्र को युद्ध के विध्वंस के पश्चात् पुनर्निर्माण की सहायता के लिए, और साम्यवाद छापामारों के विरुद्ध सफलता-पूर्वक युद्ध के लिए दी गयी थीं। कुल मिलाकर सन् १९५० और १९६० ई० के बीच संयुक्त राज्य ने ६० राष्ट्रों को मशीन, औषधियां, कर्ज़ तथा तकनीकी सहायता दी।

शान्तिपूर्ण सहयोग के लिए प्रयास

सन् १९५५ ई० में विभिन्न विदेशी सहायता-योजनाओं को, जिनमें यूरोप के लिए निर्धारित मार्शल-योजना के अवशेष भी सम्मिलित थे, संघटित कर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग-प्रशासन (इण्टरनेशनल कोऑपरेशन ऐडमिनिस्ट्रेशन) की स्थापना की गयी, जो संयुक्त राज्य की सरकार का स्थायी अंग बन गया। नये विकासोन्मुख क्षेत्रों में यातायात, विद्युत शक्ति, उद्योग, नदियों की घाटियों के विकास, सिचाई, तथा आर्थिक विकास के लिए स्थापित संस्थाओं के लिए अधिकाधिक आवश्यक पूंजी देने के निमित्त संयुक्त राज्य ने सन् १९५७ ई० में विकासार्थ-ऋण-कोष (डेवलपमेंट लोन फ़ण्ड) का निर्माण किया। सन् १९६० ई० के अन्त तक इस कोष ने ४९ देशों को १८३ ऋण दिये जिनका योग लगभग २०० करोड़ डालर था। इसके अतिरिक्त, सन् १९५४ और १९६० ई० के बीच संयुक्त राज्य ने निर्धन देशों में १,००० करोड़ डॉलर मूल्य की खाद्य सामग्री वितरित की। इनमें से लगभग आधी खाद्य सामग्री पाकिस्तान, नेपाल, जॉर्डन, हैटी तथा घाना जैसे देशों को अकाल से बचाने के लिए उपहारस्वरूप दी गयी थी। शेष आधी विदेशी मुद्राओं में बेची गयी जो पुनः उन्हीं देशों को बहुत कम ब्याज पर अथवा बिना ब्याज के उनकी आर्थिक विकास-योजनाओं के लिए उधार दी गयी।

साम्यवादी तथा असाम्यवादी देशों में शान्तिपूर्ण सहयोग की आशा सन् १९५५ ई० के जेनेवा "शिखर-सम्मेलन" में उदित हुई। परन्तु विचारों के आदान-प्रदान के बावजूद अमेरिका, सोवियत संघ, ग्रेट ब्रिटेन तथा फ्रान्स के शासन के प्रमुख न तो निरस्त्रीकरण के उपायों पर और न जर्मनी के पुनर्एकीकरण के उपायों पर ही सहमत हुए। अप्रत्याशित आक्रमण के भय को कम करने तथा शस्त्रों के विकास को रोकने के लिए राष्ट्रपति आइसनहावर ने यह प्रस्ताव रखा कि सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अपनी सामरिक संस्थाओं की रूप-रेखाओं का आदान-प्रदान करें और अपने सामरिक प्रतिष्ठानों की एक-दूसरे द्वारा हवाई प्रेक्षण की अनुमति दें। सोवियत नेताओं ने इस योजना को यह कह कर अस्वीकृत कर दिया कि यह देश की सम्प्रभुता पर आक्रमण है। फिर भी जेनेवा-सम्मेलन ने आदान-प्रदान की व्यवस्था की, जिसके अन्तर्गत अधिकाधिक संख्या में सोवियत यन्त्रविद, बुद्धिजीवी तथा अभिनयकार-कलाकारों ने संयुक्त राज्य का भ्रमण किया और उन्हीं के अमेरिकी प्रतिरूप सोवियत संघ गये।

हंगरी और स्वेज़ के संकट

सन् १९५६ ई० में कई विस्फोटक अन्तर्राष्ट्रीय घटनाएं घटीं। उस वर्ष के आरम्भ

में ही सोवियत दल के नेता निकिता क्रुश्चेव ने अचानक, दिवंगत अधिनायक जोज़ेफ स्टालिन की यह कह कर भर्त्सना की कि वह निर्मम अत्याचारी था। इस भर्त्सना के परिणाम-स्वरूप सोवियत-प्रभुत्व वाले पूर्व यूरोपीय देशों के लोगों ने अपनी आन्तरिक प्रबन्ध व्यवस्था में अधिक स्वतन्त्रता की मांग की।

पोलैण्ड में राष्ट्रीय साम्यवादी नेता व्लादिस्लॉ गोमुल्का, जो स्टालिन के समय में वन्दी बना लिया गया था, पोलैण्ड के साम्यवादी दल का प्रधान बना और उसने जनता को भाषण, प्रेस तथा धर्म में अधिक स्वतन्त्रता देने का वचन दिया। अक्टूबर सन् १९५६ ई० में हंगरी के लोगों ने विद्रोह किया, एक उदार सरकार की स्थापना की और सोवियत सेना को हटाने की मांग की। परन्तु, हटने के बजाय सोवियत सेना ने हंगरी के स्वतन्त्रता-सैनिकों पर भीषण आक्रमण आरम्भ किया, जिसकी संयुक्त राष्ट्र की महासभा (जनरल असेम्बली) द्वारा कड़ी निन्दा की गयी। सोवियत संघ द्वारा इस विद्रोह को दबाने के विरुद्ध सारे विश्व में जो प्रतिरोध हुआ उसमें अमेरिका के लोग भी सम्मिलित हुए और उन्होंने सहस्त्रों हंगरी शरणार्थियों का संयुक्त राज्य में स्वागत किया।

हंगरी-विद्रोह के साथ-साथ, स्वेज़ पर नियन्त्रण रखने के प्रश्न पर एक गम्भीर विश्व-संकट उपस्थित हो गया। मिस्र के क्षेत्र में सन् १८६९ ई० में इसके बन कर तैयार होने के समय से ही इस नहर को एक अन्तर्राष्ट्रीय कम्पनी चला रही थी, जिसमें प्रधानतया ब्रिटिश और फ्रैंच थे। जुलाई सन् १९५६ ई० में जब मिस्र के राष्ट्रपति जनरल गमाल अब्दुल नासिर ने नहर के राष्ट्रीयकरण की घोषणा की, तब पश्चिमी शक्तियों ने नहर का नियमित रूप से प्रयोग करने वाले १८ राष्ट्रों द्वारा नये प्रकार के अन्तर्राष्ट्रीय नियन्त्रण के लिए, मिस्र से समझौता कराने का व्यर्थ प्रयास किया। फिर अक्टूबर में, अधिकाधिक सीमा-संघर्षों की पृष्ठभूमि में, इज़राइल ने मिस्र पर यह आरोप लगाया कि वह उस पर आक्रमण की योजना बना रहा है और उसने अपनी सेना सिनाई प्रायद्वीप के पार स्वेज़ की तरफ़ भेज दी।

इस काय को नहर की जहाजरानी के लिए संकटकारी समझ कर ब्रिटिश और फ़्रान्सीसियों ने नहर-क्षेत्र में अपनी सेनाएं उतार दीं। संयुक्त राज्य ने अपने नाटो के मित्र-राष्ट्रों के इस कार्य का विरोध इसलिए किया कि यह कार्य आत्मनिर्णय के सिद्धान्त का उल्लंघन था। संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी प्रतिनिधि-मण्डल ने महासभा के इस प्रस्ताव का समर्थन किया कि युद्ध तुरन्त बन्द हो और आक्रमणकारी सेनाएं वापस हटा ली जायें। ग्रेट ब्रिटेन, फ़्रान्स और इजराइल ने यह शर्ते मान लीं। मार्च सन् १९५७ ई० में संयुक्त राष्ट्र की पुलिस-सेना के निरीक्षण में स्वेज़ नहर से मलवा साफ़ किया गया और इसे जहाजरानी के लिए खोला गया।

स्वेज़-संकट के समय सोवियत संघ ने मिस्र में सोवियत "स्वयंसेवकों" को भेजने की धमकी दी थी। इसने पश्चिमी एशिया में पैर जमाने के साम्यवादी प्रयास को स्पष्ट कर दिया। इस खतरे का सामना करने और उस क्षेत्र में स्थायित्व और स्वतन्त्रता को प्रोत्साहन देने के लिए संयुक्त राज्य ने उस नीति का प्रतिपादन किया जो आइसनहावर-सिद्धान्त कहलायी। जनवरी सन् १९५७ ई० में राष्ट्रपति आइसनहावर ने कांग्रेस से पहली मांग

यह की कि साम्यवादी आक्रमण रोकने के लिए यदि किसी पश्चिम एशियाई देश ने सहायता मांगी तो राष्ट्रपति को सेना के प्रयोग का अधिकार दिया जाये, और दूसरी मांग यह की कि जो पश्चिम एशियाई देश संयुक्त राज्य से सहायता चाहें उनकी सहायता के लिए २० करोड़ डालर सुरक्षित कर दिया जाये। कांग्रेस ने दोनों मांगें स्वीकार कर लीं।

डेढ़ वर्ष पश्चात् राष्ट्रपति आइसनहावर ने लेबनान की प्रार्थना पर वहां नौसेना भेजी। यह क़दम तब उठाया गया जब लेबनान ने संयुक्त अरब गणतन्त्र (सीरिया और मिस्र का संघ) पर यह आरोप लगाया कि वह लेबनान में विद्रोहियों को शस्त्र-सज्जित और उत्तेजित कर रहा है। कई सप्ताह पश्चात् जब लेबनान की परिस्थिति में सुधार हुआ तब संयुक्त राज्य ने अपनी सेनाएं हटा लीं। ऐसा ही एक संकट जॉर्डन और इराक़ के बीच उत्पन्न हो गया था, परन्तु जॉर्डन की प्रार्थना पर भेजी गयी ब्रिटिश सेना के पहुंचते ही शीघ्र शान्ति स्थापित हो गयी। ये सेनाएं भी शीघ्र हटा ली गयीं।

फ़ॉरमोसा और बर्लिन में नये संकट

सन् १९५८ की गर्मियों में जिस समय पश्चिमी एशिया उपद्रवों से उद्वेलित था, सुदूर पूर्व में एक नया संकट उठ खड़ा हुआ। साम्यवादी चीन ने राष्ट्रीय चीन के केमाय और मात्सू द्वीपों पर बमबारी आरम्भ कर दी। स्पष्टतया इन द्वीपों पर आक्रमण ताइवान पर आक्रमण करने की तैयारी का पहला कदम था। विदेश मन्त्री जॉन फ़ॉस्टर डलेस ने घोषणा की कि संयुक्त राज्य ताइवान की सुरक्षा के लिए "सामयिक और प्रभावपूर्ण" क़दम उठायेगा। इन द्वीपों पर साम्यवादी चीन के दावे को सोवियत-समर्थन प्राप्त होने पर भी, ब्रम-वर्षा घट गयी, और जब राष्ट्रपति आइसनहावर ने यह चेतावनी दी कि संयुक्त राज्य "सशस्त्र आक्रमण होने पर" पीछे नहीं हटेगा, तो पूर्णतया बन्द हो गयी। फिर भी, चीनी साम्यवादी ताइवान तथा अन्य तटवर्ती द्वीपों को "मुक्त" करने के अपने चरम उद्देश्य की घोषणा बार-बार करते रहे।

सुदूर पूर्व का संकट अभी समाप्त ही हुआ था कि सन् १९५८ ई० के नवम्बर में सोवियत प्रधान मन्त्री ने एक चेतावनी दी जिसके अनुसार बर्लिन से हटने और वहां से सैनिक शासन हटाकर उसे स्वतन्त्र करने हेतु सहमत होने के लिए पश्चिमी शक्तियों को छः महीने का समय दिया गया। क्रुश्चेव ने घोषणा की कि इस अवधि के समाप्त होते ही सोवियत संघ पश्चिमी बर्लिन के साथ यातायात के सारे मार्गों का नियन्त्रण पूर्वी जर्मनी को सौंप देगा, और पश्चिमी बर्लिन तक पहुंचने के लिए पश्चिमी शक्तियों को पूर्वी जर्मन सरकार की अनुमति लेनी पड़ेगी। संयुक्त राज्य, ग्रेट ब्रिटेन और फ्रान्स ने इस चेतावनी के उत्तर में अपने इस संकल्प को दृढ़तापूर्वक स्पष्ट किया कि वे पश्चिमी बर्लिन में रहेंगे और उस नगर तक स्वतन्त्रतापूर्वक पहुंचने के अपने वैधानिक अधिकार की रक्षा करेंगे।

सन् १९५९ ई० में सोवियत संघ ने अपनी समय-सीमा हटा ली और चार महान् विदेश मन्त्रियों के सम्मेलन में पश्चिमी शक्तियों से बातचीत के लिए शामिल हुआ। यद्यपि यह सम्मेलन तीन मास तक चला पर किसी महत्वपूर्ण समझौते पर न पहुंच सका,

परन्तु इसने भविष्य में वातचीत का द्वार खोल दिया। इसी सिलसिले में सितम्बर सन् १९५९ ई० में प्रधानमन्त्री क्रुश्चेव संयुक्त राज्य में गया। इस यात्रा के अन्त में क्रुश्चेव और राष्ट्रपति आइसनहावर ने एक संयुक्त वक्तव्य में कहा कि विश्व की सबसे महत्वपूर्ण समस्या सामान्य निरस्त्रीकरण है और वर्लिन की समस्या तथा "सभी महत्वपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न शक्ति-प्रयोग द्वारा नहीं, विचार-विनिमय द्वारा शान्तिपूर्ण साधनों के प्रयोग से तय होने चाहिए।"

क्यूवा में कैस्ट्रो और साम्यवाद

इस वीच संयुक्त राज्य के दक्षिण-पूर्वी समुद्रतट से १४४ किलोमीटर दूर क्यूवा द्वीप में एक नया राजनीतिक नाटक आरम्भ हो रहा था। कई वर्षों के संघर्ष के पश्चात् सन् १९५९ ई० के आरम्भ में फ़ीडल कैस्ट्रो नें क्यूवा के अधिनायक फ़ल्जेंशियो वतिस्ता की सरकार का तख्ता उलट दिया। वतिस्ता के दमन के विवरण से परिचित संयुक्त राज्य की सरकार और सामान्य अमेरिकी जनता ने कैस्ट्रो के सत्तारूढ़ होने का स्वागत किया।

परन्तु जव प्रधान मन्त्री कैस्ट्रो एक साम्यवादी अधिनायक की भांति वोलने और कार्य करने लगा, अपने वचन के अनुसार स्वतन्त्र निर्वाचन न करा सका, समाचार-पत्रों पर कठोर नियन्त्रण लगा दिया और जल्दी-जल्दी मुक़दमे चलाकर अपने सैकड़ों राजनीतिक शत्रुओं को मृत्यु-दण्ड दे दिया, तो अमेरिकी सहानुभूति तुरन्त हवा हो गयी। एक वार फिर क्यूवा के जेल राजनीतिक आलोचकों से भर गये, जिनमें कई पहले कैस्ट्रो के सहयोगी थे, साम्यवाद-विरोधी मज़दूर नेता थे, और वतिस्ता-शासन के अन्य पुराने विरोधी थे। विदेशी मालिकों की सम्पत्ति पर विना उचित क्षतिपूर्ति के मनमाना अधिकार कर लिया गया, और वहुत-से मामलों में तो मुआवज़ा दिया ही नहीं गया।

जैसे-जैसे उसकी आन्तरिक तानाशाही दृढ़ होने लगी, कैस्ट्रो ने संयुक्त राज्य की अधिकाधिक भर्त्सना आरम्भ की और कम्युनिस्ट गुट के राष्ट्रों से सहायता मांगने लगा। आइसनहावर के शासन ने पहले शान्तिपूर्वक धैर्य रखने की नीति का पालन किया, परन्तु सन् १९६० ई० की गर्मियों में अमेरिकी नीति कठोर होने लगी। संयुक्त राज्य ने क्यूवा की चीनी खरीदने पर अस्थायी रोक लगा दी और २१ राष्ट्रों वाले अमेरिकी राज्य संघटन (ऑर्गेनिज़ेशन ऑव अमेरिकन स्टेट्स—ओ० ए० एस०) को प्रेरित किया कि वह क्यूवा के कृत्यों की निन्दा करे। अमेरिकी राज्य संघटन ने इस अवसर पर कैस्ट्रो के शासन की सीधे भर्त्सना तो नहीं की, परन्तु इसने पश्चिमी गोलार्ध में साम्यवादी हस्तक्षेप की निन्दा अवश्य की।

वाद में सन् १९६० ई० में हुए एक दूसरे अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन ने विश्व-मंच के आशाप्रद और क्षोभकारी सभी पक्षों पर विचार किया और निष्कर्ष पर पहुंचा। न्यूयॉर्क में अधिवेशन कर संयुक्त राष्ट्र की महासभा ने १७ नये राष्ट्रों का प्रवेश स्वीकार किया, जिनमें से एक के अतिरिक्त शेष सभी अफ्रीका महाद्वीप के थे। यह उस युद्धोत्तर प्रगतिशील

आन्दोलन का परिणाम था जिसके अनुसार पहले की उपनिवेशी जनता पूर्ण-स्वतन्त्रता और राष्ट्रत्व प्राप्त कर रही थी। संयुक्त राष्ट्र के प्रतिनिधियों को सम्वोधित करते हुए राष्ट्रपति आइसनहावर ने अन्य राष्ट्रों से कहा कि वे विकासोन्मुख क्षेत्रों को सामान्य रूप से और नये अफ्रीका राष्ट्रों को विशेष रूप से अधिक सहायता देने में संयुक्त राज्य का साथ दें। उसने यह भी प्रतिज्ञा की कि प्रभावशाली निरीक्षण और नियन्त्रण पर आधारित विश्व-निरस्त्रीकरण के लिये संयुक्त राज्य सतत् प्रयास करेगा।

संयुक्त राष्ट्र महासभा के अधिवेशन के पहले, अस्त्र-शस्त्रों की बढ़ती हुई प्रतिस्पर्द्धा के प्रति विश्व की चिन्ता मनुष्य की अन्तरिक्ष पर विजय के कारण और अधिक बढ़ गयी थी, यद्यपि अधिक शान्ति-काल में यह विकास केवल प्रशंसा और गर्व का विषय होता। अक्टूबर सन् १९५७ में प्रथम सोवियत अन्तरिक्ष उपग्रह और जनवरी सन् १९५८ ई० में प्रथम अमेरिकी उपग्रह भेजा गया। इन्होंने यह प्रदर्शित कर दिया कि दोनों देशों के पास इतने शक्तिशाली प्रक्षेपास्त्र हैं कि वे सहस्त्रों किलोमीटर दूर किसी शत्रु देश के केन्द्र में अणु वम और हाइड्रोजन वम फेंक सकते हैं।

सोवियत संघ द्वारा शस्त्र-निरीक्षण अस्वीकृत

दूसरा भय यह था कि एक सुस्पष्ट शस्त्र-निरीक्षण व्यवस्था के अभाव में, अचानक अथवा अन्य किसी भांति बटन दवते ही ऐसा युद्ध आरम्भ हो सकता था जो एक क्षण में लाखों प्राणियों को समाप्त कर दे। इसलिए, जव प्रधानमन्त्री क्रुश्चेव ने संयुक्त राष्ट्र की महासभा में ललकार-भरे स्वर में कहा कि सोवियत संघ किसी निरस्त्रीकरण के समभौते के आरम्भिक चरण में निरीक्षण और नियन्त्रण स्वीकार नहीं करेगा, तो विश्व जनमत को निराशा हुई। विना निरीक्षण के निरस्त्रीकरण प्रजातान्त्रिक राष्ट्रों को स्वीकार नहीं था, क्योंकि सोवियत संघ जैसा समाज अपनी निरस्त्रीकरण की प्रतिज्ञा विना पकड़ में आये तोड़ सकता था, परन्तु स्वतन्त्र समाज में ऐसे उल्लंघनों के पकड़े जाने की और उनके प्रचारित हो जाने की वहुत सम्भावना थी।

विश्व-तनाव की इस पृष्ठभूमि में नवम्बर सन् १९६० ई० में अमेरिकी जनता ने सेनेटर जॉन एफ़० केनेडी को राष्ट्रपति के पद के लिए चुना। केनेडी ने थोड़े मतों से अपने गणतन्त्रीय प्रतिद्वन्द्वी उप-राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन को हराया। राष्ट्रपति पद के आकांक्षी इन दोनों तरुण व्यक्तियों के अभियान की विशेषता यह थी कि दोनों वाद-विवाद की एक श्रृंखला में एक साथ टेलीविजन पर दिखाई पड़ते थे–निक्सन इस वात पर वल देता था कि उसे आइसनहावर के शासन के आठ वर्षों का अनुभव है और वह मतदाताओं को गणतन्त्रीय नेतृत्व में प्राप्त "शान्ति और समृद्धि" का स्मरण दिलाता रहा; और केनेडी नये भविष्य की ओर देखने वाले नेतृत्व की तथा देश के मानवीय तथा आर्थिक साधनों के अधिक प्रभावशाली प्रयोग की मांग कर रहा था।

संयुक्त राज्य में निर्वाचित सवसे अल्पवयस्क राष्ट्रपति केनेडी ने अपने उद्घाटन भाषण में तरुण शक्ति और समर्पण का जो स्वर निर्धारित किया वह उसके शासन की

विशेषता बन गया। उसने कहा, "प्रकाश-ज्योति अमेरिकियों की एक नयी पीढ़ी के हाथ में आ गयी है।" इसमें सन्देह नहीं कि उसका मन्त्रिमण्डल और उसके शासकीय परामर्शदाताओं का दल देश के इतिहास में सबसे अल्पवयस्क सर्वोच्च अधिकारियों का दल था। यह दल नये विचारों का सदा स्वागत करने के लिए तथा शक्तिपूर्ण कार्य सदैव तत्परता से करने के लिए प्रसिद्ध था।

जिस समय राष्ट्रपति केनेडी ने पद ग्रहण किया, देश सामान्यत: समृद्ध था, और औद्योगिक श्रमिकों का औसत पारिश्रमिक सब समय से अधिक, ९५ डालर प्रति सप्ताह था। परन्तु बेरोज़गारी भी काफ़ी बढ़ गयी थी, विशेषकर पेनसिलवैनिया और पश्चिमी वर्जिनिया के कोयला-खान क्षेत्रों में, जो नये उत्पाद्य वस्तुओं की प्रतिस्पर्द्धा तथा अमेरिकी जीवन के ढांचे में परिवर्तन से गम्भीर रूप से प्रभावित थे।

नये शासन ने इन परिस्थितियों में सुधार के लिए वैधानिक उपचार करना चाहा। एक क्षेत्र-विकास-अधिनियम (एरिया डेवलपमेण्ट ऐक्ट) ने संघीय प्रशासन को यह अधिकार दिया कि वह अवनत वर्गों को नये उद्योग आरम्भ करने में तथा आवश्यक सार्वजनिक सुविधाओं का निर्माण करने में सहायता प्रदान करे। एक अन्य क़ानून के द्वारा बेरोज़गार श्रमिकों अथवा आवश्यक कौशल की कमी के कारण कम मज़दूरी वाले कामों में लगे श्रमिकों के लिए वेतन सहित पुनर्शिक्षण की व्यवस्था की गयी। इसके अतिरिक्त राज्यों को यह आपातिक अधिकार दिया गया कि वे बेरोज़गारी-बीमा का भुगतान २६ सप्ताह की सामान्य अवधि के अतिरिक्त १३ सप्ताह तक और कर सकते हैं। अन्य व्यवस्थाओं का उद्देश्य अमेरिकियों की दशा में सामान्य सुधार करने का था। सामाजिक सुरक्षा-व्यवस्था को अधिक उदार बना दिया गया, ताकि एक श्रमिक आवकाश-ग्रहण पेंशन ६५ वर्ष के बजाय ६२ वर्ष की अवस्था से ही पाना आरम्भ कर दे। न्यूनतम मज़दूरी एक बार फिर बढ़ाकर १.२५ डालर प्रतिघण्टा कर दी गयी। वयोवृद्ध लोगों तथा निम्न आय और मध्यम आय वाले परिवारों को उचित मूल्य पर मकान उपलब्ध करने के लिए कांग्रेस ने एक विस्तृत आवास-योजना भी स्वीकृत की।

अमेरिकी नीग्रो आगे बढ़े

जातीय भेद-भाव मिटाने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये गये। सन् १९६१ और १९६४ ई० के बीच दक्षिण में लगभग ३९५ और स्कूल-ज़िलों ने पहले के मात्र गोरे स्कूलों में नीग्रो विद्यार्थियों को भर्ती किया, और इस प्रकार सन् १९५४ ई० के सर्वोच्च न्यायालय के आदेश जारी होने के समय से लेकर अब तक वर्ण-भेद-विमुक्त स्कूल ज़िलों की संख्या दूनी हो गयी। नीग्रो तथा गोरे कालेज-विद्यार्थियों की फ़रवरी सन् १९६० ई० में आरम्भ की हुई 'साथ बैठने की व्यवस्था' ने ५०० से भी अधिक दक्षिणी समुदायों में रेस्तराँ तथा भोजन के स्थानों में भेदभाव तेज़ी से समाप्त कर दिया।

सन् १९६१ ई० में बस-परिवहन और बस स्टेशनों में उपलब्ध सुविधाओं में भेदभाव के विरुद्ध सुव्यवस्थित अहिंसात्मक विरोध-प्रदर्शन आरम्भ हुआ जो "मुक्त

सवारी" (फ्रीडम राइड्स) कहलाया। नवम्बर सन् १९६१ ई० में अन्तर्राज्य-व्यापार आयोग ने सभी अन्तर्राज्य यात्राओं में भेद-भाव वर्जित कर दिया। अगले वर्ष संयुक्त राज्य सर्वोच्च न्यायालय ने इस प्रतिवन्ध का एकमत से समर्थन किया और कहा : "हमने विना किसी विवाद के यह निश्चय किया है कि कोई भी राज्य अन्तर्राज्य, तथा राज्य के भीतर परिवहन सुविधाओं में जातिगत भेद-भाव आवश्यक नहीं वनायेगा।"

यह आन्दोलन जो 'नागरिक अधिकार-क्रान्ति' (सिविल राइट्स रिवोल्यूशन) कहलाया, सन् १९६३ ई० में नाटकीय ढंग से अपनी चरम सीमा पर पहुंच गया। सुदूर दक्षिण में स्थित वर्मिघम (अलावामा) के भेद-भाव पूर्ण नगर में एक जवर्दस्त नीग्रो-प्रदर्शन के पश्चात् राष्ट्रपति केनेडी ने एक टेलीविज़न भाषण में राष्ट्र को वताया कि नीग्रो अमेरिकियों को पूर्ण समानता देना उनका नैतिक कर्त्तव्य है। तव उसने मतदान, शिक्षा, रोज़गार, तथा सार्वजनिक स्थानों में भेदभाव मिटाने के लिए इस शताव्दी का सवसे महत्त्वपूर्ण क़ानून कांग्रेस के सामने रखा। २८ अगस्त को २ लाख से भी अधिक नीग्रो और गोरे अमेरिकियों ने वाशिंगटन में लिंकन-स्मारक के पास प्रभावोत्पादक प्रदर्शन किया, जिसने समान अधिकार की मांग की ओर राष्ट्र का ध्यान शीघ्रता से आकर्षित किया।

केनेडी शासन ने कई प्रतिष्ठित नीग्रो व्यक्तियों को उच्च सरकारी पदों पर नियुक्त कर जातिगत समानता को और आगे वढ़ाया। कुछ विशेष प्रमुख नियुक्तियों में रावर्ट सी० वीवर की 'संघीय आवास एवं आन्तरिक वित्त अभिकरण, (फ़ेडरल हाउज़िंग ऐण्ड होम फ़िनान्स एजेन्सी) के प्रमुख के पद पर नियुक्ति, और थरगुड मार्शल की, जो पहले काले लोगों के विकास हेतु राष्ट्रीय संघ (नेशनल असोसिएशन फ़ॉर दि ऐडवांसमेन्ट आव कलर्ड पीपुल) का प्रमुख वकील था, संघीय जज के पद पर नियुक्ति उल्लेखनीय है। राष्ट्रपति के सहायक के पद से लेकर राजदूत के पद तक दर्जनों अन्य अमेरिकी नीग्रो विभिन्न पदों पर नियुक्त किये गये। सन् १९६४ ई० में २,४०,००० से भी अधिक नीग्रो-विद्यार्थी उच्च शिक्षा-संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, जिससे यह विश्वास करने का पूरा कारण था कि नीग्रो लोगों के लिए अच्छी नौकरियों और शासन में प्रभावशाली कार्य मिलने का यह प्रवाह तीव्र गति से वढ़ेगा।

संयुक्त राज्य की सीमा-पार दक्षिण में रुचि

राष्ट्रपति केनेडी के पदासीन होने के तीन सप्ताह से भी कम पहले संयुक्त राज्य ने क्यूवा से राजनयिक सम्वन्ध तोड़ लिया था। कैस्ट्रो शासन द्वारा संयुक्त राज्य पर झूठे आरोप लगाने, सं० रा० दूतावास के व्यक्तियों को तंग करने, और लैटिन अमेरिका में प्रवेश करने के साम्यवादी प्रयासों के लिए क्यूवा को आधार के रूप में प्रयोग करने के कारण ही यह क़दम उठाया गया था।

जैसे-जैसे कैस्ट्रो की तानाशाही अधिक सशक्त होने लगी, सहस्रों क्यूवावासी अपना घर छोड़ने लगे, और उनमें से वहुत-से संयुक्त राज्य में आने लगे। अप्रैल सन्

१९६१ ई० में क्यूबा के शरणार्थियों के एक दल ने अपने देश पर आक्रमण कर कैस्ट्रो को हटाना चाहा। यद्यपि अमेरिकियों ने शरणार्थियों को प्रशिक्षण और सहायता दी, परन्तु संयुक्त राज्य के किसी सैनिक ने इस आक्रमण में भाग नहीं लिया।

अक्टूबर सन् १९६२ ई० में विश्व यह जानकर स्तम्भित रह गया कि कैस्ट्रो शासन ने गुप्त रूप से क्यूबा की भूमि पर सोवियत संघ को अपने आक्रमणात्मक प्रक्षेपास्त्र के अड्डे बनाने की स्वीकृति दे दी है। सोवियत प्रविधिज्ञों द्वारा संचालित ये अड्डे उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका के प्रमुख नगरों पर अणु प्रक्षेपास्त्र फेंकने में सर्वथा समर्थ थे। संयुक्त राज्य ने इन अड्डों को तुरन्त हटाने की मांग की और क्यूबा भेजे जा रहे सभी आक्रमणात्मक सामरिक उपकरणों पर कठोर प्रतिबन्ध की घोषणा कर दी। बीस के विरुद्ध शून्य मतों से अमेरिकन राज्य संगठन (ऑर्गेनिजेशन ऑव अमेरिकन स्टेट्स) ने संस्तुति की कि क्यूबा में आक्रमणात्मक अस्त्रों के प्रवाह को रोकने का सभी सदस्य राष्ट्र हर प्रकार से प्रयास करें। अन्ततः सोवियत सरकार इन अड्डों को तोड़ने और संयुक्त राष्ट्र के संरक्षण में उन्हें सोवियत संघ वापस ले जाने के लिए तैयार हो गयी।

दोनों अमेरिकाओं के बीच आर्थिक सम्बन्ध सुधरने लगे। मार्च सन् १९६१ ई० में राष्ट्रपति केनेडी ने 'प्रगति के लिए मैत्री' (अलायन्स फ़ॉर प्रोग्रेस) का औपचारिक रूप से प्रस्ताव रखा, जिसके अन्तर्गत अन्य स्वतन्त्र देशों, विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय अभिकरणों तथा निजी स्रोतों के साथ मिलकर संयुक्त राज्य ने यह निश्चय किया कि लैटिन अमेरिका के गणतन्त्रों में आर्थिक प्रगति के विकास तथा जीवन के स्तर को ऊंचा उठाने के लिए १० वर्ष की अवधि तक २,००० करोड़ डालर अनुदान और ऋण के रूप में दिया जायेगा।

अगस्त में १९ लैटिन अमेरिकी राष्ट्रों ने इस मैत्री-घोषणापत्र को स्वीकृत किया और अपने देश के लोगों के लाभ के लिए भूमि और कर-सुधार का वचन दिया। मैत्री-निधि से सड़कें, मकान और शिक्षालय बनाये गये, सफाई और जल-वितरण व्यवस्था में सुधार हुआ, छोटे किसानों को ऋण दिये गये और अध्यापकों को प्रशिक्षित किया गया। सन् १९६१ ई० के अन्त में जब राष्ट्रपति केनेडी वेनेज्युला और कोलम्बिया गया, जो ऐसे देशों में थे जिन्होंने छोटे किसानों में भूमि का पुनर्वितरण आरम्भ किया था, तो उसने इस कार्यक्रम को क्रियान्वित होते हुए देखा।

अफ़्रीका में नये राष्ट्रों का उदय

दक्षिणी अमेरिका से अतलान्तिक की दूसरी ओर अफ्रीका के लोग विश्व-राष्ट्र-परिवार में सम्मिलित हो रहे थे। सन् १९५६ ई० में सूडान, मोरक्को, और ट्यूनीसिया, तथा १९५७ ई० में घाना से आरम्भ होकर सन् १९६३ ई० के अन्त तक ३० अफ्रीकी राष्ट्रों ने स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली थी। संयुक्त राज्य के नेताओं ने इन नये राष्ट्रों का स्वागत किया, जिनका उपनिवेशीय स्थिति से अभ्युदय अमेरिका को अपने अतीत का स्मरण दिलाता था। संयुक्त राष्ट्र में संयुक्त राज्य के राजदूत, अदलाइ स्टीवेन्सन ने भविष्यवाणी की कि नये अफ्रीकी राज्य इस विश्व-मंच पर महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

उसके आरम्भिक कार्यों में से एक था अफ्रीका-स्थित अंगोला नामक पुर्तगाली उपनिवेश में जातिगत उपद्रव की संयुक्त राष्ट्र द्वारा जांच कराने के अफ्रीका-प्रवर्तित प्रस्ताव का समर्थन। संयुक्त राज्य ने सार्वजनिक रूप से तथा अलग से पुर्तगाल से अनुरोध किया कि वह अपने अफ़्रीकी क्षेत्रों के लिए आत्मनिर्णय का सिद्धान्त स्वीकार कर ले। राजदूत स्टीवेन्सन ने दक्षिणी अफ़्रीका गणतन्त्र में जातीय पृथक्करण की नीति समाप्त करने की भी मांग की, और संयुक्त राष्ट्र के उस प्रस्ताव का समर्थन किया जिसमें सदस्य राष्ट्रों से कहा गया था कि वे उस देश को शस्त्र न तो बेचें और न भेजें।

कांगो गणतन्त्र में सन् १९६० ई० में बेल्जियम से स्वतन्त्रता प्राप्त कर लेने के पश्चात्, जब आन्तरिक उपद्रव आरम्भ हुए, तब नये अफ्रीका की उलझी और चुनौती देने वाली समस्याओं से संयुक्त राष्ट्र का परिचय हुआ। राष्ट्रपति जोज़ेफ़ कासावुबू के अनुरोध पर एक संयुक्त राष्ट्र की सेना कांगो में पहले शान्ति स्थापित करने तथा लोगों की प्राण-रक्षा करने के लिए, और बाद में सन् १९६१ ई० मे खनिज-साधन सम्पन्न कटंगा प्रान्त को देश के शेष भाग से पुनः मिलाने में सहायता करने के लिए भेजी गयी।

यद्यपि कुछ अमेरिकियों ने कटंगा में संयुक्त राष्ट्र की सैनिक कार्यवाही को कांगो की आन्तरिक समस्याओं में अवांछनीय हस्तक्षेप बताकर उसकी आलोचना की, परन्तु संयुक्त राज्य सरकार ने संयुक्त राष्ट्र के इस उद्देश्य का समर्थन किया कि देश की आर्थिक तथा राजनीतिक समस्याओं का व्यावहारिक समाधान केवल अखण्डित कांगो से ही सम्भव है। इस कार्य के लिए संयुक्त राष्ट्र ने जो प्रयास किये उसमें संयुक्त राज्य ने निधि, खाद्य-सामग्री और सेवाओं के रूप में १७ करोड़ डालर का योगदान दिया। सन् १९६३ ई० तक शान्तिपूर्ण विकास की उन्नत सम्भावनाओं सहित अखण्ड कांगो गणतन्त्र का उदय हुआ।

संयुक्त राज्य सरकार की सहायता, जिसका योग सन् १९६४ ई० तक १५० करोड़ डालर से भी अधिक हो गया था, अधिकांश नये अफ़्रीकी राष्ट्रों को ऋण, अनुदान, तथा जहाजों द्वारा पहुंचायी गयी विपुल खाद्य सामग्री के रूप में मिली। ऋण मुख्यतया विद्युत-शक्ति, संचार, स्वास्थ्य और सफ़ाई के विकास के लिए थे और अनुदान शिक्षा तथा कृषि के लिए। अल्जीरिया, दाहोमी, एथिओपिया, मोरक्को, सोमालिया, सूडान, टंज़ानिया और ट्यूनीसिया में अमेरिकी खाद्य-सामग्री उन कार्यक्रमों में मज़दूरी की आंशिक अदायगी के लिए प्रयुक्त होने लगी जो आवश्यक सार्वजनिक निर्माण की व्यवस्था कर बेरोज़गारी को रोकने के लिए बनायी गयी थीं। सैकड़ों अमेरिकी डाक्टर, नर्स, अध्यापक, और शिल्प-विद् अपनी सेवाएं अर्पित करने के लिए अफ्रीका गये।

साम्यवादी दबाव बना रहा

दक्षिण-पश्चिमी एशिया में साम्यवादियों के प्रबल छापामार आक्रमण लाओस और वियतनाम को आतंकित कर रहे थे। लाओस के संघर्ष के समाधान के लिए १४ राष्ट्र, जिनमें संयुक्त राज्य भी सम्मिलित था, मई सन् १९६१ ई० में जेनेवा में मिले।

तेरह महीनों की शान्ति-वार्ता के पश्चात्, जिन दिनों युद्ध-विराम चल रहा था, वे इस बात पर सहमत हुए कि तीन संघर्ष-रत दलों का नेतृत्व करने वाले लाओस के तीन राजकुमारों से अनुरोध किया जाये कि वे एक तटस्थ, संगठित, और स्वतन्त्र राष्ट्र के निर्माण में सम्मिलित हों।

परन्तु दक्षिणी वियतनाम में युद्ध चलता रहा, क्योंकि सशस्त्र साम्यवादी, जिनमें से बहुत-से उत्तरी वियतनाम से घुस आये थे, अपहरण, हत्या, तथा निष्ठावान नागरिकों के विरुद्ध अन्य प्रकार के आतंक फैला रहे थे। सैगॉन सरकार के अनुरोध पर दक्षिणी वियतनाम के सैनिकों के प्रशिक्षण में सहायता करने के लिए अमेरिकी सैनिक कर्मचारी भेजे गये। संयुक्त राज्य ने दक्षिणी वियतनाम के नेताओं को सामाजिक तथा शिक्षा-सम्बन्धी सुधार आरम्भ करने और साम्यवाद के विरुद्ध विस्तृत सार्वजनिक समर्थन प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया।

एक और साम्यवादी विघटनकारी प्रयास ने पश्चिमी बर्लिन के दर्जे से सम्बन्धित एक नया संकट उत्पन्न किया। जून सन् १९६१ ई० में प्रधान मन्त्री क्रुश्चेव ने पुनः पूर्वी जर्मनी के साथ एक अलग सन्धि करने की धमकी दी। उसने कहा कि यह सन्धि चार-राष्ट्रों के उस समझौते को समाप्त कर देगी जो अमेरिका, ब्रिटेन, और फ्रान्स के पश्चिमी बर्लिन तक पहुंचने के अधिकारों की गारण्टी करता है। इन तीन राष्ट्रों ने उत्तर दिया कि कोई भी एक पक्षीय सन्धि पश्चिमी बर्लिन में उनके अधिकारों और उत्तरदायित्वों को, जिनमें नगर तक निर्बाध पहुंचने का अधिकार भी सम्मिलित है, समाप्त नहीं कर सकती।

इस संकट से उद्विग्न पूर्वी जर्मनी के लोग अधिकाधिक संख्या में भाग कर पश्चिमी बर्लिन आने लगे। केवल जुलाई में ही ऐसे लोगों की संख्या लगभग ३०,००० थी। अचानक १३ अगस्त को साम्यवादियों ने बर्लिन के पूर्वी और पश्चिमी क्षेत्रों के बीच एक दीवार खड़ी कर दी और पूर्वी जर्मनी के लोगों के लिए अलगाव की दीवाल बलपूर्वक खड़ी कर दी। पश्चिमी बर्लिन तक पहुंचने के मित्र राष्ट्रों के अधिकार की सुरक्षा के दृढ़ संकल्प के सामने सोवियत सरकार ने पूर्वी जर्मनी से सन्धि करने के किसी प्रयास के बिना ही वर्ष के अन्त में धमकी की अवधि बीत जाने दी।

विश्व-शान्ति की ओर प्रयास

मार्च सन् १९६१ ई० में राष्ट्रपति केनेडी ने 'शान्ति सेना' (पीस कोर) नामक योजना आरम्भ की, जो विदेशी सहायता के लिए एक क्रान्तिकारी विचार था। इस योजना ने विकासोन्मुख देशों में सेवा करने के उद्देश्य से सारे विश्व से स्वयंसेवक एकत्रित किये। इस योजना की ओर नवयुवक अमेरिकी विशेष रूप से आकर्षित हुए और उन्होंने नर्स, सर्वेक्षक, अध्यापक, तकनीकी स्वास्थ्य और स्वच्छता विशेषज्ञ, तथा कृषि-सहायक के रूप में कार्य करने के लिए अपनी सेवाएं अर्पित कीं। शान्ति-सेना ने विदेशों के आधारभूत विकास-कार्यों में सहायता करने के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय सहानुभूति, सद्भाव और शान्ति कायम करने की भी चेष्टा की।

केनेडी के शासन-काल में सीमित अणु-परीक्षण-निषेध सन्धि भी हुई। अगस्त सन् १९६१ ई० में जिस महीने में बर्लिन-दीवार उठायी गयी, उसी में सोवियत संघ ने घोषणा की कि वह अणु-अस्त्रों का वायुमण्डल में परीक्षण आरम्भ करेगा; इस प्रकार उसने सोवियत संघ, ग्रेट ब्रिटेन, और संयुक्त राज्य द्वारा तीन वर्ष पूर्व स्वेच्छा से आरम्भ किये गये वायुमण्डल में परीक्षण के विलम्बन को समाप्त कर दिया। इन परीक्षणों से अत्यधिक विकिरणशील अवपात और भावी पीढ़ियों के लिए प्रजातिगत क्षति का विश्वव्यापी भय उत्पन्न हुआ।

विलम्बन तोड़ने पर भी राष्ट्रपति केनेडी सोवियत संघ से अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षण के लिए समझौते पर हस्ताक्षर करने के लिए बार-बार अनुरोध करता रहा, जिससे भावी सभी परीक्षणों का निषेध हो जाये। जब यह प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया गया तो संयुक्त राज्य ने अनिच्छा से घोषित किया कि प्रभावपूर्ण निवारक शक्ति अक्षुण्ण रखने के लिए वायुमण्डल में अपना परीक्षण आरम्भ करने के अतिरिक्त उसके पास कोई विकल्प नहीं है। परन्तु साथ ही साथ संयुक्त राज्य सरकार एक विशेष 'शस्त्र नियन्त्रण और निरस्त्रीकरण अभिकरण' का निर्माण कर तथा परीक्षण-निषेध सन्धि के लिए अपने प्रयास आगे बढ़ाकर, शस्त्रीकरण की दौड़ को समाप्त करने के लिए सतत कार्यरत रही।

इन प्रयत्नों को अन्तत: जुलाई १९६३ ई० में सफलता प्राप्त हुई, जब सोवियत संघ, ग्रेट ब्रिटेन, और संयुक्त राज्य ने एक सन्धि कर वायुमण्डल में, समुद्र के अन्दर, और बाह्य अन्तरिक्ष में अणु-विस्फोट अवैध कर दिया। उस वर्ष के अन्त तक १०७ राष्ट्रों ने इस सन्धि को स्वीकार किया। भूगर्भ परीक्षणों का प्रश्न भविष्य के लिए छोड़ दिया गया, क्योंकि सोवियत संघ ने उन स्थानों के निरीक्षण का प्रस्ताव अस्वीकार कर दिया जिनसे ऐसे प्रयोगों का सही-सही पता चल जाता।

कुछ पर्यवेक्षकों का विश्वास था कि सोवियत सरकार की अंशत: परीक्षण-निषेध स्वीकार करने की इच्छा भी क्यूबा के उस प्रक्षेपास्त्र संकट से आरम्भ हुई जिसने विश्व के सामने आणविक युद्ध का संकट खड़ा कर दिया था। किसी आकस्मिक घटना अथवा भ्रम के कारण आणविक युद्ध आरम्भ होने की सम्भावना से सुरक्षा के लिए वाशिंगटन-स्थित व्हाइट हाउस (राष्ट्रपति भवन) और मास्को-स्थित क्रेमलिन के बीच एक सीधा दूर-टंकण सम्पर्क स्थापित किया गया, जिसे साधारणतया 'द हॉट लाइन' कहा जाता है।

अप्रत्याशित युद्ध और वायुमण्डल को दूषित होने से बचाने के ये प्रयास सोवियत-अमेरिकी सम्बन्धों में एक नयी दिशा की ओर संकेत करते थे। जून सन् १९६३ ई० में वाशिंगटन के अमेरिकी विश्वविद्यालय में एक महत्वपूर्ण भाषण में राष्ट्रपति केनेडी ने शीत-युद्ध में नरमी का प्रस्ताव किया।

उसने कहा, "हमें अपना कार्य इस ढंग से सम्पादित करना चाहिए कि वास्तविक सन्धि स्वीकार करना साम्यवादियों का हित बन जाय। परन्तु हमें अपने महत्वपूर्ण हितों की रक्षा करते समय, आणविक शक्तियों को सबसे पहले ऐसे संघर्षों से बचना चाहिए जो शत्रु के सामने केवल अपमानजनक पराजय अथवा आणविक युद्ध का ही

विकल्प छोड़े। इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अमेरिका के शस्त्र कभी हमला नहीं करेंगे, वे सावधानी पूर्वक नियन्त्रित हैं, हमला रोकने में समर्थ और विशिष्ट प्रयोग के योग्य हैं। हमारी सेनाएं शान्ति के लिए वचनबद्ध और आत्म-नियन्त्रण के लिए प्रशिक्षित हैं—जैसा कि विश्व जानता है, संयुक्त राज्य कभी युद्ध आरम्भ नहीं करेगा।" राष्ट्रपति ने अन्त में कहा कि अमेरिका अपनी शक्ति का प्रयोग विनाश के लिए नहीं, 'शान्ति के लिए' करना चाहता है।

जॉनसन का शासन-काल

विदेश में शान्ति और स्वदेश में सामाजिक प्रगति की खोज में राष्ट्रपति केनेडी की ओजस्वी व्यक्तिगत भूमिका अचानक २२ नवम्बर सन् १९६३ को उस समय समाप्त हो गयी जब डलास (टेक्सास) में एक हत्यारे ने उसे गोली मार दी। जिस समय विश्व उसकी मृत्यु पर शोक मना रहा था, राष्ट्रपति का पद लिण्डन बी० जॉनसन को प्राप्त हो गया, जो उपराष्ट्रपति पद के लिए स्वयं केनेडी द्वारा चुना गया था।

कांग्रेस में अपने पहले अभिभाषण में नये राष्ट्रपति ने दो उन प्रमुख आन्तरिक कार्यक्रमों को शीघ्र स्वीकार करने का अनुरोध किया जिनकी रचना में राष्ट्रपति केनेडी ने योग दिया था। आरम्भ में, प्रतिनिधि-सभा द्वारा स्वीकृत नागरिक-अधिकार-विधेयक ने जातिगत भेद-भाव के विरुद्ध पहले की तुलना में कहीं अधिक सशक्त संघीय सुरक्षा की व्यवस्था की। कर-न्यूनीकरण विधेयक में जो सन् १९६४ ई० के आरम्भ में कानून बन गया, व्यक्तिगत और नैगमिक आय-कर की दरों में भारी कटौती की व्यवस्था की गयी। इसका उद्देश्य यह था कि उपभोक्ता को खर्च करने के लिए अधिक नक़दी देकर और व्यवसायों को पूंजी और प्रसार के लिए अधिक धन देकर अर्थ-व्यवस्था को प्रोत्साहित किया जाये और बेरोज़गारी को कम किया जाये।

राष्ट्रपति जॉनसन ने सैनिक व्यय में भारी कटौती कर और सरकारी व्यय और अधिक मितव्ययिता की घोषणा कर अपने कर-सम्बन्धी प्रस्तावों के लिए अतिरिक्त समर्थन प्राप्त कर लिया। ऐसी बचत के यथेष्ट भाग का प्रयोग निर्धनता मिटाने के महान संघर्ष में होना था। राष्ट्रपति ने सूचना दी कि कुल अमेरिकी परिवारों के पांचवें भाग की आय ३,००० डालर वार्षिक से भी कम है, जो अधिकांश अमेरिकी जनता के साधारण जीवन-स्तर से बहुत नीचे है। जॉनसन ने इस समस्या से सम्बन्धित सभी सरकारी अभिकरणों के कार्य में समन्वय का प्रस्ताव रखा, जिससे गहनतर शिक्षा, व्यवसाय-प्रशिक्षण, नये उद्योग, और जन-कल्याण के विकसित उपायों के सम्मिलित प्रयास द्वारा अवनत वर्ग का जीवन-स्तर ऊंचा कर साधारण स्तर तक लाने का प्रयास किया जा सके।

विदेशी समस्याओं के सम्बन्ध में राष्ट्रपति जॉनसन ने अपने शासन के आरम्भिक काल में कांग्रेस को संबोधित करते हुए कहा, 'यह राष्ट्र दक्षिणी वियतनाम से लेकर बर्लिन तक अपने वादों को पूरा करेगा। हम शान्ति के लिए अनवरत प्रयास करते रहेंगे, जिनसे हमारा विरोध है उनके साथ भी सहमति के क्षेत्र ढूंढ़ने के लिए सारी युक्तियों

का प्रयोग करेंगे, और जो सार्वजनिक उद्देश्यों की पूर्ति में हमारी सहायता करेंगे उनके प्रति हम उदार और निष्ठावान रहेंगे।' अमेरिकी जनता की प्रतिक्रिया उसकी नीति के अनुकूल हुई। नवम्बर सन् १९६४ ई० के निर्वाचन में जनता ने अमेरिकी इतिहास में अधिकतम मतों से उसके प्रति अपना विश्वास प्रकट किया और उसे डेढ़ करोड़ मतों मे विजयी बनाकर पदासीन किया। अगले मार्च में उसने अपना व्यक्तिगत उद्देश्य स्पष्ट किया :

"मैं ऐसा राष्ट्रपति नहीं बनना चाहता जिसने साम्राज्य स्थापित किया, या वैभव ढूंढ़ता रहा, या जिसने साम्राज्य-विस्तार किया। मै ऐसा राष्ट्रपति बनना चाहता हूं जिसने किशोरों को विश्व के चमत्कारों से परिचित कराया। मैं ऐसा राष्ट्रपति बनना चाहता हूं जिसने क्षुधितों को आहार देने मे सहायता की और उन्हें कर-भोक्ता के स्थान पर कर-दाता बनाया। मैं ऐसा राष्ट्रपति होना चाहता हूं जिसने निर्धनों को अपना मार्ग स्वयं ढूंढ़ने में सहायता की तथा नागरिकों के सभी निर्वाचनों मे मताधिकार की रक्षा की। मैं ऐसा राष्ट्रपति होना चाहता हूं जिसने अपने साथियों में पारस्परिक घृणा समाप्त करने में सहायता की और सभी जातियों, सभी धर्मो और सभी दलों के लोगों में प्रेम का संचार किया। मैं ऐसा राष्ट्रपति बनना चाहता हूं जिसने इस संसार मे भाइयों के आपसी युद्ध समाप्त करने में सहायता की।"

परन्तु युद्ध समाप्त नहीं हुआ। इसके विपरीत उसकी तीव्रता और उसका विस्तार बढ़ता गया। संयुक्त राज्य की प्रथम संघर्ष-सेना दक्षिणी वियतनाम मे उतरी और वहां पहले से ही उपस्थित परामर्शदाता-दल से जा मिली। अन्य अमेरिकी सैनिक सशस्त्र विद्रोह दबाने के लिए डोमिनिकन गणतन्त्र में भेजे गये, जो कुछ पर्यवेक्षकों के अनुसार साम्यवादियों द्वारा प्रेरित था। अमेरिकी राज्य संगठन (ऑर्गेनिज़ेशन ऑव अमेरिकन स्टेट्स) के हस्तक्षेप से तनावपूर्ण स्थिति मे सुधार हुआ, और संयुक्त राज्य की सेनाए हटा ली गयीं।

वियतनाम की कहानी कुछ भिन्न थी। अपने शासन की समाप्ति के पूर्व राष्ट्रपति जॉनसन ने दक्षिण-पूर्वी एशिया के संघर्ष में पांच लाख से भी अधिक सैनिक लगा दिये थे। जब तक मई सन् १९६८ ई० में संयुक्त राज्य तथा उत्तरी वियतनाम ने पेरिस में आरम्भिक सन्धि-वार्ता का निश्चय नहीं कर लिया, इस बात का कोई संकेत नहीं था कि यह समझौते द्वारा भी समाप्त हो सकता है।

आन्तरिक योजनाओं पर अधिकतम व्यय, और औसत पारिवारिक आय मे पर्याप्त वृद्धि के साथ युद्ध के व्यय के कारण, राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था पर प्रबल स्फीतिकारी दबाव पड़ा, जो द्वितीय विश्व-युद्ध के पश्चात् सबसे तीव्र था। सन् १९६४ के डालर की अपेक्षा १९६८ का डालर १० सेंट कम का सामान ख़रीद रहा था, और वार्षिक स्फीति २.५ प्रतिशत तक पहुंच चुकी थी। बेरोजगारी के आंकड़े गिरते जा रहे थे, परन्तु कल्याण-सहायता प्राप्त करने वालों की संख्या, विशेषतया बड़े नगरों में, धीरे-धीरे बढ़ती जा जा रही थी।

यद्यपि घाटे के कारण शोध-सन्तुलन बिगड़ते जाने की वजह से संयुक्त राज्य में

रक्षित सोना कम होता जा रहा था, फिर भी राष्ट्र के अधिकांश लोगों के लिए जॉनसन का काल समृद्धि-काल था। घाटा अंशत: विदेश में अमेरिकी पूंजी की वृद्धि, समुद्रपार देशों में अमेरिकियों के बढ़ते हुए खर्च, विदेशी वस्तुओं के अधिक आयात, और देश में बढ़ती हुई आय के कारण हो रहा था। और देश की आर्थिक समस्याओं का समाधान सन् १९६१ से १९६९ ई० तक के महान विकास से, जो वास्तव में अमेरिकी इतिहास में महानतम था, हो रहा था।

इन दिनों अनेक सामाजिक विधान भी बने। इस अवधि में किसी भी अन्य तुलनीय अवधि की अपेक्षा अधिक नागरिक अधिकार विधेयक पारित हुए। सामाजिक सुरक्षा के लाभ बढ़ा दिये गये और राष्ट्रीय स्वास्थ्य-बीमा योजना ने, जो 'मेडिकेयर' कहलाती थी, बूढ़े अमेरिकियों को बीमारी के समय आर्थिक सहायता देना आरम्भ किया। अभिज्ञात नागरिक असमानता के प्रतिक्रिया-स्वरूप नीग्रो लोगों के मताधिकार की सुरक्षा के लिए कानून बनाये गये, क्योंकि नीग्रो लोगों को कुछ दक्षिणी राज्यों में भेदमूलक साक्षरता-परीक्षाओं में बैठना पड़ता था। चौबीसवें संशोधन ने राष्ट्रीय निर्वाचन में मतदान के लिए व्यक्ति-कर की अनिवार्यता समाप्त कर दी।

इन मताधिकार-कानूनों के पारित होने के एक वर्ष पश्चात सन् १९६५ ई० में कैलीफोर्निया के लॉस एंजेलिस नामक नगर के वाट्स नामक एक नीग्रो-प्रधान क्षेत्र में दंगा आरम्भ हुआ। यह उन उपद्रवों की शृंखला में प्रथम था जिन्होंने अगले कई वर्षो में अगणित अमेरिकी नगरों को कलंकित किया। ३५ आदमी मारे गये और सैकड़ों इमारतें नष्ट की गयीं। वर्षो की सामाजिक उपेक्षा से क्रुद्ध और उग्रवादी नीग्रो लोगों द्वारा प्रेरित नीग्रो शिकागो, क्लीवलैण्ड, डिट्रायट, न्यूयॉर्क, तथा बीसों अन्य स्थानों में हिंसात्मक कार्रवाई करने लगे। डा० मार्टिन लूथर किंग जूनियर की हत्या की आवेशपूर्ण प्रतिक्रिया-स्वरूप अप्रैल सन् १९६८ ई० में राष्ट्र की राजधानी के मुख्य बाज़ार के एक भाग को दंगा कर, जलाकर, और लूट-पाट कर तहस-नहस कर दिया गया। नागरिक-अधिकारों के नेताओं में प्रमुख, और अहिंसा के पुजारी (उन्हें १९६४ ई० में नोबेल शान्ति-पुरस्कार मिला था) डा० किंग जिस समय मेम्फिस (टेनेसी) के एक मोटल के छज्जे पर खड़े थे, छिपकर चलायी गयी गोली के शिकार हो गये।

डा० किंग की मृत्यु के दो मास पश्चात एक और प्रमुख अमेरिकी को एक हत्यारे ने समाप्त कर दिया। स्वर्गीय राष्ट्रपति का भाई सेनेटर रॉबर्ट एफ० केनेडी, जिस समय राष्ट्रपति पद के लिए अपना चुनाव-प्रचार कर रहा था, लॉस एंजेलिस के एक होटल में मारा गया।

अशान्ति और हिंसा अमेरिका में हो रहे गम्भीर परिवर्तनों के लक्षण थे। अमेरिकी अन्तरिक्ष योजना में प्राविधिक सफलताएं जितने नाटकीय ढंग से स्पष्ट हुई उतनी सम्भवत: कहीं नहीं हुई। अपोलो-८ की दिसम्बर सन् १९६८ ई० की उड़ान फ्रैंक बोरमैन, जेम्स लॉवेल, और विलियम ऐण्डर्स नामक नक्षत्र-यात्रियों को चन्द्र-कक्षा में ले गयी। पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के खिचाव के बाहर जाने का साहस करने वाले इन प्रथम अन्तरिक्ष-यात्रियों ने पृथ्वी से इतने दूर (३ लाख ६८ हजार किलोमीटर से भी अधिक)

और इतनी तीव्रगति (लगभग ४० हज़ार किलोमीटर प्रति घण्टा) से यात्रा की, जितनी इतिहास में किसी व्यक्ति ने नहीं की थी। चन्द्रमा के चारों तरफ़ उड़ते हुए क्रिसमस विताने के पश्चात्, अपोलो-चालक २७ दिसम्वर को पृथ्वी पर लौटे और प्रशान्त महासागर में वे निर्धारित स्थान पर विल्कुल ठीक जगह पर उतरे। उत्तरी कोरिया द्वारा पकड़े गये अमेरिकी युद्ध-पोत 'प्वेब्लो' के चालकों की मुक्ति के साथ इस घटना ने जॉनसन के शासन के अन्तिम सप्ताहों को चमका दिया।

निक्सन राष्ट्रपति बना

२० जनवरी सन् १९६९ ई० को रिचर्ड निक्सन ने संयुक्त राज्य के ३७वें राष्ट्रपति के पद की शपथ ली। तीन व्यक्तियों की प्रतिद्वंद्विता में, जिनमें अलावामा का भूतपूर्व गवर्नर जॉर्ज सी० वालेस भी था, गणतन्त्रवादी प्रत्याशी निक्सन ने लोकतन्त्रवादी प्रत्याशी ह्यूवर्ट एच० हम्फ़्री को, जो जॉनसन-शासन में उपराष्ट्रपति था, थोड़े ही मतों से हराया था।

निक्सन राष्ट्रपति-भवन के लिए अपरिचित व्यक्ति नहीं था; आइसनहावर के समय में वह दो सत्र तक उपराष्ट्रपति रह चुका था। सन् १९६० ई० में राष्ट्रपति पद के लिए जॉन एफ० केनेडी के विरुद्ध लड़ते समय कुल ६ करोड़ ९० लाख डाले गये मतों में वह केवल १ लाख १८ हज़ार मतों से हारा था। वाद में वह कैलीफोर्निया के गवर्नर पद के चुनाव में लड़ा, परन्तु उस प्रतियोगिता में भी उसकी हार से लोगों ने यह समझा कि उसका राजनीतिक जीवन समाप्त हो गया है। वह न्यूयॉर्क नगर में वकालत कर रहा था, और विना ठोस राजनीतिक आधार के उसने इस शताब्दी के अनोखे राजनीतिक पुनरुज्जीवन के लिए अपनी शक्तियों को एकत्रित किया।

राष्ट्र की समस्याओं के समाधान के प्रयास में राष्ट्रपति निक्सन को ऐसी वहुत-सी कुण्ठाओं का सामना करना पड़ा जिन्होंने राष्ट्रपति जॉनसन को भी घेर रखा था। इनमें प्रमुख समस्या थी वियतनाम का अविरल युद्ध। परन्तु अपने शासन के प्रथम वर्ष के अन्त तक नये राष्ट्रपति ने संयुक्त राज्य की सेना की क्रमिक-वापसी-योजना के अन्तर्गत दक्षिण-पूर्वी एशिया से १ लाख से भी अधिक सैनिक हटा दिये।

जुलाई सन् १९६९ ई० में, गुआम नामक प्रशान्त महासागरीय द्वीप पर राष्ट्रपति निक्सन ने उस विस्तृत योजना की रूपरेखा तैयार की जो उसके प्रशासन की विदेशी नीति के संचालन का पथ-प्रदर्शन करने वाली थी। उसने 'निक्सन-सिद्धान्त' की परिभाषा इन शब्दों में दी :

"इसकी प्रमुख अभिधारणा यह है कि संयुक्त राज्य मित्र राष्ट्रों और मित्रों के विकास और उनकी सुरक्षा के प्रयास में सम्मिलित होगा, परन्तु अमेरिका सारी योजनाओं के सोचने का, सारे कार्यक्रम वनाने का, सारे निर्णयों के कार्यान्वित करने और विश्व के सारे स्वतन्त्र राष्ट्रों की सुरक्षा करने का कार्य न तो कर सकता है और न करेगा। हम वहीं सहायता करेंगे जहां इससे कोई वास्तविक परिवर्तन हो सके और जो हमारे हित में हो।

यदि अमेरिका शान्तिपूर्वक रहने की आशा करता है तो वह अकेला नहीं रह सकता। हमारा विश्व से हट जाने का कोई विचार नहीं है। हमारे सामने अकेली समस्या यह है कि हम अपने उत्तरदायित्व निभाने में, अपने हितों की रक्षा करने में, और इस प्रकार शान्ति का निर्णय करने में कैसे अधिक से अधिक प्रभावशाली वन सकते हैं।"

राष्ट्रपति निक्सन के प्रशासन के प्रथम वर्ष की सबसे शानदार घटना २१ जुलाई सन् १९६९ ई० को अन्तरिक्ष यात्री नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन का चन्द्रमा पर उतरना था; उस समय अन्तरिक्ष-यात्री माइकेल कॉलिन्स मुख्य जहाज़ अपोलो-११ में चन्द्रमा की प्रदक्षिणा कर रहा था। अपने चन्द्रयान को शान्ति समुद्र (सी ऑव ट्रैंक्विलिटी) में उतार कर आर्मस्ट्रांग और एल्ड्रिन चांद पर कई घण्टे रहे, ताकि विस्तृत अध्ययन के लिए पत्थर तथा अन्य नमूने पृथ्वी पर लाये जा सकें। उन्होंने चन्द्रमा पर अपना एक झण्डा भी गाड़ा और एक पट्टी भी लगा दी जिसमें लिखा था, "हम समस्त मानव जाति की खातिर शान्तिपूर्वक आये थे।"

राष्ट्रपति पद पर रहते हुए निक्सन ने इस बात का प्रयास किया कि अपने नम्र-स्वरीय उद्घाटन भाषण के अनुरूप वह रह सके, जिसमें उसने राष्ट्रीय एकता का और आध्यात्मिक मान्यताओं की पुनः स्थापना का अनुरोध किया। उसने कहा, "हम अपने को वस्तु-सामग्रियों से सम्पन्न, परन्तु भावात्मक जगत में जीर्ण-शीर्ण अवस्था में पाते हैं। भव्य सुनिश्चितता से हम चन्द्रमा तक पहुंच रहे हैं, परन्तु पृथ्वी पर कर्कश मतभेदों में उलझे जा रहे हैं। हम शान्ति चाहते हुए भी युद्ध में फंस गये हैं। हम एकता चाहते हुए भी मतभेद के कारण खण्डित हैं। हम अपने चारों ओर ऐसे रिक्त जीवन देख रहे हैं जो पूर्णता की प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमें ऐसे कार्य दीख रहे हैं जिन्हें पूरा किया जाना है और जो उन्हें पूरा करने वाले हाथों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। आत्मिक संकट का समाधान आत्मिक उत्तर से ही हो सकता है। और उस उत्तर की प्राप्ति के लिए हमें अपने अन्तःकरण की शरण में जाना होगा।"

PICTURE CREDITS: First Color Section Opposite Page 26: Plate 1, detail of painting "The First Thanksgiving" by J. L. G. Ferris, courtesy copyright owner and Smithsonian Institution; 2, "Penn's Treaty With the Indians" by Benjamin West, Pennsylvania Academy of Fine Arts; 3, "1726 View of Harvard" by William Burgis, Fogg Art Museum, Harvard University; 4, "Benjamin Franklin Drawing Electricity From the Sky" by Benjamin West, Philadelphia Museum of Art: Mr. and Mrs. Wharton Sinkler Collection; 5, "Signing of Declaration of Independence" by John Trumbull, Yale University Art Gallery; 6, "Patriots Pulling Down Statue of George III, July 1776" by William Walcutt, Collection of Gilbert Darlington, courtesy American Heritage Publishing Company, Inc.; 7, "The Bloody Massacre in King Street, Boston, 1770" by Paul Revere, Metropolitan Museum of Art; 8, "Surrender of Cornwallis" by John Trumbull, Yale University Library; 9, "South Street From Maiden Lane" by William I. Bennett, Museum of The City of New York, The Edward W. C. Arnold Collection; 10, "Second Street North From Market, Philadelphia" by William Birch, Prints Division, The New York Public Library: Astor, Lenox and Tilden Foundations; 11, detail of painting "Blackstone River Falls, Pawtucket, Rhode Island" courtesy Smithsonian Museum of History and Technology; 12, "Ralph Wheelock's Farm" by Francis Alexander, National Gallery of Art, Gift of Edgar William and Bernice Chrysler Garbisch; 13, detail of painting "Dancing on the Barn Floor" by William S. Mount, courtesy Suffolk Museum and Carriage House, Stony Brook, New York. Melville Collection. Second Color Section Opposite Page 58: Plate 1, "Fourth of July Parade" by Thomas Howland, courtesy E. J. Rousuck, Wildenstein and Company; 2, detail of painting "Lewis and Clark Meeting the Indians at Ross' Hole" by Charles Russell, Montana Historical Society; 3, "Daniel Boone Escorting Settlers Through Cumberland Gap" by George Caleb Bingham, Washington University Gallery of Art, Steinberg Hall, St. Louis, Missouri; 4, "Fairview Inn" from the Collections of The Maryland Historical Society; 5, "Whale Fishery" Shelburne Museum Inc., Shelburne, Vermont; 6, "American Farm Scene" Currier and Ives, courtesy Travelers Insurance Company; 7, "Forging the Shaft" by John F. Weir, Metropolitan Museum of Art, Gift of Lyman G. Bloomingdale, 1901; 8, "The Wheelwright" Collection of E. F. Fisher, Brighton, Michigan. Photograph by Joe Clark. Courtesy Scott Foresman and Company; 9, "Landing of Immigrants" by Samuel Waugh, Museum of The City of New York; 10, "Erie Canal at Little Falls, New York" by William R. Miller, New York Historical Society; 11, "Wall Street Panic of 1857" by James H. Cafferty and Charles G. Rosenberg, Museum of The City of New York; 12, detail of painting "Lincoln-Douglas Debate" by Ken Riley, LIFE. Page 97, Library of Congress, 98, top—U.S. Department of Agriculture; bottom—Union Pacific Railroad; 99, The Bettmann Archive; 100, Ford Motor Company (2); 101, Library of Congress; 102, top—Bettmann, bottom—Library of Congress; 103, American Telephone and Telegraph Company; 104, top—Bettmann, bottom—Culver Pictures; 131, The New York Times; 132, USIA; 133, top—USIA, bottom—Wide World; 134, left—USIA; Pinney and Beecher; right—USIA; Carl Van Vechten, New York; 135, left—Nicholas Muray; Ralph Thompson, University of Virginia; right—Carl Harvard, Pix, Inc.; Bettmann; Alfred Eisenstadt, LIFE; 136, Library of Congress; 137, top—Acme Photos, copy from The Franklin D. Roosevelt Library, Hyde Park, New York; bottom—Tennessee Valley Authority; 138, U. S. Army photograph. Third Color Section Opposite Page 146: Plate 1, "United Nations" by Dean Conger, copyright 1964 National Geographic Society; 2, "Wheat Field" by Ray Atkeson; 3, "Supermarket" by Lee Battaglia; 4, "Steel Mill" courtesy National Steel Corporation; 5, "Alexander Calder" by Nelson Morris; 6, "Alwin Nikolais Dancers" by Herbert Migdoll; 7, "1776" by Harry Naltchayan; 8, "Laser" courtesy Westinghouse Electric Corporation; 9, "Nuclear Energy" courtesy North American Rockwell; 10, "Computer Surgery" by John Launois, Black Star, FORTUNE; 11, "Space Monitoring Center" National Aeronautics and Space Administration; 12, "Oceanography" by Stan Wayman, LIFE; 13, "MoonWalk" NASA; 14, "Turbo Train" by Gordon Gahan, copyright 1969 National Geographic Society; 15, "747" Plane" courtesy Boeing Aircraft Corporation; 16, "Ship Going Under Verrazano Bridge" courtesy Triborough Bridge and Tunnel Authority; 17, "Sunshine State Parkway Interchange" courtesy Standard Oil Company of California; 18, "Aerial, Columbia, Maryland" by Morton Tadder; 19, "Children Playing" by Lee Battaglia; 20, "Youth Crowd" by Ken Wittenburg; 21, "Vista Worker" by Michael D. Sullivan; 22, "Harlem Clean-Up" by Ken Wittenburg; 23, "Peace Corps Volunteer" by Paul Conklin; 24, "Nixon Inaugural" The White House.